AUTHOR

HAKIM MANSA RAM SHUKLA.

Vice Principal —

The Ayur-Vedic & Unani Tibbia College, Delhi

President —

District Congress Committee, Delhi

EX-LIAISON OFFICER. PAHARGUNJ. DELHI.

हकीम मंसा राम शुक्ला

लेखक { वाईस प्रिंसिपल आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी तिब्बिया कालेज देहली।
यूनानी चिकित्सा सागर वा यूनानी चिकित्सा विधि

ॐ

भूमिका

भारतवर्ष तथा ससार के अन्य देशो के इतिहास का अनुशीलन करने से यह वात सिद्ध होती है कि किसी समय समस्त संसार पर भारत का प्रभुत्व था। जब अन्य देशो के लोग अज्ञान की प्रगाढ निद्रा मे सुप्त थे और जंगलियों की भाँति जीवन व्यतीत किया करते थे, उस समय भारतवर्ष उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुंचा हुआ था और वेद के अनुपम ज्ञान की पवित्र धारा यहां अखण्ड रूप से प्रवाहित थी। यहां के ऋषियोंने अपने परिष्कृत मस्तिष्क के द्वारा एक ऐसे सुन्दर एवं सुव्यवस्थित समाज की रचना की थी कि समस्त विश्व आश्चर्यान्वित हो उठा था, यह देश सर्वप्रकारेण वैभवसम्पन्न था और एक महान् एव उत्कृष्ट सस्कृति का स्वामी था। इसी ज्ञान के अक्षय भण्डार से ससार ने संस्कृति, सभ्यता, आचार, विचार एवं रहन-सहन का पाठ पढा। इतिहास इस वात का साक्षी है कि हमारी श्रेष्ठता और सार्वजनिक उदारता से प्रभावित हो कर ससारने हमे जगद्‌गुरुत्व के उच्च सिहासन पर आरूढ किया था। भगवान् मनु का कथन---

एतद्देगप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन ।
स्वं स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा ॥

मनु०, अ० २, श्लो० २०।

अर्थात्---"इस देश मे उत्पन्न हुये ब्राह्मण से पृथिवी के सब मानवो ने अपने अपने चरित्र सीखे।"---हमारी सस्कृति की श्रेष्ठता को प्रमाणित करता है।

महाभारत मे कथित अर्जुन के पाताल गमन (वर्तमान अमरीका) की यात्रा के प्रसङ्ग से कोई भी भारतीय अपरिचित नही। इसके साथ साथ यह वात भी अस्वीकार नही की जा सकती कि महाभारत के

महान् एवं भयङ्कर युद्ध में संसार के सब देशों ने भाग लिया था । इससे स्पष्टतया भारत के अन्य देशो के साथ सम्बन्ध की बात सिद्ध होती है। वर्तमान समय मे भी भिन्न भिन्न देशो मे अनुसन्धान कर्ताओं द्वारा जो गवेषणाएँ की गई है उनसे यह बात निर्विवाद रूपेण सिद्ध होती है कि किसी समय सारा ससार भारतीय सस्कृति से शिक्षित दीक्षित था मैक्सिको (Mexico) मे जो स्मृतिचिह्न मिले है उनसे भारतीय सस्कृति और सभ्यता की झलक मिलती है। वहाँ के लोगो की परम्पराओ और रहन सहन इत्यादि पर भारतीयता की गहरी छाप है। लंका, तिब्बत, जापान, योन (यूनान) खोतन, अरब, जावा, सुमात्रा, कबोडिया और सुदूरपूर्व देशो मे बोद्ध भिक्षुओ एव अन्य भारतीय पण्डितों का धर्म और सस्कृति के प्रचारार्थ गमन एक ऐतिहासिक सत्य है। जावा कबोडिया, सुमात्रा, स्याम इत्यादि देशो मे विष्णु, शिव और बुद्ध के विशाल मन्दिर आज भी भारतीय सस्कृति के विस्तार के प्रबल प्रमाण है। यहाँ के शिला लेखों और खण्डहरों मे अकित रामायण, महाभारत और गीता के श्लोक हमारे सांस्कृतिक प्रभुत्व एवं गौरव को आज भी अपने आचल मे कंगाल की निधि के समान छिपाये है। अपनी आध्यात्मिक प्यास बुझाने और भारतीय जीवन का वास्तविक स्वरूप देखने की प्रबल उत्कण्ठा मन मे लेकर चीनी यात्रियो का भारत आगमन और पर्यटन इतिहास के पन्नो मे स्वर्णाक्षरो मे अकित है। आज भी तक्षशिला और नालन्दा विश्वविद्यालयो के खण्डहर मूक भाषा मे गत गौरव का गान करते है। ये महान् विश्वविद्यालय संसार के विद्यार्थियों के लिये आकर्षण थे। यहां दर्शन, साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष, चिकित्सा इत्यादि की उच्च शिक्षा दी जाती थी। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन-त्साङ्ग ने इसी विश्वविद्यालय मे रहकर वौद्ध एव सस्कृत साहित्य का अध्ययन किया था। इन विद्यालयो से शिक्षित दीक्षित विद्यार्थी ससार मे ज्ञान का प्रचार करके भारतीय संस्कृति का प्रसार किया करते थे।

अरब देश भी भारतीय संस्कृति से बहुत प्रभावित था। खलीफाओं के शासनकाल मे बडे बडे सस्कृत के ग्रन्थ अरबी भाषा मे अनूदित किये गये। भारतीय ज्योतिष और चिकित्सा शास्त्र का वहां बहुत प्रसार हुआ। भारतीय पण्डितों को बुलाकर चरक, सुश्रुत, पशुचिकित्सा, स्त्रीरोग इत्यादि पुस्तको का अरबी भाषा मे अनुवाद करवाया गया। बहुत से अरबी विद्वान् जडी बूटियों और दूसरी औषधियो का अनुभव प्राप्त करने भारत आए और इस सम्बन्ध मे उन्होने बहुत खोज की।

सक्षिप्त रूप मे यह है हमारे अतीत की गौरव गाथा। इसके पश्चात् वह समय आया जिसकी स्वप्न मे भी आशा नही थी। भारतवासी अपने त्याग और तपस्या के वास्तविक जीवन को भूल कर स्वार्थ और लोभ मे पड गये। परस्पर ईर्ष्या द्वेष और प्रमाद के कारण भारत परतन्त्रता की बेडियो मे जकडा गया। विदेशियों ने सास्कृतिक परम्पराओं और भारतीय साहित्य को नष्ट करने का बहुत प्रयत्न किया। परन्तु भारतीयों ने मन से कभी दासत्व स्वीकार नही किया। स्वातन्त्र्य प्राप्ति की ज्वाला अखण्ड रूप से जलती रही और बड़े बड़े बलिदान हुए।

भगवत्कृपा से आज उन अद्वितीय बलिदानों का फल हमें स्वतन्त्रता के रूप मे मिला है। यद्यपि भारत स्वतन्त्र है फिर भी दशा जीर्ण है। दास्य जीवन ने हमारे धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को बहुत क्षति पहुचाई है। इसलिये अपने गौरवमय अतीत का स्मरण करके अपने अपने क्षेत्र मे कार्य करके फिर से भारत को उच्च बनाने की आवश्यकता है। दर्शन, साहित्य, ज्योतिष, चिकित्सा शास्त्र इत्यादि के अध्ययन की विशेष आवश्यकता है, ताकि जिन रत्नो को हम अपनी भूलों के कारण खो चुके हैं, उनका फिर से ज्ञान हो और उसके फलस्वरूप देश और समाज का कल्याण हो। इसी महान् आदर्श को सामने रख कर अपने क्षेत्रानुसार "युनानी चिकित्सा सागर" नाम का ग्रन्थ लिखने का मैंने साहस किया है। मेरा अपना मत है कि यूनानी चिकित्सा पद्धति भारतीय पद्धति से पृथक न होकर वही अनुपम

ज्ञान है, जो प्राचीन काल में विदेशियों ने हम से प्राप्त किया था। सिकन्दर के आक्रमण के पश्चात् बहुत से यूनानी विद्वानों ने भारतीय दर्शन, साहित्य, ज्योतिष, चिकित्सादि शास्त्रों का अध्ययन किया और उन्हे यूनान देश मे प्रचलित किया। यद्यपि भाषा और भौगोलिक भिन्नता के कारण उसका रूप परिवर्तित है परन्तु मूल स्रोत वही भारतीय चिकित्सा शास्त्र ही है।

वर्तमान समय मे जब कि देश का स्वास्थ्य बिगड रहा है और डाक्टरी (Allopathy) का चारो ओर बोल बाला है और जन साधारण बिना सोचे समझे डाक्टरी चिकित्सा के पीछे दोड रहे है, इस ग्रन्थ को जनता तक पहुँचाना और भी आवश्यक हो जाता है क्योकि देशी चिकित्सा मे ऐसी ऐसी जड़ी बूटियां प्रयोग मे आती है जोकि सुगमतया प्राप्त हो जाती है और रोग को समूल नष्ट कर देती है। मेरा अपना मत है कि डाक्टरी चिकित्सा जिसने वर्तमान समय मे अपने विचित्र आविष्कारों द्वारा चिकित्सा ससार मे क्रान्ति उत्पन्न की है वह भी कोई पूर्ण चिकित्सा नही है। निम्नलिखित उदाहरण इस मत की पुष्टि करेगे :—

(१) डाक्टर लोग रोग की प्रारम्भिक अवस्था मे उसका निदान नही कर सकते, क्योंकि प्रारम्भिक अवस्था मे कीटाणु बहुत ही अल्प मात्रा मे होते है, इसलिये यांत्रिक परीक्षा कोई लाभप्रद सिद्ध नही होती। नाडी विज्ञान एवं दूसरे निदानो पर डाक्टर लोगों का विश्वास न होने के कारण रोग के समूचे स्वरूप का ज्ञान होना उनके लिये असम्भव होता है।

(२) बहुत तेज एव विषैली औषधिया चिकित्सा मे मुख्यतया प्रयोग मे लाई जाती है जिनसे रोग मे तो कई बार शीघ्रता से कमी हो जाती है परन्तु वे शरीर के भिन्न भिन्न अङ्गों और नाडियो को अत्यन्त क्षति पहुचाती है और अन्यान्य भयङ्कर रोगों का उत्पादक कारण बनती है।

(३) डाक्टरी चिकित्सा मे रोग को पूर्णतया नष्ट न करके उसको दवाने का प्रयत्न किया जाता है। इसके साथ गुण, दोप, स्वभाव, समय और स्थान का विचार न करके एक ही औषधि प्रयोग मे लायी जाती है। विश्वख्यातिप्राप्त अमरीकन डाक्टर रावन्स ने बड़ी खोज के पश्चात् लिखा है कि रोग के स्थान पर रोगी की चिकित्सा करनी चाहिए।

(४) डाक्टर लोग रोग का विचार किये विना ही आज कल (Operation) शल्यक्रिया जैसे भयङ्कर निर्णय पर पहुच जाते है। इसके स्थान पर कोई औपध कितनी ही लाभदायक और रोग को समूल नष्ट करने वाली क्यो न हो उसे वे उपेक्षित समझते है। जालीनूस जैसे विश्वविख्यात विद्वान् ने वहुत अनुभव के पश्चात् लिखा है कि "औपध चिकित्सा से यदि रोग ठीक हो सके तो शल्य-क्रिया नही करनी चाहिये।"

अव प्रश्न केवल मात्र इस बात का है कि कौन सी चिकित्सा सर्व श्रेष्ठ है। साधारण से साधारण व्यक्ति भी इस बात को समझ सकता है कि विदेशी औपधिया यहा के लोगो के स्वभाव और गुणके पूर्णतया विपरीत होती है। आयुर्वेदाचार्य महर्षि चरक और विश्वविख्यात बूक्रात दोनो का कथन है कि अपने देश के जल वायु और लोगो की प्रकृति के अनुसार वनाई हुई औपधिया ही सेवन करने योग्य होती है और उनसे रोगी को शीघ्र और अधिक लाभ हो सकता है। यहा की जडी बूटिया ऐसा प्रभाव रखती है कि डाक्टर लोग चकित रह जाते है। हकीम अजमलखा जैसे विश्वविख्यात चिकित्सक महमूदखा जैसे नाडी विशेषज्ञ और अन्यान्य महानुभावों ने अपने विचित्र अनुपम योगो से लाखों लोगो को लाभ पहुचाकर समस्त ससार को चकित किया था। इस चिकित्सा की विशेषता से प्रभावित होकर और जन साधारण की सेवा के आदर्श को सामने रख कर ही प्रस्तुत ग्रन्थ मे विचित्र एव प्राचीन योगो के साथ साथ आधुनिक हकीमो के वश-परम्पराप्राप्त गुप्त और प्रभावशाली योगो का सग्रह किया गया है।

यह लिखने में अतिशयोक्ति नही होगी कि जिन योगों के प्रयोग से देहली के बडे बडे औषधालय समृद्धिशाली हो रहे है उनका सग्रह करके जनता के सामने प्रस्तुत करना लाभदायक ही सिद्ध होगा। जन साधारण का स्वास्थ्य ठीक होने से देश और समाज का कल्याण अवश्यम्भावी है। ग्रन्थ मे योगों को अत्यन्त सुगम तथा सरल भापा मे लिखा गया है। उनकी निर्माणविधि, उपयोग तथा मात्रा की ओर विशेष ध्यान दिया गया है जिससे वैद्यों को उनके वनाने तथा प्रयोग मे कठिनाई न हो। योगो के नाम परिवर्तन करना उचित नही समझा गया ताकि वैद्य-समाज भली भान्ति इनसे परिचित हो जाये। यूनानी औषधियों के नाम आयुर्वैदिक निघण्टु के अनुसार ही लिखे गये है परन्तु जो नाम उपलब्ध नही हो सके उन्हे वैसे ही रहने दिया गया है। पुस्तक के अन्त मे व्यवहारिक सुविधा के लिये २५० औषधियो का वर्णन "यूनानी औषध परिचय" के रूप मे दे दिया गया है।

वैद्यसमाज को यूनानी चिकित्सा से भली भान्ति परिचित कराने के लिये "यूनानी चिकित्सा विधि" नाम का दूसरा ग्रन्थ भी शीघ्रातिशीघ्र उनकी सेवा मे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

यह लिखना भी उपयुक्त ही है कि हिन्दी ने हमारे जन साधारण की भापा होने के कारण ही राष्ट्र भाषा के उच्च सिहासन को प्राप्त किया है। इसी कारण से प्रस्तुत ग्रन्थ का हिन्दी मे लिखना ही उचित समझा गया है।

इसके साथ मै श्रीमान कविराज वैद्य गौरी शङ्करजी आनन्द का अत्यन्त आभारी हूँ जिनकी सहायता से यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ है।

अन्त मे यही निवेदन है कि यदि वैद्य समाज और उनके साथ साथ जनता ने इस ग्रन्थ से लाभ उठाकर मुझे प्रोत्साहन देने की कृपा की तो सब की सब कठिनाईंया और आपत्तियां जो मुझे ग्रन्थ मे

संग्रहीत योगों को प्राप्त करने में हुई हैं, मेरे लिये पुष्पवत् होंगी और मैं अपने इस प्रयास को सफल समझूँगा और भगवान को धन्यवाद करूँगा।

वसन्त पञ्चमी

२००६

२५-१२-४९
वज़ीर सिंह सट्रीट
पहाड़गंज
नई देहली।

विनीत
एम० आर० शुक्ला
वाईस प्रिंसिपल
आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालिज
देहली।

ॐ

मान परिभाषा प्रकरणम्

युनानी परिमाण

असार=एक सेर
सार=एक सेर
ओकीया=२ तोला ८ माशा
बृज=एक चावल
तरमस=४ रत्ती
तोला=१२ माशा
जौ=४ चावल वा एक जौ
छटांक=५ तोला
अब्बा=१ रत्ती
दाम आलमगीरी=१४ माशा
दाम खाम=१ तोला २ माशा
दाम पुखता=१ तोला ९माशा
दाग=३$\frac{3}{4}$ रत्ती
दरम=३$\frac{1}{2}$ माशा
रत्ती=१सुरख़=८ चावल=दो जौ
रत्तल=१ माशा कम ३८ तोला

रूप्या=१ तोला
सुरख=१ रत्ती
शारक=१ छटांक
शहीरा=२ चावल
कैरात=२$\frac{1}{4}$ रत्ती
कफ=२ तोला
कफदस्त=२ तोला
माशा=८ रत्ती
मशकाल=४$\frac{1}{2}$ माशा
८ चावल=१ रत्ती
८ रत्ती=१ माशा
१२ माशा=१ तोला
५ तोला=१ छटांक
१६ छटाक=१ सेर
४० सेर=१ मन

ऐलोपैथिक परिमाण

(१)

$\frac{1}{2}$ रत्ती=१ ग्रेन
४३७$\frac{1}{2}$ ग्रेन=१ पौन्ड
१६ औस=१ पौण्ड
६० ग्रेन=१ ड्राम
८ ड्राम=१ औस
२८ पौण्ड=१ क्वारट
४ क्वारट=११२ पौण्ड=१ हण्ड्रवेट
२० हण्ड्रवेट=२२४० पौण्ड=१ टन

(२)

१ विन्दु=१ मिन्म
६० मिन्म=१ फलूड ड्राम
८ फलूड ड्राम=१ फलूड औस
२० फलूड औस=१ पाईट
८ पाईट=१६० फलूड औस=१ गैलन
यह तरल ओषध के नापने के लये ॥

(३)

१ टी स्पूनफुल (चाये का एक चमचा) १ फलूड ड्राम

१ डैजरट स्पूनफुल (हलवा खाने का चमचा) २...ड्राम

१ टेबुल स्पूनफुल (खाना खाने का चमचा) ४...ड्राम

१ वाईन गलास फुल (शराब का गलास) $1\frac{1}{2}$ से २ फलूड औंस

१ टी कप फुल (चाय की एक प्याली) = ५ फलूड औंस

१ ब्रेक फास्ट कपफुल (नाश्ता का प्याला) = ५ फलूड औंस

१ टमबलर फुल (जल पीने का गलास) = ११ फलूड औंस

आयुर्वैदिक परिमाण

६ सर्षप = १ यव ।
३ यव = १ रत्ती ।
१० रत्ती = १ माषक, हेम, धान्यक, ।
४ माषक = १ शाण, धरण, टक ।
२ शाण = १ कोल, क्षुद्रक, द्रडक्षण = १ तोला ।
२ कोल = १ कर्ष
२ कर्ष = १ शुक्ति, अर्धपल, अष्टिमिका ।
२ शुक्त = १ पल = ८ तोला ।
२ पल = १ प्रसृति
२ प्रसृति = १ अञ्जलि, कुडव, अर्ध-शरावक ।
२ अञ्जलि = १ शराव, अष्टपल ।
२ शराव = १ प्रस्थ ।
४ प्रस्थ = १ आढक, चतु षष्टिपल ।
४ आढक = १ द्रोण, कलश, अर्मण ।
२ द्रोण = १ शूर्प, कुम्भ, चतु षष्टि शरावक ।
२ शूर्प = १ द्रोणी ।
४ द्रोणी = १ खारी, ४०९६ पल ।
२००० पल = १ भार ।
१०० पल = १ तुला ।

वक्तव्य = यदि आज कलके मानानुसार १० रत्ती का माशा के स्थान पर १२ रत्ती का माशा मान लिया जाये, तो १ कोल = १ तोला के समान और १ पल = ८ तोला के समान होगा, यदि इसी रीति से मान की योजना कर ली जाये तो कार्य मे सुगमता रहेगी ।।

सहायक ग्रन्थ-सूची

१. कानून शेख वो—अली सीना
२. जखीरा खवारजम शाही
३. रमूजे आजम
४. करावादियाने आजम
५ खुलासा तुल तजारव
६. करावादियान अल्वी खां
७ रसाला मजर्वात जिलानी
८. करावादियान कादरी
९. तिब्ब अकवर
१०. करावादियान वकाई
११. करावादियान शफाई
१३. करावादियान जलाल
१४. तरजुमा शरह अस्वाव
१५. तरजुमा अलाजुल इमराज
१६. देहली के सही मरक्कवात और देहली का सही मतिव्व
१७. अफादात मसीहुलमुल्क हकीम अजमलखां मतवे अमली
१८. हाजक
१९ मुसावह—उल—हिकमत
२० जामा—उल हिकमत
२१ तिब्बी फार्मोकोपिया
२२ मखजुनल हिकमत
२३. मखजुनल मुरक्कवात
२४. मुअल्लम दवासाजी
२५ तारीखुल अतिव्बा ।
२६ खुजाना तुल अदविया
२७ द्रव्य गुण विज्ञान
२८. इण्डियन मैटीरिया मैडिका
२९ कनाबुल अदविया
३० लुगात कवीर

इत्यादि इत्यादि ।

ॐ

युनानी चिकित्सा सागर

—:०:—

अतरीफ़ल

अतरीफ़ल भी एक प्रकार का अवलेह है, परन्तु इसके योगों में त्रिफला (हरड़-वहेड़ा-आमला), वादामरोगन से अच्छी तरह से स्नेहाक्त करके डाला जाता है—इसलिये इस अवलेह को अतरीफ़ल कहते है। वनाते समय निम्नलिखित वातो पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

(१) अतरीफ़ल को कलईदार वर्तन में बनाना चाहिये, और वनाकर किसी शीशे वा चीनी के मरतवान मे रखे। टीन के डब्बों वा धात के वरतनों मे न रखें। इससे अतरीफ़ल काला पड़ जाता है, और गुणों मे भी न्यून हो जाता है।

(२) तैयार करने के ४० दिन वा दो मास वाद प्रयोग करना चाहिये।

(३) अधिक समय तक प्रयोग न करें। मध्य मे छोड़ दे; क्योंकि अधिक समय तक प्रयोग करने से आमाशय की शक्ति क्षीण हो जाती है।

अतरीफ़ल उसतोखद्दूस

हरड़, हरड़काबुली (बड़ी), कृष्ण हरीतकी, वहेड़ा, आमला, सनामक्की, निशोथ, वसफ़ाईज-फसतकी, उस्तोखद्दूस, मस्तगीरूमी, अफतीमीयू (आकाशवेल), किशमिश, (सवज छोटी द्राक्षा) द्राक्षा, प्रत्येक २ तोले, मीठा वादाम तैल १० तोले, मधु ७८ तोले (यह कुल १५ औषध है)।

निर्माणविधि—चूर्ण योग्य औषध का पृथक् पृथक् बारीक चूर्ण करे। प्रथम की पांच औषध के बारीक चूर्ण को बादाम रोगन से अच्छी तरह स्नेहाक्त करे। द्राक्षा और किशमिश को पृथक् पीसे, फिर सबको मिलाकर थोड़ा २ शहद डाल कर खरल करे, ताकि सारा शहद समाप्त हो जाये, और औषध भली प्रकार शहद मे मिलकर एक रूप हो जाये, तैयार हो जाने पर शीशे वा चीनी के मरतबान मे डाल दे।

मात्रा—७ माशे वा १ तोला, प्रातः वा रात्री सोते समय अर्कगाऊज़बान वा केवल जल से प्रयोग करे।

गुण—कफ़ज वा वातिक रोगों मे लाभप्रद है। परन्तु मस्तिष्क के कफ़ज विकार मे शोधन कार्य करके मस्तिष्क को बल देती है। आमाशय के दूषित दोषों को नष्ट करती है। अपस्मार उन्माद मे भी लाभप्रद है। मध्य मे छोड छोड़कर दीर्घकाल तक प्रयोग करने से बालों को काला करती है। पुराने प्रतिश्याय मे लाभकारी योग है।

अतरीफ़ल बादियान

हरीतकी, हरीतकी काबुली, बहेडा, आमला, धनिया, गुलाब के फूल, सातरफ़ारसी, बादियान (सौफ) प्रत्येक समभाग, प्रथम की पांच औषध के बारीक चूर्ण को बादाम रोगन से स्नेहाक्त करे, फिर बाकी के औषध के चूर्ण को भी मिलाकर मिलित औषध से तीन गुणा शहद मे मिलाकर अवलेह बनावे।

वक्तव्य—बादामरोगन आवश्यकतानुसार मिलावें।

मात्रा—१ तोला रात्री सोते समय खावें वा प्रातः अर्क सौफ़ १२ तोले से खावे।

गुण—चक्षु के सर्व रोगो मे लाभप्रद है, यदि दीर्घकाल तक सेवन करे, तो चक्षु का कोई रोग ही नही होगा—

अतरीफ़ल दीदान (कृमिहर अवलेह)

वायविडंग १० तोले, निशोथ, कालादाना, कुठकड़वी, प्रत्येक ५ तोले, कमीला, तुरमस, अफसनतीन (मुस्तयारा), दरमनातुरकी आकाशबेल, कालालवण, राई, शहमहिंजल (तुम्बे के भीतर का गूदा), नागरमोथा, रासन (रासन न मिलने पर सोंठ का प्रयोग करें) प्रत्येक ३-३ तोले, शहद सब मिश्रित औषध से तीन गुणा डालकर यथाविधि अतरीफ़ल बनावें।

मात्रा—९ माशे वा १ तोला, प्रातः को अर्क गाऊज़बान से प्रयोग करावें और तीन दिन के पश्चात् एरण्डतैल तीन तोले अर्कगाऊज़बान १२ तोले में वा दूध में मिलाकर पिलावें, वा और कोई मृदु विरेचन दे।

गुण—यह अवलेह उदर के कीड़ों (केंचवे-कदुदाने) को नष्ट करने में अपूर्व है। आमाशय तथा आन्त्र के कफ़ज दोष को नष्ट करती है।

अतरीफ़ल जमानी

निशोथ, धनियां प्रत्येक १० तोले, हरीतकी, हरीतकी बड़ी, कृष्ण हरीतकी, सकमूनीया, बनफ़शापुष्प, प्रत्येक ५ तोले, बहेड़ा, आमला, वशलोचन, गुलाबपुष्प, नीलोफ़रपुष्प, प्रत्येक २॥ तोले; सन्दल सफेद, गोंद कतीरा, प्रत्येक १॥ तोला, मधुर बादाम तैल १० तोले, उन्नाब, सपस्तान (लसूडे) प्रत्येक २०० नग, प्रथम गोंद कतीरे तक सब औषध का बारीक चूर्ण करें, और बादामरोगन से स्नेहाक्त करे, बनफ़शा उन्नाब तथा सपस्तान का दो सेर जल में क्वाथ करे। आधा भाग रहने पर छान ले और उपरिलिखित औषध के चूर्ण से १॥ गुणा हरड के मुरब्बे का शीरा और समभाग शहद डालकर पाक करे। पाकसिद्धि पर शेष औषध के बारीक चूर्ण को अच्छी तरह से मिश्रित करे। ताकि सब एक रूप होकर अवलेह बन जाये।

मात्रा—७ माशे रात्री को सोते समय अर्क गाऊज़बान १२

तोले से वा केवल जल से प्रयोग करे। रेचन लाने के लिये १ तोला खावे।

गुण—यह अतरीफ़ल, कोष्टबद्धता, उदरशूल, शिरशूल, आध्मान, उदावर्त्त, उन्माद, जीर्ण प्रतिश्याय में अत्यन्त लाभदायक है।

अतरीफ़ल सनाई

सनायपत्र, हरीतकी बड़ी, वहेड़ा, आमला, प्रत्येक १० तोले, गाय का घी २० तोले, मधु १॥ सेर, औषध का बारीक चूर्ण कर गाय के घी में मिलावे, फिर सब शहद के पाक में अच्छी तरह मिलाकर अवलेह बनावे।

मात्रा—७ माशे, रात्री सोते समय अर्क सौंफ़ १२ तोले वा जल से प्रयोग करें।

गुण—यह अतरीफ़ल, विवन्ध, उन्माद, शिरशूल और अर्वभेदक मे उपयोगी है।

अतरीफल शाहतरा

शाहतरा (पित्तपापड़ा) २५ तोले, हरीतकी २० तोले, वड़ी हरड़ १५ तोले, वहेडा, आमला, प्रत्येक १० तोले, सनायपत्र ५ तोले, गुलाबपुष्प ३ तोले, द्राक्षा (बीजरहित) २ सेर १६ तोले; सब औषध को यथा विधि पीस छान लें। द्राक्षा को पृथक् पीसे और चूर्ण मे मिला दे, शहद तीन गुणा में मिलाकर अतरीफ़ल बना ले।

मात्रा—रात्री को सोते समय अर्क गाऊजबान १२ तोले से वा जल के साथ ७ माशे खावे वा प्रातःकाल अर्क मुरकब मुसफी खून (रक्तशोधक अर्क) १२ तोले से प्रयोग करे।

गुण—यह अतरीफल, रक्तदुष्टि, आतशक (उपदंश) तथा उससे उत्पन्न होनेवाली गर्मी, शिरशूल, शिरोभ्रम और शिर के बाल गिरने मे बहुत लाभ करती है। उपदंशजनित व्रण, ख़ारश वा अन्य त्वचा के विकारो मे लाभप्रद है।

अतरीफ़ल सग़ीर (लघु अवलेह)

हरीतकी, हरीतकी वडी, वहेडा, हरीतकी कृष्ण, आमला, मधुर बादाम तैल, प्रत्येक ५ तोले, मधु उत्तम १५ छटांक, सब औषध को पीस छान कर बादामरोग़न से स्नेहाक्त कर शहद के पाक में भली प्रकार मिलाकर अतरीफल बनावें ।

मात्रा—७ माशे से १ तोला तक अर्कगाऊजवान वा जल से रात्री को खावे ।

गुण—मस्तिष्क क्षीणता, बुद्धिहीनता को नष्ट करती है। अर्श के उपद्रवों मे भी उपयोगी है ।

अतरीफ़ल ग़ुद्दी

भेड़ वा बकरी की ग्रीवा की शुष्क गिलटिया (ग्रन्थिया) ५ तोले, कृष्ण हरीतकी १५ तोले, आकाशबेल १० तोले, निशोथ, वहेड़ा, आमला, प्रत्येक सात तोले, उस्तोखद्दूस, बसफाईज फसतकी, प्रत्येक ५ तोले, सनाय ४ तोले, ग़ारीकून, कचूर, चित्रक, नवसादर, प्रत्येक ३ तोले, अनीसून (सौंफ़रूमी), तज, वालछड, लौग, छोटी इलायची, जायफल, मस्तगी, प्रत्येक दो तोले, शहद सब औषध से तीन गुणा, यथाविधि अतरीफल तैयार करे ।

मात्रा—१ तोला, प्रात. को अर्क सौंफ़ १२ तोले से प्रयोग करे ।

गुण—कण्ठमाला, गलगण्ड के लिये विशेपरूप से लाभप्रद है । आमाशय तथा मस्तिष्क के दूषित विकारों को नष्ट करता है ।

अतरीफ़ल फ़ौलादी

लौहभस्म, हरड़, प्रत्येक दो तोले ४ माशे, द्राक्षा (बीजरहित), लाहौरी लवण, पिप्पली, प्रत्येक १४ माशे, शतावर ३ तोले, मधुयष्टि छिली हुई ४ तोले ८ माशे, आमला १० तोले, मधुर बादामतैल ५ तोले, मिश्री २० तोले, मधु ३० तोले, पीसने योग्य औषध को पीस छान कर बादाम तैल से स्नेहाक्त करे । द्राक्षा को पृथक् पीस लें । इसके उपरान्त मिश्री और मधु का पाक करके बाकी सब औषध भली प्रकार मिला देवे ।

मात्रा--५ वा ७ माशे, प्रातः वा सोते समय अर्क गाऊज़बान १० तोले से वा जल से दे।

गुण--यह अतरीफल चक्षु के सब रोगों के लिये उत्तम है। मोतियाबिन्दु के रोग मे बहुत लाभ करती है। अर्धभेदक, सूर्यावर्त्त तथा वातज वा रक्तज अर्श मे भी अतीव गुणकारी है।

अतरीफ़ल कबीर

कृष्ण हरीतकी, बडी हरीतकी, बहेडा, आमला, कृष्ण मिरच, पिप्पली, प्रत्येक १॥ तोला, सोठ, जावित्री, बोजीदान, चित्रक, शकाकल मिश्री, तोदरी रक्त, तोदरी पीत, इन्द्रजी मधुर, बहमन रक्त, बहमन श्वेत, तिल छिले हुये, (धोये तिल), ख़शख़ाश श्वेत, मग़ज हब्बे किलकिल (यदि यह न मिले तो इसके समभाग तोदरी सफेद) प्रत्येक ९ माशे, बादाम तैल दो तोले, तुरंज-बीन १० तोले (यवासशर्करा), मधु उत्तम ३ पाव, आख़री तीन औषध को छोड़कर बाकी औषध को पीस छानकर बादामरोग़न मिलावे, फिर तुरजबीन को पानी मे घोलकर और छानकर मधु के साथ पाक करे, और बाकी औषध के बारीक चूर्ण को उसमे मिलावे, बस तैयार है।

मात्रा—७ माशे, रात्री सोते समय अर्क गाऊजबान १० तोले वा सादा जल से प्रयोग करें—

गुण—यह अतरीफ़ल, आमाशय, मस्तिष्क और आंखों को शक्ति देती है, प्रतिश्याय, अर्श मे लाभप्रद है और वाजीकर भी है।

अतरीफल किशमिशी

हरड, बहेड़ा, आमला, कृष्ण हरीतकी, प्रत्येक १४ माशे, धनिया २८ माशे, बादामतैल २ तोले, मिश्री १४ तोले, इन सब औषध को कूट छान कर बादाम-रोग़न वा घी से भलीप्रकार स्नेहाक्त करे, फिर किशमिश ७ तोले (सबज रंग की छोटी द्राक्षा) पीस कर शीरा बनावे, और खाण्ड के साथ पाक करके उपरिलिखित औषध का बारीक चूर्ण मिला दे, यदि इस योग को शहद मे तैयार करे, तो अधिक गुणकारी तथा अधिक देर तक दूषित नही होगा।

मात्रा—९ माशे प्रातः अर्कगाऊज़्वान वा केवल जल से दे ।

गुण—यह अवलेह पित्तप्रमेह, वीर्य का पतलापन, शीघ्रपतन और मूत्रनाली के अग्र सुराख़ का छोटा होना—मस्तिष्क और आमाशय के लिये अपूर्व लाभप्रद तथा उपयोगी है ।

अतरीफ़ल कशनीजी

हरड़, हरड़बडी, बहेडा, कृष्ण हरीतकी, आमला, कशनीज़ (धनियां छिला हुआ), बादाम-रोगन प्रत्येक पाच तोले, शहद सब औषध से त्रिगुण । यथाविधि योग तैयार करे ।

मात्रा—७ माशे, सोते समय अर्कगाऊज़्वान वा जल से दे ।

गुण—यह अतरीफ़ल तबख़ीर (आमाशय से जो दूषित वातिक दोषज बाष्प ऊपर उठते हैं) के लिये विशेष रूप से गुणकारी है। और तस्य उपद्रवरूप शिरशूल, चक्षुशूल, कर्णशूल, तथा आंख दुखने मे लाभकारी है । यह योग कोष्ठबद्धतानाशक है । मस्तिष्क को शुद्ध करता है । प्रतिश्याय और अर्श मे भी विशेषरूप से लाभप्रद है ।

अतरीफ़ल कशनीजी (अन्य योग)

हरड काबुली, हरड़, हरड़ कृष्ण, गुलाबपुष्प, उस्तोख़दूस, प्रत्येक दो तोले, दुग्धी आमला, धनियां प्रत्येक १० तोले तुरंजबीन खुरासानी ८ तोले, शहद त्रिगुण (५० तोले), बादामतैल ३ तोले, सब औषध को बारीक चूर्ण करके बादामतैल से मिश्रित करें, और तुरंजबीन खुरासानी को पानी मे घोलकर छान ले, और उस में शहद का पाक करके बाकी औषध का मिश्रण कर अतरीफल बना लें, यदि पित्त प्रकृति के रोगी को प्रयोग कराना हो तो मधु के स्थान पर मिश्री का पाक करे ।

नोट—दुग्धी आमला-आमला को गाय दुग्ध मे भिगो दे फूलजाने पर दुग्ध को निकाल दे, और आमला को शुष्क करके प्रयोग करे ।

मात्रा—७ माशे से १ तोला तक अर्क गाऊज़्बान वा जल से दें ।

गुण---उपरोक्त लिखित अतरीफलकशनीजी की तरह ही गुण है।

अतरीफ़ल मक्कल (गुग्गुलु अवलेह)

हरड़, हरड़ काबुली, बहेड़ा, कृष्णहरीतकी, आमला, १-१ तोला, शुद्ध गुग्गुलु ३ तोले, द्राक्षा, बादामरोगन प्रत्येक ४ तोले, गन्दना बूटी का जल १ पाव, शहद सब मिलित औषध से त्रिगुण, प्रथम् गुग्गुलु को गन्दना बूटी के जल मे हल करे, और बाकी औषध के चूर्ण को बादामरोगन मे मिलावे, द्राक्षा को बीज रहित कर पीस ले, और हल किये हुये गुग्गुलु मे शहद और मुनक्का को मिलाकर पाक करे। पाक सिद्ध होने पर बाकी औषध का चूर्ण मिला दे, तैयार है।

मात्रा—७ माशे, अर्क, गाऊज़बान के साथ प्रातः वा सायं खिलावे।

गुण—यह अवलेह रक्त तथा वात अर्श मे बहुत लाभ करती है, रक्त को बन्द करती है, कोष्ठबद्धता नाशक है।

अतरीफल मुलैयन (विरेचक अवलेह)

हरड़ काबुली, हरड़, कृष्ण हरीतकी, आमला, त्रिवृत, प्रत्येक २ तोले, सौफ़, मस्तगीरूमी, उस्तोखदूस, सकमूनीया, रेवन्दचीनी, बादामतैल, प्रत्येक ५ तोले, शहद त्रिगुण, सब औषध को यथा विधि पीस छान कर बादामतैल मे मिलावे, सकमूनीया और मस्तगीरूमी को हलके हाथ से रगड़े, फिर मधु के पाक मे थोड़ा २ चूर्ण मिला कर अतरीफल बनावे। यदि इस योग मे शहद न मिलाकर औषध की वटी तथा टिकिया हाथों से वा मशीन से बना ले, तो इसे कुरस मुलैयन कहते है।

मात्रा---५ से ९ माशे तक, रात्री सोते समय अर्क सौफ़ से वा गरम जल से दे।

गुण---यह अतरीफ़ल उदरशूल और कोष्ठबद्धता के लिये उत्तम है, विबन्धजनित उपद्रव, पुराने शिरशूल तथा मस्तिष्क विकारों मे अतीव लाभकारी है।

अतरीफ़ल मुण्डी

हरीतकी, कृष्ण हरीतकी, बड़ी हरीतकी, आमला, धनिंया, पित्तपापड़ा, मधु यष्टि, उस्तोखदूस, १-१ तोला, मुण्डीपुष्प सबके समान भाग; सब औषध का वारीक चूर्ण कर बादामतैल से मिश्रित कर त्रिगुण शहद मे मिला कर अवलेह बनावे ।

मात्रा—१ से २ तोले तक योग्य अनुपान से दे ।

गुण—यह अवलेह आंखकी पुरानी सुरखी, (लालिमा) तथा आंख के अन्य रोगों मे अतीव गुणकारी है ।

अतरीफ़ल अफतीमीयूं (आकाशबेल अवलेह)

गुलकन्द सूर्यपाकी, मुनक्का (द्राक्षा बीजरहित), मधु साफ किया हुआ, प्रत्येक ५५ तोले पाच माशे, तीनो को गुलाब अर्क, अर्क गाऊज़वान, अर्क दारचीनी, अर्क फरंजमुशक (बनतुलसी) प्रत्येक आधा सेर मे हल कर उबाले, और अच्छी तरह निचोड कर छान कर पाक करे, इसके उपरान्त हरीतकी, हरीतकी बड़ी, कृष्ण हरीतकी, आमला, ज़रिशक गुठली निकाला हुआ प्रत्येक दो तोले ११ माशे, गाऊजबान, पित्तपापड़ा, उस्तोखदूस, आकाशबेल, अफसनतीन रूमी (मुसत्यारा), फरंज-मुशक (वनतुलसी), सनाय; वादरजबोया, (बिल्लीलोटन) प्रत्येक दो तोले आधा माशा, बसफाईजफसतकी बुरादा किया हुआ, त्रिवृत (ऊपर से खुरच कर और भीतर की लकड़ी निकाल कर), रासन (अभाव मे सोंठ), तुम्बे (इन्द्रायण) का भीतर का गूदा, रेवन्दचीनी, ज़रावन्द गोल, सौफ़ रूमी, बालछड़, हिजर अरमनी, लाजवरद, प्रत्येक १ तोला ५।। माशे, ग़ारीकून नरम और श्वेत १०।। माशे, हब्ब बलसान, अगर, दारचीनी, नागकेसर, पोदीना पहाड़ी, पोदीना नहरी, तज, मस्तगी, प्रत्येक सात माशे, सब को कूट छान कर मीठा बादाम तैल ११ तोले ८ माशे से स्नेहाक्त कर पाक मे मिलाकर अवलेह बनावे—यदि इसको अधिक गुणप्रद बनाना हो तो अयारजफैकरा (जिसका योग आगे आयेगा) ३।। माशे मिला कर गोलियां बनाकर प्रयोग करें ।

मात्रा—५ माशे ।

गुण—उन्माद के सब प्रकार में अतीव गुणकारी योग है ।

अतरीफ़ल मक्कल मुलैयन (विरेचक गुग्गुलु अवलेह)

हरीतकी बड़ी, बहेड़ा, हरीतकी कृष्ण, आमला, आकाशबेल, उस्तोख़दूस, प्रत्येक ३५ माशे, गुग्गुलु, अम्लतास का गूदा, प्रत्येक आठ तोले ९ माशे, प्रथम गुग्गुलु और गूदा अम्लतास को गन्दना बूटी के पानी मे हल कर ले, बाकी औषध को पीस छान कर बादाम-तैल से स्नेहाक्त कर त्रिगुण मधु मे पाक करें ।

मात्रा—४॥ माशे से १४ माशे । यदि इसमे त्रिवृत वा सनाय ३५ माशे और मिला दे तो अधिक गुणप्रद रहेगा ।

गुण—विबन्धनाशक है, अर्श मे लाभप्रद है ।

अनकरूवीया

रूमी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ हृदय है, इन निम्न-लिखित योगों मे भैंल्लातक डाला जाता है, जिसकी शकल हृदय से मिलती है, इसलिये इन योगों को अनकरूवीया कहते हैं । यह दो प्रकार का है । लघु, बृहत । प्रथम बृहत का वर्णन करते है ।

अनकरूवीया कबीर (बृहत)

अकरकरा, कलौजी, कुठ मधुर, काली मिरच, पिप्पली, वज-तुरकी प्रत्येक तीन तोले, सुदाब पत्र, हिबजत्याना, जरावन्द गोल, हीग, हब्बलग़ार, जुन्दबदस्तर (गन्धमारजारवीर्य), चित्रक, राई प्रत्येक १॥ तोले, भल्लातक का शहद १६ तोले, अख़रोटतैल वा गाय का घी २ तोले, शहद ५० तोले, सब औषध को पीसछान कर घी से स्नेहाक्त करे, फिर मधु का पाक कर सब औषध का चूर्ण भल्लातक के मधु समेत मिलाकर अच्छी तरह से घोट लें; तैयार है। ६ मास बाद उपयोग करे ।

मात्रा—४ माशे, प्रातःकाल अर्क सौफ़ से प्रयोग करें ।

गुण—अर्धांग, अर्दित, स्मृतिदोष, तथा मस्तिष्क के अन्य कफ़ज विकार के लिये उत्तम है, पाचक तथा वाजीकर है ।

अनकरूवीया सग़ीर (लघु)

कृष्णहरीतकी, हरीतकी, आमला, प्रत्येक ३ तोले, नागरमोथा, वालछड़, कुन्दर, वजतुरकी, पिप्पली, सोंठ, भल्लातक शहद प्रत्येक १॥ तोले, अख़रोट-तैल वा गाय का घी दो तोले, शहद त्रिगुण, बृहत की तरह इसको तैयार करे।

मात्रा—तथा गुण बृहत अनुरूप ही है।

नोट—अख़रोट का तैल भल्लातक के अवगुणों को नष्ट करता है।

बासलीकून

इसका अर्थ है आंखों को ज्योती देने वाला अंजन, यह भी दो प्रकार का है लघु तथा बृहत।

बासलीकून (बृहत)

समुद्रझाग, रौप्यमाक्षिक, प्रत्येक ५ तोले, मुसब्बर, मामीशा बूटी का घन सत्व, दग्ध ताम्र, प्रत्येक २॥ तोले, हरड़ २ तोले, मामीरा चीनी, मुरमक्की, नवसादर, हलदी, १॥–१॥ तोले, लवपुरीलवण, तमालपत्र, रांग का सफेदा, मिरचकृष्ण, पिप्पली, बालछड़, सुरमा असफ़ानी, प्रत्येक १–१ तोला, सैंधवलवण, लौग, छड़ीला, प्रत्येक ६ माशे–सब का बारीक चूर्ण कर कपड़े रेशमी मे छान कर रख दे, तैयार है। रात्री को सोते समय आंख मे लगावे।

गुण—प्रारम्भिक मोतीया बिन्दु, नेत्र दुर्बलता, तिमिर, नेत्र कण्डु, अर्म आदि नेत्र के समस्त कठिन रोगों मे सिद्ध प्रभाव शाली औषध है॥

बासलीकून (लघु)

अकलीमाये नकरा १ तोला साढ़े पांच माशे, यशद फूका हुआ पौने ९ माशे, बंग का सफेदा, लवपुरी लवण, नवसादर, मिरच, पिप्पली, भागरा, प्रत्येक पौने दो माशे, सबको वारीक पीसकर रेशमी कपड़े मे छान ले—रात्री को सोते समय लगावे।

गुण—बृहत योग अनुसार।

बरूद

बरूद आंख में शीतलता करने वाली औषध को कहते हैं।

बरूद कर्पूरी

(१) संगबसरी ५ तोले को अपक्व अंगूर के रस मे तीन दिन तक भावित करें, इसके पश्चात् कर्पूर ५ रत्ती डालकर भली प्रकार खरल करें और रेशमी वस्त्र से छान ले, आवश्यकतानुसार प्रातः सायं आंख में लगावे।

(२) संगबसरी १ तोला, कर्पूर ४ माशे दोनो को भली प्रकार खरल कर रेशमी कपड़े मे से छान ले, आवश्यकतानुसार आंख में लगावे।

गुण—नेत्र की लाली तथा गर्म्मी को दूर करके शीतलता उत्पन्न करता है।

बरशाशा

कालीमिरच, मिरच श्वेत, अजवायन ख़ुरासानी, प्रत्येक ५ तोले अहिफेन २॥ तोले, केशर १। तोले, वालछड़, अकरकरा, फरफीयून, प्रत्येक ३ माशे—मधु उत्तम ५५॥ तोले। सब औषध को वारीक करके, अच्छी तरह से शहद मे मिलाकर अवलेह वना ले, फिर इसको तीन मास तक जौ के ढेर मे रखे, इसके पश्चात् प्रयोग मे लावे।

मात्रा—४ रत्ती रात्री को सोते समय अर्क गाऊज़बान के साथ प्रयोग करे।

गुण—पक्षाघात, अर्दित, वातकम्प, स्मृतिनाश, अपस्मार, शिरोभ्रम, प्रलाप, अनिद्रा, उन्माद, प्रतिश्याय, मुख मं अधिक थूक का उत्पन्न होना, उदरशूल, यकृतशूल, कौड़ीशूल, जीर्णकास, प्रमेह, शीघ्रपतन में अपूर्व औषध है।

बनादकालबजोर

यह एक प्रकार की वटी है, जो रीठे के समान होती है, इसी कारण से उक्त नाम रखा गया है।

योग—मग़ज़ तुख़्म ख़यार १॥ तोले, मग़ज़ तुख़्म खरपजा, २ तोले, मग़ज़ तुख़्म कद्दु, तुख़्म ख़तमी, तुख़्म ख़ुरफ़ा, कतीरा, अजवायन ख़ुरासानी, गिरी बादाम छिले हुये, निशास्ता, रबुलसूस (मधुयष्टि घन सत्व), ख़शख़ाश बीज श्वेत, गिलअरमनी, करफ़स बीज, प्रत्येक ७-७ माशे—इसपगोल, आवश्यकतानुसार, सब औषध को कूटपीस कर, इसपग़ोल के जल में मिश्रित कर बेर अथवा रेठे समान वटी करे।

मात्रा—५ से ७ माशे ख़शख़ाश शर्बत से प्रयोग करे।

गुण—यह वटी मूत्र की जलन को दूर करती है, और वृक्क तथा मूत्राशय के व्रण के लिये उत्तम है, मूत्र को खोलकर लाती है।

पिण्डी

शुण्ठी १ पाव, गोंद नागोरी २ सेर, धावीपुष्प ७ तोले, सुपारीतेलिया १ पाव, समुद्रसोख, तालमखाना, शतावर, काकड़-सिगी, मूसली काली, प्रत्येक ७ तोले, मंजीठ २ सेर, माजू ३॥ तोले, तज १०॥ तोले, गोक्षरू १ पाव, कंगनी का आटा १ पाव, खाण्ड देसी सब मिलित औषध से त्रिगुण, घी आवश्यकतानुसार।

विधी—गोंद को घी में भून लें, बारीक पीस छान लें, आटे को भी घी मे भून लें, बाकी औषध को भी बारीक पीस छान ले खाण्ड का पाक कर सब औषध बीच मे मिला ३-३ तोले की पिण्डी बना ले।

मात्रा—प्रातः सायं, १-१ पिण्डी खाकर दूध पीवे।

गुण—श्वेत प्रदर के लिए अति उत्तम है, स्त्रियों के कटि-शूल को हटाती है।

प्यामशफा (आरोग्यनाद)

पिप्पली १ तोला, नवसादर का ऊर्ध्व पातित सत्व ६ माशे, सुहजनाबीज, बथुआ के मधुर बीज, हिंगुल भस्म, प्रत्येक ३ माशे—सबको बारीक पीस छान मिला ले।

मात्रा—४ चावल, ताज़ा जल से वा अर्क सौफ़ ६ तोले अर्क गुलाब ६ तोले, सकजबीन दो तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण--यह औषध, उदरशूल, मतली, वमन, अजीर्ण, आध्मान, अजीर्ण मे उपयोगी औषध है।

पेग़ाम सहत (आरोग्य सूचना)

नवसादर का ऊर्ध्व पातित सत्व, जिसे केले के रस से भावित करके उड़ाया गया हो, तीन तोले, पोदीना सत्व ६ माशे, कालीमिरच, पिप्पली, यवक्षार, मूलीक्षार, अपामार्गक्षार, कण्टकारी-लघुक्षार १-१ तोला, कलमी शोरा, बड़ी इलायची बीज, लवपुरी लवण, प्रत्येक तीन तोले, शुद्ध हिरमची (एक प्रकार की मिट्टी होती है) ५ तोले, सब औषध को खूब बारीक पीस छान ले।

मात्रा—४ रत्ती, अर्क सौफ़ से वा उष्ण जल से प्रयोग करे।

गुण—भूख लगाती है, पाचक तथा वातनाशक है। अजीर्ण, विसूचका, में अत्यन्त लाभप्रद योग है।

तरयाकात (विषनाशक औषध)

(अगद)

तरयाक ऐसी औषध को कहते है, जो विषो का नाश करने मे समर्थ हो।

तरयाक अरबा

हब्बुलगार, मुरमकी, हिबजतियाना रूमी, जरावन्द तवील (लम्बे) सब औषध को कूट पीस छानकर थोड़े से गाय के घी से स्नेहाक्त कर त्रिगुण शहद मे मिला लें, (शहद को प्रथम आग पर रख कर उसकी भागउतार लेनी चाहिये) और ४० दिन पश्चात प्रयोग करे।

मात्रा—१ माशा गरम जल से दे।

यह तरयाक सर्प, बिच्छू, मकड़ी सरीखे विषैले जानवरो के काटने के लिये अमृत है और मद्य के विष को भी नष्ट करता है। हृदय मस्तिष्क को बल देता है। दूषित वायु को नष्ट करता है। यकृत और प्लीहा को दोषों से निवारण करता है।

तरयाकालस्नान

मिरचकाली, अकरकरा, हीग, नरकचूर, लवपुरी लवण, १-१ तोला, सब औषध को कूट पीसकर आवश्यकता अनुसार शहद मे गूंद कर गलोला बनावें, और छाया मे सुखा लें, और आवश्यकतानुसार दांत के नीचे रखें। दंत पीड़ा शामक है।

(२) जुन्दबदस्तर, हीग, मिरचकाली, जरावन्द गोल, सोंठ, महीसाला, अहिफ़ेन, अजवायन खुरासानी, सब औषध समभाग लेकर बारीक पीस लें, और शहद मे गलोला बना लें, छाया मे सुखा कर आवश्यकतानुसार दात के नीचे रखे, दंतपीड़ा शामक है।

तरयाक समानीया

मुरमकी, हब्बुलगार, पाषानभेद, कुठ कड़वी, प्रत्येक २७ माशे, कालीमिरच, तज, प्रत्येक १८ माशे, केशर, दारचीनी प्रत्येक ९ माशे, शहद औषध से त्रिगुण, औषध को कूट पीस कर मधु में भली भांति मिला दे।

मात्रा—५ माशे, अर्क सौंफ़ वा ताज़ा जल से दे।

गुण—वायु कफविकार, पक्षाघात, अर्दित, अपस्मार, विष मे लाभप्रद है।

तरयाकालरह्म (गर्भाशय दोष निवारक)

सुपारी पुष्प, पिस्तापुष्प, ढाक गोंद, प्रत्येक ४ तोले, इन्द्रजौ मीठे २ तोले, वंग भस्म, प्रवाल भस्म, अकीक भस्म, प्रत्येक तीन माशे, मिश्री ८ तोले, सब औषध को कूट पीस कर चूर्ण करे, और पीछे भस्में मिलाकर शीशी में रखें।

मात्रा—२ माशे, जल के साथ खायें, वा माजून सुपारीपाक १ तोला में मिला कर खायें।

गुण—श्वेत प्रदर के लिये अति उत्तम है।

तरयाक नजला

उस्तोख़द्दूस ५ तोले, गाऊजबान पुष्प, धनियां, मोड़ीयो बीज, प्रत्येक १० तोले, काहु बीज, अजवायन ख़ुरासानी, डोडा-

पोस्त, प्रत्येक ३० तोले, खशखाशसफेद ४० तोले, इन औषधों को अर्धकुट करके रात्री को पानी मे भिगोवे । प्रात: जोश देकर छान लें, और खाण्ड ३।।। सेर मिला कर पाक करें, और अन्त में फूल गुलाव, धनियां, रबुलसूस (मधुयष्टि घन सत्व), निशास्ता, गोद कीकर, गोद कतीरा, मुरमक्की प्रत्येक ५ तोले, खूब बारीक करके पाक मे मिला लें।

मात्रा—७ माशे, अर्क गाऊजवान १२ तोले, शरवत खशखाश दो तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण—पित्त प्रतिश्याय, कास मे लाभप्रद है, चिरकाल तक सेवन करने से इसका प्रयोग जीर्ण प्रतिश्याय को नष्ट करता है।

तरयाक वबाई

मुसव्बर दो तोले, मुरमक्की, केशर, प्रत्येक, १-१ तोला, मधु १२ तोले, सब औषध को कूटपीस कर शहद में मिला कर अवलेह बनावें, वा अर्क गूलाब १० तोले में भली प्रकार खरल कर चने समान वटी करें, और इन पर चांदी पत्र चढ़ा देवें।

मात्रा—१ वा दो वटी, प्रातः वा साय अर्क गुलाव से दे।

गुण—यह तरयाक, वबाई रोग, विसूचिका, प्लेग, शीतला के लिये प्रतिबन्ध रूप मे विशेषतः प्रयोग किया जाता है, प्लेग के दिनों मे अर्क सौंफ १२ तोले के साथ सप्ताह मे दो बार प्रयोग करने से मनुष्य प्लेग समान भयानक रोग से सुरक्षित रहता है।

तरयाक जीकलनफ़स—(श्वासहर अगद)

वासा के पीले पत्र लेकर तीन सेर (जल से धोकर) ४ सेर जल मे उबाले, आधा सेर शेष रहने पर इसमे काकड़सिंगी और मधुयष्टि का बारीक चूर्ण प्रत्येक दो तोले डाल कर फिर पकावें, जब घन हो जाये, तो वटी बना लें, आवश्यकतानुसार १ वा दो वटी मुह मे रखकर चूसे, श्वास तथा सास का कष्ट से आना में उपयोगी औषध है।

तरयाक मुहासा

समुद्रझाग, कडवे बादाम छिले हुये, दोनों समभाग लेकर बारीक करें, और रात्री के समय उबटन की तरह मुख पर मलें, प्रातः गरम पानी से धो दें।

गुण—युवा अवस्था में जो मुख पर कील से निकलते हैं, उनके लिये उपयोगी हैं।

तरयाक ज़रब

चांदी पत्र ३॥ माशे, अगर, अजवायन खुरासानी, प्रत्येक ७ माशे, मोती अनविंधे, प्रवाल, कहरवा, अकीक, यशप सबज़, हाथी दाँत का बुरादा, वंशलोचन, बिलव, धनियां शुष्क भुना हुआ, सन्दल सफेद, बहमन सफेद, बहमन सुरख, सुपारी, नागरमोथा, जीरा कृष्ण भुना हुआ, मस्तगी रूमी, शाहजीरा, माजू सबज, गिलअमरनी, शादनजअदरी धुली हुई, गोंदकीकर, बेरका आटा, मौलसरी फल का आटा वा उन्नाव का आटा, मोड़ियो बीज, माईं छोटी भुनी हुई, उन्नाव भुना हुआ, पिस्ता के बाहर का छिलका, मुनक्का बीज निकाले हुए प्रत्येक १०॥ माशे, खुरफा बीज भुने हुये, खशखाश बीज श्वेत, बड़े अंगूर के दाने प्रत्येक १७॥ माशे बही का स्वरस, मीठे सेब का स्वरस, अमरूद का स्वरस, मोड़ीयों बीज स्वरस, समभाग, यह पानी औषध से दुगना वा त्रिगुण हो, सब औपध को कूट पीसकर स्वरसों मे भिगो कर सुखा ले। (अर्थात् औषध के बारीक चूर्ण को इन से भावित करे)।

मात्रा—३ माशे।

गुण—संग्रहणी, आमाशय क्षीणता, आन्त्र की शक्ति की क्षीणता तथा विबन्ध को दूर करता है। शारीरिक शक्तियों की क्षीणता को दूरकरता है।

फीरोज नोश

फ़रफीयुन, अकरकरा, बालछड, केशर, प्रत्येक २४ माशे, अहिफेन, अजवायन ख़ुरासानी, प्रत्येक ७० माशे, सब औषध

को कूट पीस कर मधु मे मिलाकर अवलेह बनावें, और ६ मास बाद प्रयोग करे ।

मात्रा—१ से ३ माशे ।

गुण—उदरशूल, कौड़ी शूल, वातज प्रवाहिका, स्मृति नाश तथा गर्भावस्था के कफ़ज रोगो मे लाभकर योग है ।

तरयाक

कर्पूर २। माशे, कस्तूरी, अम्बर अशहब, प्रत्येक ४।। माशे, अगर ५ माशे, जरजीर बीज, गाजर बीज, गन्दना बीज, हब किल-किल, इन्द्रजौ मधुर, प्रत्येक ७ माशे,बादाम के वृक्ष का गोद, पहाड़ी अजमोद ८।।। माशे, कुठ, दारचीनी, वच, केशर, मुस-त्यारा, अहिफेन, बालछड़, प्रत्येक १०।। माशे, निंबू का ऊपर का छिलका, हिबजत्याना, मुरमकी, हब्ब बलसान, बादरंजबोयापत्र, (बिल्लीलोटन पत्र) बादरजबोयाबीज, बन तुलसी बीज, नरकचूर, दरूंनज अकरबी, प्रत्येक १४ माशे, तमाम औषध को कूट पीस कर त्रिगुण शहद मे मिलावे ।

मात्रा—४।। माशे, ६ मास के बाद इसे प्रयोग करे ।

गुण—बल्य, वाजीकरण, हृदय को भी बल देता है ।

तरयाक सरतान

पाषाणभेद, कुन्दर प्रत्येक १७।। माशे, सरतान जले हुये ३५ माशे, सब औषध को कूट पीस कर मधु मे मिला कर अवलेह बनावें ।

मात्रा—४।। माशे ।

गुण—बावले कुत्ते के काटने मे अत्यन्त लाभप्रद है ।

तरयाक सगीर

हब्बुलगार, तुम्बे की जड, किबर जड छाल, जरावन्द लम्बे, मुसत्यारा, हलदी, हरमलबीज सब औषध बारीक पीस कर छान ले, और शुद्ध मधु मे मिलावें ।

मात्रा—४।। माशे ।

गुण—विषैले जानवरों के काटने से जो विषैला प्रभाव होता है, उसके लिये उपयोगी है, सर्दी के रोगों में भी लाभ प्रद है।

तरयाकलतीन

गिल मख़तूम, हव्वलगार, ईरसा, समभाग लेकर कूट पीस लें और गाय के घी से स्नेहाक्त करके शहद मे मिला दें।

मात्रा—४ रत्ती से १ माशा।

गुण—विषो के लिये विशेष औषध है। विशेषता यह है, कि विष से प्रभावित मनुष्य को यदि खिलाई जाये तो जब तक विष का प्रभाव रहेगा, वमन बन्द न होगी, विष का प्रभाव नष्ट होने पर वमन स्वयमेव बन्द हो जायगी। यदि किसी मनुष्य को इसके खिलाने से वमन न आये, तो समझना चाहिये कि इसने विष नही खाया।

तोतीयाकबीर

(१) सग बसरी १ तोला, स्वर्णवर्क, शुद्ध हिंगुल, प्रत्येक दो तोले, लौग, काली मिरच, प्रत्येक ४ तोले, मुक्ता ६ माशे, मक्खन २२ माशे, सबको बारीक पीसकर पहिले मक्खन से भावित करे, फिर निम्बुरस से इतना खरल करें, कि चिकनाहट नष्ट हो जाये, और निम्बु रस जजब हो जाये।

मात्रा—२ चावल, परिमाण मे ज्वारश बसवासा, वा ज्वारश ऊद ७ माशे मे मिला कर खिलाये। यक्ष्मा के अतिसार मे मफरहबारद ज्वाहर वाली वा अनोशदारू लोलवी ७ माशे मे मिला कर दे।

गुण—आमाश्य, आन्त्र की शक्ति क्षीणता के कारण जो अतिसार लगते है, उन मे विशेष उपयोगी है, यक्ष्मा अतिसार-आमाश्य, हृदय तथा यकृत क्षीणता मे प्रभावशाली औषध है।

(२) सग बसरी असली दो तोले, स्वर्णपत्र ३ माशे, लौग, मिरच काली, मुक्ता, १-१ माशा। प्रथम सग बसरी को गरम करके गायमूत्र मे १०१ बार बुझावें, फिर जल मे बुझावे, बाकी सब औषध को बारीक पीस कर इसमे मिला तथा गाय का मक्खन

मिला कर खरल करें। फिर निम्बुरस मे इतना खरल करें, कि चिकनाई नष्ट हो जाये। मात्रा, तथा गुण तोतीया कबीर वत है।

ज्वारश

ज्वारश उस औषध को कहते है, जो आमाशय के दोषों का निवारण करे और पाचक हो। यह भी एक प्रकार का अवलेह है, इस के बनाते समय निम्नलिखित बातो पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

(१) ज्वारश के औषध अधिक बारीक नही करने चाहिये। ताकि वह अधिक देरतक आमाशय मे ठहरकर उसपर अपना प्रभाव कर सके।

(२) ज्वारश मे मगजयात (मगज बादाम, कद्दू का मगज आदि) नही शामिल किये जाते, क्योकि यह आमाशय की पाचक शक्ति के लिये हानिकारक होते है।

(३) औषध के सम भाग मधु और मिलित औषध से द्विगुण खाण्ड डालनी चाहिये, प्रथम शहद को नरम आच पर रखे, जो झाग ऊपर आजावे, उनको उतार दे, इस से मधु मोम से साफ हो जाता है और फिर बू नही उत्पन्न होती। मधु वा खाण्ड का जो पाक बनाया जाये वह गाढा होना चाहिये। इसका ज्ञान करने की यह विधि है, कि चमचे से थोड़े से पाक को ऊपर उठाकर नीचे गिराये, यदि पाक चमचे मे से गिरते समय त्रिकोण बन जावे तो पाक ठीक है। यदि पाक को शुद्ध करना है, तो पकते समय इसमे दूध मिला दे, तो सब मल मैल फूल कर ऊपर आजायेगा। उस को पोने से उतार ले। पाक मोती की तरह चमकने लगेगा, बाकी औषध का चूर्ण पाक के शीतल होने पर मिलावे, मस्तगी, अम्बर, कस्तूरी को पाक मे न डाले, परन्तु बाकी औषध के साथ ही भली प्रकार खरल करके फिर पाक मे डाले, यदि अर्क वा खुशबू डालनी हो-तो पाक को आग पर से उतार कर उसी समय शीघ्रता से डाल दे, और ढकना बन्द कर दे। जब पाक शीतल हो जाये तो बाकी औषध का चूर्ण मिलाना चाहिये, औषध को अच्छी तरह मिला कर कुछ दिनों बाद प्रयोग करे।

ज्वारश आमला सादा

आमला शुष्क गुठली निकाला हुवा ८ तोले लकर गोदुग्ध मे भिगोवे, २४ घण्टे वाद निकालकर पानी से धो डाले, दूसरे पानी मे जोश दे, जब वह भली प्रकार गल जाये तव मलकर कपड़े से छान ले, और इसमे १ सेर खाण्ड मिला कर यथाविधि पाक करें।

मात्रा—७ माशे, अर्क गाऊजवान १२ तोले से प्रयोग करे।

गुण—यह ज्वारश हृदय तथा यकृत के पित्तविकारो को नष्ट करती है। हृदय तया आमाशय को बल देती है, पित्त अतिसार नाशक है।

ज्वारश आमला अम्वरी

आमला शुष्क साफ किया हुआ ४॥ तोले, धनियाँ, कृष्ण खुरफावीज, ९-९ माशे, वंशलोचन ७ माशे, सन्दल सफेद, समाक, ज़रिशक, गुलावपुष्प, वादरंजवोया, पिस्ता के वाहर का पोस्त, प्रत्येक ४॥ माशे, मुक्ता २ माशे, अम्वर अशहव, स्वर्णवर्क, चाँदीवर्क प्रत्येक १॥ माशे, खाण्ड १ पाव, प्रथम आमला को गौदुग्ध मे २४ घण्टे के लिये भिगोवे, फिर पानी से धोकर पीस ले, फिर खाण्ड और मुरव्वा वही के शीरा मे थोड़ा जल डाल कर पाक करे, और इसमे पिसा हुआ आमला शामल करके थोड़ा जोश दे, अव मुक्ता और अम्बर को तवाशीर के साथ खरल करके दूसरी औषध के चूर्ण मे मिलावे, फिर इस मिलित चूर्ण मे सोने के तथा चाँदीपत्र मिला कर खूव रगड़े, ताकि सव एकजीव हो जाये, ऐसा होनेपर पाक मे मिला दे, तैयार है।

मात्रा—५ माशे, अर्क गाऊज़वान १२ तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण—यह ज्वारश आमाशय को वल देती है, भूख बढाती है, दूषित वायु को ऊपर उठने से रोकती है, भ्रम, हृदयावसाद, पित्तातिसार मे लाभप्रद है, हृदय, यकृत को वल देती है।

ज्वारश आमला लोलवी

आमला दुग्धभावित ५४ माशे, धनिया, मगजबीज खुरफा छिला हुआ, प्रत्येक ५ माशे, तबाशीर सफेद, सन्दल सफेद, समाक (तितड़ीक), शुद्ध किया हुआ, ज़रिशक शुद्ध किया हुआ, गुलाबपुष्प, बादरंजबोया, पोस्त पिस्ता (उपर की कठोर त्वचा), प्रत्येक ४।। माशे, मोती ३ माशे, अम्बर अशहब, चादीपत्र, स्वर्णपत्र प्रत्येक १।। माशे, मिश्री, मधुर वहीफल का पानी । यह दोनो औषधो. से द्विगुण मात्रा मे लेकर यथा विधि पाक करे । पश्चात सब औषध मिलाकर ज्वारश तैयार करे ।

मात्रा ३ से ५ माशे तक ।

गुण—आमाशय को बल देती है, भूख लगाती है, यकृत के पित्त विकार के लिये उपयोगी है, हृदय बलय, आमाशयशोधक तथा पित्त अतिसार के लिये उपयोगी है ।

ज्वारश आमला

आमला शुष्क दुग्धभावित ५ तोले, पोस्त बीरून पिस्ता (पिस्ते के बाहर का छिलका) ५ माशे, तबाशीर, पोस्त तरज (नारगी के ऊपर का छिलका शुष्क करके प्रयोग करे) सन्दल सफेद, प्रत्येक १—१ तोला, मस्तगीरूमी, बड़ी इलायची का छिलका प्रत्येक ६ माशे, आमला को आवश्यकतानुसार जल से धोकर फिर और जल डालकर उबाले, आमला के गल जाने पर इसी पानी मे दो सेर खाण्ड मिलाकर पाक करे, फिर बाकी औषध के चूर्ण को मिलाकर ज्वारश तैयार करे ।

मात्रा—७ माशे अर्क गाऊज़बान से प्रात खाये, यदि शुष्क आमला के स्थान मे ताजे आमले प्रयोग किये जावे, तो अधिक गुणप्रद होगा, गुण ज्वारश आमला की तरह ।

ज्वारश आमला अम्बरी ख़ास

वहिदाना दो तोले को अर्क गुलाब, अर्क गाऊज़बान, प्रत्येक दो तोले मे भिगोवे, जरिशक दो तोले, आमला दुग्धभावित ७ तोले

को अर्क वेदमुशक, वादरजवोया का पानी, अम्ल अनाररस, मधुर अनाररस, प्रत्येक ५ तोले मे भिगोवे। प्रात काल मलकर छान लें, और वहिदाना का जल भी छान लें, अब इन दो जलो को मिलाकर १ सेर खाण्ड मिलाकर पाक कर ले, और शीतल होने पर चादीपत्र, स्वर्णपत्र, अम्बर अशहव प्रत्येक ३ माशे, मुक्ता, याकूत, (माणिक), कहरवा शमई, दारचीनी, प्रत्येक ४ माशे को एक साथ खरल करके पृथक रख ले, फिर पोस्त तरज ५ माशे, छोटी एलाबीज, वशलोचन, आवरेशम (अपक्व) कुतरा हुआ, सन्दल सफेद, गाऊजबान-पुष्प, धनियाँ, प्रत्येक १–१ तोला, सबको बारीक करके चूर्ण करे, और सब चूर्णो को एक साथ मिलाकर खरल कर थोडा २ कर पाक मे भली प्रकार मिलावे। ४–५ रोज रखने के बाद प्रयोग करे।

मात्रा—५ से ७ माशे तक अर्क गाऊज़वान १२ तोले से दे।

गुण—आमाशय को वल देती है, भूख बढाती है, हृदय बल्य, यकृत के पित्त विकार मे अति उत्तम है, पित्त अतिसार मे लाभप्रद है।

ज्वारश अनारीन

मधुर अनाररस, अम्ल अनाररस, प्रत्येक १–१ सेर, पोदीना सबज का रस १० तोले, गुलावजल १० तोले, वालछड, मस्तगी रूमी, प्रत्येक ७ माशे, वड़ी एलाबीज, पोस्त तरंज प्रत्येक ४ माशे, पोस्त पिस्ता, छोटी एलाबीज, प्रत्येक ३ माशे, खाण्ड १ सेर, प्रथम गुलावजल, पोदीना जल, मधुर तथा अम्ल अनाररस मे खाण्ड मिलाकर पाक करें, फिर दूसरी औषध का चूर्ण मिलाकर ज्वारश तैयार कर ले।

मात्रा—७ माशे, अर्क गाऊज़बान ५ तोले, अर्क गाजर ७ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—आमाशय तथा यकृत को वल देती है, भूख लगाती है, पित्त को शान्त करती है, वमन और मतली को रोकती है।

ज्वारश

हरड़ का मुरब्बा ५ नग, आमला का मुरब्बा ४ नग, धनिया १ तोला, छोटी इलायची ३ माशे, बेदमुशक अर्क आवश्यकतानुसार, खाण्ड औषध से दुगनी। प्रथम मुरब्बो को १ दिवसरात्री पानी मे रखे, फिर मुरब्बो को धोकर गुठली निकाल कर बारीक पीस ले, और धनिया तथा इलायची का चूर्ण भी मिला कर खरल करे। फिर खाण्ड का पाक कर यह सब मिला दे, तैयार है।

मात्रा—१ तोला

गुण—हृदय बल्य, भ्रम, उन्माद, हृदय क्षीणता को नष्ट करने मे उपयोगी है, दूषित वायु को आमाशय से ऊपर मस्तिष्क को जाने से रोकती है।

ज्वारश आबी ग़ैरमदक़ूक

चार सेर बही फल के टुकड़े ३२ सेर शराब मे हलकी आच पर पकावे। जब टुकड़े गल जाये, तो १० सेर झाग उतारे हुये मधु मे मिला कर दोबारा जोश दे। अब इसमे लौग दो तोले ८ माशे, बालछड़ ४ तोले, करफ़स बीज १३ तोले ४ माशे, मिरच काली २१ तोले चार माशे बारीक करके बही के टुकड़ो पर छिड़क दे। और मरतबान मे रख दे।

मात्रा—१ तोला रोज खाया करे।

गुण—आमाशय, आन्त्र को बलदायक है, अजीर्ण को नष्ट करती है।

ज्वारशअतरज

निम्ब का छिलका शुष्क पौने नौ तोले, लौग, जायफल, पिप्पली, छोटी इलायची, तज, पान की जड, सोंठ प्रत्येक ३॥ माशे, कस्तूरी १॥ माशे सब औषध का चूर्ण कर त्रिगुण झाग उतारे शहद मे मिलाकर ज्वारश बनावे।

मात्रा—७ से ९ माशे।

गुण—आमाशय के लिये वलप्रद है। कफविकारो के लिये

उत्तम है, पाक अग्नि को शक्ति देती है। शरीर को दृढ़ बनाती है।

ज्वारश बुकरात

करफ़स बीज, गाजरबीज, सोयेबीज, सौफ, धनियां, अजवायन, १-१ सेर, मस्तगी, अकरकरा, प्रत्येक ४॥ माशे; अगर, लौग प्रत्येक २। माशे, यथाविधि सब औषध्र को कूट छान कर तीन गुना मधु मे मिलाकर ज्वारश बनावें।

मात्रा—५ से ७ माशे।

गुण—आमाशय को बल देती है। वाजीकर है, खाने का पाचन करती है तथा भूख लगाती है, आध्मान को दूर करती है। आमाशय वृक्क, मूत्राशय की सर्दी को दूर करती है। मुख से पानी जाने को बन्द करती है। हिचकी तथा अम्लपित्त के लिये उत्तम है।

ज्वारश बसबासा (जावित्री अवलेह)

जावित्री, तज, लघु एलाबीज, सोठ, काली मिरच, दारचीनी, तगर, लौग, पिप्पली, प्रत्येक दो तोले, बृहत एला बीज ५ तोले, खाण्ड १ पाव मधु उत्तम आध सेर, सब औषध को कूटपीस छानकर, मधु तथा खॉड का पाक कर औषध चूर्ण मिलाकर ज्वारश तैयार करे।

मात्रा—७ माशे, प्रातः साय जल से वा अर्क सौफ़ के साथ प्रयोग करे, और भोजन पचने के लिये भोजनोपरान्त खावे।

गुण—यह ज्वारश आमाशय को नरम करती है, भोजन पचाती है, तथा वातनाशक है, वातिक शूल, वातिक अर्श में लाभप्रद है, पेट बढ़ने के रोग मे उत्तम है।

ज्वारश तिमरहिन्दी (इमली की ज्वारश)

इमली जिसे बीजो तथा छिलको से साफ कर लिया हो, बीज निकाली द्राक्षा, मधुर अनारदाना, प्रत्येक ४० तोले, प्रथम इमली और द्राक्षा को पृथक २ पीसकर मरहम जैसी बना ले, अनार का रस दबाकर निचोड़ ले, और इस पानी मे खॉड १

पाव, द्राक्षा तथा इमली डालकर पाक करे, पाक करते समय नीबू कागजी का रस वा सिरका और अम्ल अनाररस थोडा २ डालते रहे, जब पाक ठीक हो जाये, और ऊपर लिखित रस जजब हो जाये, तो रेहाधत्र ६ माशे, पोदीना पत्र १ तोला, काली मिरच, सोठ, तज, लौग, जायफल, अगर, लघु तथा वृहन एलाबीज, प्रत्येक ५ माशे, कस्तूरी १ माशा कूट छानकर पाक मे मिलावे, इस ज्वारश को धातु के बरतन मे न बनावे, अच्छी तरह से कलई किये हुये बरतन मे बनावे, वा मिट्टी के बरतन मे बनावे।

मात्रा—५ से ७ माशे।

गुण—आमाशय, दिल, यकृत को बल देती है, वमन को रोकती है, पैत्तिक अतिसार, गर्मी के दिनो मे पित्त की अधिकता तथा पैत्तिक अजीर्ण मे उपयोगी है, विसूचका मे लाभप्रद है।

ज्वारश तफ़ाह

आध सेर सेब उत्तम लेकर, बीज तथा छिलका रहित करके उत्तम मधु मे इस कदर जोश दे, कि गल जाये, फिर छानकर खाँड तथा मधु १--१ पाव मिलाकर पाक करे, और इस पाक में केशर २। माशे, काली मिरच, पिप्पली, लौग, प्रत्येक ९ माशे, सोंठ १८ माशे, अगर २२॥माशे, कूट छानकर मिलावे, चीनी वा शीशे के बरतन मे रखे।

मात्रा—५ से ७ माशे,

गुण—आमाशय, हृदय, मस्तिष्क को बल देती है, और पाचक अग्नि को बढाती है।

ज्वारश जालीनूस

बालछड, बड़ी एलाबीज, तज कलमी, दारचीनी, पान की जड़, लौग, नागरमोथा, सोंठ, कालीमिरच, पिप्पली, कुठ मधुर, ऊद-बलसान, तगर, मोड़ीयो बीज, चिरायता मधुर, केशर प्रत्येक दो तोला, मस्तगी रूमी ५ तोला, खाँड सब के मिलित समभाग तथा शहद दुगना, पहिले खाँड तथा मधु का पाक करे, और बाकी औषध का चूर्ण डाल कर ज्वारश त्यार करें।

मात्रा—७ माशा प्रातः सायं भोजनोपरान्त प्रयोग करे।

गुण—यह ज्वारश आमाशय के सब उपद्रवों मे लाभकारी है। पाचक सस्थान को शुद्ध करती है—भूख लगाती है विबन्ध हटाती है, वातिक शूल तथा अर्श म गुणप्रद है, आमाशयदोषजनित शिरशूल, दांतों से बू आना, कटिशूल, मूत्राशयशिथिलता, मूत्रातिसार, कफज कास, शारीरिक क्षीणता मे उपयोगी है, वृक्क तथा मूत्राशय अश्मरी मे भी लाभप्रद है, बालों को श्वेत होने से रोकती है।

ज्वारश जावीद

जायफल, जावित्री, लौग, दारचीनी, बालछड़, नागरमोथा, आमला साफ कीया हुआ, लघुएलाबीज, समभाग लेकर चूर्ण करे। और मिश्रित औषध से त्रिगुण उत्तम मधु लेकर पाक करके ज्वारश त्यार करे।

मात्रा—७ माशे, खाना खाने के बाद प्रयोग करें।

गुण—आमाशय को बल देती है, हज़म को सुधारती है, भूख बढ़ाती है, रंग निखारती है, बुद्धि तीव्र होती है, अर्श को लाभ करती है। मुँह की बदबू को नष्ट करती है।

ज्वारश जलाली

मुशक ६ रत्ती (कस्तूरी), अनीसून, करफसबीज, प्रत्येक ६॥। माशे, मिरच काली, जीरा (सिरके में भावित किया हुआ), मस्तगी रूमी, पोदीना शुष्क, अगर, प्रत्येक १८ माशे, बालछड़, तज, लौग, दारचीनी, बृहत् एलाबीज प्रत्येक तीन तोले ६ माशे, प्रथम कस्तूरी, रूमीमस्तगी, काली मिरच को खरल करे, पश्चात् सब औषध का चूर्ण कर मिला ले, अब दुगना मधु और दुगनी खाँड लेकर जल में मिला कर पाक करे। पाकसिद्धि पर बाकी औषध मिला कर ज्वारश त्यार करे।

मात्रा—५ से ९ माशे तक।

गुण—आमाशय क्षीणता को नष्ट करती है। वीर्य को बढ़ाती है। तथा सम्भोग शक्ति को उत्पन्न करती है।

ज्वारश खोजी

जायफल ५ नग, बहेड़ा, १० नग, कुठ कड़वी, बालछड़, हुब्ब बलसान, दारचीनी, नाख़ूना, पितपापड़ा, तालीसपत्र प्रत्येक १४ माशा, रेवन्दचीनी, जरावन्द गोल, छडीला प्रत्येक १७॥ माशा, कृष्ण हरीतकी, बृहत हरीतकी, (जेतून तैल मे चरब की हुई) प्रत्येक १७ माशे, हब अलास (मोडीयो के बीज) सब औषध के समान, तमाम औषध का यथाविधि चूर्ण करे, शहद सब औषध के समान और खॉड औषध से दुगनी, शहद और खॉड मे जल डाल कर यथाविधि पाक करे, पाकसिद्धि पर औषध का चूर्ण मिला देवे।

मात्रा--५ से ९ माशे, योग्य अनुपान से ।

गुण--यह ज्वारश दस्तों को बन्द करती है, खाना हजम करती है, जलोदर मे लाभप्रद हे, मूत्र खोलकर लाती है, त्यार करने के दो मास पश्चात प्रयोग करे।

ज्वारश खबसलअदीद (मण्डूर अवलेह)

शुद्ध मण्डूर, हरीतकी, कृष्ण हरीतकी, बहेड़ा आमला, फूल गुलाब, गुल अनार, अजखर मकी, सब वस्तु समभाग लेकर चूर्ण करे, और ऊत्तम सुरा मे उबाले, घन होने पर छान कर सुरक्षित रखे ।

मात्रा--प्रतिदिन आठ तोले पिया करे ।

गुण--आमाश्य की कमजोरी मे अतीव लाभकारी है ।

ज्वारश खुलंजान

करफ़स बीज, अनीसून, जीरा, शाह जीरा, तालीसपत्र, प्रत्येक १०॥ माशे, पिप्पली २१ माशे, सोठ २७ माशे, मिश्री औषध से त्रिगुण, तज, मिरच काली, खुलजान (पान की जड़), नागरमोथा प्रत्येक सात माशे, लघु एला बीज, दारचीनी, नागकेसर, प्रत्येक १०॥ माशे, सब औषध को कूट छानकर चूर्ण करे, मिश्री का पाक करके बाकी औषध मिला ज्वारश त्यार करे ।

मात्रा--सात माशे ।

गुण—खाने को हजम करती है, वायु और सरदी तथा जिगर के लिये उपयोगी है।

ज्वारश दारचीनी

लघुएला, तज प्रत्येक सात माशे, मस्तगी, अनीसून, सौंफ, दालचीनी प्रत्येक १०॥ माशे, लौंग, कलीमिरच, पिप्पली, बालछड़, तगर प्रत्येक १७॥ माशा, अगर, सोंठ प्रत्येक २१ माशे, पोदीना २७ माशे, सोंठ ३५ माशे, सब औषध का चूर्ण कर त्रिगुण मधु का पाक करके मिला दें।

मात्रा—५ से ७ माशे।

गुण—वृक्क, मूत्राशय और आमाशय की क्षीणता को दूर करती है। दूषित वायु तथा अन्य दोषों को नष्ट करती है।

ज्वारश ज़रहूनी सादा

गाजरबीज, करफ़सबीज, शलगमबीज, अजवायन, सौंफ, मगज तुखम खरबूजा, मगज तुखम खयारैन—करफसजड त्वक प्रत्येक १ तोला १० माशे, अकरकरा, दारचीनी, केशर, मस्तगी, अगर, प्रत्येक सात माशे, मधु त्रिगुण, यथाविधि मधु का पाक कर ज्वारश त्यार करें, कई इस योग में जावित्री, लौंग, कबाबचीनी, कालीमिरच प्रत्येक १० माशे, तथा अम्बर ७ माशे भी डालते हैं।

मात्रा—गुण—७ माशे, अर्क सौफ से प्रयोग करे। यह ज्वारश, कमर और वृक्को को बल देती है, वाजीकरण है। वीर्य को बढ़ाती है, मूत्र अतिसार में लाभप्रद है, शरीर को चुस्त रखती है, तथा आमाशय को ताकत देती है।

ज्वारश जरहूनी अम्बरी

साहलबमिश्री, बैल के शिश्नका शुष्क चूर्ण, चिड़िया (चटक) के शिर का मगज़, चिरायता मधुर, छुहारें, गोक्षरू, प्रत्येक ९ माशे, करफ़स-बीज, गाजरबीज, शलगमबीज, सोयेबीज, खरबूजाबीज, खयारैनबीज, हब्बेकिलकिल, हब्बलज़लम, अजवायन, सौंफ़, खोपा, चलग़ोजा के बीज, करफ़स जड़ प्रत्येक २२ माशे, अम्बरअशब ९ माशे, कस्तूरी २। माशा, जावित्री, लौंग, पिप्पलामूल, अकरकरा, कबाबचीनी,

सोंठ, पान की जड़, जायफल, गुलावपुष्प, तज, पिप्पली, शल्गम-बीज, तुखम जरजीर, प्याजवीज, गन्दनावीज, हब्वालरशाद, अंजरा-वीज प्रत्येक १० माशे, केशर, कुन्दर, मस्तगीरूमी, अगर, प्रत्येक १४ माशे, हालोवीज, वोजीदान, वहमन सुरख, वहमन सफ़ेद, शका-कलमिश्री, इन्द्रजी मधुर प्रत्येक १॥ तोले, खाँड ५२ तोले, मधु १ सेर, प्रथम खाँड और शहद का पाक करे, और औषध का चूर्ण कर कस्तूरी, अम्वर, केशर को भी वारीक करके चूर्ण में मिला कर खरल करे, फिर इस चूर्ण को पाक सिद्ध होने पर पाक में मिला दे।

मात्रा—५ माशे, अर्क गाऊज़वान १२ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह ज्वारश विशेष करके वृक्क तथा मूत्राशय को वल देती है, कमर को वलवान बनाती है, यकृत तथा मस्तक के लिये बलप्रद है, मूत्र अधिकता, वातरक्त, कफ़ज कास वा अन्य कफज, वातज उपद्रवों को शान्त करती है। वीर्य को वढ़ाती है, तथा वाजी-करण है।

ज्वारश ज़ंजबील (शुण्ठी अवलेह)

सोंठ ६ तोले, गोंद कीकर, छोटी इलायचीवीज प्रत्येक ३॥ तोले, जावित्री १२ तोले, खाँड ३४ तोले, खाँड का पाक करकै औषध का चूर्ण मिला देवे।

मात्रा—सात माशा, खाना खाने के पश्चात् अर्क सौंफ़ वा जल से दे।

गुण—भोजन को पचाती है, वात तथा कफदोष को नष्ट करती है, आधमान, अजीर्ण तथा विसूचका मे लाभप्रद है।

(२) जायफल १ नग, केशर ४ माशे, लौंग, दारचीनी प्रत्येक १८ माशे, गोंद कीकर, इलायचीबीज प्रत्येक तीन तोले, सोठ ६ तोले, निशास्ता १२ तोले, खाण्ड ३५ तोले खाण्ड का पाक कर औषध का चूर्ण मिलाकर ज्वारश तैयार करे। मात्रा तथा गुण प्रथम ज्वारश की तरह है।

ज्वारश सफ़रजली कावज

वहीफल आधा सेर, को पोस्त तथा बीजरहित करके सिरका उत्तम तीन पाव मे जोश दे, जव बही नरम हो जाये, तो कटकर

मलीदा सा बनाकर खाण्ड तथा मधु १-१ पाव भर मिलाकर पाक करे, पाक सिद्ध होने पर नीचे उतार ले; और सोंठ १॥ तोले, कालीमिरच, पिप्पली, लौंग, प्रत्येक ७ माशे, अगर २२ माशे, केशर २। माशे, सब का चूर्ण कर पाक मे मिलावें।

मात्रा—७ माशे, भोजनोपरान्त प्रयोग करे।

गुण—यह ज्वारश आमाशय को बल देती है, भूख लगाती है, पित्त अतिसार तथा पैत्तिक वमन को वन्द करती है, शरीर में चुस्ती तथा मन मे आनन्द उत्पन्न करती है।

ज्वारश सफ़रजली मुसहल

बही आध सेर को (छिलका तथा बीजरहित) सिरका उत्तम ३ पाव मे जोश दे, जब बही भली प्रकार मृदु हो जाये, तो पीस कर मलीदा करे, फिर इस मे मधु ३ पाव मिलाकर पाक करे, अब इलायची छोटी, बड़ी प्रत्येक २२ माशे, सोंठ, मस्तगीरूमी प्रत्येक १॥ तोले, पिप्पली, दारचीनी, केशर प्रत्येक १०॥ माशे, सकमूनीया भुना हुआ ३ तोले, त्रिवृत ८॥ तोले का चूर्ण कर पाक मे मिला ले।

मात्रा—७ माशे, अर्क सौंफ १२ तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण—यह ज्वारश रेचक है, आन्त्र को मल तथा दोषो से शुद्ध करती है, उदरशूल, आन्त्रशूल को नष्ट करती है, आमाशय बल्य तथा पाचक है।

ज्वारश शाही

मुरब्बा आमला ४ नग, मुरब्बा हरीतकी ५ नग, धनियां १ तोला, छोटी इलायची ३ माशे, खाण्ड औषध से दुगनी, अर्क बेद-मुशक आवश्यकतानुसार, प्रथम मुरब्बों को अर्क में अच्छी तरह पीस कर खाण्ड मिलाकर पाक करे, और अन्त मे बाकी औषध का चूर्ण कर मिलाकर ज्वारश बनावे।

मात्रा—५ से ७ माशे, प्रातःकाल अर्क गाऊजबान १२ तोले वा अर्क गाजर ५ तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण—यह ज्वारश भ्रम, उन्माद को दूर करती है, हृदय को बल देती है, मन मे उल्लास उत्पन्न करती है, विबन्ध नाशक है, ऊर्ध्व गत दोषों को दूर करती है।

ज्वारश शाही (नं० २)

ज़रिशक ९ तोले, आंवला मुरब्बा, हरीतकी मुरब्बा,६-६ तोले, अर्क गुलाब, अक बेदमुशक, शरबत अनार मधुर, शरबत अनार अम्ल प्रत्येक ९ तोले, खाण्ड ६ तोले, मुरब्बो और जरिशक को गुलाव, व बेदमुशक मे पीसकर बाकी सब वस्तु को मिलाकर ज्वारश त्यार करें ।

मात्रा तथा गुण ज्वारश शाही नं० १ की तरह है ।

ज्वारश शहनशाही अम्बरी

जरिशक ९।। माशे, मुरब्बा आमला, मुरब्बा हरड प्रत्येक २६ तोले,अर्क गुलाब, अर्क बेदमुशक प्रत्येक २६ तोले, शरबत अनार मधुर, शरबत अनार अम्ल, प्रत्येक ९।। तोले, सकजबीन ११ तोले, शरबत-नारज, शरबत लीमू, शरबत आलुबालु प्रत्येक १७ तोले, आबरेशम कुतरा हुआ १३ माश, गाऊज़बान पुष्प, फूल गुलाव, प्रत्येक २२ माशे, अम्बरशब ७ माशे, मुक्ता, स्वर्ण वर्क, चादी वर्क प्रत्येक १३ माशे, खाण्ड श्वेत १७ तोले, मुक्ता, स्वर्णपत्र, चांदीपत्र मे थोड़ी सी शक्कर मिलाकर बारीक चूर्ण करे, और बाकी औषध का भी बारीक चूर्ण कर अम्बरशब आदि के चूर्ण मे मिलावे, अब जरिशक और मुरब्बाजात को गुलाब तथा बेदमुशक अर्क में खूब बारीक पीसकर शर्बत तथा खाण्ड मिलाकर पाक करे, फिर इस पाक मे बाकी चूर्ण मिलाकर ज्वारश त्यार करे ।

मात्रा—५ माशे, अर्क गाऊजबान ५ तोले के साथ वा अर्क अम्बर ५ तोले के साथ प्रयोग करे ।

गुण—यह ज्वारश ख़फ़कान, भ्रम को दूर करके मन मे आनन्द तथा शांति उत्पन्न करती है, पक्वाशय को बल देती है, और अशुद्ध बाष्पो को नष्ट करती है, आमाशय शूल को भी नष्ट करती है ।

ज्वारश शहरयारान

सकमूनिया ३ तोले, दारचीनी, बालछड़, जायफल, लघुएला, मस्तगीरूमी, हब्ब बलसान, तज प्रत्येक ४।। तोले, केशर ४।। तोले, कालादाना, त्रिवृत प्रत्येक आठ तोले, खाण्ड तथा शहद सब औषध

के समान, प्रथम शहद तथा खाण्ड का पाककर बाकी औषध का चूर्ण मिलाकर ज्वारश त्यार करे।

मात्रा—७ माशे से १ तोला तक अर्क सौंफ १२ तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण—यह ज्वारश कवज खोलती है, आन्त्रशल को हटाती है, मूत्र के रुक रुक कर आने मे लाभप्रद है।

ज्वारश सन्दलीन

कस्तूरी, १॥ माशे, मस्तगी, केशर प्रत्येक ३॥ माशे, मुक्ता अनविधे, प्रवाल, खुरफ़ाबीज छिला हुआ और भुना हुआ, धनियां शुष्क भुना हुआ, पोस्त पिस्ता (दाहर का छिलका) प्रत्येक ७ माशे, सन्दल सुरख, गुलाव मे घिसा हुआ १७॥ माशे, सन्दल सफेद, गुलाव अर्क मे घिसा हुआ ३५ माशे, गुलाव आठ तोले ५ माशे, तरज का पानी १४ तोले सात माशे, खाण्ड १ सेर, प्रथम खाण्ड को अर्क गुलाव मे हल करके पाक करे, और पाक के पश्चात् तरज का पानी तथा मधु मिलाकर गाढ़ा करे, अब सब औषध का बारीक चूर्ण कर, पाक मे मिलाकर ज्वारश त्यार करे।

मात्रा—१०॥ से १७॥ माशे।

गुण—आमाशय, दिल, दिमाग, यकृत को वल देती है, पैत्तिक अतिसार मे लाभप्रद है, खफकान को दूर करती है।

ज्वारश तबाशीर

बंशलोचन, गुलाब पुष्प, चन्दन सफेद, धनियां, आमला प्रत्येक ३ तोले, हब्बालास, पोस्त अतरज (बिजौरा निबू का छिलका), पोस्त समाक (तितड़ीक का छिलका), मस्तगी प्रत्येक १॥ तोले, कर्पूर शुद्ध, ४॥ माशे, वही मधुर का रस, सब मिलित औषध से त्रिगुण, खाण्ड समान भाग, अर्क गुलाव १० तोले, अब गुलाव अर्क और वही का रस मिलाकर खाण्ड डाल पाक करे, और पाक सिद्धि पर बाकी औषध का चूर्ण मिला दे।

मात्रा—५ माशे, अर्क गाजर ५ तोले, वा अर्क गाऊज़वान १२ तोले के साथ दे।

गुण—यह ज्वारश आमाशय को बल देती है, पैत्तिक वमन, मतली, अतिसार और अजीर्ण दोषों को नष्ट करती है।

ज्वारश ऊद तुरश

बालछड़, लघु एला, केशर, नारंगी (बिजौरा निबू) का ऊपर का छिलका, लौंग, दारचीनी, बादरजबोया, मस्तगी रूमी, तबाशीर श्वेत, प्रत्येक तीन माशे, अगर ३ तोले, अम्लसेब रस १९ तोले, गुलाब २३ तोले, खाण्ड सफेद, मधु उत्तम प्रत्येक २६ तोले, निबू-रस ३४ तोले। सेबरस, निंबूरस, गुलाब अर्क मे मधु तथा खाण्ड मिलाकर पाक करे, और बाकी औषध कूट छान कर पाक मे मिला दें।

मात्रा—७ माशे, अर्क गाऊजबान वा केवल जल से दे।

गुण—पाचक, आमाशय बल्य, पित्त रोगो मे लाभप्रद है।

ज्वारश ऊद शरीन (मधुर अगर अवलेह)

तगर, केशर प्रत्येक ७ माशे, अगर, दारचीनी, जायफल, तज, छोटी इलायची, लौग, पान की जड, पिप्पली प्रत्येक १॥ तोले, खाण्ड १ पाव, मधु ३२ तोले, खाण्ड, मधु का पाक करे, और बाकी औषध मिला कर अवलेह निर्माण करे, किसी योग मे कस्तूरी २ माशे भी मिलाना लिखा है।

मात्रा—५ से सात माशे, अर्क गाऊजबान १० तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण—यह ज्वारश आमाशय को बल देती है, भूख लगाती है और पाचनकार्य करती है।

ज्वारश ऊद मुलैयन (विरेचक अगर अवलेह)

सौंफ, अनीसून, पोदीना, मस्तगी रूमी, लघु एलाबीज प्रत्येक ३॥ माशे, अगर हिन्दी, वंशलोचन प्रत्येक ७ माशे, फूल गुलाब, रानाय, त्रिवृत प्रत्येक ९ माशे, खाण्ड, शहद, गुलाब अर्क, १–१ पाव इन तीनों का पाक कर वाकी औषध का चूर्ण कर पाक मे मिलावें।

मात्रा—सात माशे, प्रात. को अर्क सौफ से खाये।

गुण—रेचक है, आमाशय बल्य तथा भूख लगाती है।

(२) ऊद कच्चा, मस्तगीरूमी. १-१, तोला, सकमूनीया ६ माशे, त्रिवृत ४ तोले, मधु त्रिगुण, मधु का पाक करके बाकी औषध का चूर्ण मिलाकर ज्वारश तयार करे।

मात्रा तथा गुण उपरिलिखित ज्वारश की तरह।

ज्वारश फ़लाफ़ली

कृष्ण मिरच, श्वेत मिरच, पिप्पली प्रत्येक २० तोले, ऊद-बिलसान १० तोले, करफ़सबीज, तज, तगर, सोठ, १-१ तोला, मधु त्रिगुण, मधु का पाक करके यथाविधि चूर्ण बनाकर ज्वारश तयार करें।

मात्रा—३ माशे, अर्क सौफ़ के साथ।

गुण—यह ज्वारश उदरशूल, दूषित वायु तथा चोथीया ज्वर में लाभदायक है।

ज्वारश फ़वाका

मधुर तथा अम्ल अनार का रस, मधुर सेब का रस, बही-स्वरस, अमरूद स्वरस, अगूर स्वरस, जरिशक शीरा, समाक का शीरा, निबू का रस, सब समभाग लेकर देगची मे पकावे, पाव भाग रहने पर खाण्ड आवश्यकतानुसार डाल कर पाक करे।

मात्रा—७ माशे से १ तोला तक भोजनोपरान्त प्रयोग करे।

गुण—हृदय, आमाशय, यकृत को बल देती है, वमन को बन्द करती है, पित्त का निष्कासन करती है।

ज्वारश फ़वाका अम्बरी

अम्ल अनाररस, मधुर अनाररस, अमरूदरस, अंगूररस, जरिशक का शीरा, समाक (तितंडीक) का शीरा प्रत्येक १७ माशे, खाण्ड आधा सेर डालकर पाक करे। और इस पाक मे मस्तगी रूमी, दारचीनी, बादरंजबोया प्रत्येक १०॥ माशे, कस्तूरी, अम्बरशब १॥, १॥ माशे का बारीक चूर्ण कर मिलाकर ज्वारश बनावे।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

गुण—आमाशय दुर्बलता, हृदय दुर्बलता को नष्ट करने मे अद्वितीय है।

ज्वारश करतम (कुसम्बे के बीज का अवलेह)

कुसम्बे के बीज, मधुर बादाम गीरी २-२ तोले, अनीसून, बस-फाईज फ़सतकी १-१ तोला, शहद सब के समान, खाण्ड दुगनी, औषध को कूट पीस कर, शहद खाण्ड का पाक बनाकर इसमें औषध चूर्ण मिला ज्वारश त्यार करे। यदि मस्तगी रूमी २ तोले मिला दी जाये, तो अधिक गुणप्रद होगी।

मात्रा—७ माशे, अर्क गाऊजबान १२ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—स्त्रियो के मासिक धर्म्म के विकारों को नष्ट करती है, मूत्रल, विबन्धनाशक, तथा आमाशय बल्य है।

ज्वारश कमूनी (जीरक अवलेह)

जीरा कृष्ण (सिरका भावित) तथा भुना हुआ २० तोले, सुदाबपत्र, शुण्ठि, बूरा अरमनी, ८-८ तोले, काली मिरच ६ तोले, मधु-उत्तम त्रिगुण, मधु पाक करके बाकी औषध का चूर्ण मिला कर ज्वारश त्यार करे।

मात्रा—७ माशे से १ तोला तक अर्क सौंफ १२ तोले से वा जल से दे।

गुण—आमाशय की सरदी को नष्ट करती है, आमाशय के कफज स्राव को शुष्क करती है, उदरशूल, अम्लपित्त, अजीर्ण को दूर करती है, कुछ रेचक है।

ज्वारश कमूनी कबीर (बृहत जीरक अवलेह)

दारचीनी, काली मिरच, श्वेत मिरच, बूरा अरमनी, प्रत्येक सात माशे, सुदाबपत्र १ तोला, कृष्ण जीरक शुद्ध ४। तोले, शुण्ठि मुरब्बा ३ तोले, हरीतकी मुरब्बा ५ तोले, सूर्य्यतापी गुलकन्द ८ तो०, खाण्ड २० तो०, मधु १० तोले, प्रथम गुलकन्द तथा मुरब्बो को जल मे बारीक पीस ले, और खाण्ड मिलाकर आग पर रखे, पाकसिद्धि पर बाकी औषधचूर्ण डाल कर ज्वारश त्यार करे।

मात्रा–७ माशे, अर्क सौंफ से प्रयोग करे।

गुण–यह ज्वारश उदर के वातविकार, वातिकशूल, आध्मान, हिक्का, अजीर्ण, वातोदर को नष्ट करती है, कुछ रेचक भी है।

ज्वारश कमूनी अकबर

दारचीनी, बूरा अरमनी, ५-५ तोले, मिरच कृष्ण, मिरच सफ़ेद प्रत्येक सात तोले, सुदाबपत्र १५ तोले, सोठ का मुरब्बा ४० तोले, जीराकृष्ण शुद्ध ५० तोले, हरीतकी मुरब्बा (गुठली निकाला हुआ) ६० तोले, गुलकन्द ५०० तोले, प्रथम मुरब्बाजात तथा गुलकन्द को पानी मे पीसकर पृथक् रखे, और मुरब्बों, गुलकन्द तथा औषध के समान भाग खाण्ड तथा शहद लेकर पाक करे, पाक होने पर औषध-चूर्ण को मिला दे, यदि इसमे सोठ, हरीतकी, त्रिवृत प्रत्येक ४० तोले का चूर्ण और मिला दे, तो यह ज्वारश अधिक लाभप्रद होगी।

मात्रा—७ माशे से १ तोला तक योग्य अनुपान से दे।

गुण—हृदय, यकृत को बल देती है, विबन्धनाशक है।

ज्वारश कमूनी सग़ीर (लघु)

जीरा कृष्ण शुद्ध १४॥ तोले, सुदावपत्र (छाया मे शुष्क किये हुए), शुण्ठि प्रत्येक ७० माशे, कृष्ण मिरच ५२॥ माशे, बूरा अरमनी १७॥ माशे, मधु त्रिगुण—यथाविधि ज्वारश त्यार करे।

मात्रा—५ से ९ माशे, अर्क सौफ १२ तोले के साथ दे।

गुण—आमाशय, तथा अण्डकोषो की सरदी को नष्ट करती है, अम्लपित्त तथा आन्त्रवृद्धि मे भी उत्तम है।

ज्वारश कमूनी मूसहल (रेचक योग)

कृष्ण जीरा शुद्ध १५ तोले, त्रिवृत सफेद ७॥ तोले, आकाशबेल-विलायती ५ तोले, कालीमिरच, शुण्ठि, पिप्पली प्रत्येक २॥ तोले, पोदीना, सुदावपत्र, सातर फारसी, बूरा अरमनी प्रत्येक १५ माशे, मधु औषध से त्रिगुण, यथाविधि पाक करे।

मात्रा—७ माशे, अर्क सौफ १२ तोले के साथ प्रयोग करे। इसके रेचन गुण की वृद्धि के लिये १ तोला की मात्रा मे दे, और ऊपर से अर्क सौफ ६ तोले, अर्क मकोय ६ तोले, शरबत दीनार ४ तोले मिला कर पिलावे।

गुण—यह ज्वारश आमाशय तथा आन्त्र के मल तथा दोषों का निष्कासन करती है, मुंह की बदमजगी, लालास्राव तथा कफ़ज रोग

में लाभप्रद है, आमाशय को बल देती है, तथा वायुविकारों के लिये उत्तम है।

ज्वारश मस्तगी

मस्तगी रूमी २। तोले, गुलाब अर्क ६ तोले, खाण्ड १ सेर, अर्क तथा खाण्ड को मिलाकर पाक करे, पाकसिद्धि होने पर मस्तगी को बारीक खरल करके इसमें मिला दे।

मात्रा—७ माशे, अर्क सौंफ़ से दे।

गुण—आमाशय के दूषित स्राव को शुष्क करती है, लालास्राव को नष्ट करती है, मूत्र की अधिकता को रोकती है, आमाशय और आन्त्र को बल देती है।

ज्वारश मस्तगी (बृहत)

मस्तगी रूमी, काली मिरच, अजवायन, कवावचीनी, कृष्णजीरक शुद्ध, श्वेत जीरक शुद्ध, अनीसून, फूल गुलाब, नारज के ऊपर का छिलका शुष्क, कासनीबीज, सौंफ़, कुन्दर, धनिया, बादरजबोया (बिल्ली लोटन), गाऊजबान पुष्प, कचूर, बालछड, केशर प्रत्येक ५ तोले, दारचीनी, सोठ, छोटी इलायचीबीज, प्रत्येक दो तोले, मधु उत्तम सब के समान, खाण्ड दुगनी, मधु तथा खाण्ड का पाक करे, बाकी औषध का चूर्ण कर मिलावे, केशर और मस्तगी को भी औषध के चूर्ण के साथ ही खरल करे।

मात्रा—५ माशे, अर्क सौफ़ १२ तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण—आमाशय दुर्बलता, यकृत की सरदी, कफजदोष, लालास्राव मूत्र अधिकता, अतिसार मे लाभप्रद है।

ज्वारश अम्बर

सोंठ, पिप्पली ३५—३५ माशे, जायफल १७॥ माशे, बृहतएला, लघुएला, जावित्री, दारचीनी, १४—१४ माशे, छड़ीला, मस्तगी, अम्बर, तज, लौंग, केशर प्रत्येक ७ माशे, कस्तूरी ३॥ माशे, औषध का चूर्ण करे, और शहद का पाक करके ज्वारश त्यार करे।

मात्रा—४॥ माशे।

गुण—आमाशय की सरदी, पाचनदोष, खफकान तथा गर्भाशय पीडा के लिये अति उत्तम है, स्त्रियों को बहुत उपयोगी है।

ज्वारश कसरी

अम्बराशब ४।। माशे, रोगन बलसान ७ माशे, अनीसून, नागकेसर, करफसबीज, जुन्दबदस्तर, अहिफेन, अजवायन ख़ुरासानी, बादरजबोया पत्र, मरजनजोश पत्र प्रत्येक १०।। माशे,लौग, कबावा, बड़ी इलायची, छोटी इलायची प्रत्येक १७।। माशे, अम्बर को रोगन बलसान मे हल करे, अहिफ़ेन शराब मे हल करे, सब औषध को त्रिगुण मधु के पाक मे डाल कर ज्वारश त्यार करे, दो मास बाद वा ६ मास के बाद प्रयोग करे।

मात्रा---१ से २ माशा।

गुण--आमाशय विकार, शूल, अजीर्ण तथा गर्भाशय विकारो मे लाभप्रद है।

ज्वारश कुदर

कुन्दर सफेद, प्रवाल की जड़ प्रत्येक १७ तोले ६ माशे, सोठ, पान की जड़, प्रत्येक १२ माशे, जायफल, लौग, प्रत्येक १२।। माशे, कस्तूरी १।।। माशे, सब औषध को पृथक कूटकर चूर्ण करे, त्रिगुण मधु मे मिलावे। मात्रा- १०।। माशे।

गुण---आमाशय की **सरदी** को हटाती है, उष्णता पैदा करती है, हृदयक्षीणता, दिल डूबना मे लाभप्रद है; कफ़ज अतिसार मे भी उपयोगी है।

ज्वारश

पोदीना शुष्क, काली मिरच, अजवायन, बड़ा जीरा, काशम, सुदाव पत्र, सोंठ, लौग, दारचीनी, समभाग ले, शहद त्रिगुण, ज्वारश तयार करे।

मात्रा---७ माशे।

गुण---अजीर्ण, आमाशय दुर्बलता को नष्ट करती है। दूषित वायू का निष्कासन करती है।

ज्वारश केसर

करफ़सबीज, अजवायन, अकरकरा, साम्भर लवण प्रत्येक २१।। माशे, पिप्पली, सोंठ, हरड, सकमूनीया, त्रिवृत प्रत्येक ४२ माशे,

खाण्ड ५२॥ माशे, यथाविधि ज्वारश त्यार करे।

मात्रा—४॥ माशे, योग्य अनुपान से।

गुण—आन्त्रशूल, वातरक्त को लाभ देती है, गाढे लेसेदार दोषो को बाहर निकालती हैं।

ज्वारश नारमुशक

छोटी इलायचीबीज ३॥ माशे, बडी इलायची, दारचीनी प्रत्येक ७ माशे, नागकेसर, लोग प्रत्येक १०॥ माशे, पिप्पली १०॥ माशे, सोठ २१॥ माशे, सकमूनीया ७० माशे, खाण्ड ८ तोले ५ माशे, यथाविधि ज्वारश त्यार करे।

मात्रा—३॥ से १०॥ माशे तक।

गुण—आन्त्रशूल तथा विबन्धनाशक है।

ज्वारश समाक (तितड़ीक अवलेह)

खरनूव नबती ८ तो० ९ माशे, समाक ७० माशे, मोडीयोबीज ३५ माशे, गोदंकीकर, गुलनार फारसी, अनारदाना प्रत्येक १७ माशे, द्राक्षा बीजरहित समानभाग, सब का चूर्ण कर ज्वारश बनावे।

मात्रा—१०॥ माशे।

गुण—पित्त अतिसार को नष्ट करती है।

ज्वारश अताई

बहमन सुरख, बहमन सफ़ेद, तोदरी सुरख़, तोदरी सफ़ेद, असपस्तबीज, ख़रबूजाबीज, जरजीरबीज, प्याजबीज, अमाजबीज, अजराबीज, कतीरा, हालोबीज, शलगमबीज, करफ़सबीज प्रत्येक १३॥ माशे, शकाकलमिश्री, छोटी इलायची, पिप्पली, पान की जड़, दारचीनी, सोठ, कुरफा प्रत्येक ४॥ माशे, तुरजबीन (यवास शर्करा), सब औषध से त्रिगुण, प्रथम तुरंजबीन को रात भर गौदुग्ध मे भिगोवे। प्रातः मल छानकर आग पर रखे, जब पाक हो जाये, तो चूर्ण की हुई औषध इसमे मिलाकर ज्वारश बनावे।

मात्रा—४॥ माशे गौदुग्ध से।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय को बल देती है, वीर्य को बढाती है।

ज्वारश खवसलहदीद (मण्डूर अवलेह)

कृष्ण हरीतकी, आमला, पिप्पली, सोठ, जीरा कृष्ण, हरीतकी, तज, नागरमोथा, दारचीनी, लौंग, जायफल, सोयेबीज, करफ़सबीज, गन्दनाबीज, जरजीरबीज, गाजरबीज, शलग़मबीज, प्रत्येक ३।। माशे, जावित्री, छोटी इलायची, गुलाबपुष्प, बड़ी इलायची, अगर, कस्तूरी प्रत्येक ७ माशे, सपदानबीज ८ तोले, मण्डूर शुद्ध (भस्म डाले, तो अधिक लाभप्रद है), सब औषध को समान भाग, कूट छानकर मधु का पाक कर ज्वारश त्यार करे।

मात्रा—४ माशे से १ तोले तक।

गुण—वाजीकर, पाचक, अर्शनाशक है, तथा आमाशय दुर्बलता और पाण्डु के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

ज्वारश विक्रमाजीत

गोंदकीकर आधा सेर को दो सेर गाय के घी मे भून ले, घी को पृथक् कर ले, असगन्ध, मूसली काली, सोंठ, १७–१७ माशे, कंकोल ५२।। माशे, लौंग, जायफल ३५–३५ माशे, दारचीनी, पानजड़, कबाबचीनी, जावित्री, अकरकरा १४–१४ माशे, सब औषध को कूट छान कर इस घी मे मिश्रित करें। जिसमे गोद भूना था, फिर शक्कर सुरख़ तथा खाण्ड प्रत्येक १।।–१।। सेर का पाक करके भूना हुआ गोद इसमे मिला देवें, और चमचा से चलावे। जब हलवा सा हो जाये, तो आग से उतारकर बाकी औषध का चूर्ण मिला देवे।

मात्रा—१ से तीन तोले तक प्रयोग करें।

गुण—पुँसक शक्ति को बढाती है कटिपीड़ा नष्ट कर उसे बलवान बनाती है, आमाष्य को बल देती है।

ज्वारश कुन्दरी

कुन्दर, खाण्ड १७।।–१७।। तोले, सोठ, पानजड़ ४२–४२ माशे, मिरच, पिप्पली ३५–३५ माशे, जायफल, लौग, छोटी इलायची, १७।।–१७।। माशे, कस्तूरी १।।। माशे, सब औषध को कूट छानकर ज्वारश त्यार करे।

मात्रा—७ माशे।

गुण---आन्त्रवृद्धि तथा अण्डकोषो मे जल भर जाने मे लाभप्रद है, आमाशय बल्य तथा पाचक है, वायू को नष्ट करती है ।

जौहर (ऊर्ध्वपातित सत्व)

जौहर किसी वस्तु के सूक्ष्म तत्वो को कहते है, जो किसी विधि विशेष से ग्रहण किये जाते है, और उनको ग्रहण करने का तात्पर्य, उस वस्तु के अधिक उपयोगी गुणो को हासिल करना होता है, जौहर उडाने की क्रिया को यूनानी चिकित्सा मे तसहीद कहते है, जिसकी विधि निम्नलिखित है–जिस औषध का जौहर उड़ाना हो, इसको अर्ध कुट्टित करके किसी जलीय औषध मे खरल कर सुखा लिया जाता है, दो प्याले लिये जाते है, जिनके मुख बिलकुल एक दूसरे से मिलते हो, नही तो घिसकर मिलाये गये हो, अब एक प्याले में औषध रखकर दूसरे प्याले से ढक दिया जाता है, मुलतानी मिट्टी वा चिकनी मिट्टी से सधिबन्द कर दी जाती है, धूप मे रखकर सुखा ले, और छोटे चूल्हे पर चढाकर नीचे मोटी बत्ती द्वारा आग दे, और ऊपर के प्याले पर कपडे की चार तह जल मे भिगोकर रखे, कपडे को बार २ तर करते रहे, अग्नि की उष्णता से जो जौहर उड़ेगा, वह ऊपर के प्याले की तली मे पहुचकर जमता रहेगा । यह क्रिया औषध के परिमाण और अग्नि के परिमाण अनुसार २–२॥ घण्टे वा न्यून अधिक समय तक जारी रखे, जब अग्नि शान्त हो जाये, और प्याले सरद हो जाये, तो सावधानी से खोलकर ऊपर के प्याले से जौहर उतार ले, और शीशी मे डाल दे ।

जौहर सेन

मल्ल श्वेत, को उत्तम सुरा (ब्राण्डी नं० १) मे अच्छी तरह खरल करे, दो प्यालो के भीतर रखकर यथाविधि जौहर उड़ाये ।

मात्रा---२ चावल, लबूब कबीर ७ माशे वा माजून जालीनूस लोलवी, वा मक्खन मलाई मे मिलाकर प्रयोग करे, प्रयोग के समय घी, दूध का अधिक प्रयोग करे, जलोदर रोग मे माजून दबीदलवरद ७ माशे मे मिलाकर प्रयोग करे ।

गुण---वाजीकरण है, भूख बढ़ाता है, शरीर मे शक्ति उत्पन्न करता है, कफ़ज विकार तथा जलोदर मे उपयोगी है ।

जौहर कलान

मल्ल श्वेत, रसकर्पूर, दारचिकना, शुद्ध पारद, शुद्ध हिंगुल, सब को समान भाग लेकर प्रातः से सायं तक ब्राण्डी मे खरल करें, फिर अर्क गुलाब में खरल करके यथाविधि जौहर उड़ाये।

मात्रा—२ चावल, पेड़े मे रखकर गोली बनाकर निगल जावे, (पेडे के स्थान पर कैपसूल मे डाल कर निगल ले) ताकि औषध दातो को न लगे, यदि इसके प्रयोग से गर्मी अधिक लगे, तो आधी स्फटिका मिला ले।

गुण—वात तथा रक्त के रोग, उपदंश, आतशक, कुष्ट मे विरेचन के पश्चात बहुत उपयोगी है।

जौहर रसकर्पूर (जौहर मुनक्का)

रसकर्पूर, मल्ल, दारचिकना, सबको समभाग लेकर ब्राण्डी मे खरल करके जौहर उडाये, कभी २ केवल रसकर्पूर को ही प्यालो मे रखकर जौहर उड़ा लेते है।

मात्रा—दो चावल, मुनक्का (काली द्राक्षा बीजरहित) मे रखकर और बन्द कर निगल ले, यह उपरोक्त औषध दातो को नही लगनी चाहिये, क्योकि मुंह आजाता है, दात तक गिर जाते है, सावधानी से निगलनी चाहिये।

गुण—वात तथा रक्त के दोष, आतशक तथा चर्मरोगों मे बहुत उपयोगी है।

जौहर लोबान

इसी को लोबान सत्व भी कहते है, लोबान का छोटा २ टुकडे करके यथाविधि जौहर उड़ाये।—

मात्रा—चार चावल, पान में रखकर खायें।

गुण—कफ का स्राव करता है, वाजीकर भी है।

जौहर नवशादर

नवसादर, साम्भर लवण प्रत्येक ५ तोले को अर्ध कुट्टित कर यथा विधि जौहर उड़ायें।

मात्रा—चार चावल, खाली पेट मुनक्का में रखकर निगल जाये।

गुण—पाण्डु, यकृत विकार तथा जलोदर में उत्तम है।

चटनी

चटनी चाटने वाली औषध को कहते है, यह कास श्वास के लिये बनाई जाती है, और ऊगली से चाटी जाती है, अब ऊगली का स्थान चमचा ने ले लिया है ।

(१) रबुलसूस (मधुयष्टि का घनसत्व), दारचीनी, पिप्पली, कीकर गोंद प्रत्येक ६ माशे, बादाम छिलका उतारे हुये १ तोला, मधु उत्तम ६ तोले, औषध को बारीक पीसकर शहद मे भली प्रकार मिलाये ।

मात्रा—६-६ माशे, दिन मे ३-४ बार चाटे ।

गुण—कास श्वास मे उत्तम है, कफ स्रावक है ।

चटनी नं० २

रबुलसूस (मधुयष्टि का घन सत्व), शकर तेगाल, मगज कद्दु, ख़शख़ाश बीज प्रत्येक ६ माशे, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, ३—३ माशे, बारीक पीसकर शरबत खशखाश ५ तोले में मिलाकर रखे ।

मात्रा—६—६ माशे, दिन मे ३—४ बार चाटे ।

गुण—वातज खुशक कास मे उत्तम है ।

चूर्ण

चूर्ण का अर्थ बारीक पीसी हुई वस्तु का नाम है, परन्तु लोक भाषा मे उसको चूर्ण कहते है, जो चटापटा तथा पाचक हो, भोजन को शीघ्र पचाये, इसमे लवण की अधिकता होती है ।

चूर्ण अक्सीर हज़म

सोंठ, मिरच, पिप्पली, नीबू सत्व ५—५ तोले, सैंधव लवण २० तोले, पोदीना सत्व १ तोला, बारीक पीस छानकर पोदीना सत्व मिलाकर खरल करे, और शीशी मे बन्द रखे ।

मात्रा—१ से २ माशे, भोजनोपरान्त ।

गुण—भोजन को पचाने मे अति गुणकारी है, अरूचि नाशक है, स्वादिष्ट है ।

चूर्ण (२)

नवसादर, सौभाग्य भस्म, मिरचकाली, ५—५ तोले, राई १० तोले, सैंधव लवण २५ तोले, पपिरमिण्ट सत्व १ तोला, पिपरमिण्ट के

सिवाये, बाकी सब औषध का बारीक चूर्ण कर तत्पश्चात् पिपररिण्ट मिलाकर खरल करे, इसकी शीशी का मुख बन्द करके रखे।

मात्रा---२-३ माशे, भोजनोपरान्त प्रयोग करे ।

गुण---उदरशूल, अजीर्ण, नाशक हे, भूख खूब लगाता है।

Pills हबूब वटी

जिन औषध की गोलियां (हबूव) बनानी हों, उनको अत्यन्त बारीक छान लिया जाये, मोती तथा अन्य मूल्यवान पाषाण, याकूत अकीक आदि को प्रथम अत्यन्त खरल करें, और फिर बाकी औषध मे मिलाकर खरल करें, ताकि सब अच्छी तरह मिलकर एकजीव हो जाये, इसके वाद पानी शहद, या जिस औषध के रस मे गूद कर वटी बनानी लिखी हो, उसमे गूदकर वटी बना ले, यदि वटी के प्रयोग मे इसपगोल, वहिदाना, वा गोंद लिखी हो, तो पानी मे भगोकर इनका लुआव (रस) लिया जाये, और इसमें दूसरी बारीक चूर्ण की हुई औषध डालकर भली प्रकार खरल कर वटी बनावे, यदि वटी की योग मे गुगगुल, रसौत, अहिफेन जैसी औषध हों, तो इस को प्रथम पानी मे घोल ले, और इस पानी को दूसरे चूर्ण मे मिलाकर वटी करे, यदि योग मे कस्तूरी, केशर आदि सुगन्धित औषध भी हों, तो इनको बारीक कीये हुये चूर्ण में मिलावे, मेरी सम्मति में केशर को पृथक अच्छी तरह खरल करें, और कस्तूरी को (Rectified spirit) रेकटीफाईड स्पिरिट मे हल करके डालें, मगजयात, द्राक्षा को पृथक बारीक खरल करके मिलावे, यदि योग मे एसी लेसदार औषध हो, जिनके कारण से वटी वनाते कष्ट होता हो, हाथ मे लगती हो, तो हाथ को बादाम तैल वा घी से चुपड़ लेना चाहिये, वा निशास्ता वारीक करके इसकी सहायता से वटी करे-यदि वटी के योग मे ऐसी भुरभुरी औषध हों जिनके कारण से वटी न बनती हो, तो गोंद के लेसदार रस (जल मे गोद को घोल ले) के साथ मिलाकर वटी करे, विषमुष्टि, वत्सनाभ आदि औषध को शुद्ध करके डाले मस्तगी को पृथक हलके हाथों रगड कर वाकी के चूर्ण मे मिलाकर खरल करें, कूटने से वह चिमट जाती है।

वटी समान बनानी चाहिये, छोटी कुरूप नही होनी चाहिये, इतनी कठोर न हो, कि आमाश्य मे हल ही न हो सके, और न इतनी मृदू कि उसका रूप ही विगड जाये, वटी को सुन्दर बनाने के लिये उसपर, स्वर्ण, चादी के वर्क चढ़ाये जाते है, इसकी विधि यह है, कि एक थाली तथा रकावी मे वरक विछाकर इन पर ताजा गीली गोलियां डाले, और रकाबी को हिलायें, ताकि तमाम गोलियों पर वरक अच्छी तरह चढ़ जाये, यदि गोलियां शुष्क हों, तो उनको गोंद के पानी से वा शहद से गीली कर लेवे, कभी २ कड़वी औषध के स्वाद को छिपाने के लीये उनपर खाण्ड चढ़ाई जाती है, उसकी विधि यह है, कि खाण्ड के खरपाक मे गोलिया डालकर हिलावे, जब पाक इनपर चढ जाये, और शुष्क हो जाये तो फिर इनको खूब हिलावे, ताकि आपस मे रगड़ खाकर एक समान हो जायें, परन्तु आजकल यह सब कार्य मशीन द्वारा अत्यन्त सरलता से और उत्तम रूप से हो जाते हैं।

हब्ब अहमर

मल्ल श्वेत, हड़ताल वर्की, हिंगुल प्रत्येक १-१ तोला, सबको १०१ निबूरस मे इतना खरल करे, कि सब रस जजब हो जाये, मूग समान वटी करे।

मात्रा तथा प्रयोग विधि—आधी वटी, मक्खन मे मिला कर प्रयोग करे, दूध, घी मक्खन का प्रयोग करे, विषयवासना तथा अम्लपदार्थ त्याजय है, शरद ऋतु मे प्रयोग करे, यदि इसके प्रयोग से भूख कम हो जाये, और कोष्ट बद्धता हो जाये, तो इसी योग मे १ तोला शुद्ध गन्धक मिलाकर वटी बनावे।

गुण—वाजीकरण है, वृद्धावस्था मे विशेष उपयोगी है।

हब्ब अजराकी

अजराकी (विषमुष्टि) शुद्ध १ तोला, कालीमिरच, पिप्पली ६-६ माशे, सबको बारीक पीसकर अर्क अजवायन से भावित कर चने समान वटी करे।

मात्रा—१ वटी, अर्क सौंफ ५ तोले अर्क गाऊजबान ५ तोले वा जल से दे।

गुण—शरीर को दृढ बनाती हैं, कफ़ज विकार मे बहुत उत्तम है।

—(२) शुद्ध विषमुष्टि दो तोले, दारचीनी, जावित्री, जायफल, लौंग, अगर, १-१ तोला, बारीक चूर्ण कर अजवायन के अर्क से भावित कर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण उपरोक्त है।

हब्ब असगन्ध (अश्वगन्धा वटी)

मूसली सफ़ेद, पिप्पली, अजवायन देशी, पिप्पलामूल, १-१ तोला, मेदालकड़ी, सोठ, असगन्ध नागोरी, शतावर २-२ तोले, (कई पिप्पलामूल के स्थान पर सुरंजान शरीन डालते हैं, और मेदा लकड़ी के स्थान पर विदारा डालते हैं), औषध को कूट छान कर आवश्यकतानुसार गुड डालकर मटर परिमाण वटी करे।

मात्रा—१ वटी, प्रातः अर्क सौंफ से दे।

गुण—कटिशूल, जोड़ो की पीडा, आमवात, उदर मे वायु विकार होना और कफ़ज विकार मे उत्तम है।

उपदंश वटी

शुद्ध जयपाल बीज, कुटकी, तुत्थ, १-१ माशा सबको पानी में अत्यन्त वारीक कर ३ वटी करे, और आम के अचार के टुकडे पर से ऊपर का छिलका उतार कर १ वटी पर लपेट कर खिलावे, इससे ३-४ रेचन तथा १, दो वमन आयेगी, इस तरह तीन दिन करें, आशा है, तीन दिन मे ही आतशक का रोगी निरोग्यता प्राप्त करेगा, बीच मे भारी अपथ्य वस्तु न खिलावे, घी दूध दें।

गुण—आतशक को दूर करती है।

हब्ब अशग़ार

हरीतकी, चित्रक, शुण्ठि, सज्जीक्षार, सौभाग्य भस्म, जीरा श्वेत, लवपुरी लवण, समभाग लेकर कूट छान ले, इसके पश्चात् दुगना पुराना गुड मिलाकर मूंग समान वटी करे।

मात्रा—प्रातः ३ माशा, उष्ण जल के साथ प्रयोग करे।

गुण—बढ़ी हुई प्लीहा को शीघ्र ही कम करती है।

अयारज वटी

अयारज फैकरा, त्रिवृत, ५-५, माशा, कालादाना, गारीकून, अनीसून प्रत्येक ४।। माशा, तुम्भे का भीतरी गूदा शुष्क, साम्भर लवण प्रत्येक २ माशे, सबको कूट छान कर बारीक कर अर्क सौंफ़ से भावित कर मूंग समान वटी करें ।

मात्रा---५ माशा, चादीपत्र में लपेट कर अर्क गाऊज़बान १२ तोले के साथ चार घडी रात्री रहे, प्रयोग करे, प्रातः उठकर पाचक तथा विरेचक योग (अम्लतास बिना डाले) पीवे, खाना न खाये, तीसरे पहर मूग की नरम खिचड़ी खिलावे ।

गुण---मृगी, सुप्ति रोग, शिरशूल पुराना तथा चक्षु रोगों में लाभप्रद है, मस्तिष्क को कफज दोषो से शुद्ध करती है ।

अयारजफ़ैकरा

बालछड, दारचीनी, ऊदबलसान, तज, मस्तगी, तगर, केशर, मुसब्बर, १-१ तोला, सब औषध को कूट छान कर अर्क सौंफ़ से छोटी २ वटी करे ।

मात्रा---७ माशे उष्ण जल से दे ।

गुण---मस्तिष्क तथा आमाशय को दोषों से निवृत करती है, गाढे कफ को छांटती है, शिरशल, अर्दित, अर्धांग, तथा आमवात मे उत्तम है, मस्तिष्क का शोधन करती है ।

हब्ब एजा रहीसा

अम्बरशहब, कस्तूरी, केसर, लौंग, प्रत्येक ३-३ माशे, जायफल ४ माशे, अकरकरा ५ माशे, जावित्री ६ माशे, छोटी एलाबीज ७ माशे, चोबचीनी ८ माशा, तेजबल ९ माशे, कबाबचीनी १० माशे, मदन मस्त ११ माशे, शतावर १ तोला, पिप्पली १३ माशे, ऊटगनबीज दो तोले, कौंचबीज २७ माशे, मालकंगनी २८ माशे, बनफ़शा जड़ २९ माशे, समुद्रसोख ३० माशे, मोचरस २३ माशे, इन्द्रजौ मधुर २ तोले, कौच जड २५ माशे, नागकेसर २७ माशे, मूसली सफेद २८ माशे, काला गुड़ २६ माशे, हिंगुल शुद्ध २१ माशे, सब औषध को कूट पीस छानकर गुड़ के शरबत मे मिला जगली बेर समान वटी करे ।

मात्रा—१ से दो वटी, प्रातः सायं।

गुण—शरीर को दृढ़ बनाती है, वृद्धों के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

हब्ब एतलाम (स्वप्नदोषहर वटी)

अजवायन खुरासानी, नीलोफ़रबीज, ख़शख़ाशबीज, गोंद कतीरा, गोंद कीकर, अहिफेन, काहुबीज, कृष्णखुरफ़ाबीज, शतावर, मधुर कद्दुबीज, तालमखानाबीज, पोटश्यम ब्रोमाईड (Potassium Bromide) १-१ तोले, बारीक पीसकर बरगद के दुग्ध मे खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी, रोगी को दूध से प्रयोग करें।

गुण—यह गोलीयां स्वप्नदोष मे अन्यन्त उपयोगी है।

अयारजवटी (विशेष)

बालछड़, दारचीनी, हब्ब बलसान, ऊद बलसान, तज, मस्तगी रूमी, तगर, केशर, १०–१० माशे, मुसब्बर ३। तोले, त्रिवृत, कालादाना, गारीकून, अनीसून प्रत्येक १० तोले, हिन्दी लवण, तुम्बे का भीतरी गूदा प्रत्येक चार तोले, सब औषध को कूट छानकर सौफ़ अर्क से भावित करके मूंग समान वटी करें।

गुण तथा मात्रा—पूर्व अयारज की तरह।

हब्बे असतस्का (जलोदर वटी)

शुद्ध गन्धक, शुद्धपारद, कमीला, त्रिवृत, तुम्बे की जड़, हरीतकी, काला लवण, १–१ माशा, शुद्ध जयपालबीज ४ माशे, प्रथम पारद गंधक की कज्जली करें, पश्चात् बाकी औषध का चूर्ण मिलाकर खरल करे, थुहर के दूध मे भावित कर, २–२ रत्ती की वटी करे।

मात्रा—१ वटी ऊंटनी के दूध से दें।

गुण—जलोदर के जल को दस्त लाकर निकालती है।

(१) हब्ब बतालसोत (स्वरभेद हरवटी)

कतीरा, निशास्ता, गोंद कीकर, रबुलसूस, मग़ज़कद्दू मधुर, मग़ज तुखम ख़यारैन, खाँड, समभाग, सब को कूट छान कर चने समान वटी करे, और १–१ गोली मुंह मे रखकर चूसे।

गुण—आवाज को साफ़ करती है, कफ खारज करती है, और कास के लिये उत्तम है।

(२) गोंद कीकर, गोंदकितीरा, रबुलसूस, शकरतेग़ाल, मगज कदू शरीन, खयारैन मगज, निशास्ता, खाँड प्रत्येक, ५–५ तोले, सब औषध को कूट छान कर चने समान वटी करें।

गुण तथा मात्रा—प्रथम योगवत।

हब्ब बुखार

कुनीन सल्फ (Quinine Sulphas), गिलोय सत्व ६-६ माशे, वशलोचन २ तोले, गोंदकीकर ३ माशे, कूट पीस छान कर मूंग समान वटी करे।

मात्रा—ज्वर आने से पूर्व १ वटी प्रात, मध्यान्ह, सायंकाल प्रयोग करे।

गुण—विषम ज्वर मे उपयोगी है, विरेचन के बाद प्रयोग करने से अधिक लाभप्रद सिद्ध होगी।

(२) कुनीन सलफ (Quinine Sulphas), गिलोय सत्व, जहरमोहरा, वशलोचन, १-१ तोला, असपरीन (Aspirine), (Potassium Bromide) पाटेशयम ब्रोमाईड, ६–६ माशे, सब को बारीक पीसकर चने समान वटी करे।

मात्रा—६ वटी, प्रतिदिन, २-२ की मात्रा मे अर्क गाऊजबान, सौफ अर्क, अर्क खस, अर्क सन्दल प्रत्येक ४ तोले, शरबत बजूरी ४ तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण—बारी के ज्वरों में लाभप्रद है।

हब्ब बनफशा

बनफशापुष्प, गुलाबपुष्प, ७-७ माशे, रबुलसूस २ माशे, त्रिवृत, सकमूनीया, प्रत्येक ४॥ माशे, ग़ारीकून, चलनी मे छाना हुआ, ३॥ माशे, सब को कूट छान कर ताज़ा जल से वटी करें।

मात्रा—७ माशे, चार घड़ी रात्री रहे पानी के साथ प्रयोग करे, प्रात पाचक योग का प्रयोग करे।

गुण—वक्ष, और मस्तिष्क के कफज स्राव का शोधन करती है, सांसफूलने मे लाभप्रद है, शिरशूल तथा चक्षु रोग मे लाभप्रद है।

हब्ब बवासीर (अर्शवटी)

(१) रसौत, कृष्ण हरीतकी, गन्दनाबीज समभाग लेकर वटी करे, वटी छोटे बेर समान करे।

मात्रा—२ वटी, प्रात. २ सायं जल के साथ दें।

गुण—अर्श मे लाभप्रद है।

(२) मग़ज तुखम बकायन, मगज तुखम नीम, रसौत, काली मिरच, १-१ तोले, कूट पीस कर जगली बेर समान वटी करे।

मात्रा तथा गुण—प्रथम योग समान।

(३) मगज तुख़म नीम—मगज तुखम बकायन, मगज शफतालु, रसौत सम भाग लेकर मूलीरस से भावित कर, १-१ रत्ती की वटी करें।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, प्रात १ साय अफतमीयू (आकाशवेल) के अर्क के साथ और कवज मे अर्क गुलाब ४ तोले, शरबत बनफशा १ तोला के साथ खाये, अर्श मे उपयोगी है।

हब्ब बवासीर वादी (वातिक अर्शहरवटी)

ढाकजड़, जदवार, १-१ तोले, हबज़ुल्याना २ तोले, हालोंबीज, रसौत, हरडछाल, बहेडा छाल, आमला, रसकर्पूर, रक्तचन्दन, श्वेत-चन्दन २-२ तोले, कथ्थश्वेत, नीमपत्रस्वरस, मुण्डीरस, महन्दीपत्र स्वरस, बड़ी इलायचीबीज, काली मिरच, जीरा सफ़ेद, गुलाबपुष्प, तबाशीर, रेवन्दचीनी, १-१ तोला, मूलीपत्र स्वरस १॥ सेर, मधु उत्तम २४ तोले, सब औषध को बारीक करे, दो दिन तक औषधियो के स्वरस में खरल करे, फिर मधु मिलाकर वटी करे।

मात्रा—प्रात. सायं १—१ वटी, अर्क केवडा, अर्क सौफ के साथ प्रयोग करे।

गुण—यह वटी वातिक अर्श मे लाभप्रद है।

हब्ब पान

शुद्ध मल्ल श्वेत, कत्थ श्वेत, तबाशीर प्रत्येक तीन माशे, पान के रस मे एक दिन खरल कर मूग समान वटी करे।

मात्रा–१ वटी, प्रातः मक्खन मे लपेट कर खावें, प्रयोगसमय, दूध, घी, मक्खन का अधिक प्रयोग करे।

गुण–आतशक में अति उत्तम है।

हब्ब पपीता

पपीता अग्रेजी, ६ माशे, सोंठ, पिप्पली, मिरच, पोदीना शुष्क, आकफूल, लवपुरी लवण, कृष्ण लवण, १-१ तोले, तमाम औषधियों को कूट छान कर, निंबुरस से भावित कर, चने समान वटी करें।

मात्रा––१-१ वटी प्रातः-सायं भोजनोपरान्त प्रयोग करें, आमाशय के रोग मे २ वटी जल के साथ खावें।

गुण–पाचक है, उदरशूल, वातशूल, विसूचिका, आध्मान में लाभप्रद है।

(२) पपीता देसी–(बीज और छिलकों से शुद्ध कीया हुआ) ५ तोले, सोंठ, नवसादर, लवपुरी लवण, काली मिरच, १-१ तोले सब को कूट छान कर, निबु रस से भावित करे, मटर समान वटी करें। मात्रा तथा गुण उपरोक्त ही है।

हब्ब पचलोना

साम्भर लवण, काला लवण, सैन्धव लवण प्रत्येक १७॥ माशे, पोदीना शुष्क, कचूर प्रत्येक २२॥ माशे, हरड़, बहेड़ा, आमला, मिरच, पिप्पली, सोंठ, वज तुरकी, जीरा कृष्ण, जीरा श्वेत प्रत्येक ३ तोले ४॥ माशे, धनिया १० तोले, अजवायन, सौफ़ २०–२० तोले, सब औपध को कूट छानकर निंब रस से भावित करे, फिर आमला सबज के रस से भावित करे, शुष्क होने पर निबू रस के साथ जंगली बेर समान वटी करे।

मात्रा––दो गोली भोजनोपरान्त जल से ले, यदि आमला सबज्र न मिल सके तो शुष्क आमला को गरम पानी मे रात्री भर भिगो रखे। प्रात· जल निथार कर काम मे लाये।

गुण––आमाशय को वल देती है, पाचक है, भख लगाती है, वायु को नष्ट करती है, हिक्का मे भी उपयोगी है।

हब्बपेचश (प्रवाहिकाहरवटी)

कर्पूर, हरड़, माजू, आमला, अहिफेन, केशर, समभाग लेकर अर्क गुलाब मे खरल करे। चने समान वटी करे।

मात्रा—१-१ वटी, प्रात, मध्यान्ह, साय प्रयोग करे, यदि आन्त्र मे अशुद्धि हो, तो पहिले एरण्ड तैल का प्रयोग रोगी को कराके दस्त आ जाने पर इस वटी का प्रयोग करे।

गुण—प्रवाहिका, शूल, मरोड़ और खून आने मे लाभप्रद है।

(२) अहिफेन, सौभाग्यभस्म, मस्तगीरूमी, हिंगुल, समभाग लेकर मूग समान वटी करे।

मात्रा—जल से दिन मे १-१ वटी तीन वार दे।

गुण—प्रवाहिका मे अत्यन्त उत्तम है।

हब्ब ताप बलगमी (कफज्वरहर वटी)

मगज़करजुआ, पिप्पली १-१ तोला, जीरा सफेद, कीकर के ताजे पत्ते, ६-६ माशे, सब औषध का बारीक चूर्ण कर फिर १-१ पत्ता कीकर का डाल डाल कर खूब कूटे, सब समाप्त होने पर और एकजीव हो जाने पर पानी मिलाकर चने समान वटी करें।

मात्रा—१-१ वटी, दिन मे ३ बार चार २ घण्टे वाद दे।

गुण—कफ़ज ज्वर मे उत्तम है।

हब्ब-तुरश मशतही (गन्धक वटी)

शुण्ठि, कृष्ण लवण, पथर लवण, एक २ पाव, लौग, पिप्पली, शुद्ध गन्धक, प्रत्येक २८ माशे, छोटी इलायची १४ माशे, सब औषध को बारीक पीसकर निंबु रस से ७ वार भावित करे, फिर चने समान वटी करे।

मात्रा—दो, दो वटी भोजनोपरान्त दे।

गुण—पाचक है, अजीर्ण तथा अरुचिनाशक है। वातिक अर्श में भी लाभप्रद है।

हब्ब तन्कार (सौभाग्य वटी)

सोहागा चौकिया दो तोले, अजवायन खुरासानी २॥ तोले, काली मिरच १२ तोले, मुसब्बर १८ तोले, कूट छानकर घीकुमारी स्वरस से भावना देकर चने समान वटी करे।

मात्रा—दो गोली, सोते समय वा भोजनोपरान्त खावे।

गुण—आमाशय का भारीपन, क्षीणता, तथा विबन्ध को नष्ट करती है। वायु को नष्ट करके भूख लगाती है।

हब्ब जालीनूस

चिड़ों के शिर का मग़ज़, शकाकल मिश्री, सफ़ेद प्याज़बीज, गन्दनाबीज, जरजीर बीज, रेगमाही, छुहारे १—१ तोला, कस्तूरी ३ माशे, औषध को कट छानकर कस्तूरी मिलाकर चने समान वटी करे।

मात्रा—२ वटी, प्रातः अर्क मालहम ५ तोले के साथ वा पाव भर दूध के साथ जिसमे मधु वा अण्डे की जरदी मिली हुई हो, प्रयोग करे।

गुण—यह वटी शरीर को दृढ़ वनाती है, वाजीकरण है, सम्भोग पश्चात की क्षीणता को नष्ट करके बल देती है।

हब्ब जदवार

एक सालम नारियल का छिलका दूर करके एक पैसा बराबर स्थान काट ले, अब उस सुराख द्वारा अहिफेन ५ तोले, जदवार खताई ४ माशे, केशर ४॥ माशे, बारीक करके नारियल मे भर दे। पीछे सुराख़ बन्द करके माष के आटे का १ अगुल मोटा लेप लगा दे, और दस सेर उबलते दूध मे जोश दे, जब दूध का खोया हो जाये तो नारियल को इतने घी मे डालकर भूने, कि नारियल डूब जाये। ऊपर का आटा सुरख होने पर घी से निकाल ले, अब आटे को पृथक् करके नारीयल को भीतर की औषध समेत अच्छी तरह कूटे। मरहम की भांति हो जाये, तो कटा हुआ नारियल ७॥ तोले, अम्बर, रोगन बलसान, २—२ माशे, जायफल, अजवायन खुरासानी, गोंद कीकर, प्रत्येक २। माशे, जावित्री, बहमन सुरख़

और सफ़ेद, मायाशुत्रअहराबी, बादरंजबोया, पान की जड़ प्रत्येक ४।। माशे, खाण्ड सफेद १ तोला कूट छान बारीक करके चने समान वटी करे, ऊपर चादी के वर्क चढ़ाये ।

मात्रा—एक वा दो वटी, मधु से मीठे कीये हुए दूध से ले ।

गुण—यह वटी शीघ्र पतन, प्रमेह, खासी, पुराने जुकाम मे लाभप्रद है । इसके प्रयोग से अहिफेन की आदत छूट जाती है, बलप्रद तथा वाजीकरण है ।

हब्ब जरयान

जायफ़ल, जावित्री, माजू,-हरमल, मस्तगी, नागकेसर, मोचरस, तज, गुल सुपारी, छालीया, छोटी इलायचीबीज, तबाशीर, अजवायन ख़ुरासानी, अहिफेन, केशर १–१ माशा, सबको कूट छान कर इसपगोल का लुआब मिलाकर चने समान वटी करे ।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, प्रात. गौदुग्ध से प्रयोग करे, यह वटी प्रमेह, वीर्य का पतलापन, शीघ्रपतन, चेहरे की बेरोनकी, शरीर की क्षीणता आदि को नष्ट करती हैं ।

(२) सिघाडे के आटे को बरगद के दुग्ध मे और थोडा सा जल मिलाकर भावित करके चने समान वटी करे ।

मात्रा—दो-दो वटी, प्रात साय गौदुग्ध से प्रयोग करे ।

(३) सिघाडा शुष्क २ माशे, वशलोचन ३ माशे, कत्था सफेद १ तोला, तीनो वस्तु को बरगद के दुग्ध मे खरल कर चने समान वटी करे ।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, प्रात १ सायं दूध से प्रयोग करे। प्रमेह मे उत्तम है ।

हब्ब जरयान विशेष

बहमन सुरख, बहमन सफेद, अक़रकरा, गोक्षरू, ऊटगनबीज, मूसली श्वेत, शाहदाना, मायाशुत्रअहराबी, गोद कीकर, मोचरस, साहलबमिश्री, अपक्व कीकर की फली, वगभस्म, वशलोचन, गोदढाक, तालखाना, समुद्रसोख, बीजबन्द, १–१ तोला, अभ्रकभस्म,

हब्ब तन्कार (सौभाग्य वटी)

सोहागा चौकिया दो तोले, अजवायन खुरासानी २॥ तोले, काली मिरच १२ तोले, मुसब्बर १८ तोले, कूट छानकर घी-कुमारी स्वरस से भावना देकर चने समान वटी करे।

मात्रा—दो गोली, सोते समय वा भोजनोपरान्त खावे।

गुण—आमाशय का भारीपन, क्षीणता, तथा विबन्ध को नष्ट करती है। वायु को नष्ट करके भूख लगाती है।

हब्ब जालीनूस

चिड़ो के शिर का मग़ज़, शकाकल मिश्री, सफेद प्याजबीज, गन्दनाबीज, जरजीर बीज, रेगमाही, छुहारे १-१ तोला, कस्तूरी ३ माशे, औषध को कट छानकर कस्तूरी मिलाकर चने समान वटी करे।

मात्रा—२ वटी, प्रातः अर्क मालहम ५ तोले के साथ वा पाव भर दूध के साथ जिसमे मधु वा अण्डे की जरदी मिली हुई हो, प्रयोग करे।

गुण—यह वटी शरीर को दृढ़ बनाती है, वाजीकरण है, सम्भोग पश्चात की क्षीणता को नष्ट करके बल देती है।

हब्ब जदवार

एक सालम नारियल का छिलका दूर करके एक पैसा बराबर स्थान काट ले, अब उस सुराख द्वारा अहिफेन ५ तोले, जदवार खताई ४ माशे, केशर ४॥ माशे, बारीक करके नारियल मे भर दे। पीछे सुराख़ बन्द करके माष के आटे का १ अगुल मोटा लेप लगा दे, और दस सेर उबलते दूध मे जोश दे, जब दूध का खोया हो जाये तो नारियल को इतने घी मे डालकर भूनें, कि नारियल डूब जाये। ऊपर का आटा सुरख होने पर घी से निकाल ले, अब आटे को पृथक् करके नारीयल को भीतर की औषध समेत अच्छी तरह कूटे। मरहम की भाति हो जाये, तो कटा हुआ नारियल ७॥ तोले, अम्बर, रोगन बलसान, २-२ माशे, जायफल, अजवायन खुरासानी, गोंद कीकर, प्रत्येक २। माशे, जावित्री, बहमन सुरख़

और सफ़ेद, मायाशुत्रअहरावी, बादरंजवोया, पान की जड़ प्रत्येक ४॥ माशे, खाण्ड सफेद १ तोला कूट छान बारीक करके चने समान वटी करें, ऊपर चादी के वर्क चढ़ाये।

मात्रा—एक वा दो वटी, मधु से मीठे कीये हुए दूध से ले।

गुण—यह वटी शीघ्र पतन, प्रमेह, खासी, पुराने जुकाम में लाभप्रद है। इसके प्रयोग से अहिफेन की आदत छूट जाती है, बलप्रद तथा वाजीकरण है।

हब्ब जरयान

जायफल, जावित्री, माजू,-हरमल, मस्तगी, नागकेसर, मोचरस, तज, गुल सुपारी, छालीया, छोटी इलायचीबीज, तबाशीर, अजवायन खुरासानी, अहिफेन, केशर १–१ माशा, सबको कूट छान कर इसपगोल का लुआब मिलाकर चने समान वटी करे।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, प्रात. गौदुग्ध से प्रयोग करे, यह वटी प्रमेह, वीर्य का पतलापन, शीघ्रपतन, चेहरे की बेरोनकी, शरीर की क्षीणता आदि को नष्ट करती है।

(२) सिंघाड़े के आटे को बरगद के दुग्ध मे और थोड़ा सा जल मिलाकर भावित करके चने समान वटी करे।

मात्रा—दो-दो वटी, प्रात. साय गौदुग्ध से प्रयोग करे।

(३) सिघाड़ा शुष्क २ माशे, वशलोचन ३ माशे, कत्था सफेद १ तोला, तीनों वस्तु को वरगद के दुग्ध मे खरल कर चने समान वटी करे।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, प्रात. १ सायं दूध से प्रयोग करे। प्रमेह में उत्तम है।

हब्ब जरयान विशेष

वहमन सुरख, वहमन सफेद, अकरकरा, गोक्षरू, ऊटगनबीज, मूसली श्वेत, शाहदाना, मायाशुत्रअहरावी, गोद कीकर, मोचरस, साहलबमिश्री, अपक्व कीकर की फली, वगभस्म, वशलोचन, गोद-ढाक, तालखाना, समुद्रसोख, बीजबन्द, १–१ तोला, अभ्रकभस्म,

केशर प्रत्येक ६ माशे, सब औषध को कूट छान कर जंगली बेर के समान गोदकीकर के लुआब मे वटी करे।

मात्रा—दो-दो वटी, प्रातः साय दूध से ले।

गुण—प्रमेह और शारीरिक क्षीणता को दूर करती है। हजारों रोगियो पर प्रयोग की गई है।

हब्ब ज्वाहर

मुक्ता ३ माशे, मरजान जड़ २।। माशे, यशप सबज १।। माशे, अकीक सुरख १।। माशे, याकूत सुरख वा जरद (पीत), फीरोजा २–२ माशे, जहरमोहरा खताई ३।। माशे, नारजीलदरयाई, केशर १–१ माशा, चादीपत्र ३ माशे, स्वर्णवर्क १।। माशे, कस्तूरी २ माशे, अम्बरशब १ माशा, सब को कूट पीस १ पाव गुलाब अर्क मे खरल कर, चने समान वटी करे, स्वर्ण वर्क चढा ले।

गुण तथा मात्रा–१ वटी, दवालमस्क मतहदिल ज्वाहरवाली ५ माशे वा मफरह ५ माशे, मे मिलाकर प्रयोग करे। यह शारीरिक दुर्बलता मे अत्यन्त उत्तम है। रोगो के पश्चात् की क्षीणता मे उपयोगी है। रक्तपित नाशक है।

हब्ब ज्वाहर मोलफ़

मुक्ता, जमुरद, याकूत रमानी, जहरमोहरा खताई, कहरबा शमई, लालबदखशानी, यशप सफेद, क़र्पूर उत्तम, प्रत्येक ३।। माशे, अजबारजड, सन्दल सफेद, गिल अरमनी, प्रत्येक २। माशे, रबुलसूस, गोदकीकर, गोदकतीरा, निशास्ता, नीलोफ़रपुष्प, सरतान जला हुआ, बशलोचन, ख़शख़ाशबीज श्वेत, गाऊज़बान पुष्प, प्रत्येक ४।। माशे, केशर ४।। माशा, प्रथम ज्वाहरात को गुलाब अर्क मे सुरमा की तरह बारीक खरल करे, फिर बाकी औषध का चूर्ण मिलाकर बहिदाना जल से चने समान वटी करे।

मात्रा—१ वटी, प्रात. १ साय दूध के साथ दे।

गुण—रक्तपित्त, यक्ष्मा, अतिसार, जीर्णज्वर मे उत्तम है। शरीर मे बल उत्पन्न करती है। दुर्बलता को नष्ट करती है।

हव्बहलतीत (हिंगुवटी)

हींग असली ४ तोले, सोंठ ३ तोले, लवण लाहौरी, कृष्ण लवण प्रत्येक दो तोले, लौंग, पान की जड़, काली मिरच, पिप्पली, छोटी इलायची, कवाबचीनी, मस्तगी, पिपलामूल, अजवायन, हरीतकी, वहेडा, आमला, कलौंजी, १–१ तोला, सब औषध को कूट छान ले, और हींग को घी में भून ले। इसके पश्चात् सब औषध के चूर्ण के समभाग घीकुमारी रस, अद्रक रस, नीबू रस इतना डाले, कि औषध से चार अंगुल ऊपर रहे। शुष्क होने पर दो–तीन वार इतना ही रस डालकर शुष्क करे, और अन्त मे खरल करके चने समान वटी करे।

मात्रा—प्रात.-सायं १ वा दो वटी भोजनोपरान्त दे।

गुण—अजीर्ण नाशक है, उदरशूल, वमन, वातरोग मे लाभप्रद है। दीपक तथा पाचक है।

(२) हींग असली, अजवायन ४–४ तोले, पिप्पली, बहमन सुरख़, वहमन सफेद, मिरच काली, कालादाना प्रत्येक ३॥ तोले, सोंठ, शकाकल मिश्री, इन्द्रजौ ३–३ तोले, साहलबमिश्री २॥ तोले, पान जड़, बड़ी हरड़ २–२ तोले, लौंग, कृष्ण हरीतकी, गाजर बीज, पिप्पलमूल, शुद्ध गुग्गुल, प्रत्येक १॥। तोले, कुन्दर, छोटी इलायची, वालछड़, १॥–१॥ तोले, मस्तगी, कवाबचीनी, सौंफ़, बड़ी इलायची, दारचीनी, प्रयेक १। तोले, वादामगिरी १७॥ तोले, चलगोज़ाबीज ३५ तोले, द्राक्षा बीज रहित ७० तोले, प्रथम दोनो हरड़ को तथा मग़ज़यात को रोग़न जैतून मे भून ले, कि वह सुरख हो जाये, फिर वाकी औषध को और द्राक्षा को इतना कूटे, कि एक जीव हो जाये, तत्पश्चात जगली वेर समान वटी करे।

मात्रा—१ से तीन वटी, भोजनोपरान्त दे।

गुण—इसको भी हव्व हींग कहते है, वीर्यप्रद है, तथा पाचक और दीपक है।

हव्ब हमल (गर्भवटी)

कस्तूरी २ रत्ती, अहिफेन १ रत्ती, जायफल १ नग, केशर १ माशा, भांग दो माशे, गुड़ पुराना ६ माशे, सुपारी ३ नग, लौंग

४ नग, सब औषध को कूट पीसकर गुड़ पुराने मे मिलाकर जगली बेर के समान वटी करे।

मात्रा—मासिक धर्म पश्चात् प्रति दिन तीन दिवस तक १–१ वटी माजून मोचरस ७ माशे मे मिलाकर दूध के साथ प्रयोग करे, और चौथे दिन सम्भोग करे।

गुण—गर्भाशय के विकारो को नष्ट करती है। गर्भाधान मे सहायता देती है। यदि मासिक धर्म ठीक हो, तो अवश्य ही गर्भ ठहर जाता है।

(२) मुश्क (कस्तूरी) १ माशा, तवाशीर ३ माशे, केशर ४ माशे, जरवरद (गुलाबजीरा) १ माशा, जीरा सफेद ४ माशा, तुलसी पत्र दो तोला, जावित्री दो तोले, धनन्तर बीज ११ नग, सहदेवी पत्र ४ तोले, सव औषध को कूटपीस कर १–१ रत्ती की वटी करे।

मात्रा, प्रयोग विधि तथा गुण—गर्भ के प्रथम सप्ताह मे तीन वटी दिन मे तीन वार खिलाये, परन्तु एक सप्ताह बाद दो-दो वटी प्रातः साय दे। यह वटी गर्भ की रक्षा करती है। गर्भ को जीवत रखती है।

हब्ब खास

विषमुष्टि शुद्ध ६ माशे, लौहभस्म दो तोले, दारचीनी, जायफल, जावित्री, जदवारखताई, लौग, शिलाजीत १–१ तोले, अम्बरशब, कस्तूरी, केशर, अहिफेन, चादीवर्क ३–३ माशे, स्वर्ण वर्क १ माशा, सव औषध को वारीक पीसकर पान के रस मे भावित कर चने समान वटी करे। स्वर्ण वर्क गोलीयो पर चढ़ा लेवे।

मात्रा–१–१ वटी, प्रात.–साय गौ दुग्ध से दे।

गुण–शारीरिक दुर्वलता को नष्ट करती है, वाजीकरण है।

हब्ब खबसलहदीद (मण्डूरवटी)

मण्डूर को वारीक पीस कर सात दिन तक गन्दना बूटी के रस मे भावना दे, और रोज़ाना रस बदलते रहे, फिर शुष्क कर लोहे के तवे पर भून ल, अव यह मण्डूर ३८ तोले, हब्बालरशाद, ८ तोले, गन्दनावीज, जरजीरबीज, करफ़स बीज, गाजर बीज,

मूली बीज, मेथी बीज, प्याज बीज, लघुएलाबीज, प्रत्येक सात तोले, सब औषध को कूटछान कर गन्दना स्वरस मे खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा–तीन वटी, प्रात. तीन सायं काल प्रयोग करे।

गुण–पाचक है, पाण्डूनाशक, रक्तवर्धक, अर्श के लिये लाभप्रद है, अर्श जनित प्रवाहिका मे भी उत्तम है, पुराने सुजाक मे भी लाभप्रद है।

हब्ब डब्बा इतफ़ाल (बालरोगहर वटी)

तुत्थ भुना हुआ, सौभाग्य भुना हुआ, ३–३ माशे लेकर बकरी के दूध मे वा पानी मे खरल कर बाजरा समान वटी करे।

मात्रा—आवश्यकतानुसार–१ वा दो वटी मा के दूध मे वा किसी योग्य क्वाथ से दे।

गुण–बच्चो के डब्बा रोग में उत्तम है।

राजगुटी

सोठ, ३ तोले, मिरच काली, सौफ, पोदीना शुष्क, कपूर कचरी २-२ तोले, पिप्पली, छोटी इलायची, पत्रज, ६-६ माशे, बालछड़ १॥ माशे, सौभाग्य भस्म, लवपुरी लवण, सैंधव लवण १-१ तोला, शगूफ़ा अजखर, नरकचूर ९-९ माशे, दारचीनी ३ माशे, मस्तगी-रूमी ४ माशे, सबका बारीक चूर्ण करे, अमचूर श्वेत दो तोले, मिरचलाल ११ नग, पानी मे पीस कर औषध के चूर्ण को इस मे खरल करे, शुष्क होने पर गोलीयां बना ले, (शरद ऋतु मे प्रयोग करने के लिये इस मे ५ माशे लवग और डाल दे)।

मात्रा—भोजनोपरान्त १ वा दो वटी प्रयोग करे।

गुण–दीपक, पाचक तथा अजीर्ण नाशक है, विसूचिका मे भी लाभप्रद है।

हब्ब रबय

पलाशपापडाबीज, करंजुआबीज बारीक पीस कर चने समान वटी करें।

मात्रा—दिन मे ३ वार १-१ वटी ४-४ घण्टे पश्चात् जल से दें।

गुण—चौथीया ज्वर मे उत्तम है।

हब्ब रसौत

शुद्ध रसौत, गुग्गुलु शुद्ध, गेरू, मगज तुखमनीम, मग़ज तुखम बकायन, तुखम गन्दना, सब समभाग ले, प्रथम गुग्गुलु को गन्दना बूटी के रस मे हल कर ले, फिर बाकी सब औषध का चूर्ण कर मिलाकर चने परिमाण वटी करे।

मात्रा तथा प्रयोग विधि—प्रात साय १-१ वटी, ज्वारश जालीनूस ७ माशे मे मिलाकर खिलाये, रक्तार्श मे ३ वटी अर्क गाऊजबान १० तोले शरबत अन्जबार दो तोले के साथ दें।

गुण—यह वटी अर्श मे लाभप्रद है। रक्त अर्श मे खून को बन्द करती है।

(२) एक मिट्टी के बरतन को आग पर खूब लाल कर दे, फिर इसमे हरड़ काबुली घी मे अच्छी तरह स्नेहाक्त कर इस बरतन मे भूने, जब सुरख हो जाये, तो छिलका और गुठली दूर करके कूट ले, समभाग रसौत मिलाकर जल से माष के समान वटी करे।

मात्रा तथा गुण—२-२ वटी, प्रातः साय अर्क गाऊजबान १० तोले, शरबत अन्जबार दो तोले के साथ प्रयोग करे। रक्तार्श मे लाभप्रद है।

० हब्ब राल

रालश्वेत, गोद कीकर दोनो समभाग लेकर ४-४ रत्ती की वटी करें, १-१ वटी प्रयोग करे।

गुण—अतिसार बन्द करती है।

हब्ब सुरखी चशम

गेरू ४॥ तोले, अहिफेन १ तोला, सोंठ, गोदकीकर प्रत्येक ३ माशे, औषध को कूट पीस कर चने समान वटी करें, १ वटी पानी मे घिस कर, दिन मे तीन बार पपोटों पर अर्ध उष्ण लेप करे, यह वटी आंख दुखने के कुछ दिवस बाद प्रयोग करे।

गुण—यह वटी आंख की सुरखी (लालिमा) और पीड़ा मे लाभप्रद है ।

हब्ब सुरख बवासीर (अर्शहर वटी)

रसोत शुद्ध दो तोले, गेरू ४ तोले दोनो को कुकरोन्दा रस मे खरल करके चने समान वटी करे ।

मात्रा—३–४ वटी, अर्क गाऊजबान १० तोले शरबत अंजवार दो तोले के साथ प्रयोग करे ।

गुण—रक्त अर्श में रक्त को शीघ्र बन्द करती है ।

हब्ब सुरख़बाद

रसौत ९ माशे, सन्दल सुरख २ माशे, नरकचूर ३ माशे, अहिफेन, हलदी, मेहन्दीपत्र, १-१ माशे, मुर्दासंग, चाकसू ४-४ रत्ती, नीमपत्र, वकायनपत्र (महनिम्बपत्र), १५–१५ पत्र सब को कूट छान कर मूग समान वटी करे ।

मात्रा—आवश्यकतानुसार १-१ वटी माता के दूध मे बच्चे को दे ।

गुण—बच्चों के सुरख़वाद तथा रक्तदुष्टि मे उत्तम है ।

सुरफ़ा वटी

गोंद बबूल, रबुलसूस, ख़शख़ाशबीज, निशास्ता, अहिफेन, १-१ तोला, सब औषध को खरल कर बहीदाना के स्वरस मे चने समान वटी करे, १ वा दो वटी मुख मे रखकर चूसे ।

गुण—शुष्क तथा प्रतिश्याय जनित खांसी और गले की खराश मे लाभप्रद है ।

(२) गोंदकीकर, रबुलसूस, गोंद कतीरा, बहीदाना बीज, मगज बादाम, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज ख़शख़ाशसफेद, शकरतेगाल, १-१ माशे, सब को पोस्त डोडा के क्वाथ मे खरलकर चने समान वटी करे, १–१ वटी मुंह मे रखकर चूसें ।

गुण—कास मे लाभप्रद है ।

० हब्ब सुरंजान

मुसब्बर, हरड़, सुरंजान मधुर, १–१ तोला सब को बारीक पीस कर जल के साथ चने समान वटी करे ।

मात्रा–प्रात साय ३-३ माशे जल के साथ दें।

गुण–आमवात, वातरक्त, गृध्रसी मे लाभप्रद है ।

हब्ब सोजाक

गिलोय सत्व, स्फटिका, दो-दो तोले. कलमी शोरा, छोटीएला-बीज, १-१ तोले, कत्था सफेद ६ माशे, सब को कूट छान कर गुड मे मिलाकर चने समान वटी करे।

मात्रा–३ वटी, प्रात को ताजा जल से प्रयोग करें, और प्रतिदिन १ वटी बढाते रहे, सात दिन के बाद और वृद्धि न करें।

गुण–सोजाक (पूयमेह) मे लाभप्रद है।

(२) वशलोचन दो तोले, गेरू १।। तोले, कल्मीशोरा ९ माशे, कुन्दर ५ माशे, गिलअरमनी ७ माशे, संगज्राहत, (दुग्ध पाषाण), बडी इलायची, कहरवा शमई, गोदकीकर, हिजरुलयहूद ९–९ माशे, समुद्रझाग ५ माशे, सन्दल तैल २।। माशे, रसौत शुद्ध ४ तोले, स्फटिका भुनी हुई दो तोले, अहिफेन १४ माशे, नीमपत्र ५ नग, केशर ५ रत्ती, शुष्क औषध को कूट छान कर रोगन सन्दल मे मिलावें, रसौत तथा अहिफेन को पानी मे हल करके छान ले, और नीमपत्र का स्वरस निकाले, इसमे केशर हल करे, अब इनमे वाकी सब चीज के चूर्ण को मिलाकर खरल कर चने समान वटी करे।

मात्रा—दो वटी, प्रात जल से दे ।

गुण—सुजाक मे लाभप्रद है ।

हब्ब समाक (तिंतड़ीक वटी)

समाक, माजू सबज, अनार का छिलका, मोड़ीयो वीज, द्राक्षा-बीज, अहिफेन, १–१ माशा लेकर वारीक चूर्ण करे, इसपगोल वा गोंद कीकर के स्वरस की सहायता से चने समान वटी करे।

मात्रा—१–१ वटी, दिन मे २ वा ३ बार प्रयोग करे ।

गुण—पाचक तथा अतिसार को रोकने मे उपयोगी है ।

हब्ब समलफ़ार (मल्ल वटी)

मल्ल श्वेत आधा रत्ती, काली मिरच ७ नग दोनों को मिला-कर २० वटी करे ।

मात्रा—२–३ वटी, दिन मे तीन वार भोजनोपरान्त दें ।

गुण—जीर्ण विपमज्वर मे उत्तम है ।

हब्ब सियाह चशम (कृष्णवटी)

रसौत शुद्ध, ४॥ तोले, फटकडी भुनी हुई २। तोले, अहिफेन १ तोला, नीमपत्र सवज ५ पत्र, केशर ५ रत्ती सव औषध को लोहे की कड़ाही में डालकर थोडा पानी डालकर दस्ते से खूब रगड़े, जब औपध एकजीव हो जाये, तो माप समान वटी करे ।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, पोस्तडोडा के जल से वा शुद्ध जल से घिसकर ३–४ वार पपोटो पर लगावें। आख दुखने मे, (नेत्राभिष्य-न्द) आंख की सुरखी तथा जाले मे उपयोगी है ।

हब्ब शबीयार

अयारज फैकरा १२ तोले, हरड, कृष्ण हरड़ ३–३ तोले, गुलावपुष्प २ तोले, असारा गाफ़स, मस्तगी, अनीसून १–१ तोला सव औषध को कूट छान कर जल से चने समान वटी करे ।

मात्रा—३ माशे की मात्रा मे चार घड़ी रात रहे, उठकर अर्क गाऊजवान १२ तोले के साथ प्रयोग करे । प्रात पाचक योग पीवे, तीसरे प्रहर मूग की दाल की खिचड़ी खाये । बवासीरी मस्सों पर इसे रोगन बादाम मे हल करके प्रतिदिन लगावे ।

गुण—यह वटी मस्तिष्क, आमाशय, आन्त्र का संशोधन करती है, गन्दे मल को निकालती है, अर्श, जीर्णज्वर, पुरानी कास चौथीया ज्वर, यकृत तथा प्लीहा शोथ को नष्ट करती है ।

(२) हरड, वहेड़ा, सनाय, ५–५ तोले, फूल गुलाब, काला-दाना प्रत्येक ३॥ तोले, मुसब्बर, ३ तोले, कुन्दर १। तोला, गोद कतीरा १० माशे, शुद्ध गुग्गुल, असारा रेवन्द, मस्तगी ३–३ माशे, कूट छानकर पानी के संग मूंग समान वटी करके चांदी के वर्क चढाये ।

मात्रा–गुण—उपरोक्त ।

हब्बशफ़ा

शुद्ध धस्तुरबीज ३ तोले, रेवन्दचीनी २ तोले, सोंठ, गोंद कीकर, १-१ तोला, गोंदकीकर को पानी में हल करके बाकी औषध को बारीक पीसकर इसमें मिलाकर खरल कर चने समान वटी करे।

मात्रा—१ वटी प्रात: जल से दे।

गुण—शिरशूल, वातपित्तज्वर, प्रतिश्याय मे लाभप्रद है, शरीर के बल, तेज को स्थिर रखती है। अहिफेन की आदत को छुड़ा देती है।

हब्ब शहका

जवक्षार ६ माशे, काली मिरच १०॥ माशे, पिप्पली २१ माशे, अनारदाना ४२ माशे, गुड ८४ माशे, सब औषध को कूट पीसकर गुड़ मे मिलाकर चने समान वटी करे।

मात्रा—आवश्यकतानुसार २ वटी प्रातः, २ सायं के समय प्रयोग करे।

गुण—कास, तथा काली खासी मे उत्तम है।

हब्ब शाही

शुद्ध कुचला, राई, सोंठ, सौफ, मस्तगी, अनीसून, करफ़सबीज, सोहागा, कृष्ण लवण, नवसादर, लोटासज्जी, समभाग लेकर बारीक चूर्ण करे, पानी वा इसपगोल के पानी के साथ चने के समान वटी करे।

मात्रा—२ से ४ वटी, भोजनोपरान्त खावे।

गुण—यह उदर के सब विकारो को दूर करती है। अजीर्ण नाशक है।

हब्बसदफ़

इसपगोल का छिलका, गोंदकतीरा, खशखाशबीज श्वेत, सुदाबपत्र, सौंफ, धनियांशुष्क, गुलाबपुष्प १०-१० तोले, सदफ (सिपियां, शुक्ति), मस्तगी रूमी ८-८ तोले, माजू सब्ज ६ तोले, सब औषध को बारीक खरल करे। गोंदकीकर के जल की सहायता से चने ससान वटी करे, रूमी मस्तगी को पृथक खरल करें।

मात्रा—दो वटी, प्रातः सायं दूध के साथ दें, यह गोलीयां कबज नहीं करती ।

गुण—प्रमेह, स्वप्नदोष में उत्तम है ।

हब्ब सरह (अपस्मारवटी)

कुन्दर, मुसब्बर, जुन्दवदस्तर १–१ माशा, लेकर कूट पीसकर जल से वटी मूंग समान बनावे ।

मात्रा—प्रातः को दो-तीन वटी जल के साथ वड़ों को; और बच्चो को आयु अनुसार माता के दूध से दे ।

गुण—अपस्मार तथा वालग्रह में उत्तम है ।

हब्ब जीकलनफ़स (श्वासहरवटी)

पिप्पली, काकड़ासिंगी, मधुयष्टि, लौंग, मधुर अनार का छिलका, यवक्षार प्रत्येक ६ माशे कूट छानकर मधु से चने समान वटी करे ।

मात्रा—१–१ वटी, प्रातः सायं जल से दें ।

गुण—कास श्वास में उत्तम है ।

प्लैग वटी (हब्ब ताऊन)

जहरमोहरा असली, जदवार असली, दरूनजअकरबी, मुरमकी, तबाशीर, कपूँर, ६–६ माशे, सब औषध को गुलाव अर्क में खरल कर चने समान वटी करें ।

मात्रा तथा गुण—१ वा दो वटी, दिन में तीन वार अर्क बेदमुष्क, गुलाब के साथ प्रयोग करें । यह वटी प्लैग के लिये उत्तम है ।

हब्ब ताऊन अम्बरी ज्वाहरवाली

दरूनजअकरबी, जदवार (निर्बसी), कचूर, बहमन सुरख, श्वेत ६–६ माशे, सन्दल सफ़ेद, गिल मखतूम (एक प्रकार की मिट्टी), गिल अरमनी (यह भी एक प्रकार की मिट्टी है), दारचीनी, पाषाणभेद, तबाशीर, जरावन्द मदहरज (गोल जरावन्द), हब्ब बलसान ४-४ माशा, केशर, जहरमोहरा, मुक्ता, याकूत, ३–३ माशे, अम्बर, चांदी वर्क, स्वर्णवर्क १॥–१॥ माशे, अर्क गुलाब,

अर्क बेदमुष्क, अर्क केवडा प्रत्येक ५-५ तोले, ज्वाहरात को अर्क मे खरल करे, अम्बर, केशर को औषध के चूर्ण मे खरल करें, और १-१ रत्ती की वटी करे। ऊपर चांदी तथा स्वर्ण के वरक लपेट दे।

मात्रा—रोग अवस्था मे दिन मे तीन वार २-२ वटी मफरह बारद मे मिलाकर वा अर्क गुलाव ५ तोले के साथ प्रयोग करे, प्रतिबन्ध रूप मे प्रतिदिन दो वटी जल से खा लेवें।

गुण—प्लेग की रोग अवस्था मे वा प्रतिबन्ध रूप मे सेवन करने मे अति उत्तम औषध है।

हुब्ब असारा

असारा रेवन्द, मुसब्बर, १-१ तोला, मस्तगीरूमी ६ माशे तीनों को वारीक पीस छानकर चने समान वटी करे।

मात्रा—३-४ वटी, रात को पानी के साथ खा लेवे।

गुण—विबन्ध नाशक है, और आसानी से दस्त लाती है।

हुब्ब अम्बर मोमयाई

शुद्ध शिलाजीत, मस्तगीरूमी, बशलोचन, मुक्ता, लौंग, जावित्री, जायफल, बहमन सुरख, सफेद, दारचीनी, शकाकल मिश्री, सोंठ, दरूनज अकरबी, अगर, ऊदसलीब, साहलबमिश्री, जदवार खताई, प्रत्येक ६ रत्ती, फादजहरमदनी, अम्बरशब, कस्तूरी, १-१ माशा, ीरबहुटी ५ नग, मगज सिर कजशक नर खानगी (घरेलू चिड़िया नर के शिर का मगज) ३ माशे, स्वर्ण पत्र ५ पत्र, प्रथम शिलाजीत, अम्बर, मस्तगी को १ शीशी मे भरकर पिस्ता तैल इस कदर डाले, कि औषध से ऊपर रहे, फिर किसी देगची मे शीशी रखकर ग्रीवा तक पानी में डुबोकर शनै. शनैः गर्मी पहुंचायें, जब शीशी की औषध तैल मे गर्मी खा कर पिघल जाये, तो निकाल ले। अब फादजहर, कस्तूरी, मुक्ता, स्वर्णपत्र को अर्क बेदमुष्क मे हल करले, और बाकी औषध को कूट छान लें। मगज शिर कजशक नर को थोडा घृत मे भून करके बाकी औषध चूर्ण मे खरल —र चने समान वटी करे। और उनपर स्वर्णवर्क चढ़ा देवे।

मात्रा—दो वटी रात्री सोते समय गौदुग्ध से दें ।

गुण—ध्वज भंग, हृदय, मस्तिष्क दुर्बलता, शिश्न शिथिलता तथा शारीरक दुर्बलता मे अतीव उत्तम है ।

हब्ब ग़ाफ़स

असारा ग़ाफ़स (ग़ाफ़स का घन सत्व) १॥। माशे, तवाशीर, बालछड़ ७–७ माशे, फूल गुलाब १॥ तोले सब को पानी में पीसकर चने समान वटी करें ।

मात्रा—३ माशे की मात्रा अर्क सौंफ़, अर्क मको ६–६ तोले वा अर्क गाऊजवान १२ तोले के साथ प्रयोग करे ।

गुण—यह वटी, वात कफ़ज ज्वरों में उत्तम है । जीर्ण ज्वर मे भी लाभप्रद है ।

(२) अफ़्सनतीन, हरड़, असारा ग़ाफ़स, मस्तगीरूमी, केशर, रेवन्दचीनी, अनीसून, लाक्षा धुली हुई, पितपापड़ा,आयरजफैकरा प्रत्येक दो तोले, सबको पीसकर चने समान वटी करें ।

मात्रा—तथा गुण उपरोक्त ।

हब्ब फ़ालज

मल्ल शुद्ध, तवाशीर सफेद, १–१ माशा, कत्थ सफ़ेद २ माशे, बारीक पीसकर अद्रक रस मे खरल कर १–१ रत्ती की वटी करे ।

मात्रा—१–१ वटी, प्रात. सायं खिलाये. तीसरे दिन खाँड का शरबत पिलायें, लवण का त्याग रखे ।

गुण—फ़ालज (अर्धाङ्गवात, अधरग) मे उत्तम है, पहिले विरेचन अवश्य दे लें ।

हब्ब फिलफिल

खुलसूस (मधुयष्टिका घन सत्व), मिरच काली, कच्ची शक्कर, तीनो को लेकर बारीक कर जल से काली मिरच समान वटी करे । आवश्यकतानुसार, १–१ वटी मुख मे रखकर चूसें ।

गुण—कफ़ज कास मे प्रभावकारी है ।

हब्ब कर्पूर मरवारीदी

मुक्ता १ तोला, जहरमोहरा ४ तोले, चन्दन सफेद २ तोले, जदवार ९ माशे, कस्तूरी, गोंदकीकर प्रत्येक १॥ माशे, चांदीपत्र ४ रत्ती, गोदकीकर को थोड़े जल मे हल करे, बाकी औषध के चूर्ण को इसमे गूद कर चने समान वटी करे।

मात्रा–१–१ वटी, प्रातः सायं अर्क गाऊजबान ५ तोले, अर्क बेद मुशक ३ तोले, शरबत मधुर अनार दो तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण–सब प्रकार के ज्वर, संक्रामक रोग, तीव्र ज्वर तथा प्लैग मे उत्तम है।

हब्ब किबद नवसादरी

नवसादर, सैंधवलवण, कृष्ण लवण, सौभाग्य भस्म, लवपुरी लवण, नरकचूर, हरीतकी कृष्ण, हरड़, वायविड़ंग, मिरच, सोंठ, १–१ तोला, सब को कूट छान कर गुलाब अर्क मे थोडी सी गोंद मिलाकर, उसकी सहायता से चने समान वटी करें।

मात्रा–२-२ वटी, भोजनोपरान्त दे।

गुण–यकृत की सख्ती को दूर करती है, अजीर्ण, विवन्ध-नाशक है।

हब्ब कत्थ

कत्थ पापड़ीया, रसकर्पूर, कपूर, १–१ तोले, मूसली सफेद, दो तोले, सब को बारीक पीस कर चने समान वटी करे।

मात्रा–१ वटी, द्राक्षा (बीज रहित) मे रखकर निगल जाये, ताकि दांतों को न लगे, चने की रोटी और अरहर की दाल खावें।

गुण–आतशक मे अत्यन्त उत्तम है।

हब्ब कुचला

कुचला को एक बरतन मे डालकर घृतकुमारी का गूदा भर देवे, गूदा शुष्क होने पर अद्रक रस मे १५ दिन तक भिगो रखे, फिर छील ले, और खरल करके रख ले, अब यह कुचिला, केशर, १–१ तोले, दारचीनी, जावित्री, सुरजान, ४–४ तोले, सोट १०

तोले, बड़ी इलायची बीज ½ तोले, सब को बारीक करके जगली बेर समान वटी करे ।

मात्रा—१-१ वटी, प्रात सायं दूध के साथ प्रयोग करे ।

गुण—वीर्य वल्य, शक्तिप्रद तथा आमवात, वातिक शूल मे उपयोगी है ।

हृव्व किशमिश

लौंग, सौफ़, अनीसून रूमी ३-३ माशे, वनफ़शा पुष्प ६ माशे, हरड़, किशमिश ताज़ा सवज़, १-१ तोला, सनाय, तुरजवीन (यवासशर्करा), गुल्कन्द सूर्यतापी दो-दो तोले, सव औषध को कूट छान कर, किशमिश और गुलकन्द मे मिलाकर कूटे, और चने समान वटी करें ।

मात्रा—विवन्ध मे ७ माशे, रात्री सोते समय गरम पानी से खा लेवे, और विरेचन के लिये १ तोला की मात्रा में अर्क सौफ ६ तोले अर्क गाऊज़वान ६ तोले, शरवत दीनार ४ तोले के साथ प्रयोग करे ।

गुण—मृदु प्रकृति वालों के लिये उत्तम विरेचन है, यदि किसी और विरेचक औषध से दस्त न आते हों, तो इसको देने से दस्त खुल कर आ जाते है ।

हृव्व किमाये इशरत

स्वर्ण वर्क, चांदी वर्क, कस्तूरी, अम्बर, १—१ माशा, जरिशक, मुनक्का, १—१ तोला, जदवार खताई १॥। तोला, जावित्री २ तोले, तेजपात १। तोले, कबावा, तगर, हृव्व सनोवर, मुरमकी, जायफल २—२ तोले, पिप्पली, वालछड, दरूनज अकरवी, ऊदकमारी, लौग, छोटी इलायची प्रत्येक ४० माशे, दारचीनी, कचूर, नागरमोथा, मेहीसाला, २—२ तोले, सोठ, मस्तगी रूमी, काली मिरच, करफस बीज, ५—५ तोले, केशर, अहिफेन, १—१ तोला, प्रवाल भस्म, यशप भस्म, अकीक भस्म, कहरवा शमई ६—६ माशे, वग भस्म ३ माशे । कस्तूरी, अम्वर, केशर, मेहीसाला, स्वर्णपत्र, ज्वाहरात आदि को वाकी औषध के चूर्ण में बारीक खरल करे, और रोग़न वलसान की सहायता से चने समान वटी करे ।

मात्रा—१-१ वटी, प्रातः सायं गौदुग्ध से खावें।

गुण—यह वटी पुंसक शक्ति दाता तथा उत्तमांगों को बल देने मे प्रसिद्ध तथा प्रभावशाली है।

अहिफ़ेन वटी

जायफल का भीतरी गूदा निकाल कर इसके स्थान मे अहिफ़ेन १ तोला, जदवार बनफ़सजी, ३ माशे, अहिफेन १ माशा का चूर्ण कर मिलाकर भर देवे, और गन्दम के खमीरे आटे से मुख बन्द करके गरम भूबल में दबा दें, जब पक जाये, तो आटे को दूर करके सब को खूब बारीक करें, और मरिच समान वटी करे।

मात्रा—१ से दो वटी।

गुण—बल्य, स्तम्भक, और प्रतिश्याय, में उत्तम है।

हब्ब कोचक (हब्ब चरस)

जदवार, ४।। माशे, चरस (भाग सत्व), गाजर बीज, साहल्ब मिश्री ९ माशे, दरूनज अकरबी, फरफयू प्रत्येक १३।। माशे, सब औषध को कूट छान कर पोस्त डोडा के स्वरस की सहायता से मरिच समान वटी करे।

मात्रा—१ वटी।

गुण—स्तम्भक है, शीघ्र पतन में लाभप्रद है।

हब्ब खुशकैफ़ (आनन्ददा वटी)

जायफल, पानजड़, साहलब मिश्री प्रत्येक २८ माशे, शुद्ध अहिफेन २१ माशे, जदवार बनफसजी १४ माशे, सब औषध को कूट छान कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१ से दो वटी।

गुण—स्तम्भक है।

हब्ब कोबा (दाद हर वटी)

पारद, गन्धक, मुरदासग, खाँड, गोंद कीकर, लेकर खरल करे, पानी से चने समान वटी करें। आवश्यकतानुसार, १ वटी पानी वा थूक मे घिसकर दाद पर लगावें।

गुण—दाद, खुजली तथा चम्बल मे लाभप्रद है।

हब्ब काबज

अहिफेन, कतीरा, माई लघु, अस्पस्त बीज, अकाकीया (कीकर का घन सत्व), फूल गुलाब, मटर के दाने, मोड़ीयोबीज, १—१ माशे, सब औषध को खरल कर गोंद कीकर स्वरस के साथ चने समान वटी करें।

मात्रा—१ से ३ वटी, आवश्यकतानुसार दे।

गुण—दस्तो को शीघ्रता से बन्द करती है।

हब्ब काबज (२)

एक मोटा सा छुहारा लेकर गुठली निकाल दे, और गुठली के स्थान मे अहिफेन भरकर धागा लपेट देवें। ऊपर गूदे आटे की मोटी तह चढ़ाकर गरम भूबल में रख दे। जब आटा सुरख हो जाये। तो निकाल कर आटा छुडा देवे, और सब को बारीक करके मूग समान वटी करे।

मात्रा—१ वटी, प्रात. १ मध्यान्ह और १ रात्री को देवे।

गुण—यह वटी, दस्तों को अत्यन्त शीघ्रता से बन्द करती है।

हब्ब गुल आक

आक पुष्प, सोंठ, कालीमिरच, बांसवृक्षपत्र, समभाग लेकर बारीक पीस चने समान वटी करे।

मात्रा—२—२ वटी, प्रात. सायं जल से देवे।

गुण—उदरशूल, अजीर्ण, अतिसार में लाभप्रद है।

हब्ब गुल पिस्ता

पिस्ता पुष्प, १ तोला, बहेड़ा २ तोले दोनों को कूट छानकर अद्रक रस मे खरल कर मूग समान वटी करे। १ से दो वटी मुह में रखकर चूसें।

गुण—कफज कास में उत्तम है। छाती से कफ़ को निकालती है।

हब्ब लबलबशखाश

केशर २। माशे, पोस्त बेख़ लफाह (लफ़ाह को इगलिश मे बेलाडोना (Belladona) कहते हैं। उसकी जड़ की छाल) ४॥

माशे, यदि, यह न मिले, तो भांग पत्र डाले। अजवायन खुरासानी, मस्तगीरूमी, कहरुबा, गोंदकतीरा, निशास्ता, गोंदकीकर, काहुबीज, गाऊज़बान पुष्प, ख़शख़ाशबीज, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन, अहिफ़ेन, प्रत्येक ९ माशे, रबुलसूस १० माशे, गिल अरमनी १॥ तोले, रवेन्द चीनी ७ माशे, सबको कूट छानकर, चूर्ण करे। और पोस्त डोडा के क्वाथ मे खरल कर मिरच समान वटी करे।

मात्रा—जीर्ण प्रतिश्याय, मे १ गोली अर्क गाऊजबान के साथ और इमसाक (स्तम्भन) के लिये एक वटी रोगी को दूध के साथ दे।

गुण—नज़ला (जीर्ण प्रतिश्याय), गले की ख़राश, खांसी के लिये अत्यन्त लाभप्रद है, स्तम्भक है।

हब्ब लुआब बहीदाना

मग़ज़ बहीदाना, मग़ज़ तुख़म कद्दू, मग़ज तुखम खयारैन २—२ माशे, केशर १ माशा, गोंदकीकर, निशास्ता, गोंदकतीरा ३—३ माशे, मग़ज़ बादाम, द्राक्षा, ख़शख़ाश सफेद ४—४ माशे, मिश्री ७ माशे, रबुलसूस, २ माशे, कूट छानकर बहिदाना के लुआब मे चने समान वटी करे, १ वा दो वटी मुंह मे रखकर चूसें।

गुण—यह वटी सिल की खांसी में लाभप्रद है।

हब्ब लबान वा हब्ब कुन्दर

कुन्दर, बाकला का आटा, बहिदाना मग़ज, प्रत्येक ७ माशे, रबुलसूस, कतीरा, बनफशा पुष्प, तुरंजबीन, ५—५ माशे, मुनक्का ४ माशे, अनीसून, सौफ़, मग़ज़ बादाम कड़वे, खॉड, २—२ माशे सब औषध को कूटकर इसगोल के रस से चने समान वटी करे। आवश्यकतानुसार १—१ वटी मुह में रखकर चूसे।

गुण—जिस कास में वमन होती है। उसमे अत्यन्त उपयोगी है।

हब्ब लीमूं

कत्थ सफेद, कालादाना, बड़ी इलायची का छिलका जला हुआ, सुपारी जीर्ण, १—१ तोला, मुरदासंग २ तोले, सबको बारीक करके

१०१ निंबू रस से भावित करें, रस सूखने पर चने समान वटी करें।

मात्रा—प्रातः सायं १–१ वटी पानी के साथ प्रयोग करें, मूग की दाल तथा लौकी प्रयोग न करे।

गुण—आतशक, तथा तदजनित जोड़ों की पीड़ा मे लाभप्रद है।

हब्ब मुहल्लल औराम (शोथ हरवटी)

चने का आटा, थुहर (स्नुही) के दूध मे भावित करके गलोला सा बना कर गन्दम का आटा ऊपर से लपेट दे, और गरम भूबल में दवा दे। पक जाने पर निकाल कर चने समान वटी करे।

गुण तथा मात्रा–१–१ वटी, प्रातः सायं योग्य अनुपान से दें, यह वटी शरीर के भीतरी अंगों की शोथ में अति उत्तम है।

हब्ब मदर

मुसब्बर, २ तोले, हीराकासीस, केशर १–१ तोला, सब को पानी मे पीस कर चने समान वटो करे।

गुण–मात्रा तथा प्रयोगविधि–मासिक धर्म्म से तीन दिन पूर्व दिन मे तीन वार जल से दें। मासिक धर्म्म प्रारम्भ हो जाने पर वन्द कर दें, इन गोलीयों के प्रयोग से मासिक धर्म खुल जाते है।

हब्ब मरवारीदी

सौभागय अर्ध भूना, माजू जला हुआ ५–५ माशे, मस्तगीरूमी १० माशे, शुद्ध विपमुष्टि ५ माशे, मुक्ता, अम्वरशव १। माशे, सब औषध को वारीक पीस कर अर्क गुलाब से चने समान वटी करें।

मात्रा–प्रात, सायं १–१ वटी, अर्क अम्बर ५ तोले के साथ खावे, वा दूध से प्रयोग करे।

गुण–श्वेत प्रदर, तथा स्त्रियों की दुर्बलता मे उपयोगी है।

हब्ब मुसहल (विरेचक वटी)

शुद्ध जयपाल, कृष्ण हरीतकी १–१ तोले, साठी के चावल २ तोले, सव औषध को कूट पीस कर चने समान वटी करे।

मात्रा—आवश्यकतानुसार, १ वा दो वटी प्रातः समय शीतल जल से ले, दस्त वन्द करने हों, तो गरम पानी पीवे ।

गुण—अत्यन्त उत्तम विरेचन है।

(२) सौफ़, कलौंजी, हरीतकी कृष्ण, त्रिवी, १–१ तोला, शुद्ध जयपाल २ तोले, सब औषध को खरल कर अर्क गुलाब से चने समान वटी करे ।

मात्रा—वातिक पाचक क्वाथ पीने उपरान्त ४ वटी योग्य अनुपान से ले।

गुण—वातिक दोष को रेचन लाकर नष्ट करती है।

हब्ब मस्कीन निवाज

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, हरड़, वहेडा, आमला, सोठ, पिप्पली, काली मिरच, सौभाग्य, लोटा सज्जी, रेवन्दचीनी, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध हरिताल, शुद्ध जयपाल, १–१ तोला, प्रथम कज्जली करे । फिर बाकी औषध का वारीक चूर्ण कर भागरा रस तथा पान रस से भावित करे, मोठ समान वटी करे ।

मात्रा—१ वा दो वटी, अर्क सौफ से प्रतिदिन प्रयोग करे। विबन्ध के लिये, दो वटी रात्री को सोते समय उष्ण दूध से प्रयोग करे, छोटों को आयु अनुसार दे ।

गुण—आमाशय, आंत्र तथा मस्तिश्क का सशोधन करती है, विरेचक है, ज्वर मे भी उत्तम है ।

हब्ब मुसफ़ीखून (रक्त शोधन वटी)

रसौत, शुद्ध चाकसू, मुण्डी, ब्रह्मडण्डी, नीलकण्ठी, नीलोफ़र पुश्प, सरफुंका, चन्दन सफेद, चन्दन सुरख़, पितपापड़ा, महन्दी पत्र, जवांसा, नीमपत्र, बकायन पत्र, धनियां शुष्क, काचनार पुष्प, १–१ तोला सब औषध को कूट छान जल से चने समान वटी करें ।

मात्रा तथा प्रयोग विधि—२ वटी, अर्क मरकब मुसफी ख़ून १२ तोले के साथ शरवत उन्नाब २ तोले मिलाकर प्रयोग करे, बालकों को आयु अनुसार दे।

गुण—परम रक्त शोधक है, आतशक में भी लाभप्रद है।

हब्ब मग़ज बादाम

मग़ज़ बादाम मधुर, (छिले हुये), मग़ज बादाम कटु (छिले हुये तथा भुने हुये), अलसी बीज, चलगोजा बीज, २-२ तोले, अहिफेन, आलुबख़ारा की गोंद वा गोंद कीकर, ईरसा, ख्वुलसूस, १-१ तोला, मिश्री २ तोले, सब औषध को कूट पीस कर सौफ़ पत्र स्वरस मे खरल कर चने समान वटी करे।

मात्रा तथा प्रयोग विधि-२ वटी, अर्क गाऊजबान १२ तोले शरबत ख़शखाश २ तोले के साथ प्रयोग करे, खांसी के समय १ वटी मुंह मे रखकर चूसें।

गुण-यह वटी, फुटफुस व्रण, जीर्ण कास, स्वर भेद मे लाभप्रद है, कफ़ का निश्कासन करती है।

हब्ब मक्कल (गुग्गुलु वटी)

हरड़, हरड बड़ी, गुग्गुलु शुद्ध प्रत्येक १५-१५ माशे, निशोथ सफेद १० माशे, सकवीनंज (एक प्रकार का गोंद है) ५ माशे, राई २ माशे, प्रथम दोनों हरड़ को बादाम तैल से स्नेहाक्त करे, गुग्गुल तथा सकवीनज को गन्दना पत्र स्वरस मे हल करके छाने, फिर बाकी सब औषध चूर्ण मिला चने समान वटी करे।

मात्रा-३ माशे, सोते समय अर्क सौफ़ वा अर्क गाऊजबान (गौजिह्वा), वा लौहे के भुझे हुये पानी १२ तोले के साथ प्रयोग करे।
गुण-अर्श, वातज अर्श, मे उपयोगी है, तथा विबन्धनाशक है।

हब्बमकवी (बल्य वटी)

शुद्ध मल्ल श्वेत (निंबुरस मे), शुद्ध गन्धक, धस्तूरबीज शुद्ध, शुद्ध हड़ताल, शुद्ध हड़तालगोदंती (गोदती भस्म डाले), शुद्ध, पारद, प्रत्येक दो तोले, प्रथम कज्जली कर बाकी औषध के बारीक चूर्ण को मिला कर मसूर बीज समान वटी करे।

मात्रा-वीर्य क्षीणता तथा सम्भोग क्रिया की हीनता मे १ वटी मक्खन के साथ वा बालाई और दूध से प्रयोग करें, घी, दूध का अधिक प्रयोग करें।

गुण-वाजीकरण है, स्तम्भक शक्ति को बढ़ाती है।

(२) (इसका दूसरा नाम जदजाम इशक भी है)-केशर, दारचीनी, जायफल, अहिफेन, कस्तूरी, अकरकरा, शुद्ध हिंगुल, लौंग, १-१ माशा, मुक्ता २ माशे, मल्ल तैल २ माशे, सब औषध का बारीक चूर्ण कर मधु मे चने समान वटी करे।

मात्रा-१ वटी, खाकर ऊपर से दस बूंद मत्सय तैल उत्तम पी लिया करें।

गुण-वाजीकरण है, उत्तेजक है।

हब्ब मुमस्क (स्तमभ्क वटी)

कपूर, चित्रक, कस्तूरी, जायफ़ल, जावित्री, अहिफेन, सब सम भाग, सब औषध बारीक करके मिरच समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण-सम्भोग से १ घण्टा पूर्व, जल के साथ ४ वटी प्रयोग करें, बाजीकरण है, शीघ्र पतन को नष्ट करती है।

(२) शुद्ध हिगुल, जायफ़ल, अकरकरा, अहिफेन, समभाग, कूटछान कर मधु के साथ मूंग समान वटी करे, ऊपर से चांदी के वर्क लपेट दे।

मात्रा तथा गुण-सम्भोग से १ घण्टा पूर्व १ वटी दूध से सेवन करे, और उस रोज सायकाल का खाना कम खायें। गुण उपरोक्त।

(३) जायफ़ल, जावित्री, अहिफेन, माजू, मस्तगी, केशर, नागकेसर, मोचरस, शुद्धगुग्गुलु, छालीया, लघुएलाबीज, वंशलोचन, अजवायन खुरासानी, समभाग लेकर कूट छान कर चने समान वटी करे।

मात्रा तथा गुण--उपरोक्त।

हब्ब मोमयाई

मुरमकी, मस्तगी, पानजड़, बहमन सुरख, बहमन सफेद, ४-४ माशे, लौंग, दारचीनी, लोबान, बादाम रोगन, गोंद कीकर, अगर, खुलसूस, ६-६ माशे, आबरेशम कुतरा हुआ, महीसाला, शुद्ध शिलाजीत १-१ तोला, सबको बारीक पीसकर बादाम रोगन से स्नेहाक्त करें। पश्चात पोस्त डोडा के स्वरस मे खरल कर चने समान वटी करे।

मात्रा तथा गुण-सम्भोग के पश्चात २ वटी उष्ण दूध से प्रयोग

करें, सम्भोग के पश्चात जो शरीर में क्षीणता आ जाती है, उसे दूर कर के बल तथा शक्ति उत्पन्न करती है।

हब्ब मलज़ज़ (आन्ददायक वटी)

कबूतर का विष्टा, स्त्री के शिर के बाल, गौ का पित्ता, शूकर पित्ता, वीरबहुटी, दारचीनी, अकरकरा, जावित्री, १—१ माशा, कस्तूरी ४ रत्ती, बारीक पीस कर मधु संग चने समान वटी करे।

मात्रा, उपयोग तथा गुण—१ वटी ब्राण्डी वा थूक से घिस कर शिश्न पर लगाकर सम्भोग करे, अत्यन्त आनन्द प्राप्त होगा।

० हब्ब मुलैयन

शुद्ध जयपाल, गिरि बादाम मबुर, अरण्ड वीज १—१ तोला, खाँड २ तोले, खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—मृदु रेचन के लिये रात्री को दो वटी तथा तीव्र विरेचन के लिये ४ वटी प्रयोग करें, रेचक हैं।

(२) जुलापा १५ माशे, सोंठ, सकमोनीया विलायती ५—५ माशे, केलोमल (Calomal), पिप्परमिण्ट तैल, ३-३ माशे, सब को मिलाकर चने समान वटी कर।

मात्रा तथा गुण—आवश्यकतानुसार, १-२ वटी जल वा दूध दें, सरल तथा उत्तम विरेचक है।

हब्ब मग़ाश

शुद्ध विषमुष्टि १० तोले, काली मिरच, पिप्पली ५—५ तोले, अम्बरशव १ तोला, सब औषध को खरल कर पान पत्र स्वरस या अद्रक रस से भावना देकर चने समान वटी करें।

गुण तथा मात्रा—१—१ वटी, प्रातः सायं दूध से दें। वाजीकरण है, शिश्न में शक्ती उत्पन्न करती है, जीर्ण प्रतिश्याय, अर्दित, तथा शीतलता से उत्पन्न होने वाले रोगों में उत्तम हैं।

(२) शुद्ध हिंगुल, रेगमाही, लौंग, ४—४ माशे, केशर, कस्तूरी, अहिफेन, १—१ माशा, नकछिकनी, स्वर्ण पत्र, ३—३ माशे, कायफल ७ माशे, दारचीनी, चांदीपत्र ७—७ माशे, सब औषध को बारीक पीस कर अद्रक रस से भावित कर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, सोते समय दूध से प्रयोग करे, और स्तम्भनार्थ १ घण्टा पूर्व १ वा दो वटी दूध से प्रयोग करे, वाजीकरण तथा स्तम्भक है।

हब्ब नजात

फूल गुलाब, मुसब्बर, आसारा रेवन्द, मस्तगी प्रत्येक ५–५ तोले, सनाय, बड़ी हरड, हरड प्रत्येक १० तोले, त्रिवृत, शुद्ध जयपाल प्रत्येक २॥ तोले, सकमूनिया भुना हुआ १॥ तोले, सब औषध को कूट-छानकर इसपगोल स्वरस मे जगली बेर के समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—२ वटी गरम जल वा दूध से दे, विबन्धनाशक है। तथा कोष्टबद्धता जनित सब रोगो को नष्ट करती है—तीनो दोपों को निकालती है।

हब्ब नखूद

बहरोज गीला, १ तोला, चने का आटा ५ तोले, दोनो को मिलाकर जगली बेर समान वटी करे।

मात्रा तथा गुण—दिन मे २–२ वटी तीन बार प्रयोग करे। नये सुजाक मे लाभप्रद है, पुराने सुजाक को भी कुछ समय प्रयोग करने से यह वटी नष्ट कर देती है।

हब्ब निशात

चादी भस्म ४॥ माशे, जावत्री, केशर, कस्तूरी, रेहमाही १॥ १॥ तोले, जायफल, समुन्द्रसोख प्रत्येक ९–९ माशे, जहरमोहरा १। माशे, सब औषध को कूट छानकर, पानरस, वा अद्रक रस से भावित कर चने समान वटी करे, और ऊपर चांदी के वर्क चढाये।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, सम्भोग से १ घंटा पूर्व प्रयोग करे। स्तम्भक तथा आनन्द दायक है।

हब्ब हलीला (हरीतकी वटी)

हरड़, हरड़ बड़ी, बहेड़ा, आमला, कृष्ण हरीतकी, गुलाब पुष्प ३–३ माशे, सनाय पत्र ६ माशा, ग़ारीकून, (छलनी मे छना हुआ) त्रिवृत, लाजवरद धुला हुआ प्रत्येक ७ माशे, कूट छानकर मूग समान वटी करे।

मात्रा—३ से ६ माशे, बादाम तैल से स्नेहाक्त कर रोगी सोते समय उष्ण जल वा अर्क सौंफ से ले।

गुण—विबन्ध नाशक, अर्श तथा शिरशूल के लिये भी लाभप्रद है।

हब्ब याकूत

याकूत सुर्ख, मुक्ता, गिरिबादाम, अगर १–१ तोला, बुसद, कहरबा, ६–६ माशे, कस्तूरी १॥ माशे, अम्बर, ३ माशे, निशास्ता, १ तोला, रुब्बुलसूस (मधुयष्टि का घन सत्व) २ तोला, गोंदकीकर, बनफ़शा मूल, अहिफेन, मिश्री २–२ तोले, प्रथम ज्वाहरात को अर्क गुलाब में खरल करें। फिर बाकी औषध का बारीक चूर्ण कर मिलाकर चने समान वटी करे।

मात्रा तथा प्रयोग विधि—वाजीकरण के लिये १ वटी लबूब कबीर ५ माशे, वा माजून जालीनूस ५ माशे में मिलाकर प्रयोग करे। शारीरक दुर्बलता के लिये, खमीरा गाऊजबान अम्बरी ज्वाहरवाला, ५ माशे, वा दवाल्मस्क ५ माशे में मिलाकर प्रयोग करे। नजला, खांसी में १ वटी खाकर अर्क गाऊजबान १२ तोले, शरबत बनफ़शा दो तोले डालकर सेवन करे।

गुण—शरीर की दुर्बलता मे उत्तम है। स्तम्भक है, तथा प्रतिश्याय, कासश्वास में लाभप्रद है—अत्यन्त प्रभावशाली योग है।

हब्ब त्रिवृत

त्रिवृत, १ भाग, सुरजान मबुर, हरड़, आधा-आधा भाग, गुलाब पुष्प, बनफ़शा, अफतमियूं (आकशवेल), सौंफरूमी, बोजीदान, गारीक्यून, सकमूनीया भुना हुआ, शुद्ध गुगल, सकबीनज, सैंधव लवण—तीसरा भाग, सबको कूट छानकर मूग समाम वटी करें।

मात्रा—४ माशे।

गुण—शिर शूल, अर्धभेदक, चक्षूपीड़ा तथा वातरक्त में अति उत्तम है।

हब्ब अफतीमियूं

सकमूनीया ३॥ माशे, अयारजफैकरा, शहम हिजल (इन्द्रायण का भीतरी शुष्क गूदा), गारीक्यून, अफतिमियू (आकाश बेल), शुद्ध

गुग्गुलु, हिजर अरमनी, (एक प्रकार का पाषाण है) प्रत्येक सात माशे, निशोथ सफेद १॥ तोले सबको कूट छानकर पानी से गोलीयां बनावे ।

मात्रा—४ माशे ।

गुण—शिर, तथा आमाशय को वातिक दोषों से निवृत करती है।

हब्ब लाजवरद

लौंग, सौंफ़ रूमी, सकमूनीया प्रत्येक ३॥ माशे, लाजवरद धुला हुआ १०॥ माशे, बसफाईज फसतकी १४ माशे, गारीकून, अफतीमियूं, प्रत्येक १ तोला ५॥ माशे, अयारज फैंकरा १॥ तोले, सबको कूट छानकर करफस के पानी में गूंद कर वटी करें।

मात्रा—१०॥ माशे, बकरी के दूध को फटाकर शरबत उन्नाव मिलाकर उसके संग लेवें।

गुण—वातिक दोषों मे लाभप्रद है।

हब्ब शैतरज (चित्रक वटी)

मुसब्बर ५ तोले १० माशे, त्रिवृत दो तोले ११ माशे, मिश्री, १४ माशे, सोंठ, हरमल बीज, प्रत्येक पौने ९ माशे, चित्रक, सैंधव-लवण, वचं प्रत्येक ७ माशे, मिरच, पिप्पली, अकरकरा प्रत्येक ३॥ माशे जल से वटी करें।

मात्रा—१ से २ वटी, योग्य अनुपान से दें।

गुण—अर्धांग, अर्दित, जिह्वा का भारीपन, शिरशूल के लिये उपयोगी है।

वातकम्पहर वटी

अकरकरा, जुन्दबस्तर, चित्रक, अजवायन खुरासानी, प्रत्येक १०॥ माशे, सकबीनज (एक प्रकार की गोंद है), तुम्बे का गूदा, प्रत्येक १४ माशे, अयारज फैकरा प्रत्येक १ तोला ५॥ माशे, सबको कूट छानकर पानी में गूंद कर वटी बनावें।

मात्रा तथा गुण—८॥ माशा, वातकम्प में उपयोगी है।

अपस्मार हरवटी

मुसव्बर, शुद्ध गुग्गुलु-१-१ भाग, सकमूनीया पाव भाग, तीनों को बारीक पीस कर चने प्रमाण वटी करे।

मात्रा—युवा अवस्था मे ४॥ माशा, बालकों को २ माशा।

गुण—अपस्मार मे अत्यन्त उत्तम है।

चक्षुवटी

कौड़ी, नीलाथोथा, पिपली, संगबसरी समभाग बारीक पीस कर सात प्रहर अर्क गुलाब से खरल करे, और वटी बना कर रखे। गुण—आवश्यकतानुसार आंख में लगावे, फोले के लिये अति उत्तम है।

हब्ब सबज

रसौत ४तोला ८माशा, फटकड़ी खील की हुई दो तोला ४माशा, अहिफेन १४ माशा, नीमपत्र ५ नग, केशर ५ रत्ती, सब को पीस कर लोहे की कड़ाही में डालें, और थोड़ा पानी मिलाकर लोहेके दस्तेसे खूब खरल करे, इस के पश्चात आगपर रखें, पानी जल जाने पर जब घन हो जाये तो वटी बनावें, आवश्यकता पर, सबज धनिया के स्वरस वा पोस्त खशखाश के जल मे घिस कर आंख के पपोटे पर लगावें, कभी २ मुसव्वर ३॥ माशा भी डाला करते है।

गुण—आंख दुखने (नेत्राभिष्यन्द) मे लाभप्रद है, तथा जाला मे भी उपयोगी है।

मुखसुधार वटी

बही फल को बीच में से खाली करें, और खाली स्थान में लौंग कूट कर भर देवें, उसके ऊपर भगोया हुआ कपड़ा लपेट कर गीली मुलतानी मिट्टी लगाकर लेवे, इसके पश्चात आग में दबावे, ऊपर की मिट्टी पक जाने पर मिट्टी तथा कपड़ा पृथक कर के कूटें, पित प्रकृति वालों के लीये कपूर ६ रत्ती, चन्दन सफेद ३॥ माशा, ज़रद आलू शुष्क, (अर्क गुलाब में पिसा हुआ) २ तोला ११ माशे, इस मे मिला कर वटी करे और कफज प्रकृति वालों के लिये कस्तूरी १॥ माशा, जायफल १॥। माशा, सोंठ ३॥ माशा मिलावे।

गुण—इन गोलियो को मुह मे रखने से मुह की बदबू (जो कि आमाशय के विकृत होने से होती है) दूर होती है।

हब्ब जदवार

जदवार (निर्बसी), दरूनज अकरबी, दारचीनी, लौंग, वंशलोचन, शुद्ध शिलाजीत प्रत्येक ७ माशे, केशर, जाविन्त्री, मस्तगी रूमी, अगर, अहिफेन, अजवायन खुरासानी प्रत्येक ३।। माशे, कस्तूरी, जुन्दवदस्तर, प्रत्येक १।।। माशे, सबको कूट पीसकर चने समान वटी करे।

मात्रा—१ से दो वटी योग्य अनुपान से।

गुण—कास, प्रतिश्याय, श्वास, सास फूलना, के लिये लाभप्रद है, शरीर को बल देती है।

हब्ब सहाल (कास वटी)

रबुलसूस, काली मिरच, काली जीरी, हीग, बादाम गिरी, प्रत्येक दो तोले ११ माशे, कूट छानकर मधु मे मिलाकर वटी करें, मुख मे रखे।

गुण—तीव्र कास तथा सांस फूलने मे लाभप्रद है।

(२) सौभाग्य भुना हुआ, मुसव्वर, समभाग लेकर दोनो के समभाग गुड मिलाकर वटी बनावे, खासी समय १ वटी खा ले। प्लीहा वृद्धि मे एक मास प्रतिदिन भोजनोपरान्त खावें।

गुण—कास, श्वास, कोष्ट बद्धता, तथा प्लीहा में उपयोगी है।

हब्ब अताई

जराबन्द गोल, अहिफेन प्रत्येक ४।। माशे, महीसाला, कुन्दर शुद्ध, मुरमकी, बतम की गोद प्रत्येक १३।। माशे, कूट छानकर वटी करे।

मात्रा—४ रत्ती से २ माशे तक योग्य अनुपान से दे।

गुण—कफज कास तथा श्वास मे उत्तम है।

कासवटी

शकर तेगाल, निशास्ता, गोंदकतीरा, गोदकीकर प्रत्येक १०।। माशे, खशखाश बीज, रबुलसूस, बहिदाना बीज, प्रत्येक १४ माशे,

मगज़ बादाम मधुर छिले हुये, खांड सफेद प्रत्येक दो तोले ११ मागे, सबको कूट छानकर वहिदाना के स्वरस में वटी करे, और १-१ वटी मुख मे रख कर चूसें।

गुण—कास रक्तपित-यक्ष्मा में उत्तम है।

कासवटी (२)

कर्पूर २ रत्ती, वंगलोचन, इंजवारमूल, दमलखवायन (खून सोगान), कहरूवा शमई, मुक्ता, शादनज अटसी धुला हुआ, गोंद कीकर, कतीरा, रवुलसूम, सरतान (केकडा) जला हुआ, गिल अरमनी (एक प्रकार की मिट्टी है) प्रत्येक ४ रत्ती. मग़ज़ तुख़म खरपजा (खीरे के बीज का मगज), मगज कद्दू मधुर १-१ माशा, मुक्ता, शादनज तथा कहरूवा को पृथक खरल कर लेवें, और बाकी औषध का बारीक चूर्ण करके मिला जल से वटी करे, यह सब एक मात्रा है। गवी वा स्त्री वा वकरी के दूध से प्रयोग करें।

गुण—रक्तपित-कास-यक्ष्मा, ज्वर मे उपयोगी है।

हब्ब फादजहर महदनी

फादजहरमदनी खताई, याकूत रमानी, मुक्ता, कहरूवा, गिलअरमनी धुली हुई, दरूनज अकरबी, हब्ब वल्सान, शकाकल मिश्री, वहमन सुरख, सफेद, हब्बुलगार, वंगलोचन, दारचीनी प्रत्येक ४॥ माशा, केशर २। माशा, अम्बरशव, कस्तूरी, स्वर्ण पत्र, चाँदी पत्र प्रत्येक ५ रत्ती, प्रथम ज्वाहरात, को उत्तम खरल मे खरल करें। पीछे स्वर्ण तथा चाँदी पत्र को गोंद कीकर के स्वरस मे हल करके कस्तूरी तथा केशर-हल कर ले, इसी तरह अम्बर को रोगन वलसान २। माशा मे पिघला कर तथा बाकी औषध को कूट पीसकर एक जीव कर २ रत्ती की वटी बनावें।

मात्रा—आवश्यकतानुसार प्रतिदिन ५ वटी अर्क गुलाब से प्रयोग करें।

गुण—हृदय को बल देती है, विषों को नष्ट करती है। सब दोषों को नष्ट करती है।

हब्ब असतस्का (जलोदर हर वटी)

मुसब्बर ४२ माशे, अफतीमियू (आकाश वेल) २१ माशे, सकमूनीया भुना हुआ, १४ माशे, गारीकून १०॥ माशे, सम्बल, तज, त्रिवृत, मस्तगी ७-७ माशा, केशर ५। माशा, अमामा (एक प्रकार की बूटी है) ३। माशा, सब औषध को कूट पीसकर चने समान जल से वटी करे।

मात्रा—८॥ माशा।

गुण—कफज जलोदर में उपयोगी है।

हब्ब माज़रियू

रेवन्दचीनी, अमारा गाफस, करफस बीज प्रत्येक १०॥ माशा, माजरियू शुद्ध ३५ माशा, (यह एक प्रकार की बूटी है, जो विरेचक, है और विषैली है) सब औषध को कूट छानकर पानी से वटी करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—जलोदर मे अति उत्तम है।

प्रवाहिका वटी

कशार कुन्दर (कुन्दर के ऊपर का छिल्का), माजू, अनार का छिलका, किकर की फली, बिलकत्थ, जुफतबलूत प्रत्येक ५। माशा, सब औषध को कूट छान कर सुरा के सिरके मे इतना उबाले, कि गाढा हो जाये, मिरच समान वटी करे।

मात्रा—३ माशे से ४॥ माशे।

गुण—प्रवाहिका मे अत्यन्त उपयोगी है।

अहिफ़ेन वटी

सौभाग्य भस्म १ भाग, शुद्ध हिंगुल २ भाग, आहिफेन ४ भाग, सब औषध को यथा विधि बारीक पीस कर दो भाग करें, प्रथम भाग की मधु के संग मिरच समान वटी करे, दूसरे भाग की निंबूरस से वटी करें।

मात्रा—४ से ८ वटी।

गुण—यदि रोगी को अतिसार रात्री समय हो, तो मधु से निर्मित वटी प्रयोग करे, यदि दिन को हो, तो निवूरस से निर्मित वटी का प्रयोग करे । अतिसार मे वहुत ही लाभप्रद योग है ।

बाल अतिसार वटी

अनार की वन्द कली १ नग, अहिफ़ेन, जायफल, १—१ माशा, चाकसू, रसौत, नरकचूर, जीरा सफेद छिला हुआ, हलदी (ऊपर से छिली हुई), नीम की कोपल, महा नीम कोपल, कीकर की कोंपल २—२ माशे. सब औषध को कूट पीस कर, मिरच के समान् वटी करें ।

मात्रा—१ से ४ वटी ।

गुण—बालकों के अतिसार मे अत्यन्त लाभप्रद है ।

माजू योग

अनार का छिलका २माशे, समाक ३।। माशे, माजू सात माशे, कूट छान कर चने समान वटी करे ।

गुण—अतिसार मे लाभप्रद है ।

मोड़ीयो योग

अनार का छिलका, १।।। माशे, माजू ३।। माशे, समाक ७ माशे, मुनक्का वीज रहित, १०।। माशे, मीडोयो वीज ३५ माशे, सव को कूट पीसकर गोंदकीकर के रस की सहायता से चने समान वटी करे ।

मात्रा—७ माशे, शीतल जल से दे ।

गुण—अतिसार, रक्त अतिसार में लाभप्रद है ।

कृमि हर वटी

तूम्बे का शुष्क गूदा ८।।। माशे, सकमूनीया ७ माशे, काला-दाना १०।। माशे, अफतीमियू १४ माशे, मुसव्वर ३१।। माशे, त्रिवृत ३५ माशे ।

सव को कूटछान कर जल से वटी वनावे ।

मात्रा—३—६ माशे, उष्ण जल से दें ।

गुण—कद्दूदाने, केचवे और छोटे कीडो को पेट मे खारज करती हैं।

कृमि हर वटी (२)

सिरखस, कमीला, कालादाना, दरमना तुरकी, सौंफ रूमी, त्रिवृत, अफसनतीन रूमी, शफतालु पत्र, तुरमस, वायविडग, प्रत्येक १०॥ माशे, शुद्ध गुग्गुल, मकमूनीया प्रत्येक ३–३ माशे, सब औषध को कूट छान कर चने समान वटी करे।

मात्रा—आवश्यकतानुसार उष्ण जलसे १ से तीन माशे तक खावे।

गुण—प्रत्येक प्रकार के कृमि के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

हब्ब ग़ारीकून

असारा ग़ाफस, रेवन्दचीनी, ७–७ माशे, गारीकून ३५ माशे, खॉड ५२॥ माशे, सब औषव को कूट छान कर जल से वटी बनावे।

मात्रा—रात्री को ३॥ माशे प्रयोग करे।

गुण—कवज को दूर करती है, यकृत शोधक है।

हब्ब एलाऊस

सकमूनीया, शुद्ध गुग्गुल प्रत्येक ४॥ माशे, मुसब्बर ९ माशे कूट छान कर चने समान वटी करे।

मात्रा—७ वटी।

गुण—मुख द्वारा पाख़ाना आने मे लाभप्रद है।

हब्बलमलूक

त्रिवृत श्वेत, सैंधव लवण प्रत्येक ३५ माशे, मुसब्बर १७॥ माशे, अनजरूत, हरड, हरड बडी प्रत्येक १०॥ माशे, मस्तगी, केशर, तेजपात, कुठ कडवी, रेवन्द चीनी, सोंठ, सौफ रूमी, करफ़रा बीज, लौंग, मिरच काली, छोटी इलायची, दारचीनी, गोंद कतीरा बड़ी इलायची प्रत्येक १॥। माशे, कस्तूरी ६ रत्ती, सकमूनीया, ९ माशे, कूट छान कर अर्क गुलाब से वटी करे।

मात्रा—३–६ माशे।

गुण—आन्त्र शूल मे लाभप्रद है, दूषित वायू को निकालती है।

हब्ब मक्कल (गुग्गुल वटी)

सैंधव लवण, सातर फ़ारसी, मस्तगी रूमी, सुरंजान, उशक, हरमल, पितपापडा, अजवायन प्रत्येक, ३।। माशे, सकवीनज (कान्दल) सात माशे, हरड कृष्ण, बहेड़ा, आमला शुद्ध गुग्गुलु प्रत्येक १४ माशे, सम्बल, केशर, दारचीनी, वर्च, बड़ी इलायची, तज, प्रत्येक २८।। माशे, एलवा (मुसब्बर). ७० माशे, प्रथम गुग्गुलु,सकवीनज को गन्दना के रस मे हल करे, और बाकी औषध का चुर्ण कर इस मे मिला देवे।

मात्रा– ९ माशे।

गुण–इस वटी के तीन दिन के प्रयोग से, अर्श की पीड़ा और कष्ट नष्ट हो जाता है।

हब्ब मफ़तत

हब्ब बलसान, हबुलगार, किबर मूल छाल, सौफ मूल त्वक, मूली बीज, दोको, अजमोद, जाओ शीर, बादाम मग़ज, अजखर, नागरमोथा, सम्भल, तज, असकोलोकन्द्रयो, हरमल, जरावन्द गोल, हबजत्याना, तगर, काली जीरी, मुमरकी, उशक, सकबीनज, अजवायन खुरासानी, शुद्ध गुग्गुलु, काली मिरच, वर्च, सब समान भाग लेकर चूर्ण करे, प्रथम गौदो को जल मे हल करे, बाकी औषध को रोग़न बलसान से स्नेहाक्त करे, और सब को मिलाकर एकजीव कर गोलीया बनावे।

मात्रा–३।। माशे, बजूरी के क्वाथ से दे, यदि इस औषध मे ६ रत्ती प्रतिदिन बिच्छू की राख मिला कर प्रयोग करे, तो अधिक लाभप्रद है।

गुण–चिरकाल तक प्रयोग करने से अधिक लाभ होता है, पथरी (अश्मरी) को टुकड़े २ कर के निकाल देती है।

हब्ब सीमाब (पारद वटी)

शुद्ध पारद, (गाढ़े और मोटे कपड़े से ३–४ वार छान ले, इससे और शुद्ध हो जाता है), अहिफेन प्रत्येक १०।। माशे, दोनो को मिलाकर पान स्वरस से ७ वार भावित करें, शुष्क होने पर अकरकरा, अजवायन खुरसानी, पान की जड, जायफल, लौंग, जावित्री, प्रत्येक ३।। माशे, कूट छान कर पारद अहिफेन से मिला खरल करके चने समान वटी करे।

मात्रा—१ वटी, भोजन से ४ घण्टे बाद खाकर उसके १। घण्टे पश्चात सम्भोग करे।

गुण—स्तम्भक है, जबतक अम्ल वस्तु न खाई जाई, वीर्य पतन नही होता।

हब्ब मुशक (कस्तूरी वटी)

लौग, काली मिरच, पान की जड़, अकरकरा, प्रत्येक ३।। माशे, गुलाब पुष्प, सन्दल सफेद, तबाशीर सफेद, ऊद हिन्दी, कपूर, कस्तूरी, प्रत्येक ९ रत्ती, सब को कूट पीसकर छानकर अर्क गुलाब से चने समानवटी करे

मात्रा—१ से दो वटी।

गुण—स्तम्भक है, सुगन्धित है, आनन्ददायक है।

हब्ब मनशात

फरफयून, २। माशा, नरकचूर, हब्बुलगार, अकरकरा, लौंग, जावित्री, गोदकीकर, प्रत्येक ४।। माशा, तगर, केशर, करफस बीज, दारचीनी, रेवन्दचीनी, बालछड, मस्तगी प्रत्येक ९ माशा, अजवायन खुरासानी, काली मिरच प्रत्येक १३।। माशा, अहिफेन २२।। माशा सब औषध को कूटछान कर अर्क गुलाब से चने समानवटी करे।

मात्रा—१ से २ वटी।

गुण—स्तम्भक है, उत्तेजक है।

हब्ब मुशकल कुशा

अकरकरा, जायफल, जावित्री, दारचीनी, लौग, हरमल, काले तिल, अहिफेन प्रत्येक ७ माशे कूट छान कर शहद संग मिलाकर वटी करे।

मात्रा—१ से ४ वटी।

गुण—प्रमेह, पेशाब के साथ सफेद वस्तु के आने मे लाभप्रद है।

गर्भदा वटी

कस्तूरी २ रत्ती, अहिफेन, जायफल, केशर, १—१ माशे, भांग १।।। माशे, गुण पुराना, ५। माशे, गुजराती छालीया ३ नग, लौग ४ नग, सब को कूट छान कर गुड़ मे बैर समान वटी करे।

मात्रा तथा गुण---मासिक धर्म के पश्चात प्रथम तीन दिन १-१ वटी दूध से प्रयोग करें, वांझपन में लाभप्रद है।

हब्ब बरलसायता

मुसब्बर, हरड़, सुरंजान मधुर, खॉड, सनाय, मस्तगी, १-१ तोला. कूट छान कर वटी करे

मात्रा---२ से ४ वटी---

गुण---तीनो दोषो के लिये लाभदायक है, आमवात, वातरक्त, गृध्रसी मे उपयोगी है।

हब्ब शैतरज (चित्रक वटी)

मुसब्बर ७० माशे, हरड़ ३५ माशे, शक्कर सफेद १४ माशे, राई १०।। माशे, पित्तपापड़ा, सोंठ, तुम्बे का शुष्क गूदा, सैंधव लवण प्रत्येक ७माशे, मिरच, पिपली प्रत्येक ३।। माशे, मिलाकर ४-४ रत्ती की वटी करे, आवश्यकतानुसार, २ से ४ वटी प्रयोग करे।

गुण---गृध्रसी, आमवात, कटिशूल मे अति उत्तम है।

हब्ब यशप

यशप सवज़ १ तोला को ७ वार गरम करके अर्क गुलाब मे बुझावे, पिस्ता का भीतरी पोस्त, नारयील दरयाई, छोटी इलायची, वडी इलायची, जहरमोहरा, चांदीपत्र, स्वर्णपत्र, मुक्ता १-१ तोला, सब को मिलाकर एकजीव करके अर्क गुलाव वा वेदमुशक मे खरल कर मूंग समान वटी करें।

मात्रा---१ से दो वटी।

गुण---हृदय को वल देने मे वहुत ही उपयोगी है।

हब्ब करामात

कमीला, चूना नीलाथोथा. हरड, पापडीया कत्थ, सव औषध वारीक करके जल से वटी करे, और छाया मे शुष्क करे, आवश्यकतानुसार गौघृत मे हल करके फुसियो पर लगावे।

गुण---प्रत्येक प्रकार की फुसियों मे उपयोगी है।

कुष्ट हरवटी

सोठ, अयारज फ़ैकरा, मिरच सफेद, कुटकी काली, सम भाग लेकर शराब मे वहरोजा हल करके मिलावे, और गोलीयाँ बनावें ।

मात्रा—३—६ माशा योग्य अनुपान से ।

यह लेप भी करे, पितपापड़ा, सुरमा, माजू, फटकड़ी सुरख, मछली की हड्डी जली हुई, बारीक करे, और जल से टिकिया बनावे, सिरके मे हल कर दागो पर लेप करे ।

गुण—वरस, श्वेत कुष्ट मे लाभप्रद है ।

हब्ब हमी

पोस्त कोकनार, अहिफेन, कर्पूर १–१ तोला, तीनो को बारीक पीसकर जल से मूग समान वटी करे, यदि पोस्त कोकनार के स्थान पर भांगपत्र प्रयोग करे, तो अधिक उपयोगी है ।

मात्रा—१ वटी, ज्वर आने से पूर्व प्रयोग करे।

गुण—तृतीयक ज्वर मे लाभप्रद है ।

हब्ब जरयान

सत् शिलाजीत, धस्तूरबीज, २–२ तोला, खयारैनबीज मगज, मग़ज तुख़म कदू मधुर, खशखाशबीज श्वेत ३–३ तोले, सबको कूट छानकर रोगन चरेस के साथ चने समान वटी करे ।

मात्रा—१ वटी, ताजा जल से रात्री सोते समय लें ।

गुण—प्रमेह के लिये अत्यन्त उत्तम है ।

हब्ब रस कर्पूर

रस कर्पूर, मूसली कृष्ण, कुलन्जन, काली मिरच १–१ तोला, पहिले रस कर्पूर को पोटली मे बांधकर एक देगची मे गिलोय सबज के जल के अन्दर पकावे, कि पोटली पानी मे इस प्रकार लटकी रहे कि देगची से न लगने पाये, जल समाप्त होने पर रस कर्पूर को निकाल कर बाकी औषध के चूर्ण मे मिलाकर खरल करके गिलोय सबज के रस से भावित कर ५० वटी बनावे, यदि गिलोय के स्थान पर मकोय रस मे गोलीया बनावे, तो मुंह आने का भय नही रहेगा,

मुंह आने पर चम्बेलीपत्र को बकरी के दूध मे 'उबाल कर गरारा करें ।

मात्रा—२ वटी, शीतल जल से दें । घृत अधिक प्रयोग करे, मट्ठाई, दाल मूंग से परहेज करे ।

गुण—आतशक मे अत्यन्त उत्तम है ।

हब्ब मसीही

शुद्ध भल्लातक, काली मिरच, गिलोयसत्व, तबाशीर सफेद, छोटी इलायची त्वचा समेत सबको बारीक पीसकर माष समान वटी करें ।

मात्रा—१-१ वटी, योग्य अनुपान से दें ।

गुण—यक्ष्मा मे अत्यन्त उत्तम है ।

हब्ब मकवी ममस्क

स्वर्ण वर्क, शुद्ध पारद १-१ तोला, दोनो को ५० नग निबू स्वरस में खरल करें, जब दोनों एकजीव हो जाये, तो लाहौरी लवण से धोकर करनब शुद्ध ६ माशा, ज्वाहरमोहरा ४ माशा, याकूत भस्म, जुमरद भस्म, शुक्ति भस्म, कुक्कटाण्ड भस्म, चादी भस्म, ताम्रभस्म, वंगभस्म प्रत्येक २ माशा, कुचला सत्व १२ रत्ती, अफीम ३ माशा, तेलनी मक्खी, अम्बरशहब प्रत्येक २ माशा, धस्तूरबीज ५ तोला, चोया अगर २ तोला, टिकचर केनथरडीन १० तोला, सबको ब्राण्डी शराब में हल करके ४८० वटी करे ।

मात्रा—१ वटी, पाव भर दूध से ।

गुण—परम स्तम्भक योग है ।

हब्ब ज्वाहर मस्कन

याकूत सुरख, लालबदखशान, याकूत जरद, याकूत कबूद, अकीक, मरजान, यशप, जुमरद, फैरोजा प्रत्येक ६ रत्ती, जदवार, कहरवा शमई, मरवारीद, नारीयल दरयाई, लाजवरद धुला हुआ, फादजहर हेवानी, कस्तूरी, अम्बरशहब, केशर, चादीपत्र, कर्पूर, शिलाजीत ६-६ माशा, अहिफेन ३ माशा, सोने वर्क १॥ माशा,

अर्क गुलाब १ बोतल सब ज्वाहरात को अर्क गुलाब मे खरल करे, और बाकी औषध के बारीक चूर्ण को मिलाकर माष समान वटी करें।

मात्रा—१ से दो वटी, प्रातः साय प्रयोग करे।

गुण—हृदय को बल देने मे अत्यन्त प्रभावशाली औषध है।

हलवे

हलवा वह पौष्टिक औषध है, जिस मे मगजयात तथा घृत विशेष करके मिश्रित होता है, यह जहा औषध रूप मे रोगो को नष्ट करते है, वहाँ शरीर को भी दृढ करते है, यह एक प्रकार के जीवनी औषध है, शरद ऋतु मे अधिक उपयोग मे लाये जाते है।

हलवाये बादाम

मगज बादाम छिले हुय, २० तोला, मगज चलगोजा, मगज तुखुम कदू शरीन (मधुर), खशखाश बीज मगज चिरोंजी, प्रत्येक ५—५ तोला, सब को कूट ले, और १॥ सेर गर्म पानी मे हल करके छान ले, ॥ पाव अर्क गुलाब मिला कर अग्नि पर पाक करे, अब उपरोक्त पाक मे उपरिलिखित औषध का चूर्ण डाल कर एकजीव करके थोड़ी देर तक पाक करे, पीछे सब को धीरे से १ थाली मे डाल कर बिछा दे, और १ पाव शक्कर (खाँड) छिडक कर शीतल होने दे, फिर बरफी की तरह छुरी से छोटी २ टुकड़िया काट ले।

मात्रा—दो, तीन तोले, प्रात दूध के साथ प्रयोग करे।

गुण—मस्तिष्क को बलवान बनाता है, बुद्धि दुर्बलता को नष्ट करता है, वीर्यप्रद है, बाजीकरण है, शरीर को दृढ बनाता है।

हलवा-बेजा मुरग

बेजा मुरग (मुरगी के अण्डे) २० नग लेकर जल मे उबाले, पीछे उनकी जरदी निकाल कर जरदी को १ पाव घी मे भन ले, (सफेदी को फेक दे) अब खाँड १ पाव को अर्क बहार, नारज, और बेदमुश्क १—१ पाव मे डाल कर पाक करे, पाक होने पर जरदी मिला दे, इसके उपरान्त जायफल, जावित्री प्रत्येक ५—५ माशा, केसर, कस्तूरी, १—१ माशा, अर्क बेदमुश्क में खरल करके मिला दें।

मात्रा—१ से ५ तोला, प्रात. दूध से प्रयोग करे ।

गुणा—वीर्यप्रद, वाजीकरण, उत्तेजक, तथा हृदय, मस्तिष्क को वल देता है ।

(२) आवश्यकतानुसार अण्डे लेकर उनकी सफेदी तथा जरदी निकाले, दोनों को मिला कर चमचा से खूब फेंटे, सम भाग घी और खाँड मिला कर फिर चमचा से भली प्रकार फेंटे, मृदु अग्नि पर पाक करे, जब गाढा होने लगे, तो देखले, कि घी कम तो नहीं है, यदि कम हो, तो और डाले, गाढा होने पर उतार कर किसी थालीमे डाल कर फैला दे, यदि इसको रोजाना बनाया जाये तो उत्तम है,अधिक देर तक रखने से खराब हो जाता है, अत्यन्त वाजीकरण तथा वलप्रद औषध है ।

हलवा सहलब

चने का आटा १२ तोला, वाकला का आटा, मेदा गन्दम प्रत्येक ८—८ तोला, सब को पृथक् २ घी मे भून ले, मधु उत्तम १। पाव, खाँड२।।पाव, अर्क वेदमुश्क आधी वोतल मे पाक करके तीनो आटे इस में मिश्रित कर दे, पश्चात् सहलब मिश्री ३ तोला, पिस्ता, मगज-फिन्दक, (वादाम की तरह यह भी एक प्रकार का फल है), मगज चलगोजा, खोपा, चिरोंजी, मगज वादाम मधुर, मगज़ तुखम खरपजा, मगज हवतलख़िजग, मगज हब्बलजलम, मगज हब्ब किल-किल, १—१ तोला (यह तीनों एक प्रकार के फल है), दारचीनी, जायफल, मस्तगी, पान की जड, वहमन सुरख़,सफेद, शकाकल मिश्री, वड़ी एलायची वीज प्रत्येक ६ माशा, जावित्री, सोठ, केशर, कस्तूरी, अम्वरशव प्रत्येक ३—३ माशा कूट छान कर शामल करें ।

मात्रा—दो तोला, प्रात दूध सग प्रयोग करे ।

गुण—वीर्यप्रद, वल्य, तथा वाजीकरण है, वीर्य को गाढा बनाता है, शरीर को शक्ति देता है, हृदय तथा मस्तिष्क को वलवान वनाता है ।

हलवा चोबचीनी

गन्दम का आटा ५ सेर, रोगन जैतून और घृत १—१ सेर छ छटांक में मिश्रित कर अग्नि पर चढा कर भून लें, इस के उपरान्त

४सेर १पाव उत्तम मधुका पाक करके भुना हुआ आटा इसमें मिला दे, फिर मगज चल्गोजा, मगज नारजील प्रत्येक आठ तोला, पीस कर शामल करे, इसके उपरान्त चोबचीनी ३८ तोला, लौंग, छोटी इलायची, दारचीनी, कचूर, सौंफ, सोंठ, अनीसून, इन्द्र जौ, नुरजान मधुर [illegible], पान की जड़, नागरमोथा, प्रत्येक ६ तोला, कूट छान कर हलवे में मिश्रित करे।

मात्रा—१ तोला, खाकर १ पाव दूध पीवें।

गुणा—रक्तशोधक तथा वाजीकरण है।

हलवा सुपारी पाक

कपूर ३॥ माशा, तज, पत्रज, नागकेशर, नागरमोथा, पिप्पली, पोदीना खुश्क, अजवायन खुरासानी, छोटी इलायची प्रत्येक ७ माशा, तालीसपत्र, जावित्री, वंशलोचन, गम्दल सफेद, मिरच काली, मगज तुखम कनार, प्रत्येक १०॥ माशा, जायफल १४ माशा, जीरा सफेद १ तोला ९ माशा, एरण्ड जड़, नीलोफर पुष्प, बनोले का मगज, मगज तुख़म नीलोफर, लौंग, धनियां, पिप्पलामूल प्रत्येक दो तोला ४ माशा सिंघाड़ा खुश्क, शतावर प्रत्येक ३॥ तोला, बला बीज, खिरनी बीज प्रत्येक ४ तोला १ माशा, चरोंजी मगज वा, बादाम गिरी ८ तोला २ माशा, मगज पिस्ता ११ तोला आठ माशा, द्राक्षा बीजरहित, १३ तोला, सुपारी दक्षिणी तीन पाव, मगजयात और द्राक्षा बीजरहित के इलावा कूटने वाली औषध का चूर्ण करे, और इन को पृथक् भली प्रकार खरल करके इस का शीरा निकाल ले, सुपारी के छोटे २ टुकड़ों करे, और दस सेर दूध मे डाल कर इतना अग्नि पर पकावे कि खोया बन जाये, फिर इन सुपारी को खुश्क करके कूट ले, इस के पश्चात मिश्री ११ छटाक, शतावर मूल स्वरस १ सेर ५ छटाक, दूध (गाय का वा भैंस का) ४॥।सेर, खाँड ८ सेर इकट्ठा करके पाक करे, इस के पश्चात् घी १ सेर गरम करके मगजयात, द्राक्षा, सुपारी डाल कर भूने, फिर सब औषध चूर्ण मिला कर हलवा बनाये।

मात्रा—दो तोला, प्रातः दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह हलवा प्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष मे अत्यन्त उत्तम

है, शरीर को दृढ बनाता है, तथा वाजीकर है, स्त्रियो के प्रदर, श्वेत प्रदर, कटिशूल तथा क्षीणता को नष्ट करता है, गर्भशयके दूषित स्राव को खुष्क करता है, तथा योनी का संकोच करता है, स्त्रियो तथा पुरुषों दोनों के लिये लाभप्रद योग है ।

(२) सुपारी ५ तोला, सोठ तीन तोला, दोनो को कूट छान कर गौ दूध १ सेर में उबाले, कि खोया बन जाये, इसके पश्चात् गन्दम का आटा १ पाव, सिंघाड़ा का आटा ॥ पाव, गाय के घी मे भून कर ॥ सेर खाँड का पाक करके उस मे डाल कर हलवा बनावे, तत्पश्चात् माई छोटी तथा बड़ी, सुपारीपुष्प, ढाक की गोंद, कीकर गोद, तालमखाना, धावी पुष्प, बीजबन्द, मगज तुखम इमली प्रत्येक दो तोला, माजू सबज २ नग, जायफल, जावित्री, लौंग, केशर प्रत्येक ४ माशा कट छान कर मिलाकर एक जीव करें ।

मात्रा—दो तोला की मात्रा मे प्रातः दूध के साथ खावे ।

गुण—उपरोक्त ।

हलवा गाजर

सुरख रग की गाजरे लेकर छिलका तथा भीतरी कठोर भाग निकाल देवे, और कद्दूकश से बारीक कर ले, फिर दूध मे इस कदर जोश दें, कि गाजरे नरम हो जाये, और खुष्क हो जायें, इस के पश्चात् इन को घी मे भून कर वज़न करे, उस से दुगनी खाँड लेकर पाक करे, पाकसिद्धि होने पर गाजरे डाल दें, और मगज चलगोज़ा, मगज अखरोट, मगज बादाम मधुर, खोपा, मग़ज फिन्दक, पिस्ता, मगज चरोंजी आवश्यकता अनुसार पीस कर घी में भून कर मिश्रित करे ।

मात्रा—तीन तोला प्रात साय दूध के साथ प्रयोग करे ।

गुण—बलय, वाजीकरण, वीर्यप्रद, तथा हृदय मस्तिष्क को अत्यन्त उपयोगी है ।

हलवा गाजर मगज शिरकंजशक वाला

सुरख़ रगकी गाजरें (छिलका तथा भीतरी कठिन भाग निकाल लें), १ सेर, छुहारे गुठली रहित ॥ सेर, गाजरों को कद्दूकश कर लें, और छुहारों समेत ५ सेर दूध में उबाले, और लकड़ी के दस्ते से खूब कूट कर

बारीक कर ले, भुने चने का आटा तथा गन्दम का आटा १–१ छटाँक लेकर घी मे भून ले, और खाँड़ १ सेर, शहद उत्तम ॥सेर का पाक कर के भुने हुये आटे, गाजरे वा छुहारे शामल कर देवे, इस के पश्चात् ४० घरेलू चिडो के शिर का मगज निकाल कर घृत मे भून ले, अब मगज फिन्दक, बादाम गिरी, मगज पिस्ता, मगज चलगोजा, लौंगा, प्रत्येक तीन माशा, साहल्ब मिश्री, गोक्षरू, दारचीनी, सोठ, पान की जड, १–१ तोला, केशर असली, कस्तूरी प्रत्येक ३॥ माशा, सबको यथाविधि बारीक कर शामल कर देवे ।

मात्रा—दो तोला से ४ तोला तक प्रातः दूध के साथ प्रयोग करें ।

गुण—वीर्यप्रद तथा वाजीकरण है, कटि तथा वृक्को को दृढ़ करता है, प्रमेह, स्वप्नदोष तथा शीघ्रपतन मे लाभकारी है, मस्तिष्क तथा हृदय को शक्ति देता है ।

हलवा घीक्वार

घृतकुमारी का गूदा निकाल कर रात्री को छनी हुई राख मे दबा दें, प्रात जलसे धोवे, धुल जाने पर १ सेर गूदा ५ सेर दूध मे पका कर खोया बना ले, इस के पश्चात् मगज बादाम, मगज चलगोजा, मगज फिन्दक, पिस्ता, नारियल कदूकश, छुहारे, मगज अखरोट प्रत्येक आध पाव को बारीक पीस कर ५ सेर दूध मे इतना पकावे, कि दूध खुश्क हो जावे, इन को सिल बट्टा पर खूब पीस ले इसी तरह घी कुमारी के गूदे को भी पीस कर मिला ले, फिर एक चौडे मुख वाली देगची में आवश्यकतानुसार घृत डाल कर अग्नि पर रखे, और घृत में थोड़ी २ औषध डाल कर चलाना शुरू करे, थोड़ी २ खाँड भी साथ मिलाते जायें, जब वह भली प्रकार मीठा हो जाये, और भुनते २ घी छोड दे, तो त्यार है ।

मात्रा—प्रात. ३—४ तोला, दूध के साथ प्रयोग करे ।

गुण—अत्यन्त बलप्रद तथा वाजीकरण है ।

ख़मीरे

ख़मीरे की निर्माणविधि माजून की तरह है, परन्तु कुछ अन्तर है, यदि इसे शरबत का घन पाक कहा जाये तो अधिक सत्य है, शरबत का पाक पतला होता है और खमीरा का पाक घन कर के घोट दिया

जाता है, जिससे इसकी रंगत श्वेत हो जाती है, इस विधि से यह लाभ है, कि शरवत का पाक पतला होने से उस के ख़राब होने की चिन्ता रहती है, वई शरवत का रंग भी अच्छा नही होता, और स्वाद भी ठीक नही होता, परन्तु ख़मीरे घन होने के कारण अधिक समय तक ख़राब हुये विना रह सकते है, रंग तथा स्वाद दोनों ही उत्तम होते है।

निर्माणविधि—प्रथम औषध का क्वाथ तथा शीत कषाय वनाया जाता है, फिर इस क्वाथ में खाँड डाल कर पाक करते है, गाढ़ा पाक हो जाने पर घोटने से घोट देते है. ख़मीरा का पाक जरा सख्त होता है, यदि मृदु रखना हो तो थोड़ा मधु का मिश्रण करना चाहिये, ख़मीरे के पाक को लकडी के मस्सद से घोटने से यह लाभ होता है, कि वायवीय अंश मिल जाने से ख़मीरे का रंग श्वेत हो जाता है। यदि पाक मे अम्बर, कस्तूरी, केशर, पाषाण, मस्तगी, चादी तथा स्वर्णपत्र डालने, हो तो इन को पृथक खरल कर लीया जाये, इन में से मस्तगी को हलके हाथों खरल करना चाहिये, अव जव खमीरे के पाक को घोंटना प्रारम्भ करे, और उसमें सफ़ेदी आनी प्रारम्भ हो, तो इन औषध के चूर्ण को थोड़ा २ ऊपर छिड़क देवे, और शीघ्रता से घोंटें, ध्यान रहे कि अम्वर आदि को किसी रोगन वा अर्क आदि मे हल कर के न डालें, चांदीपत्र आदि श्वेतता आते समय १-१ करके डाले। इस का पाक ऐसा होना चाहिये, कि घोटने के वाद वह सख्त हो जाये, परन्तु, ध्यान रखे, कि एसा भी सख्त न हो, कि वादमे भुर भुरा हो जाये, और भूरा खाँडकी तरह हो जाये, और न ही इतना पतला हो, कि घोटते समय सफेद तो हो जाये, परन्तु वाद मे उस का गाढा तरल भाग ऊपर आजाये, पाक की सिद्धी देखने की यह विधि है, कि यदि पाक की एक विन्दु पृथ्वीपर गिराई जाये, तो जमकर गोल स्थिती मे आजाये। घोटने की विधि यह है; कि एक कड़ाही मे पाक को डाल लीया जाये, और कडाही को किसी कदर त्रिच्छा कर ले, ताकि कडाही के सामने वाला भाग पाक से ख़ाली हो जाये, इस ख़ाली भाग मे पाक का थोड़ा २ भाग घोटने मे लेकर ∞ इग्रेज़ी आठ के हिन्से की आकृति अनुसार घोटने को चलाते जाये, और जब इस तरह करने से पाक

श्वेत हो जाये, तो फिर थोड़ा और पाक घोंटने से लेकर चलावें, इस विधि से जितना भी भाग श्वेत होता जाये,उस को दूसरे पाक मे मिलाते जाये, इस विधि से पाक बहुत शीघ्र श्वेत हो जाता है, और इस में नरमी आजाती है ।

खमीरा आबरेशम (सादा)

आबरेशम कुतरा हुआ ४२ तोला, अगर, बालछड, नरंज के ऊपर का छिलका खुष्क, मस्तगी, लौग, छोटी इलायची, तेजपत्र, चन्दन सफेद प्रत्येक ५ माशा, सब औषध को आबरेशम समेत पोटली मे बाध कर अर्क गाऊजबान, अर्क बेदमुष्क, अर्क गुलाब, सेव स्वरस, अनार स्वरस, मेघ जल (बारश का स्वच्छ जल) प्रत्येक १४ तोले, मे रात्री को भगो रखे, प्रात उबाले, जब एक तिहाई जल शुष्क हो जाये, तो छान लें, और मधु उत्तम १ पाव, खाँड सफेद तीन पाव मे मिला कर पाक करे, पाक हो जाने पर इस कदर घोटे, कि पाक चमकदार हो जाये, अब इसमे केशर ५माशा, अर्क कवेडा में मिला कर पाक मे डाल दें, और बरतन को ढक रखें, जब शीतल होने लगे तो कडाही में डाल कर यथाविधि घोंट दे, और चाँदी पत्र १-१ कर के डालते जाये ।

मात्रा—५ माशा, अर्क गाऊजबान १२ तोले के साथ ।

गुण—यह खमीरा, हृदय, मस्तिष्क को बल देता है, उन्माद, दिल का डूबना आदि में लाभप्रद है, चक्षू रोग में लाभप्रद है ।

खमीरा आबरेशम हकीम अरशदवाला

अपक्क आबरेशम ४२ तोले (कैंची से कुतरकर भीतरी कीट निकाल ले), ऊद गरकी (अगर), बालछड, नारंज का ऊपरि खुष्क छिलका, मस्तगी, लौग, छोटी इलायची, तेजपत्र, चन्दन सफेद प्रत्येक पांच माशा, सब औषध के बारीक चूर्ण को आबरेशम समेत एक पोटली मे बाध ले, अर्क गाऊजबान, बेदमुशक, गुलाब, सेब स्वरस, अनार स्वरस, वही फल स्वरस प्रत्येक १४ तोला, बारश का पानी दो सेर, अर्क, स्वरस तथा मेघ जल को मिलाकर इस मिश्रित पानी में पोटली डालकर इस कदर जोश दें, कि बारश वाला दो सेर जल जाये, तो पोटली निकाल ले,अब इस क्वाथ जल मे १पाव मधु और तीन पाव

खाँड सफेद शामिल कर पाक करे, इस के पश्चात अम्बरअशव, स्वर्णपत्र, चांदीपत्र ६–६ माशा, मुक्ता, याकूत, यशप सवज, कहरूवा-शमई, प्रवाल ९–९ माशा, कस्तूरी, केशर प्रत्येक ५ माशा, खूब भली प्रकार खरल कर के मिश्रित करे, और इस कदर घोटें, कि रंग श्वेत आ जाये, चीनी तथा शीशे के मरतबान में रखे।

मात्रा—३ माशे, अर्क गाऊजवान ७ तोले, अर्क गाजर ५ तोले, के साथ प्रयोग करे।

गुण—शरीर के विशेष अंगो को वल देता है, दिल डूवना, उन्माद, तथा वातिक रोगो में अतीव उपयोगी है, पित्त जनित जीर्ण प्रतिश्याय में भी लाभप्रद है, यूनानी चिकित्सा की एक विशेष औषध है।

नोट—मेघ जल न होने पर सादा जल ही प्रयोग किया जा सकता है।

खमीरा आबरेशम शीरा उन्नाब वाला

अपक्व आबरेशम १५ तोला, (कैंची से कुतर कर कीट आदि निकाल कर जल से धो देवें), पौने दो सेर वारशजल मे रात्री को भगो रखें, प्रातः जोश दे, १॥ पाव रहने पर छान ले, मधुर सेव स्वरस, अम्ल सेव स्वरस, मधुर अनार स्वरस, अम्ल अनार स्वरस, मधुर अंगूर स्वरस, वही फल स्वरस, उन्नाव स्वरस, (उन्नाव को पानी में पीस कर छान लें), ३–३ तोले, गाऊजवान स्वरस ६ माशे, (इसे भी पानी मे पीस कर छान ले), चन्दन सफेद स्वरस ३ तोला, (इसे अर्क गुलाब मे पीस कर छान ले), यह सब स्वरस लेकर आबरेशम के क्वाथ में मिलावे, और अर्क गुलाब, मिश्री प्रत्येक १५ तोले, मधु १० तोले, मिश्रित कर पाक करे, पाक सिद्धि पर केशर ३ माशे, कस्तूरी, अम्बर २–२ माशे, वशलोचन आवश्यकतानुसार मे खरल कर अन्त मे मिलावे, और घोटने से घोटे, कुच्छ हकीम शीतलता के विचार से इस मे अर्क बेदमुश्क १५ तोले, तरबूज़ जल ३ तोला और मिलाते है।

मात्रा—५ माशे, अर्क गाऊजवान १२ तोले के साथ।

गुण—यह खमीरा, उन्माद, हृदय डूवना, यक्ष्मा, रक्तपित

और सूखी खांसी में लाभ प्रद है, पाचक शक्ति तथा दृष्टि को बल देता है ।

खमीरा आबरेशम ऊद मस्तगी वाला

ऊद (अगर), मस्तगी, कस्तूरी, प्रत्येक दो माशा, याकूत, मरजान (प्रवाल), यशप प्रत्येक ४ माशे, मुक्ता, अम्बर प्रत्येक आठ माशे, इन औषध को पृथक खरल करके रख ले, बादरंजबोयापत्र, बनतुलसी-पत्र प्रत्येक ७ माशे, अपक्व आबरेशम केंची से कुतर कर ३४ तोले, बादरजबोया तथा आबरेशम आदि को लौह तप्त जल मे इतना उबाले, कि चौथाई भाग रह जाये, अब इन को छान कर मिश्री १। सेर शामिल कर पाक करे, पाक सिद्धि पर बाकी औषध चूर्ण को मिश्रित करे, और घोंटने से खूब घोटें । तयार है ।

मात्रा—५ माशे, अर्क गाऊजबान १२ तोले के साथ ।

गुण—उपरोक्त है, तथा वातिक अर्श मे भी उपयोगी है ।

खमीरा बनफ़शा

तीन छटांक बनफशा पुष्प, तीन सेर पानी में रात्री को भगोवें, प्रात. जोश दे, १ सेर रहने पर छान कर १॥ सेर खाँड मिला कर पाक करे, थोडा शीतल होने पर कड़ाही मे डाल कर घोटे ।

मात्रा—दो से चार तोला तक अर्क गाऊजबान १२ तोले से दे ।

गुण—यह खमीरा मस्तिष्क मे तरावट उत्पन्न करता है, विबन्ध-नाशक, वक्ष तथा छाती के रोगों मे लाभप्रद है, और पित को खारज करता है ।

(२) बनफशा पुष्प की पखिडीया आधा सेर लेकर १॥ सेर खाँड मे मिलाकर मलना आरम्भ करे, और थोडा २ अर्क गुलाब छिडके, जब एक जीव हो जाय, तो तीन दिन तक धूप में रखे, और प्रति दिन मल दिया करे, अच्छी तरह एक जीव होने पर शीशे के बरतन मे डाल दे ।

मात्रा—रात्री को दो तोले, योग्य अनुपान से दे ।

गुण—मस्तिष्क में तरावट पैदा करता है, पित को रेचन द्वारा

निकालता है, वातकफ़, सन्निपात तथा वातपित सन्निपात में लाभप्रद है।

७ खमीरा खशखाश

पोस्त डोडा (ख़शखाश के फल) १ सौ लेकर उन को तोड कर ख़शखाश निकाल लें, और पोस्त को २॥ सेर मेघ जल वा सादा पानी मे जोश दे, छान कर इसी पानी मे खशखाश बीज को खूब वारीक पीस कर कपड़े से छान ले, अब इस मे १॥ सेर खाँड डाल कर खमीरा विधि से पाक करे, और घोट कर किसी चीनी के वरतन मे रखे।

मात्रा—१ तोले से दो तोले तक अर्क गाऊजवान १२ तोले मे क्वाथ कर प्रयोग करे, वा किसी योग्य अनुपान से दे।

गुण—यह ख़मीरा पितजनित तीव्र प्रतिष्याय, खासी, वायु नाली तथा श्वासनाली की खराश, जलन, सन्निपात, अनिद्रा, शिरशूल, रक्तपित, प्रदर मे लाभप्रद है, पित को शान्त करता है।

ख़मीरा सन्दल

बुरादा चन्दन सफेद ७॥ तोला, आध सेर अर्क गुलाव मे १ दिन रात्री भिगों रखे, फिर क्वाथ कर छान लें, और १ सेर खाँड मिला कर अग्नि पर रखे, खमीरा विधि से पाक कर, पाक सिद्धि पर घोंटने से घोट लें।

मात्रा—७ माशा से १ तोला तक अर्क गाऊज़वान १२ तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण—हृदय डूवना, हृदय की अधिक धड़कन, तृषा आदि मे वहुत उपयोगी है।

ख़मीरा सन्दल तुरश वरक तिल्लावाला

चन्दन चूरा सफ़ेद ९ तोला, धनिया शुष्क छिला हुआ १॥ तोला, अपक्व अगूर स्वरस ३० तोला, सिरका अगूरी तीन तोला, मेघ जल १ सेर, अर्क गुलाव ॥ सेर, अर्क वेदमुश्क॥ सेर, चन्दन सफेद घिसा हुआ, वंशलोचन प्रत्येक तीन तोला, मुक्ता, यशप सबज, केशर प्रत्येक ३॥ माशा, कर्पूर २। माशा, स्वर्ण वर्क, चाँदीवर्क २–२ माशा, वशलोचन से आखीर तक सब औषध को खरल करें, चन्दन चूरा तथा धनियाँ

को, मेघ जल, सिरका, और अर्कों मे २४ घण्टे तक भिगो रखें, इसके बाद क्वाथ करे, आधा भाग रहने पर छान ले, और खाँड १ सेर डाल कर पाक करे, शीतल होने पर खरल की हुई औषध पाक मे डाल कर घोंटने से घोट दे।

मात्रा—५ तो ७ माशा, अर्क गाऊजवान १२ तोले से दे।

गुण—पैतिक ज्वर, वमन, अतिसार मे अति उत्तम है, साथ ही हृदय को बल देता है, हृदय डूबना मे लाभ प्रद है।

खमीरा गाऊजबान सादा

गाऊजबान ३ तोला, गाऊजवान पुष्प, धनिया, अपक्व आवेरेशम कैंची से कुतरा हुआ, बहमन सुरख, सफेद, वालगूँ बीज, वन तुलसी-बीज, बादरजबोया, दरूनजअकरबी, उस्तोखदूस, तोदरी सुरख, सफेद १-१ तोला, मिश्री १ सेर, मधु उत्तम १ पाव, सब औषध को रात्री भर दो सेर पानी मे भिगोवे, प्रात. क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर छान कर मधु तथा मिश्री डालकर खमीरा की विधि से पाक करे, शीतल होने पर कडाही मे डालकर घोटे से भली प्रकार घोटे, क्योकि इस मे गाऊजबान का लेसदार रस होता है, इसलिये देर तक घोटने से सफेद होता है।

मात्रा—१ तोला, खमीरा पर चादी पत्र लपेट कर अर्क गाऊ-जवान १२ तोला के साथ वा केवल जल से प्रयोग करें।

गुण—हृदय, मस्तिष्क के लिये अति उत्तम है, उन्माद, प्यास को दूर करता है, दृष्टि को भी बल देता है।

खमीरा गाऊजबान अम्बरी

खमीरा गाऊजबान सादा मे घोटते समय अम्बरशव ३ माशा, चादी पत्र ६ माशा, (आवश्यकताअनुसार वशलोचन मे खरल कर) मिश्रित करे, तो यह खमीरा गाऊजबान अम्बरी हो जायगा, यदि इस मे स्वर्ण, पत्र भी ६ माशा, डाले जाये, तो इसे खमीरा गाऊजबान, अम्बरी वर्क तिल्ला वाला कहा जायेगा।

मात्रा—५ माशे खमीरा, अर्क गाऊजबान १२ तोले से प्रयोग करे।

गुण—बुद्धि प्रकाशक है, मस्तिष्क कार्य अधिक करने वालो के लिये अति उत्तम है, बाकी सब उपरोक्त गुण है।

खमीरा गाऊजवान अम्वरी ज्वाहर वाला

खमीरा गाऊजवान अम्वरी वर्क तिल्ला वाले मे, मुक्ता, याकूत, जमुरद, जहरमोहरा प्रत्येक ४।। माशे, खरल कर के मिश्रित करे।

मात्रा—५ माशे खमीरा, अर्क गाऊजवान के साथ प्रयोग करे।

गुण—उपरोक्त।

खमीरा गाऊजवान अम्वरी जदवार ऊदसलीब वाला

खमीरा गाऊजवान अम्वरी के पाक मे जदवार, ऊदसलीब १–१ तोला अम्वर के साथ खरल करके मिलाये।

मात्रा—३ माशे।

गुण—शरीर को दृढ़ वनाता है, अर्दित, अर्धांग, वातकम्प, अपस्मार, योपापस्मार, वालग्रह, अपतन्त्रक मे अति उपयोगी है, हृदय, मस्तिष्क को वलवान वनाता है।

खमीरा मरवारीद

वहमन सुरख, वहमन सफेद, तोदरी सुरख, तोदरी सफेद, वादरजवोया वीज १–१ तोला, वादरजवोया पत्र, गाऊजवान पुष्प, खुरफा वीज २–२तोला, इन सवको अर्क गुलाव, अर्क वेदमुष्क प्रत्येक १–१ सेर मे रात्री को भिगो रखे, प्रातः क्वाथ करे, आधा भाग रहने पर छान ले, और खॉड दो सेर मिला कर पाक करे, पाक सिद्धि पर घोटते समय जहरमोहरा २ तोला, मुक्ता, केशर, कस्तूरी, अम्वर १–१ तोल,ा खरल कर शामिल करे।

मात्रा—३ माशे खमीरा, अर्क गाऊजवान से दे।

गुण—दिल, दिमाग को वल देता है, खवकान, घवराहट को दूर करता है, मोती झरा ज्वर मे वहुत ही उपयोगी है।

(२) कहरूवा, वंशलोचन, यशप, जहरमोहरा, सन्दल सफेद प्रत्येक ३।। माशे, मुक्ता ४।। माशे, चांदी पत्र ३।। माशे, शरवत सेव, शरवत वही, शरवत अनार प्रत्येक ६ तोला, खॉड १५तोला, खॉड और शरवतो को मिला कर पाक करे, पाक सिद्धि पर कहरूवा आदि औषध वारीक खरल कीये हुये मिश्रित करे, और घोटते समय चांदी पत्र १–१ करके डालें।

मात्रा—गुण— उपरोक्त।

खमीरा मरवारीद (वृहतयोग)

मुक्ता १ तोला, यशप, कहरूबा, सन्दल सफेद, तवाशीर, चांदी-पत्र, स्वर्णपत्र प्रत्येक ६माशे, भली प्रकार खरल कर रख ले, अन्न सेव का शीरा, वही का शीरा प्रत्येक ५ तोले, खांड २० तोले, मधु ५ तोले का अर्क केवड़ा मे पाक करें, और खरल की हुई औषध मिश्रित कर के खूव घोटे, पीछे चांदी पत्र वा स्वर्ण पत्र १—१ करके मिश्रित करे।

मात्रा—प्रात: सायं २ माशे खमीरा, अर्क गाऊजवान १२ तोले, शरवत उन्नाव दो तोले मिला कर प्रयोग करे, रक्त अधिक निकल जाने पर २ चावल लौह भस्म भी साथ मिलावे।

गुण—यह खमीरा, दिल दिमाग को वल देता है मोती अग, शीतला मे, हृदय की गरमी तथा घवराहट मे लाभप्रद है, अतिसार तथा रक्तपित मे अत्यन्त उत्तम है।

खमीरा याकूत

अर्क गाऊजबान, अर्क चन्दन १—१ पाव, मधु, सेव रस, मधुर बही रस, अमरूद रस, अर्क गुलाब, अर्क वेदमुष्क प्रत्येक आधा सेर, खॉड सफेद २ सेर मिलाकर पाक करे, और पाक सिद्धि पर याकूत-रमानी ३॥तोले, लाजवरद धुला हुआ, जहर मोहरा खताई, प्रत्येक ९ माशे, अम्वरअशब ५ माशे खरल करके मिश्रित करे, और घोटने से घोट देवे।

मात्रा—३ माशे।

गुण—यह खमीरा, हृदय दुर्वलता, खफकान, उन्माद में उपयोगी है।

(२) मधुर अनार स्वरस, अमरूद स्वरस, वही मधुर स्वरस, प्रत्येक पौने तीन तोला, खॉड सफेद, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क, अर्क गाऊजबान, प्रत्येक ४० तोले, सब को मिला कर पाक करे, और अन्त मे कस्तूरी, कर्पूर, अम्बर अशब, स्वर्ण पत्र, चॉदी पत्र, प्रत्येक ४ माशा, याकूत रमानी २॥ तोला खरल कर के मिश्रित करे, और घोटने से घोट दे।

मात्रा—३ माशा। गुण—उपरोक्त

समीरा वनफ़शा सनाई

सनायमक्की, वनफशा पत्र प्रत्येक आधा सेर लेकर ८ गुणा जल में उबाले, तीसरा भाग रहने पर १० सेर खाँड मिलाकर पाक करें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—विवन्ध नाशक है, उत्तम रेचक है।

दख़ान

दख़ान कुन्दर

यह वालों को लगाने के काम आता है, एक कोरे प्याले में कुन्दर वारीक करके रख दें, ऊपर से एक मोटे कागज का ख़ोल चढ़ा देवे, और उसे प्याले के किनारो से चिपका दे, और प्याले के नीचे दीपक मे मोटी वत्ती डाल कर जलाये, काग़ज के ख़ोल मे कुछ तिनके टेढे, तिरछे दाख़ल कर दें, ताकि कुन्दर का धूम्र इन पर जमता रहे, शरद होने पर धीरे से ख़ोल पृथक कर के दख़ान ले ले।

० दख़ान सुन्द्रस

सुन्द्रस को वारीक पीस कर एक कपड़े पर फैला कर वत्ती वना लें, और एक दीपक मे तिल तेल डाल कर वत्ती जला ले, और दीपक की लू पर ताम्वे का गहरा तवा ऊंधा कर के रख दें, ताकि इस में धुआं जिमा होता रहे, इस के वाद इस धुआं को पर से उत्तार ले, और थोड़ी मात्रा मे कस्तूरी और अम्वर मिला कर प्रयोग करे।

गुण—यह भेंगापन मे लाभप्रद है।

दवायें (औषध) (Medicines)

दवाये अहमर

शुद्ध हिगुल १ तोला को १ साण्डे के उदर मे भर कर सूई से सी दें, इसे आध सेर घृतकुमारी के गूदेमे रखकर दो प्यालों मे रख कपरोटी कर के १५ सेर उपलों की आंच दे देवे, सरद होने पर निकाल ले।

मात्रा—१ ख़शख़ाश वीज समान, मधु के साथ प्रयोग करे।

गुण—वाजीकरण है। उत्तेजक है।

दवाये असतस्का

सदा सुहागन के पत्र छाया मे शुष्क करे, फिर चूर्ण बना ले।

मात्रा—१ माशा, प्रात साय प्रयोग करे।

गुण—जलोदर रोग को विरेचन लाकर नष्ट करती है।

दवाये अमसाक

तिल के बीज, पत्र, शाख तथा पुष्प सम भाग लेकर छाया में शुष्क करे, और वारीक चूर्ण कर सम भाग खाड मिला कर रख ले।

मात्रा—१ माशा, प्रति दिन २१ दिन तक प्रयोग करे।

गुण—स्तम्भक शक्ति को बढाती है।

दवाये बुखार

शुद्ध हड़ताल वेर्की, शुद्ध मनशिल १–१ तोला लेकर घृत कुमारी के गूदे मे खरल करे, और दो प्यालो मे रख कर कपरोटी कर १० सेर उपलो की आग देवे, शीतल होने पर निकाल ले।

मात्रा—दो चावल, पान वा बताशा मे रख कर प्रयोग करे, इसके प्रयोग के पूर्व रोगी को विरेचन दे लेना चाहिये।

गुण—विषम ज्वर मे अत्यन्त उपयोगी है।

दवाये बवासीर

नागर मोथा, बालछड़, लौग, जायफल, हालो बीज, विल्व, अनार-पुष्प प्रत्येक सात माशा, मण्डूर जिसे सिरके मे भगो कर शुष्क किया हो, ६ तोला, हरड़ कृष्ण, बहेडा, आमला, मोड़ीयो बीज, गुलाब पुष्प प्रत्येक १४माशा, मेथी बीज १।।तोला, गन्दना बीज, शुद्ध गुगुलु, किशमिश सवज प्रत्येक तीन तोला, गन्दना बूटी स्वरस ६ तोला, गुगुलु को गन्दना स्वरस मे घोल कर छान ले, पीछे वाकी औषध का वारीक चूर्ण मिला भली प्रकार खरल कर एक जीव कर चूर्ण करे।

मात्रा—६ माशा, ताजा जल से।

गुण—रक्तज अर्श मे रक्त बन्द करने को बहुत उपयोगी है।

दवाये जालीनूस

सरतान (केकड़ा) जला हुआ दो तोला, कुन्दर १ तोला, खाँड सफेद १।। तोला, सब को पीस कर चूर्ण करें।

मात्रा—प्रातः सायं ३–३ माशा जल के साथ दें।

गुण—पागल कुते के काटे हुये रोगी के लीये लाभप्रद है।

दवाये जरयान (दवाये डिपटी साहिब वाली)

शुद्ध पारद ६ माशा, शुद्ध बंग १ तोला, शुद्ध वत्सनाभ ३ माशा, मिरच दक्षिणी दो तोला, बंग को पिघलाकर पारद मे मिलावे, और खूब खरल करे, इस के पश्चात वत्सनाभ मिलावे, फिर १–१ सफेद मिरच डाल कर खूब खरल करे। तयार है।

मात्रा—दो चावल, मक्खन में मिलाकर प्रयोग करे।

गुण—प्रमेह मे उत्तम योग है।

(२) पोस्त डोडा, खशखाश बीज, श्वेत खाँड सफेद, सम भाग, सब का बारीक चूर्ण करे।

मात्रा—६ माशा, १ पाव दूध से प्रयोग करे।

गुण—पितज प्रमेह मे लाभप्रद है, जिन रोगीयों को मूत्र में पूर्व श्वेत वस्तु आया करती है, उसमे विशेष लाभप्रद है।

दवाये जरयानालरहम

समुन्द्र सोख, बीज बन्द, तालमखाना, सुहिजना गोद १–१ छटाक, बंग भस्म ९ माशा, खाँड सब के समान भाग, सबको बारीक पीस कर खाँड मिला कर रखें।

मात्रा—६ माशा, गौ दुग्ध से प्रात. सायं प्रयोग करे।

गुण—स्त्रियों के श्वेत प्रदर में उत्तम है, प्रमेह मे भी लाभकारी है।

(२) गोंद कीकर, गोद कतीरा, चीना गोद, वशलोचन, बंग भस्म, वहरोजा सत्व, छोटी इलायची बीज, कीकर की फली, शतावर, तालमखाना, दोनो मूसली, मोचरस, इन्द्रजौ, नीम की गोद सब औषध सम भाग लेकर वारीक करे, और सम भाग खाँड मिला ले।

मात्रा—६माशा प्रात, ६ माशा साय गौदुग्ध से प्रयोग करे।

गुण—उपरोक्त

दवाये झाड़

वायविडंग, समुद्रझाग, लवपुरी लवण, [illegible] [illegible], सव औषध को वारीक कर के रख लें।

मात्रा तथा उपयोग—१ माशे, औषध मलमल के बारीक कपड़े में रख कर तीन पोटली वना ले, और गर्भाशय के [illegible] धरे, यह औषध गर्भाशय के सब गन्दे दूषित दोष को बाहर निकाल देती है।

दवाये सीमट

पुरानी ईंट का चूरा, छोटी माई, अनार का छिलका, माजू [illegible], हीरा कासीस, सब को वारीक कर १—१ माशा की तीन पोटलीयां वना भीतर रखे, गर्भाशय के ढीलापन को नष्ट करती है, योनी संकोचन है।

दवाये झाड के प्रयोग के वाद अवश्य प्रयोग करनी चाहिये।

दवाये सेलानल रहम

तज, समुद्र सोख, गोक्षरु, सगजराहत, छोटी इलायची, गोंद कतीरा, सम भाग लेकर चूर्ण करे, चूर्ण के सम भाग खांड मिला लें।

मात्रा—६ माशा, प्रात. साय दूध के साथ प्रयोग करे।

गुण—श्वेत प्रदर मे उपयोगी योग है।

दवाये सिया पेचश

कृष्ण हरीतकी १० तोला को घी मे आवश्यकतानुसार लेकर भून ले, फिर कूट छान ले, सम भाग खॉड सफेद मिला ले।

मात्रा—७ माशा, प्रात. को चावल साठी के पानी से प्रयोग करे।

गुण—प्रवाहिका मे उत्तम है, तथा खून आने को रोकती है।

दवाये सिया जरयान वा दवाये कढ़ाई वाली

शुद्ध नाग लेकर कड़ाही में पिघलायें, और थोड़ी २ कची गक्कर डाल कर सुहिंजना की लकडी से चलाते रहे, जव सीसा की भस्म हो जाये, तो छान ले।

मात्रा—४ चावल, मक्खन मे वा माजून छुहारे मे मिला कर प्रयोग करे।

गुण—प्रमेह में अत्यन्त उत्तम है।

दवाये सिया मुसहल

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक १–१ तोला को खरल कर कज्जली बनावे, कज्जली के सम भाग संगबसरी शामल कर के खरल करे, फिर इस औषध को मिट्टी के कोरे बरतन के भीतर लेप कर दे, और खरल का धोया हुआ जल भी इसी मे डाल दे, जल औषध से दो ऊंगल ऊपर रहे, अब इसको आग पर चढ़ा कर शुष्क करें, जल शुष्क होने पर छाया में रख कर सब सुखा ले।

मात्रा तथा गुण–१ से २ रत्ती, कर्पूर १ रत्ती औषध मे मिला कर दूध की लस्सी से प्रयोग करे, विरेचन के बाद दूध चावल प्रयोग करे, इस से विरेचन के साथ १–२ वमन भी होंगी, शीतल जल पीने से दस्त बन्द हो जायेंगे।

दवाये सुजाक

शुद्ध गंधक, कलमी शोरा १–१ तोला, दोनो को लोहे की कड़ाही में डाल कर उसके ऊपर दूसरी कडाही देकर ढक दे, कपरोटी करके चूलहे पर चढ़ा कर मृदु अग्नि दें, १ घण्टा पश्चात दोनों पिघल जायेगें, उतार कर उस मे १ तोला स्फटिका भुनी हुई डाल कर सब का बारीक चूर्ण करे।

मात्रा—१॥ माशा, बकरी के दूध में शरबत बजूरी मिला कर प्रयोग करें।

गुण—नये तथा पुराने सुजाक मे लाभप्रद है।

दवाये शफ़ा

छोटी चांद, (सर्पगंधा) (जिसे असरोल भी कहते है)–बारीक चूर्ण कर ले।

मात्रा—२ से ४ रत्ती तक योग्य अनुपान से प्रयोग करें।

गुणा—उन्माद, पागलपन, अपस्मार, अपतन्त्रक तथा अनिद्रा में लाभ प्रद है।

दवाये कौलंज रीह

रेवन्द चीनी ६माशा, सोंठ १ तोला, धस्तूरबीज कृष्ण, नवसादर,

३–३ माशा, सबको बारीक चूर्ण करें।

मात्रा—२ से ४ रत्ती, भोजनोपरान्त दें।

गुण—वातिक शूल तथा आन्त्र शूल में लाभप्रद है।

दवाये ताकत

पोस्त ढाक, गूलर छाल, गोदनी छाल, कीकर छाल, प्रत्येक १–१ सेर,लेकर १६सेर पानी मे क्वाथ करे,तीसरा भाग,रहने पर इस पानी में १ सेर साठी के चावल डाल कर पकावे, कि पानी सूख जाये,अब चावलो को खुष्क करके पीस ले,और इसमे गन्दम (गेहू) कानिशास्ता डालकर घी मे भून ले,और त्रिगुणा खॉड का पाक करके इसमे मिला दे,यह वस्तु अब हलवे समान हो जायगी, अब इसमें मगज तरबूज, मगज खरपजा, मगज फिन्दक, काले तिल, खोपा, मगज बादाम, मगज पिस्ता, मगज चलगोजा, अखरोट मगज, मगज़ बनोला, प्रत्येक ५ तोला घी मे भून कर मिलाये, और अन्त मे सम्भालू बीज, भाग बीज, दोनो मूसली, दोनो तोदरी, दोनो बहमन, तालमखाना बीज, मगज तुखम बाकला, छुहारे का चूर्ण प्रत्येक ४ तोले, अम्बरअशब ५ माशा, मुक्ता ३ माशे, केशर दो तोला, कस्तूरी १ तोला, स्वर्ण पत्र,चादी पत्र प्रत्येक ५० नग, लेकर खरल कर के मिश्रित करे, यदि पाक कम हो, तो मधु थोड़ा डाल कर पाक ठीक करे।

मात्रा–१ तोला प्रात. १ तोला साय दूध के साथ प्रयोग करे।

गुण—शरीर को दृढ बनाती है वाजीकरण तथा वीर्यप्रद है।

दवाये तिहाल

फटकडी, सज्जीक्षार, तूतीया सबज १–१ तोला, धोबीयों के धोवन का जल १ सेर मे बारीक कर डाल दे, २४ घण्टे बाद उसका क्वाथ करे, जल शुष्क होने पर खुरच ले।

मात्रा—दो चावल, दवा बताशा में रखकर खाये, और ऊपर से बकरी का दूध पीवे।

गुण—बढी हुई तिल्ली (प्लीहा) को कम करती है।

दवाये क्वाये अरबा

अनारदाना तुरश (अम्ल) १८ तोला ८ माशा, काला लवण,

३ तोला, सोंठ, जीरा सफेद प्रत्येक दो तोला ४माशा, त्रिवृत, जीरा कृष्ण, तनड़ीक, हरड़, बेहड़ा प्रत्येक१४ माशा, सब औषध को कूट कर बारीक करे ।

मात्रा—७ माशा औषध, अर्क सौफ़ के साथ भोजनोपरान्त व पूर्व प्रयोग करे, दस्तो को रोकने के लीये बारीक कपडे मे छान कर प्रयोग करे, और विबन्ध नाश के लीये छलनी मे छान कर प्रयोग करे।

गुण—विबन्ध नाशक है, तथा दस्तों को बन्द भी करती है, दीपक पाचक है ।

दवाये कासर रियाह व मकवी कलब

सौंफ, पोदीना, तज, अजवायन, बड़ी इलायची बीज प्रत्येक ९ माशा, सब औषध का चूर्ण कर एक सेर अर्क सौंफ मे रातको भगो रखे, प्रात क्वाथ करे,आधाभाग रहने पर छानकर मधुर अनार स्वरस, मधुर सेव स्वरस प्रत्येक १० तोला, खाँड सफेद १सेर डाल कर पाक करे, शीतल होने पर छोटी इलायची बीज, सोंठ, ऊदसलीब, प्रत्येक ९ माशा, सत पोदीना २ माशा, मस्तगी रूमी २ तोला, खरल कर मिलावें ।

मात्रा—६ माशा, खाना खाने के बाद प्रयोग करे ।

गुण—वायु को नष्ट करती है, शरीर को दृढ़ बनाती है हृदय के ऊपर वायु के दबाओ के कारण जो दिल डूबने लगता है, उस मे लाभप्रद है ।

दवालकबरीत

शुद्ध गन्धक १॥ तोला, बाल छड, कुठ मधुर, तज, रूमी मस्तगी, हब्बुलगार, सोंठ, लौंग, जावित्री प्रत्येक ९ माशा, जरावन्द लम्बे, कालीमिरच, करफसबीज, अनीसून, अजवायन, जीरा कृष्णा, कन्तरियूं-दकीक, असारून (तगर), अंजदान (हींग वृक्ष के बीज है), पोदीना जंगली, पोदीना बागी, अंजरा बीज, कुन्दर प्रत्येक १॥ तोला, अगर, मिरच सफेद, १-१ तोला दस माशा, केशर ७ माशा, कस्तूरी,अहिफेन, ४॥ माशा, मधु उत्तम दुगना, सब औषध को कूट छानकर मधु मे मिलावे, और ६ मास पश्चात प्रयोग करे ।

मात्रा—५ माशा, योग्य अनुपान से दें।

गुण—पाचक तथा दीपक है, बहुत ही गुण प्रद औषध है।

(२) शुद्ध गधक, बाल्छड, कुठ, तज, रूमी मस्तगी, सोंठ, लौंग, जाविश्री, ६–६ माशा, काली मिर्च, करफस, अनीसून, अजवायन, कृष्ण जीरक, जगली पोदीना प्रत्येक ९माशा, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुणा मधु मिलाये, और ६ मास पश्चात प्रयोग करें।

मात्रा—५ माशा, योग अनुपान से।

गुण—आमाशय, यकृत को बल देता है, वातकम्प तथा वात के रोगो मे लाभ प्रद है।

दवालकरकम कबीर

केशर असली ३॥ तोला, बालछड़ १॥। तोला, रोगन बलसान १॥ तोला, तगर, अनीसून, करफस बीज, रेवन्द चीनी, दूको, मूरमक्की, प्रत्येक १४ माशा, खुलसूस, तज, मस्तगी, गाफस पुष्प प्रत्येक १०॥ माशा, मजीठ ७ माशा, कुठ, दारचीनी, फका अजखर, हब्ब बलसान प्रत्येक ३॥ माशा, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुणा मधु के पाक मे मिला कर माजून (अवलेह) बना ले।

मात्रा—५ माशा, अर्क मालहम ५ तोला (मको कासनी वाला), और दो तोला शरबत दीनार के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह औषध, यकृत, प्लीहा के वात कफ रोग तथा तत्जनित जलोदर में उपयोगी है, दूषित मल को निकालती है, वायू को नष्ट करती है, वृक्क तथा मूत्राशय को बल देती है।

दवालकरकम सग़ीर

केशर असली, तज, बालछड़ ७—७ माशा, फका अजखर, मुरमक्की, कुठ, दारचीनी ३॥—३॥ माशा, औषध को कूट छान १ दिनरात्री अगूरी शराब में भिगो रखे, फिर त्रिगुणा मधु में मिला लें।

गुण तथा मात्रा उपरोक्त।

दवाये अजीब

शुद्ध पारद को ४१ बार लट्ठे के कपडे में से छान ले, (पारद की यूनानी चिकित्सा अनुसार शुद्धि करने की विधि), तत्पश्चात स्वर्ण

पत्र तीन तोला खरल करें, एक जीव होने पर मुक्ता उत्तम १ तोला, शुद्ध हिंगुल ६ माशा डाल कर आठ दिन तक निबू से खरल करे, फिर टिकिया बना कर कपरोटी कर दो मन उपलो की पुट दें, शीतल होने पर निकाल ले, १ वर्ष के बाद किसी योग्य अनुपान से १ से २ चावल की मात्रा मे दे।

गुण—शारीरक बल बढाने के लीये अति उत्तम है वाजीकरण है।

दवालमस्क बारद सादा

अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ, तबाशीर, चन्दन सफेद, गुलाब पुष्प, धनियाँ शुष्क, मगज कद्दू मधुर, गाऊजबान पुष्प, प्रत्येक ४॥ माशा, कहरवा शमई ९ माशा, कस्तूरी १। माशा, चादी पत्र ३ माशा, मधुर सेब स्वरस, अर्क केवड़ा प्रत्येक २० तोला, कस्तूरी, कहरूवा, चांदी पत्र को पृथक खरल करे, और बाकी औषध को कूट छान कर खरल की हुई औषध मिला दे, अब अर्क, स्वरस और खाँड १। सेर का पाक कर के चूल्हे से उत्तार दें, और शीतल कर के बाकी औषध चूर्ण को मिला कर अवलेह बना ले।

मात्रा—५ माशा, अर्क गाऊजबान ७ माशा, अर्क बेदमुश्क तीन तोला, शरबत अनार दो तोला के साथ प्रयोग करे।

गुण—यह औषध शरीर के अगो को दृढ़ बनाती है, खफ़कान, हृदय डूबना मे लाभ प्रद है, दीपक पाचक है।

दवालमस्क बारद ज्वाहर वाली

यदि ऊपर वाले योग मे अम्बर ४॥ माशा, मुक्ता, प्रवाल, जहर-मोहरा प्रत्येक सात माशा, कस्तूरी ४॥ माशा, चादी वर्क ६ माशे, खरल करके मिश्रित कर दिया जाये तो दवालमस्क बारद जौहर वाली बन जाती है।

मात्रा तथा गुण—उपरोक्त।

दवालमस्क हार सादा

कचूर, दरून्ज अकरबी, कहरूबा, बुसद प्रत्येक तीन तोले, आब-रेशम कुतरा हुआ, दोनो बहमन, बालछड, तेजपत्र, छोटी इलायची, लौंग प्रत्येक १॥ तोला, पिप्पली, सोंठ, छड़ीला प्रत्येक १ तोला,

कस्तूरी ७ माशा, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुणा मधु के पाक कर उस मे अच्छी तरह मिश्रित करे।

मात्रा—५ माशा, अर्क गाजर, अर्क अम्बर से मीठा मिला कर प्रयोग करे

गुण—दिल, दिमाग को बल देने वाली विशेष औषध है, ख़फ़कान: उन्माद, चितभ्रम, अर्दित, अर्धांग, वातकम्प, ढीलापन, अपतन्त्रक, मे लाभ प्रद है, दीपक पाचक है।

देवालमस्क हार ज्वाहर वाला

उपरिलिखित योग में मोती, कहरूबा शमई, वुसद प्रत्येक ३ तोले खरल कर के मिश्रित करे।

मात्रा तथा गुण—उपरोक्त।

दवालमस्क सादा मुतदिल

जीरशक १॥ तोला, वगलोचन, चन्दन सफ़ेद, सुरख़, धनियां शुष्क, गाऊजबान पुष्प, आमला, खुरफा बीज, १–१ तोला, गुलाब पुष्प, आबरेशम कुतरा हुआ, दारचीनी, दोनो बहमन, दरूनज अकरबी प्रत्येक सात माशा, अगर, बादरजबोया, प्रत्येक ५ माशा, रूमी मस्तगी, छड़ीला, छोटी इलायची बीज, ४—४ माशा सब औषध को कूट छान कर दुगनी खाँड और समभाग मधु और मधुर सेब स्वरस मे मिला कर पाक करे, पाक सिद्धिता पर औषध का चूर्ण मिलावे, फिर कस्तूरी, अम्बर २–२ माशा, केशर ७ माशा खरल कर के मिश्रित करे।

मात्रा—५ माशा, अर्क गाऊजबान ७ तोले, अर्क सोफ ५ तोला, खाँड सफेद दो तोला के साथ प्रयोग करे।

गुण—यह औषध वातज चित भ्रम, उन्माद के लिये उत्तम है, हृदय तथा यकृत को वल देता है, दीपक पाचक है।

दवालमस्क मुतहदिल ज्वाहर वाली

यदि इसी उपरोक्त योग मे चादीपत्र १० माशा, मुक्ता, कहरूबा शमई, कस्तूरी, अम्बर प्रत्येक सात माशा, केशर ७माशे, के साथ खरल करे, तो इसे दवालमस्क मुतहदिल ज्वाहर वाला कहते है।

मात्रा–३ से ५ माशा, अर्क गाजर, अर्क अम्बर के साथ प्रयोग करे।

गुण—उपरोक्त ।

दवायेमदर हैज (ऋतु प्रवर्तक)

तज, कलौंजी ९–९ माशा, जुन्दवदस्तर, हाऊवेर ७–७ माशा, सब औषध को कूट छान कर मधु में मिलावें ।

मात्रा—प्रतिदिन ५–५ माशा, प्रात. सायं अर्क सोंफ़ के साथ दें ।

गुण—यदि रक्त की कमी न हो, तो इसके प्रयोग से मासिक धर्म्म खुल कर आजाता है ।

दवाये मनूम

लफ़ाह बूटी का मूल, (इसे इंग्रेजी मे वेलाडोना Belladona Root कहते हैं), अजवायन खुरासानी प्रत्येक १–१ तोला, १०॥ माशा, नागर मोथा मूल ४ तोला ८। माशा, सब को कूट कर चार सेर दूध में उबालें, इसके बाद नीचे उत्तार कर जामन देकर दही जमा लें, फिर उसका मक्खन निकालकर सुरक्षित रखे, ५ नग जायफल लें, और बीच में से खाली कर के उन में उत्तम अहिफेन २। माशा, बत्ती सी बनाकर रखें, अब जायफलों को गूदा आटा लगा कर गौघृत मे भून ले, ऊपर का आटा जल जाने पर आग से उतार का आटा पृथक कर ले, अब इसमें स्वर्ण वर्क, चांदी वर्क, अम्बर अशव, कस्तूरी, प्रत्येक ३–३ माशा, केशर ५ माशा ५रत्ती, दारचीनी, वहमन सफेद, वहमन सुरख, शकाकल मिश्री, गाऊजवान पुष्प, बनफशा पुष्प, गुलाब की कली, धनिया खुश्क, खशखश बीज श्वेत, खुरफ़ा बीज छिला हुआ प्रत्येक ११। माशे, सहलबमिश्री, बादाम मधुर, मगज पिस्ता, मगज़ चलगोजा, मग़ज़ चरोंजी, मग़ज़ तुख़म कुड़, मगज हिवतलखिजरा प्रत्येक १–१ तोला १०॥ माशा, मगज तुखम खयारैन ६ तोले, पौने सात माशा, मिश्री, मधु प्रत्येक ३३॥। तोले, अब कूटने वाली औषध को कूटकर छान लें, और सबको जायफल के चूरे समेत (जो जायफल को बीच मे से खाली करते समय निकाला था) प्रथम मक्खन में मिला कर फिर शहद और मिश्री के पाकमे (जो कि अर्क गुलाब, वेदमुश्क, गाऊजबान मे बनाया गया हो) अच्छी तरह से मिला ले ।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक ।

गुणा—वातकफ रोगों में अपूर्व लाभ दायक है, वाजीकरण तथा स्तम्भक औषध है, अनिद्रा, सन्निपात मे लाभप्रद है ।

(१) औषध

मिश्री ७ माशा, मिरच सफेद, सुरमा, छोटी इलायची, संगबसरी, मगज़ शिरसबीज, फटकडी, सबजकांच प्रत्येक १४ माशा, कोड़ी पीली ८ नग सब को सुरमा समान पीस ले, और आवश्यकतानुसार आंख मे लगावे ।

गुण—फोला, नाखना, धुन्ध, जाला मे बहुत उपयोगी है ।

औषध (२)

संग बसरी (खर्पर) १तोला, मिरचकाली दोनो को बारीक पीस, कर रेशमी कपडे मे छान कर यशद की थालीमे डालकर कुच्छ दिन खूब खरल करें, आवश्यकतानुसार आख मे लगावे ।

गुण—आंख के मेलापन तथा अधेरा छा जाना (तिमिर) में उपयोगी है ।

औषध (३)

सरु का फल, लवपुरी लवण, नवसादर, समाक, माजू बेसुराख़, अनार की कलीयां, अकाकीया (कीकर छाल घन सत्व) स्फटिका, मधुयष्टि पत्र, मामीरान, रसोत, सुरमकी, असारा मामीशा (इसी नाम से मिलती है, एक बूटी है) झाऊ फल, झाऊ मूल, गुलाब पुष्प की जड, गुल अनार, अबाबील (एक प्रकार का पक्षी है) की राख समभाग लेकर कट छान कर गले मे लगावे ।

गुण—कौआ लटक जाना तथा गले पडने में लाभ प्रद है ।

कास औषध

पहाडी पोदीना, ईरसा (नीले फूल वाली सोसन की जड़ है), आशा (यह भी एक प्रकार का पहाड़ी पोदीना है), सौंफ रूमी १-१

तोला, काली मिरच ६ माशा, सबका बारीक चूर्ण करके मधु मे मिला ले।

मात्रा—३ माशा ।

गुण—कास, श्वास में उत्तम है, कफ़ को निकालती है।

कास औषध

(२) जूफा शुष्क, पोदीमा, मधुयष्टि, राई, काली जीरी, काली मिरच, ऊटंगन बीज, सौफ रूमी सब सम भाग लेकर चूर्ण कर मधु मे मिला ले।

मात्रा—३ माशा ।

गुण—सीना तथा फेफडों से कफ को निकालती है, कास, श्वास, मे उत्तम है।

कास औषध

(३) मूली यदि काली मिल जाये और बड़ी हो तो बहुत उपयोगी है, नही तो जैसी भी मिल जाये, लेकर चाकू से छोटे २ टुकडे कर ले, आधा भाग मधु ले, अब यह दोनो वस्तुये किसी पत्थर वा मिट्टी की हाण्डी मे भर दे, हाण्डी इतनी बड़ी होनी चाहिये, कि भरने के पश्चात १ भाग खाली रहे, इस के बाद मुख बन्द कर के कपरौटी कर के एक तन्दूर मे जो न अधिक उष्ण हो और न ही शीतल हो, रात्री भर रख दे, तन्दूर का मुख भी अच्छी तरह ढक दे, प्रातः काल हाण्डी निकाल ले, और खोल ले, त्यार है, प्रति दिन इस मे से दो चमचे प्रयोग करें।

गुण—कास, श्वास मे अत्यन्त उत्तम है।

कास श्वास औषध

(४) घृत कुमारी ५ सेर, शोर लवण आधा सेर, अजवायन १ पाव, पिप्पली १ तोला, घृत कुमारी के छोटे २ टुकड़े कर के एक कोरी हाण्डी मे भर दे, इस के ऊपर नमक शोर, अजवायन तथा पिप्पली विच्छा दे, और कपरोटी कर के ५ प्रहर अग्नि दे, शीतल होने पर निकाल लें।

मात्रा—१ से दो माशा, योग्य अनुपान से दे ।

गुण—कास, श्वास मे उत्तम है, कफ को निकालती है ।

नासार्श औषध

जगार, नवसादर, सज्जी, सम भाग लेकर पीस ले, आवश्यकता पर मधु मे मिला कपडे की वत्ती इस मे लतपत कर नासा रन्धर में रखे, नासा के भीतर जो मस्से उत्पन्न हो जाते है, इस के प्रयोग से नष्ट हो जाते है ।

नकसीर औषध

हरीतकी, कुसम्भे के फूल, अपक्क अनार सब को समभाग लेकर पीस ले, और जल मे पीस कर नाक मे नस्य दे, नकसीर मे लाभ प्रद है ।

दवालमस्क बारद

स्वर्ण वर्क, अम्बर अशब प्रत्येक आधा माशा, केशर, दारचीनी, छडीला, कस्तूरी १-१ माशा, आबरेशम अपक्व २ माशा, कहरूबा, प्रवाल जड, बशलोचन, चादी पत्र, प्रत्येक तीन माशा, मुक्ता ५ माशा, गाऊजवान, गुलाब पुष्प, धनिया, खुरफा बीज, प्रत्येक ६ माशा, शरबत सेब, शरबत, बही, शरबत मधुर अनार १-१ तोला, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क प्रत्येक ४ तोला ८ माशा, मधु उत्तम, खॉड, औषध से त्रिगुणा, प्रथम मधुर औषध का पाक करे, पाक सिद्धि पर बाकी औषध का चूर्ण मिला दे ।

मात्रा—५ से ७ माशा ।

गुण—खफकान, हृदय डूबना आदि मे लाभ प्रद है ।

दवालमस्क सादा

बशलोचन, गुलाब पुष्प, धनिया, चन्दन सफेद, खुरफा बीज छिला हुआ प्रत्येक १४ माशे, कहरूबा शमई, मरजान (प्रवाल) मूल, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ, प्रत्येक सात माशा, कस्तूरी, १॥ माशा, खॉड सब औषध से त्रिगुणा, पाक करे, पाक सिद्धि पर बाकी औषध का चूर्ण मिला कर अवलेह बनावें ।

मात्रा—५ से ९ माशा ।

गुण—उपरोक्त, परन्तु कुच्छ न्यून ।

दवालमस्क बारद अम्बरी

अपक्व आवरेशम कुतरा हुआ, तबाशीर सफेद, चन्दन सफेद, गुलाब पुष्प, धनिया खुष्क, गाऊजवान पुष्प, कस्तूरी, अम्बरशव, प्रत्येक २। माशा, मुक्ता, कहरूवा शमई, प्रत्येक ४।। माशा, खाँड पौने उनीस तोले, खाँड का पाक कर बाकी औषध का चूर्ण मिला कर पाक करे।

मात्रा—४।। माशा ।

गुण—उपरोक्त ।

दवालमस्क

—मुक्ता, कहरवा शमई, प्रवाल, आवरेशम, नरकचूर, दरूनज अकरबी, केशर, बालछड़, बड़ी इलायची, लौग, तेजपत्र, छड़ीला, जुन्दबदस्तर, पिप्पली, सोठ, कस्तूरी, मस्तगी, दोनो वहमन, अम्बरशव, प्रत्येक २२।। माशा, यदि कुरस अम्वर हो, तो अम्वर के स्थान पर कुरस अम्वर १० तोला डाले, खाँड सफेद ३७।।तोला, प्रथम खाँड तथा मधु का पाक करे, बाकी औषध का चूर्ण मिला कर अवलेह बनावें।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—उपरोक्त ।

दवालमस्क अलो

पिप्पली ६ माशा, मस्तगी ९ माशा, सोठ, अम्बरशव १–१ तोला, कस्तूरी १। तोले, वहमन सुरख, सफेद,बालछड, लौग, तेजपात, छड़ीला, जन्दवदस्तर, बड़ीइलायची प्रत्येक १।।तोला, मुक्ता, कहरूबा, प्रवाल की जड़, आवरेशम कुतरा हुआ, नरकचूर, दरूनज अकरबी, केशर प्रत्येक २।। तोला, खाँड ३६ तोला, मधु सब औषध से दुगना, पाक करके बाकी औषध का चूर्ण मिला त्यार करे, दो मास बाद इस मे अवलेह का चौथा भाग जदवार बनफसजी का बारीक चूर्ण करके और मिला दे ।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—उपरोक्त, जदवार मिलाने से विषदोषों को नष्ट करने मे भी उपयोगी हो जाती है ।

दवालमस्क मुतादिल

कर्पूर ३ रत्ती, अम्बर ७ रत्ती, कस्तूरी १।।। माशा, चादी पत्र, केशर प्रत्येक ३।। माशा, काहूवीज ५। माशा, प्रवाल जड़, आवरेशम कुतरा हुआ प्रत्येक ७माशा, मुक्ता, गाऊजवान पुष्प, निशास्ता, खुरफा बीज, सन्दल सफेद प्रत्येक पौने ९ माशा, आमला, तथा जरिशक का अर्क गुलाब मे स्वरस निकाला हुआ प्रत्येक २१ माशा, दारचीनी ४।। माशा, मधु औषध के समान, खाँड दुगनी, अर्कगुलाव, वेदमुशक, गाऊजवान, प्रत्येक २८ तोले १।। माशा, प्रथम अर्को मे खाड तथा मधु मिलाकर पाक करे, पाक सिद्धि पर औषध चूर्ण मिला अवलेह् बनावे।

मात्रा---५ माशा।

गुण---उपरोक्त।

दवाये अजीब

ऊद अपक्व जला कर मधु मे मिला कर रोगी को दिन मे ३-४ वार चटावे।

गुण---हिचकी मे लाभप्रद है।

कुठ योग

दारचीनी, तज काली, कुठ प्रत्येक आठ तोला ९माशा, तगर आठ तोला ५।।माशा, शगूफा अजखर, मुरमक्की साफकी हुई, प्रत्येक सात तोला, अनीसून, करफ़सवीज, रेवन्द चीनी प्रत्येक ३५ माशा केशर २८ माशा, मुरमक्की को गाढ़ी शराव मे हल कर के छान ले, और बाकी औषध को कूट छानकर त्रिगुणा मधु मिलाकर पाक करे, प्रथम मुरमक्की को पाक मे हल करें।

मात्रा---७ माशा।

गुण---आमाशय तथा यकृतशूल मे उपयोगी है।

प्रवाहिका औषध

(२)अजवायन, जीरा सफेद, हरीतकी कृष्ण प्रत्येक २८माशा, सबका बारीक चूर्ण करे।

मात्रा---४ माशा से १ तोला।

गुण---प्रवाहिका मे उत्तम योग है।

प्रवाहिका योग

सोंठ, सोंफ, विल्व प्रत्येक ७ माशा, खाँड १०माशा, सब को कूट छान कर खाँड मे मिला लें।

मात्रा तथा गुण—प्रथम दिन ७ माशा, दूसरे दिन १० माशा, तीसरे दिन ४ माशा, पानी के साथ दे। प्रवाहिका मे उत्तम है।

कृमिहर ओषध

दरमना तुरकी ७ माशा, निशोथ श्वेत, वायविड़ग कावुली (छिली हुई) प्रत्येक ३॥ माशा, तुरमस, कमीला, कालादाना, सरखस, प्रत्येक पौने दो माशा, हिन्दी लवण ६ रत्ती, मिला कर चूर्ण करे, मीठे दूध मे मिला कर खिलाये।

गुण—सब प्रकार के कृमियो को नष्ट करती है, और इनकी उत्पति को भी रोकती है।

अतिसार औषध

धावी पुष्प, विलव गिरी, इन्द्रजौ, खस, सम भाग लेकर कूट छान लें।

मात्रा—३ से ६ माशा

गुण—अतिसार, रक्त अतिसार मे लाभ प्रद है।

मधुमेहहर औषध

कुटज, सत्यानासी की छाल, कैथ, छितवन, मोखा छाल, सब समान भाग लेकर चूर्ण करे।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक।

गुण—मधुमेह मे उत्तम है।

अश्मरी औषध

हिजरलयहूद, सग सरमाही, मूली बीज, कुलथ्थी, प्रत्येक दो माशा, बारीक पीसकर शरवत कसूस मे मिलाकर प्रयोग करे, ऊपर से करफस बीज ५ माशा, तुख्म खरपजा बीज १ तोला, तुख्म खयारैन १ तोला, सौंफ, गोक्षरू ६–६ माशा, का क्वाथ कर के पिलावे।

गुण—अशमरी मे लाभप्रद है।

दवाये तरंजवीन

तरजवीन साफ कीया हुआ ९० माशा, १ सेर ताजा दूध में उबाले, जब पाक हो जाये, तो प्रति दिन रोगी को दो चम्मचे खिलावें ।

गुण—यदि पित के दोष कारण सम्भोग क्रिया में कमी, हो तो उस मे लाभ प्रद है, वीर्य को उत्पन्न करती है ।

वाजीकरण योग

कस्तूरी, केशर, प्रत्येक ३॥ माशा, जायफल, शुद्ध शिलाजीत, छोटी इलायची, दारचीनी, मस्तगी, चोवचीनी, तेजवल, पिप्पलामूल, पिप्पली, ऊटगन बीज, कौचबीज, गाजर बीज, गालकगनी अनफना-की जड, समुद्रफल, मोचरस, शुद्ध हिंगुल, इन्द्र जौ, नागर मोथा, गिलोय-सत्व, शतावर, नागकेसर, दोनो मूसली, अकरकरा, चोवचीनी, मदन-मस्त प्रत्येक १७॥ माशा, नौ वर्ष का पुराना गुड आवश्यकतानुसार, सब औषध को कूट पीस कर गुड मे मिला जगली वेर समान वटी करे ।

मात्रा—प्रात साय १–१ वटी का प्रयोग करे ।

गुण—शीघ्रपतन मे लाभ प्रद है, वाजी करण है ।

दवाये अर्कलनसा (गृध्रसी हर औषध)

सनाय २१ माशा, सुरजान १७॥ माशा, पितपापडा सात माशा, केशर १॥। माशा, सब औषध को कूट छान कर चूर्ण करे ।

मात्रा—५। माशा, समभाग खाँड मिला कर (कुल १०॥ माशा), प्रयोग करे ।

गुण—गृध्रसी मे उत्तम है ।

गण्डमाला हर औषध

शिरस बीज १ भाग को लेकर चूर्ण कर दुगुणा मधु मे मिला कर कोरी हाण्डी मे डाले, मुख बन्द कर के कपरौटी कर के दो सप्ताह तक धूप मे रखे, दो सप्ताह के वाद निकाल कर प्रतिदिन १ तोला प्रयोग करे

गुण—कण्ठ माला, गल गण्ड, अपची मे अत्यन्त लाभ प्रद योग है।

स्वेद हर औषध

चावल, मसूर, समाक, धनियां शुष्क, उन्नाब सम भाग लेकर पानी मे भगो कर क्वाथ करे ।

गुण—इसके पिलाने से स्वदे की अधिकता कम हो जाती है ।

औषध

कहरुवा शमई, बहमन सफेद, गन्दना, नरकचर, जोजजन्दम, खशखाश बीज प्रत्येक ४॥ माशा, सब को कूट छान कर गौ घृत मे भून ले, और जोश दिये गन्धम के सत्तू २९ तोले २ माशा मिलाकर, बादाम रोगन, और खाँड के साथ प्रयोग करे।

मात्रा—४ माशा, दूध से प्रयोग करें,शरीर को मोटा करती है।

(२) मगज बादाम, गोंद कतीरा, निशास्ता, शक्कर सब समान भाग ले, बारीक चूर्ण करे।

मात्रा—१ माशा।

गुण उपरोक्त।

(३) सौंफ, अजवायन, जीरा क्रमानी, सुदाब प्रत्येक १४ माशा, धुली हुई लाख ७ माशा, मरजनजोश, बूरा अरमनी प्रत्येक ३॥ माशा, बारीक चूर्ण करे।

मात्रा—४॥ माशा।

गुण—शरीर को दुबला करती है। मेद वृद्धि मे उपयोगी है।

औषध

मेथी का आटा, बेरी के पत्ते, अजवायन खुरासानी, माजू, मुर्दासिंग, सब वस्तु आपस मे मिला कर चूर्ण करे, और बालो मे लगावे।

गुण—बालों को घुघराले बनाती है।

औषध

सरतान नहरी (केकड़ा)जला हुआ दो भाग, कुन्दर १ भाग, दोनो को बारीक पीस ले।

मात्रा तथा गुण—७-७ माशा, शीतल जल से पागल कुते के काटे हुये रोगी को देवे। यह औषध पागल कुत्ते के कमटे के विष को नष्ट करती है।

दवाये हाजम

हलदी, नवसादर, सेंधव लवण,पिप्पली सब सम भाग लेकर घृत-कुमारी के गूदे मे खरल करें, और दो प्यालो मे रख कर कपरौटी कर पुट दे देवें, शीतल होनें पर निकाल ले।

मात्रा—२ माशा, भोजनोपरान्त प्रयोग करे ।

गुण—दीपक पाचक है, भूख बहुत लगाती है ।

दयाकूजा

कोकनार (पोस्त डोडा) २० नग, मधुयष्टि ६ तोला, इसपगोल ३ तोला, खतमी बीज, खुवाजी बीज, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, मधुर बहिदाना, प्रत्येक १॥ तोला, औषध को तीन सेर मेघजल के पानी में (मेघ जल के बदले साधारण जल भी प्रयोग किया जा सकता है) रात्री को भगोवे, प्रातः क्वाथ करे, आधा भाग रहने पर खाँड २ सेर डाल कर पाक करे । तय्यार है ।

मात्रा—७ माशा से १ तोला तक खावे ।

गुण—वातज कास, नजला को नष्ट करती है, सीना को नरम रखती है ।

ज़रवर (धूड़ा) (Dusting Powder)

जरवर भोडल कुशता

अभ्रक भस्म श्वेत, स्फुटिका भस्म, धनिया शुष्क जला हुआ, छोटी इलायची बीज, सम भाग लेकर, कूट छान कर अत्यन्त बारीक करे ।

गुण—मुखपाक मे लाभप्रद है, दिन मे तीन वार १–१ चुटकी मुँह मे छिड़के ।

ज़रवर कत्थ

जरवरद (गुलाब पुष्प का जीरा), कत्थ श्वेत, कबावचीनी, इलायची बीज, बंशलोचन प्रत्येक ३ माशा, सब को कूट छान ले, १ चुटकी दिन मे कई बार मुह मे छिड़के ।

गुण—मुखपाक मे उपयोगी है ।

जरवर गाउजबान्

गाऊजवान जला हुआ, ऊद वलसान, जौ जले हुये, धनिया शुष्क जला हुआ, सम भाग लेकर कूट छान ले, मुह मे छिडके ।

गुण—बालकों के श्वेत मुखपाक मे उत्तम है ।

जरवर मुर्दासंग

मुर्दासंग, शादनज धुला हुआ, मुसब्बर, पोस्त कद्दू जला हुआ, सम भाग लेकर कूट छान ले ।

गुण—यह धूडा व्रण तथा उपदंशजनित शिश्न व्रण मे उत्तम है। व्रण को नीम जल से धोकर इसे ऊपर धूडा जाये।

जरवर वरदी अबीज

रौप्य माक्षिक, सफेदा काशगरी, मुसब्बर, प्रत्येक सात माशे, अहिफ़ेन दो तोला ११ माशा, गोंद कतीरा ५ तोले १० माशा, निशास्ता पौने ९ तोले, गोंद कीकर ११ तोले आठ माशा, श्वेत पुष्प १७॥ तोला, सब को कूट छान कर सौंफ सवज के स्वरस से भावित करें, और शुष्क कर के वारीक कर के छान लें।

उपयोग तथा गुण—आवश्यकतानुसार आंख में छिडके, आंख दुखने में लाभप्रद है ।

(२) रौप्य माक्षिक, गोंद कीकर प्रत्येक १०॥ माशा, केशर, मिरच काली, हिंगुल प्रत्येक सात माशा, अहिफेन ५। माशा, सब को वारीक खरल कर के प्रयोग करे ।

गुण—कुक्करे (पोथकी), जाला, नाखूना, पपोटों की मांस वृद्धि मे उत्तम है।

जरवर मामीरान

लौंग, मामीरान, सोंठ, मिरचकाली, पिप्पली, नीलाथोथा धुला हुआ, गोंद कीकर, सब सम भाग लेकर वारीक पीस कर आंख मे छिडके।

गुण—आंख के हर समय फडकते रहने तथा चक्षु के जीर्ण वात-कफज दोषों को नष्ट करती है, दृष्टि को वल देती है ।

लोचन धूडा

वंशलोचन, कत्थ सफेद, कवावचीनी, सगजराहत, कलमी शोरा, बड़ी इलायची वीज, सम भाग लेकर वारीक पीस ले,

गुण—मुखपाक मे अत्यन्त उपयोगी है ।

अभ्या धूड़ा

हरड, अकाकीया, गुल अनार, माईं, जैतून के पत्र, वंशलोचन सब सम भाग लेकर बारीक करे, ।

गुण—मुख पाक मे तथा श्वेत मुखपाक में लाभप्रद है।

जरवर सैंकोलान

गिल अरमनी, गिल सुरख (यह दोनो एक प्रकार की मिट्टी है), प्रत्येक ३ माशा, जुफतबलूत ४॥ माशा, गुल अनार १=॥ माशा, मुरसूक्की ५। माशा, कुन्दर सात माशा सब को बारीक पीस ले।

गुण—जखमो के भरने मे उपयोगी है, रसौली वा एसी गिल्टी जिस मे मवाद न हो, उस पर केवल सखा चर्ण ाध देने से रोगी अच्छा हो जाता है, विशेष गुप्त योग ह

रुब्ब

रुब्ब किसी बनास्पतिक औषध के घन स्वरस को कहते है जो उस औषध के पत्र, फल, त्वचा आदि से निकाला जाता है, परन्तु युनानी चिकित्सा मे रुब्ब उस औषध के घन शरबत से तात्पर्य है, जो कि उस औषध का क्वाथ तथा शीत कषाय मे खॉड डालकर बनाया जाता है उसका लाभ यह है, कि हर ऋतु मे प्रत्येक औषध का मिलना कठिन होता है, इस तरह से जखीरा रख लीया जाता है, दूसरे शरबत तो शीघ्र ही दूषित हो जाते है, परन्तु रुब्ब अधिक समय तक रह सकते है।

रुब्ब अम्ल अनार

अम्ल अनार के दाने निकाल कर किसी चीनी के बरतन मे भरे, और भली प्रकार घोट कर उन का रस निकाल ले, फिर सब को मोटे खद्दर के कपडे मे अच्छी तरह से छानले, अब इसमे से १सेर रस लेकर आध पाव खॉड मिला कर शरबत तय्यार करे, और घन पाक करके रख ले।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक अर्क गाऊजबान के साथ दे।

गुण—पितज वमन तथा अतिसार मे उत्तम है, दिल डूबने मे तथा ग्रीष्म ऋतु मे इस का प्रयोग उत्तम है।

रुब्ब मधुर अनार

अनार के दानो का रस भली प्रकार निकाल कर छान कर १ सेर मे आध पाव खॉड मिला कर घन पाक कर शर्बत तय्यार करे।

मात्रा—१ तोला रुब्ब, मे खॉड मिला कर योग्य अनुपान से दे।

गुण—दिल, दिमाग को वल देता है, गर्म्मी को नष्ट करता है, गर्भिणी के लीये लाभप्रद है ।

रुब्ब अंगूर मधुर

उपरिलिखित विधिसे रुब्ब वनावे, यह दिल, दिमाग को बल देता है ।

मात्रा—६ माशे से १ तोला ।

रुब्ब अंगूर अम्ल–विधि, गुण, तथा मात्रा उपरोक्त ही है ।

रुब्ब बही मधुर

वही को छील कर छोटे२ टुकड़े कर ले, बीज निकाल दे, खब कूट कर स्वरस निकाले, आध भाग खाँड मिला कर घन शरबत तय्यार करे।

गुण—हृदय, आमाष्य, आन्त्र को वल देता है, वमन तथा अतिसार मे भी लाभ प्रद है ।

रुब्ब सेब

उपरिलिखित विधि से तय्यार करे ।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक दे ।

गुण—यह रुब्ब, दिल दिमाग को वल देता है ।

रुब्ब जामुन

जामुन मधुर को किसी बरतन मे खूब हाथो से मलकर स्वरस निकाले, कपड़े मे छान कर आध भाग खाँड मिला कर घन शरबत तय्यार करें ।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक योग्य अनुपान से दें ।

गुण—आमाष्य, यकृत को बल देता है, पित का नाश करता है, अतिसार नाशक है ।

रोगन (तैल-घृत) (Medicated oils)

तैल एक स्निगध वस्तु है, अग्नि तत्व वहुत समय तक उस मे स्थिर रह सकता है, जहाँ भी लगाया जाता है, वहां की रूक्षता को नष्ट कर के स्निग्धता पदा करता है, तैल मे जिन गुण वाली औपध का सम्मिश्रण किया जाता है, उन का गुण उस मे आ जाता है, और वह गुण भी चिर-

काल तक उस मे बना रहता है, तैल की मालिश मर्दन से रक्त मंचालन क्रिया विशेष हो जाती है।

औषध से तीन प्रकार से तेल का निष्कासन किया जाता है।

(१) वह बीज जिन के भीतर स्वय बहुत सा तेल होता है, उन को कोल्हू वा किसी मशीन द्वारा दबाकर तेल निकाला लीया जाता है, यथा, बादाम तैल, सरसो तैल, तिल तैल।

दूसरे वह तैल जो सुगन्धित फूलो से लीये जाते है, विधि यह है, कि तैल वाले बीज (यथा तिल, काले अथवा सफेद) को कुच्छ दिनों तक फूलो मे रख दिया जाता है, जब इन फूलो की सुगन्धि इन बीजों मे भली प्रकार बस जाती है, तो फिर इन बीजोंको पीड़न कर तेल निकाल लीया जाता है।

तीसरे प्रकार के वह तेल होते है, जो औषध का क्वाथ करके फिर तेल मे डाल कर क्वाथ जला दीया जाता है, यदि औषध रस युक्त हो, तो उस का रस निकाल कर तेल मे जला लिया जाता है, नही तो शुष्क रस हीन औषध का क्वाथ कर के तेल मे जला लीया जाता है।

एक चोथी विधि भी है, कि औषध की गोलीया बना कर आतशी शीशी मे भर दी जाये, और शीशी पर उष्णता पहुचाई जाये, तो औषध का तेल निकल आता है, जो मात्रा मे थोडा होता है, परन्तु गुणो मे तीव्र होता है, कुच्छ औषध का तेल इस प्रकार से भी निकलता है, कि प्याला पर अच्छी तरह कपडा मण्ड कर इस के किनारो पर आटा लगा दिया जाता है, और कपडे पर औषध फैला कर ऊपर तवा रख कर उस पर जलते हुये कोयले रख दिये जाते है। इस विधि से भी जो तेल निकलता है, वह मात्रा मे कम परन्तु गुणो मे तीव्र होता है।

रोगन आमला (आमला घृत)

सबज आमला स्वरस १ सेर, गाये का, आध सेर घी, दोनों को एक बरतन मे डाल कर अग्नि पर चढ़ा दे, स्वरस शुष्क होने पर और घृत भाग शेष रहने पर छान लें।

मात्रा—दो तोले, प्रात मीठे दूध मे डाल कर प्रयोग करे।

गुण—आतशक मे लाभप्रद है।

रोगन बाबूना

१२ तोला बाबूना पुष्प ताजा को ४० तोला तिल तैल मे डालकर मुख बन्द कर धूप मे रख दे, ४० दिन के बाद छान कर कार्य मे लावे।

मात्रा—२–४ बूंद, उष्ण कर कान में डाले।

गुण—शोथनाशक है, पीड़ाशामक है, कर्ण शूल मे लाभप्रद है।

(२) यदि शीघ्र तय्यार करना हो, तो बाबूना पुष्प रात्री को पानी में भगोवे, प्रातः को क्वाथ करे, चोथा भाग रहने पर तिल तेल मिला कर फिर उबाले, तेल मात्र शेष रहने पर उतार कर शीतल होने दें, तत्पश्चात् छान कर काम में लावें।

गुण—उपरोक्त।

आमला तैल

सवज़ आमला के छोटे २ टुकड़े कर बोतल के आधे भाग तक भर दें, और शेष भाग मे तिल तैल भर दे, धूप में रख दे, जब आमले काले पड़ जाये, तो प्रतिदिन इस तेल से शिर की मालिश करे।

गुण—यह तेल बालो को काला रखता है, मस्तिष्क मे स्निग्धता उत्पन्न करता है।

(२) शुष्क आमला को रात्री भर जल मे भगोवे, प्रात. क्वाथ करे, चौथा भाग रहने पर छान कर सम भाग तिल तेल मिला कर फिर अग्नि पर पाक करे, तेल मात्र शेष रहने पर उत्तार ले, शीतल होने पर छान कर बोतल मे भर ले।

गुण—उपरोक्त।

रोग़न मधुर बादाम

मगज़ बादाम मधुर, कोलह, वा मशीन मे पीडन करवा कर तेल निकाल लें।

(२) यदि बादाम कम हो, तो अच्छी तरह कूट कर जल मे उबाले, जब तेल ऊपर आ जाये, तो शीतल कर ऊपर से तेल निथार ले।

(३) मगज बादाम को भली प्रकार कूट कर थोड़ी सी खांड मिलावें, और कलईदार देगची में डाल कर मृदु अग्नि पर पकावे, और थोडा २ जल छिड़कते रहे, देगची को थोड़ा टेढा रखे, ताकि तेल एक ओर को आजावे।

मात्रा तथा उपयोग—मस्तिष्क की रूक्षता को नष्ट करता है, निद्राप्रद है, विबन्ध के लिये ६ माशा से १ तोला तक दूध में डाल कर प्रयोग करे।

कटु बादाम तैल

ऊपरलिखित विधि से कडवे बादामो का तेल निकाले।

मात्रा—२—४ बूंद, उष्ण कर कर्ण मे डाले।

गुण—कर्ण शूल तथा कर्ण नाद मे उत्तम है।

रोग़न बनफ़शा

१ तोला बनफशा रात्री को १॰ पाव भर जल मे भगोवे, प्रातः थोडा उबाल कर छान ले,और ५ तोला तिल तेल डाल कर फिर उबाले, जल के जल जाने पर उत्तार कर शीतल कर छान ले।

गुण—यह तेल मस्तिष्क की रूक्षता को नष्ट कर के निद्रा लाता है, वक्ष की रूक्षता को भी दूर करता है।

अर्शान्तिक तैल

हिगुल, मल्ल सफेद १—१ तोला, लोबान कोड़ीया ५ तोला, मोम २० तोला, सौधव लवण २० तोला, आतशी शीशी लेकर प्रथम उसके ऊपर लवण डाल दे, लवण के ऊपर मोम को टिकिया बना कर रख दे, फिर बाकी वस्तु का चूर्ण कर डाल दे, पाताल यन्त्र विधि द्वारा तेल निकाले।

मात्रा—आवश्यकतानुसार थोडा सा मस्सो पर लगावे।

गुण—अंश के मस्से इस के प्रयोग से नष्ट हो जाते है।

रोगन बेजा मुरग़ (कुक्कुट अण्ड तैल)

अण्डो को पानी मे उबाल कर उन की जरदी निकाल ले, और ताम्रपात्र मे डाल कर अग्नि मे भून ले,फिर कपडे मे डाल कर निचोड़ लें।

गुण—रात्री समय बालों पर मले, बालों को लम्बा करता है।

(२)कुक्कुट अण्डे की जरदी निकाल कर कड़छे में डाल कर आंच पर रख दे, कडछे को थोडा टेढा रखे, जब जरदी जल कर काली पडने लगे, तो चमचा से इसे दबाते जाये, इस तरह उस मे से तेल निकलना

आरम्भ हो जायगा, इस तेल को पृथक करते जाये, जव तेल निकलना समाप्त हो जाये, तो छोड़ दे।

गुण—उपरोक्त।

रोग़न बेदअजीर (एरण्ड तैल)

वादाम रोगन को विधि से निकालें।

गुण—यह तेल मर्दन करने से आमवात की पीडा नष्ट करता है, विरेचन के लीये वहुत उपयोगी है, वालको के लीये अमृत है।

रोगन तुरव (मूली तैल)

मूलीयों को कुचल कर पानी निचोड ले, और इस मे सम भाग तेल डाल कर पाक करे, तेल शेप रहने पर छान ले।

मात्रा—२–४ बूंद, उष्ण करके कान मे डाले।

गुण—कर्ण शूल, तथा वात शूल मे उत्तम है।

रोग़न जज़ाम (कुष्ठहर तैल)

महन्दी के सवज पत्र १० तोला कूट कर २० तोला तिल तेल मे जला लें, फिर इन पतो को निकाल कर, नीम पत्र की टिकिया बनाकर, इसी तरह इस तैल मे जला ले, पाक सिद्धि पर उत्तार कर चौथा भाग चालमोगरा आयल मिला ले, आवश्यकतानुसार कुष्ट के व्रणो पर लगावें।

गुण—खाज-कुष्ट तथा चर्म रोगो मे अतीव गुणकारी है। कुष्ट नाशक है।

रोगन चम्बेली

चम्बेली के ताजे फूल वोतल मे भर दे, ऊपर से तिल का तैल डाल कर धूप मे रख दें, पुष्प शुष्क होने पर दूसरे ताजा पुष्प डाल दे, ३—४ बार एसा करने से उत्तम तेल तय्यार होगा, वा दूसरी विधि यह है, कि पहिले तिलो को कुच्छ दिन तक चम्वेली के पुष्पो मे रख दे, जव तिलों से सुगन्धि आने लगे, तो कोल्हू मे निष्पीड़न करा ले, इसी विधि से धनिया, संगतरा आदि औषध का तैल निकाला जाता है।

उपयोग विधि—तेल इतना लगाये, कि वह केशो मे मिल जाये और तेल लगा कर देर तक शिर को मंदन कीया जाये।

गुण—मस्तिष्क को स्निग्ध करके निद्रा लाता है, और केशों को सुन्दर तथा काला करता है।

रोग़न चहार बरग (चतुर पत्र तैल)

धत्तूर पत्र, आक पत्र, एरण्ड पत्र, हरमल पत्र, सम भाग लेकर इन का स्वरस निचोड कर समभाग तिल तेल मिला कर पाक करें, तेल सिद्धि पर उत्तार कर छान लें, उष्ण करके मर्दन करें।

गुण—आमवात के लिये उत्तम है।

रोग़न ज़रद (देवदारू तैल)

हलदी, दारूहलदी, मधुयष्टि, देवदारू, भड़भूंजे के छप्पर का धुआं प्रत्येक तीन तोला, सबको चूर्ण कर २ सेर, पानी मे क्वाथ करें तीसरा भाग रहने पर कपडे मे से छान कर ३ पाव तिल तेल डाल कर फिर पाक करें, तेल मात्र शेष रहने पर छान कर उपयोग मे लावे।

उपयोग—नये व्रणो को प्रथम साफ करले, फिर तेल से कपड़ा तर कर व्रण पर रखे, चोट लगने पर अर्ध उष्ण तेल को मर्दन करे,

गुण—नये व्रणोंको भरता है, चोट की पीड़ा तथा शोथ को नष्ट करता है।

रोग़न जुफ़त

जुफत रूमी, मस्तगी रूमी प्रत्येक दो तोला, दोनों को बारीक करके १० तोला तिल तेल मे पका कर छान लें।

गुण—अर्ध उष्ण कर के मर्दन करे, पट्ठो को बल देता है।

रोग़न सुरख़

मजीठ २० तोला, तज, कायफल, छडीला, नागरमोथा, वज, लौंग, नरकचूर प्रत्येक आठ तोला, सब औषध को कूटकर ४ सेर जल मे क्वाथ करे, १ सेर शेष रहने पर सम भाग सरसों तेल और तिल तेल डाल कर पाक करे, पाक सिद्धि पर उतार कर छान लें।

उपयोग—उष्ण कर के मर्दन करें।

गुण—अर्धांग, अर्दित, जोडों की पीडा, आमवात, वातरक्त, ग्रसी मे लाभप्रद है, चोट की पीड़ा को भी शान्त करता है।

(२) वीर वहुटी, खरातीन, अकरकरा, लौंग, जावित्री, दारचीनी, सब को समभाग लेकर मिलित औषध से त्रिगुण तिल तेल में डालकर जलाये, औषध जल जाने पर शीतल कर छान ले।

गुण-तथा उपयोग विधि—आवश्यकतानुसार प्रति रात्री को शिश्न पर मर्दन करे, और पान बाध दें, दो सप्ताह के प्रयोग से शिश्न मे दृढ़ता तथा मोटा पन पैदा हो जाता है, उत्तम योग है।

रोग़न समात कुशा

अम्ल अनार स्वरस १०तोले(गूदे समेत)को १ सेरपानी मे क्वाथ करे, चौथा भाग रहने पर छान कर सिरका ६ माशा, तिल तेल ५तोला, कुन्दर ३ माशा, मिला कर पाक करे, सिद्ध होने पर तेल को छान ले।

मात्रा—२-४ बूँद, कर्ण मे डाले।

गुण—ज्वर से उत्पन्न कर्ण नाद तथा बार्धय मे उत्तम है।

रोग़न सैर

लहसन एक पोथीया ४ तोला, फरफीयून, अकरकरा, प्रत्येक तीन तोला, काली मिरच, सुदाब १—१ तोला सब को आध पाव रोगन ज़ैतन में डाल कर पाक करे, पाक सिद्धि पर उतार कर छान ले,

उपयोग विधि—शिश्न पर अंध उष्ण तेल की मालिश कर के ऊपर पान का पत्र वाध दें।

गुण—शिश्न को दृढ़ करता है, जोड़ो की पीडा तथा आमवात मे भी लाभ प्रद है, गरम कर के मर्दन करें।

रोगन सरशफ़

धतूर पत्र, आकपत्र प्रत्येक तीन तोला, सोठ, १ तोला, सब को सरसो तेल आध पाव म पकाव, औषध क जल जाने पर उतार कर छान ले, और इस मे ६ माशा अहिफ़ेन मिला ले।

गुण तथा उपयोग विधि—अर्ध उष्ण कर के मालिश करें, वातशल मे उत्तम है।

रोग़न शफ़ा

मेथी और कलौजी सम भाग लेकर भून लें, और थोडा २ रोग़न जैतून डालते जाये, जब दोनों औषध से तीन गुणा रोगनजल

जाये, तो आतशी शीशी मे पाताल यन्त्र द्वारा तेल निकाले ।

उपयोग विधि—नीमगरम मालिश करें, रूई तर कर के योनी के भीतर रखे ।

गुण—अर्धांग, अर्दित, अपतन्त्रक, वातरक्त मे लाभ प्रद है, योनीपीड़ा तथा गर्भाशय पीडा मे भी उत्तम है ।

(२) मेथी और कलौंजी प्रत्येक १० तोला को कूट कर १ सेर तिल तेल मे जला ले, छान कर रख ले ।

गुण—उपरोक्त ।

रोगन अजीब

मालकगनी ७ तोला, शुद्ध गन्धक आवलासार ५ तोला, कलौंजी-काली ७ माशा, कुचिला १० माशा, शुद्ध वत्सनाभ २॥माशा, घुघची-सफेद, कनेर जड प्रत्येक सात तोला, सब को अर्ध कुट कर सात दिन तक गौ दुग्ध मे भिगोवे, आठवे दिन निकालकर आतशी शीशी मे भर कर पाताल यन्त्र द्वारा तेल निकाले ।

मात्रा—२-३ बूंद, किसी योग्य अनुपान से खिलावे ।

गुण—वाजी करण है, दीपक, पाचक है ।

रोगन अकरब

रेवन्दचीनी, नागरमोथा, किवरमूल छाल प्रत्येक तीन तोला, सब को कूट कर बोतल मे भर दे, कडवे बादाम का तेल आध सेर इस मे मिला कर सात दिन तक धूप मे रखे, फिर साफ करके १० जीवित बिच्छू इस मे डालकर १४ दिन तक धूप मे रखे, अव इसे छानकर काम मे लावे ।

गुण तथा उपयोग विधि—पथरी (अश्मरी) के लिये २—३ बूंद शिश्न के सुराख मे डाले, अर्श मे रूई भिगो कर मस्सो पर लगावे, अशमरी तथा अर्श से उपयोगी है ।

रोगन कस्त (कुठ तैल)

कुठ कटु, बालछड़ प्रत्येक ९ तोला, कूट कर रोगन जैतून वा तिल तेल, और अर्क बहार आध सेर मे मिला कर पाक करे, अर्क के जल जाने पर औपध को रोगन मे खूब घोटे, दो तीन बार आध आध सेर

अर्क वहार डाल कर पकावे, तीसरी वार अर्क जल जाने पर उतार कर तेल को छान कर जुन्द बदस्तर, काली मिरच, फरफयूँ, मेहीसाला प्रत्येक ३॥ तोला, भली प्रकार हल कर के शीशी मे भर ले।

गुण—नीम गरम मालिश कर के गरम रूई बाधे। अर्दित, अर्धांग वातकम्प, अपतन्त्रक सुप्तिवात तथा वात शूल मे अत्यन्त उत्तम है।

रोग़न काहू

काहू बीज स्वरस १० तोला, तिल तेल वा वादाम रोगन २० तोला, मिला कर पाक करे, स्वरस के जल जाने पर तेल मात्र शेष रहने पर छान ले।

गुण—निम्नोक्त

रोगन कद्दू

ऊपरलिखित विधि से रोगन निकाले।

गुण—दोनो रोगन मस्तिष्क को तर करते है, रूक्षता तथा शिर-शूल मे उत्तम है, निद्राप्रद है, आवश्यकता पर शिर पर मर्दन करे।

रोगन कुचला

अहिफेन २ तोला, तिल तेल ३०तोला, गौ दुग्ध ६०तोला, कुचिला १० तोला, कुचले को वारीक टुकडे कर दूध और तेल मे इतना पकावे, कि दूध जल कर तेल मात्र शेष रह जावे, अव इस मे अहिफेन हल कर शीशी मे रखे, नीमगरम कर के मालिश करे।

गुण—जोड़ों की पीड़ा मे अत्यन्त उत्तम है।

रोगन क़लान

मगज बादाम कटु ६ तोला, कलौंजी, एरण्ड वीज, गुग्गुलु प्रत्येक ४माशा, कुठ कटु, फरफयूँ, जुन्द वदस्तर, चिरायता मधुर, अफसनतीन (मुसत्यारा), नकछिकनी, सौंफ मूल, पितपापडा, महन्दी ३-३ माशा, अकरकरा, काली मिरच, कस्तूरी, बालछड, सोसन जड, तज, छड़ीला, सोठ, दारचीनी, मुरमक्की, लौंग, जायफल, सकवीनज, सातर, अजवायन, करफस मूल, करफस बीज, अनीसून, तगर, जाओ-शीर, नरकचूर, सोठ, जावित्री, कवावचीनी, पिप्पली, कुन्दर प्रत्येक २ माशा, अम्बर १ माशा, फरफयून, अम्बर, जायफल, कस्तूरी, जुन्द-

बदस्तर के सिवाये सब औषध को अर्ध कुट कर ५ सेर जल मे रात्री भर भिगोवे, प्रात क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर छानकर गुलाब पुष्प तेल, बाबूना तेल, सोसन तेल तथा एरण्ड तेल प्रत्येक १० तोला मिला कर पाक करे, तेल शेष रह जाने पर छान कर फरफयूं आदि को हल कर के शीशी मे भर दे, नीम गरम मालिश कर के गरम रूई बाध दें।

गुण---वात रोगो के लीये अनुभूत तथा सद्यःफल प्रद है।

रोग़न गुल आक (अर्क तैल)

आक पुष्प, सुरजान कड़वी, सोठ, अजवायन खुरासानी १-१ तोला, तिल तेल १५ तोला, सब औषध तिल तेल मे डाल कर जलायें, और छान कर शीशी मे भरें, नीम गरम मालिश कर के ऊपर से गरम रूई बाध दे।

गुण---आमवात, वातरक्त, कटि, पिण्डली, तथा शिरशूल में उपयोगी है।

रोग़न गुल

गुलाब की ताजा पत्तिया ८ तोला, तिल तेल २॥पाव, दोनों को एक बोतल मे भर कर धूप मे रखे, जब पुष्प मुरझा जाये, तो २-३ बार और फूल डाले, तत्पश्चात् छान ले।

उपयोग---शिरशूल, कर्णशूल, सन्निपात तथा विबन्ध मे उपयोगी है, शिरशूल मे मर्दन करे, कर्णशूल मे गरम करके कान मे डाले, कोष्ट-बद्धता मे १ तोला तेल दूध मे मिला कर पीवे, सरसाम (सन्निपात) मे सिरका मे मिला कर कपडा तर कर तालू पर रखे।

रोग़न गुल

(२) गुलाब के शुष्क फूलों को रात्री भर उष्णजल मे भिगोये, प्रात. इतना उबाले, कि तीसरा भाग रह जाये, तत्पश्चात् समभाग तेल तिल मिलावे, और पाक करे, तेल शेष रहने पर छानकर काम मे लावे।

गुण---उपरोक्त।

रोग़न गन्दम (गेहूं तैल)

गन्दम (गेहू) सफेद आध सेर, लेकर आतशी शीशी मे डालकर पाताल यन्त्र विधि से तैल निकाले, वा जल में क्वाथ कर तैल मे पाक करके छान ले।

गुण—शोथ नाशक है, दाद, गंज, झंझनाहट, तथा त्वचा की कठोरता को दूर करता है।

रोग़न गेलानी

मोडीयां पत्र, आमला शुष्क प्रत्येक ३० तोला, हरड, बहेड़ा प्रत्येक १५ तोला, छालीया ६ तोला, रूमी मस्तगी, लावन, प्रसाशे (हंसराज) प्रत्येक ३ तोला, वंशलोचन १॥ तोला, सब औषध को कूट कर १॥ सेर पानी मे रात्री को भिगोकर प्रातः क्वाथ करे, आधा भाग रहने पर छान कर १ सेर गुलाव पुष्प तैल मिला कर पाक करे, पाक सिद्धि पर उतार कर रखदे, गाद नीचे बैठ जाये, तो तैल को नियार ले।

उपयोग—चम्बेली तैल मे मिला कर बालो मे लगावे।

गुण—बालो की वृद्धि करता है, मृदु तथा काला करता है, मस्तिष्क के लिये भी उत्तम है, इसके प्रयोग से बालो का गिरना बन्द हो जाता है, अत्यन्त उत्तम तेल है—

रोगन लबूब सहबा

मगज़ फिन्दक, मगज़-पिस्ता, मगज बादाम मधुर, तिल छिले हुये, मगज चलगोजा, मगज तुखम कद्दू, मगज़ अख़रोट, सम भाग लेकर कोल्हू मे तैल निकाल ले, आवश्यकता पर शिर पर मालिश करे।

गुण—मस्तिष्क मे स्निग्धता करता है, निद्राप्रद है, नासा व्रण को भरता है।

रोग़न मुजरब

चिरायता मधुर, कुठ कटु प्रत्येक १। तोला, अजख़र मकी, सुरजान-कटु, कबाबचीनी, नारवीन, तगर प्रत्येक ९माशा, नरकचूर, कायफल, अकरकरा, मेदा लकड़ी, वोजीदान प्रत्येक ५ माशा, अर्ध कुट्टित कर १॥सेर जल मे क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर छान कर गुलाव तैल, चम्बेली तैल, जैतून तैल, बावूना तैल, प्रत्येक ४ तोला मिलावे, और पाक करे,तैल मात्र शेष रहने पर जदवार ख़ताई, जुन्दवदस्तर, फरफयूं, प्रत्येक १। तोला, जायफल, सोंठ प्रत्येक ९ माशा, गुग्गुलु ४॥ माशा,

इन सब का बारीक चूर्ण कर इस तैल मे खरल करे, एक जीव होने पर शिलाजीत १ माशा हल कर शीशी मे भर दे, मालिश करे।

गुण—अर्दित, अर्धांग, सुप्तिवात, वातकम्प, वातरक्त तथा गृध्रसी मे लाभ प्रद है।

रोग़न मस्तगी

मस्तगी रूमी ३ तोला, बोतल मे डालकर तीन छटाक रोगन जैतून इस मे भर दें, और बोतल को एक देगची मे जल डाल कर उबाले, जब मस्तगी पिघल जाये, तो बोतल को निकाल ले और काम मे लाये, तय्यार है, नीम गरम मालिश करे।

गुण—पट्ठे तथा आमाशय को वल देता है, कटिशूल मे उपयोगी है

रोग़न मख़दर

अजवायन खुरासानी, २ माशा, अहिफेन ३ माशा, भोज पत्र ४ माशा, सब को पीस कर ख़शख़ाश तैल २ तोला मे उबाल कर छान लें, तयार है।

गुण—मालिश करने से पीडा को नष्ट करताहै, पीड़ा शामक है।

रोग़न मोम

मोम १ सेर, नमक शोर तीन सेर, दोनो को देग मे डाल कर अर्क की तरह अर्क निकाले, यही रोगन मोम है।

गुण—अर्दित, अर्धांग तथा वातपीड़ा मे उत्तम है।

रोग़न नासूर

तिल तैल ५ तोला मे २ तोला बारूद बन्दूक वाली खूब खरल करे, और शीशी मे भर दे।

गुण—आवश्यकतानुसार नाडीव्रण (नासूर) को नीम जल तथा साबुन से धोकर पिचकारी से यह तैल भीतर पहुचाये, नाड़ीव्रण मे उत्तम है।

(२) कृष्ण सर्प का पित्ता निकाल कर तिल तैल मे जला ले, और नासूर मे वत्ती से भीतर पहुचा दे।

गुण—उपरोक्त।

रोग़न हफ़्त बरग (सप्त-पत्र तैल)

आक पत्र, महानीम पत्र, एरण्ड पत्र, सभालु पत्र, सुहजना पत्र, धतूर पत्र, थुहर पत्र (स्नुही पत्र), प्रत्येक १-१ तोला ३ माशा, सब को कूट कर १ सेर तिल तैल मे जलाये, फिर छान कर काम मे लावे, नीम गरम मालिश कर के ऊपर से गरम रुई बाधे।

गुण—अर्दित, अर्धांग, वातकम्प, वातरक्त आदि वात रोगो मे अतीव लाभकारी है।

रोगन हरमल

काले हरमल आध सेर, सोंठ आध पाव दोनो को कूट कर थोडे जल मे रात्री को भिगो दे, प्रात तिल तैल दो सेर डाल कर पाक करे, जब औषध जल जाये, तो तैल को कपडे मे छान कर पृथक् कर ले, और इस मे २० जायफल बारीक पीस कर मिश्रित करे।

उपयोग विधि—प्रात: साय मर्दन करे।

गुण—वात रोग, अर्दित, अर्धांग, वातकम्प, हाथ पैर की थकान मे लाभ प्रद है।

रोगन जहफ़रान (केशर तैल)

काली जीरी, केशर, प्रत्येक पौने दो तोला, चिरायता १ तोला ५॥ माशा, मुरमुक्की १॥। माशा, प्रथम केशर, चिरायता, मुरमुक्की को सिरका अगूरीमे ५ दिन तक भिगो रखे, छटे दिन काली जीरी को भी डाल दे, सातवे दिन तिल तैल ७॥ तोले मिला कर मृदु अग्नि पर रखे, सिरका जल जाने पर उतार कर छान ले, तयार है।

गुण—पट्ठों को नरम करता है, वातकम्प को नष्ट करता है, गर्भाशय पीडा, शोथ, व्रण आदि को दूर करता है, मुख पर मलने से रग को सुन्दर बनाता है।

चक्षु रोग हर रोगन

नीलाथोथा १४ माशा, जायफल १ नग, दोनो के इरद गिरद २१ माशा कच्चा धागा लपेट कर गेद सी बना ले, और गौघृत २८ तोले मे २ घण्टे तक भिगो रखे, इस के पश्चात् गेद को कांसी के बरतन मे रख कर आग लगावे, और जले हुये धागो को काट कर बाकी घृत

भी थोडा २ डालते रहे, जब सब धागे जल जाये, और घृत समाप्त हो जाये, तो सात दिन तक ढाक की लकड़ी के डण्डे से (जिस के शिर पर ताम्र का पैसा जड़ा हुआ हो) कासी के बरतन मे रगडे, तय्यार है।

गुण—आंख मे लगावे, वाहमनी, जाला, धुन्ध आदि मे लाभप्रद है।

कर्ण शूलहर तैल

अजवायन खुरासानी, हरमल प्रत्येक ७ माशा, दानो को अर्ध कुट्टित कर रात्री को आध सेर पानी मे भिगो कर प्रात. उबाले, आधा भाग रहने पर छान कर आध सेर तिल तैल मिला कर पाक करे। सिद्धि पर उतार ले ।

गुण—कर्ण मे अर्ध उष्ण डाले, कर्ण शूल मे उत्तम है ।

अर्शहर तैल

शुद्ध गन्धक, शुद्ध हरिताल, दोनो को सम भाग लेकर तिल के तैल मे खरल करें, एक जीव हो जाने पर अर्क विधि से बूंद—बूंद तैल टपकाये, खरल करते समय मृदु अग्नि खरल के नीचे अवश्य रखे ।

गुण—अर्श के मस्सो पर लगाने से मस्से नष्ट हो जाते है ।

रोग़न सोम (लहसुन तैल)

लहसुन छिला हुआ १ भाग, फ़रफ़यून, अकरकरा, प्रत्येक तिहाई भाग, मिरच काली, सुदाब प्रत्येक, चौथाई भाग, सब का चर्ण कर नौ गुने जैतून तैल मे पाक करे, औषध के जल जाने पर उतार कर शीतल कर छान ले।

गुण—यह तैल, वातपीड़ा, कटि शूल, अर्श मे लाभप्रद है, वाजीकरण है ।

रोग़न नमल

मक्रोड़े कृष्ण १०० (कबरो मे मिल जाते है) लेकर शीशी मे भरे, और इस पर १ तोला ४ माशा रोगन चम्बेली डाल कर शीशी का मुख वन्द कर तीन सप्ताह तक धूप मे रखे ।

गुण—शिश्न पर लगाने से उसे दीर्घ करता है तथा दृढ़ता उत्पन्न करता है

रोग़न सुज़ाक

रोगन राल, रोगन कवावचीनी, रोगन सन्दल, रोगन वलसान, १-१ तोला, रोगन वहरोजा २ तोला, सवको मिला ले ।

मात्रा—१ माशा, वताशा मे डाल कर प्रयोग करे।
गुण—सुज़ाक में अत्यन्त अनुभूत है ।

आमवात हर तैल

कुचला ८ नग, अजवायन खुरासानी आध पाव, कलौंजी १ पाव, सरसों का तैल तीन पाव, सब औषध के चूर्ण को तैल में जला कर छान लें, तय्यार है ।

गुण—मालिश करे, आमवात मे उत्तम है ।

गृध्रसी हर तैल

लौंग, अजवायन देसी, सोंठ, अहिफ़ेन, मुसव्वंर, लहसुन एक पोथीया, धतूर फल, कर्पूर १—१ तोला, लेकर वारीक कर के टिकिया वनावे, और १॥ पाव तिल तैल मे जला कर छान ले, मालिश करे ।
गुण—वातपीडा, गृध्रसी मे वहुत उत्तम है ।

छाजन हर तैल

वावची दो तोला, सिंदूर ४ तोला, भाग ८ तोला, तिल का तैल आध सेर, तैल को जोश दे, झाग समाप्त होने पर सिंदूर डालें, १ घण्टा के वाद वावची चूर्ण डाले, फिर एक घण्टा वाद भांग चूर्ण मिला कर नीचे उतार ले ।

गुण तथा उपयोग विधि—सोते समय हाथ, पैर की छाजन पर लगावे, परन्तु पानी न लगने दे, थोड़ी देर वाद हाथ, पैर को आग पर सेके, यह ध्यान रहे, कि २-३ घड़ी तक इस तैल को लगाकर आग पर सेकें, छाजन नष्ट हो जाती है ।

दाद हर तैल

पारद, गन्धक १—१ तोला, नीलाथोथा ६ माशा, तिल तैल आध पाव, प्रथम पारद गन्धक की कज्जली कर नीला थोथा मिला

कर एक जीव करें, फिर तैल मिला कर ३–४ प्रहर अच्छी तरह खरल कर, दाद छीब पर लगावे ।

गुण—दाद, छीबं, चम्बल मे बहुत उपयोगी है ।

रोगन शैख

मुलैहठी, देवदारू, रत्नजोत, हलदी, बबूल वृक्ष छाल, प्रत्येक ३० तोला, कूट कर रोगन बिनोला और रोगन अलसी २ सेर १३ छटांक (मिलित), और पानी आठ सेर ७ छटाक मे डाल कर मृदु अग्नि पर पाक करें, जल के जल जाने पर तैल मात्र शेष रहने पर छान ले, पाक करते समय जो झाग आते जाये, उन को हटाते रहे ।

गुण—नये ताजा व्रणों को भरने मे बहुत उपयोगी है ।

सत (सत्व)

सत किसी औषध के सूक्षम तथा आशू गुणकारी भाग को कहते है, जो औषध क स्थूलं भाग को पृथक कर के बनाया जाता है, बनास्पतिक औषध के सत्व निकालने की निम्न विधि है, औषध को अच्छी तरह कुचल दिया जाता है, और उसका स्वरस निकाल लिया जाता है, यदि वह शुष्क है, तो कुच्छ समय तक उसे जल मे रख कर हाथों से मल लीया जाता है, फिर पानी को छान कर किसी बर्तन मे रख लिया जाये, गाढा भाग नीचे तल मे बैठ जाये, तो निथरे हुये जल को बत्ती द्वारा निकाल दिया जाये, और नीचे तल मे पड़ी हुई औषध को धूप मे सुखा लिया जाये, यही उस औषध का सत्व है, परन्तु हमारी सम्मति मे उस निथरे हुये जल को बत्ती द्वारा न निकाल कर, धूप मे ही सुखा लिया जाये, जल पूर्णतया शुष्क होने पर सत्व पृथक कर लिया जावे, इस तरह से सत्व अधिक गुण प्रद होता है ।

बहरोजा सत्व

यथार्थ मे यह बहरोजा की शुद्ध करने की विधि है, एक हाण्डी मे आधे भाग तक जल भर कर चूलहे पर चढा देवे, और इस के मुख पर मलगल का कपड़ा बाध दिया जाये, जल के वाष्प से गन्दा बहरोजा पिघल कर जल मे गिरता जायगा, जब सारा बहरोजा उष्णता से पिघल कर नीचे जल मे गिर जाये, तो हाण्डी को अग्नि से

उत्तार कर वहरोजा निकाल ले. यही शुद्ध वहरोजा अथवा वहरोजा सत्व है, यदि अधिक शुद्ध करना हो, तो इसी प्रकार २–४ वार कर ले।

गुण—मूत्र जलन, सुजाक में लाभ प्रद है।

शिलाजीत सत्व और गिलोय सत्व निकालने की विधि से वैद्य लोग भली भांति परिचित है। इसलिये उनका उल्लेख वृथा है।

सिरका (अम्ल रस) Vinegar

सिरका एक विशेष प्रकार का अम्ल, तथा तीव्र आसव, अरिष्ट है, जो किसी फल आदिके मधुर स्वरस, वा क्वाथ को सडा कर वनाया जाता है, जिस वस्तुका सिरका वनाना हो, उसका रस वा क्वाथ एक व्यहवार किये हुये घड़े मे भर कर उष्ण स्थान पर रखदे, जव इसमे आसव क्रिया उत्पन्न होकर अम्लता उत्पन्न हो जाये, तो नियार कर छान ले, यदि घड़े मे स्वरस भरते समय थोडा सिरका भी डाल दिया जाये, तो सिरका शीघ्रता से वनता है, आजकल नगरोंमे दुकानदार लोग चीनी वा गुड का शरवत पका कर छान लेते है, और इसको वोतलो मे भर कर थोडा तेजावी सिरका (Acetic acid) डाल कर मुख वन्द कर देते है, और वोतलो को २—४ दिन धूप मे रख दिया जाता है, वस सिरका तयार हो गया, इस सिरके के गुण पहिली विधि से वनाये सिरके से वहुत ही न्यून होते है।

गन्ने का सिरका

गन्ने का उत्तम ताजा स्वरस लेकर पुराने घड़े मे भर दे, मुख पर कपड़ा वाधकर धूप में रख दे, दो तीन मास वाद जव वह स्वरस सड़कर अम्ल हो जाय, तो ऊपर से नियार कर छान ले।

गुण—आवश्यकतानुसार अजीर्ण तथा उदर विकारो मे प्रयोग करे।

नोट—जव गन्ने का स्वरस न मिले, तव गुड़ का शरवत वना कर इसी विधि से सिरका वना ले।

सिरका जामुन

जामुन को कुचल कर स्वरस निकाल ले, और घड़े मे डालकर मुख वन्द कर दें—तीन मास तक धूप मे रखे, तुरशी (अम्लता) उत्पन्न होन पर छान कर प्रयोग में लावे।

अगूरी सिरका

५ सेर द्राक्षा (बीज रहित) धोकर २० सेर पानी के साथ एक मटके मे भर दे, तीन–चार सप्ताह पश्चात्, फटकड़ी, लवपुरी लवण प्रत्येक ५ तोला डाल कर मुख वन्द कर दे, कुच्छ दिनो के पश्चात् छान कर इस मे थोड़ा लवण, वा सिरका मिला कर किसी सिरके वाले मटके मे डाल कर बन्द कर दे, धूप मे २-३ मास रखने के पश्चात् देखें, तो सिरका बहुत ही तीव्र और उत्तम मिलेगा, छान कर काम मे लावें।

सफूफ़ (चूर्ण) (Powders-Pulves)

एक वा अधिक औषध को बारीक कूट पीस लिया जाये, तो उसे चूर्ण कहते है, चूर्ण की शक्ति ६ मास तक रहती है, परन्तु जिन मे मूल्यवान पाषाण भी हों, तो उस की गुण शक्ति कभी नष्ट नही होती, चूर्ण बनाते समय निम्न लिखित नियमो का पालन करना चाहिये।

(१) बनास्पतिक औषध विशेषतया वर्षा ऋतु मे उत्पन्न होती है, इस लिये वर्षा ऋतु की समाप्ति पर जब पत्र, बीज, फल आदि पक्व अवस्था मे आ चुके हो, संग्रह कर के कार्य मे लाना चाहिये, यदि ऐसा किया जावे, तो चूर्ण की गुण शक्ति ६ मास तक रहती है, इस के पश्चात् इस का बल क्षीण हो जाता है, और १ वर्ष के पश्चात् तो वह निर्गुण हो जाता है।

(२) यदि चूर्ण के योग मे मूलयवान पाषाण भी हों, तो उन को पृथक खरल करना चाहिये।

(३) यदि रूमी मस्तगी हो, तो इसे भी पृथक हलके हाथों खरल करना चाहिये, जोर से रगडने तथा कूटने से वह चिमट जाती है।

(४) यदि योग मे मगजयात भी हों, तो इन को सिल बट्टा पर पृथक पीस कर और घी मे भून कर योग मे डाले।

(५) यदि योग मे केसर, कस्तूरी हो, तो इन को पृथक भली प्रकार पीस कर मिलावे, फिर थोड़ा २ औषध चूर्ण डाल कर खरल कर एक जीव करें।

(६) पाचक दीपक चूर्ण को बहुत बारीक नही पीसना चाहिये।

अलमलाह चूर्ण

भांग क्षार, नकछिकनी क्षार, पोदीना क्षार, मूली क्षार, कण्डयारी-क्षार प्रत्येक दो तोला, अजवायन सत्व १ तोला, सब को बारीक कूट छान कर, फिर अजवायन सत्व मिला कर खरल करे।

मात्रा—४ रत्ती, जारश कमूनी ७ माशा में मिला कर प्रयोग करें, वा भोजनोपरान्त ४ रत्ती जल के साथ दें।

गुण—यह चूर्ण भूख लगाता है, दीपक तथा पाचक है।

मधुयष्टि चूर्ण

मधुयष्टि छिली हुई, गुल्नार फारसी, गुलाव पुष्प, सुदाब बीज, सम्भालु बीज, प्रत्येक दो तोले, समभाग लेकर चूर्ण करे, सबके समान खाँड मिला लें।

मात्रा—१ तोला, शरवत बजूरी के साथ प्रयोग करे।

गुण—वीर्य पतलापन, प्रमेह, शीघ्रपतन के लीये उपयोगी है।

इन्द्री जुलाव चूर्ण

कलमी शोरा, रेवन्दचीनी प्रत्येक ७ माशा, यक्षार ६ माशा, जीरा सफ़ेद १ तोला, खाँड श्वेत १२ तोले सब को कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा—६ माशे, गाये की दूध की लस्सी के साथ प्रयोग करें।

गुण—मूत्र द्वारा मूत्र दोषो को बाहर निकालता है, सुजाक मे उपयोगी है, जलन, टीस को बन्द कर के मूत्र खोल कर लाता है।

वरस हर चूर्ण

चकासू, पनवाड़बीज, बावची, इंजीर वृक्षकी छाल, नीम वृक्ष की भीतरी छाल, प्रत्येक २ तोला मिला कर चूर्ण करे।

मात्रा तथा उपयोग—६ माशा चूर्ण, रात्री को जल मे भगोवे, प्रातः नियार कर छान कर पी लेवे, तलस्थ फोक को दागों पर लगायें, पथ्य में वेसनी रोटी (लवण बिना) घृत से खायें।

गुण—यह चूर्ण चालीस दिन के प्रयोग से श्वेत कुष्ट (बरस) को नष्ट कर के त्वचा की रगत को सुधार देता है।

बीजबन्द चूर्ण

बीजवन्द कृष्ण, हुलहुल बीज प्रत्येक ३॥ तोले, गोक्षरू, ताल-

मखाना, इन्द्र जौ प्रत्येक ७ तोले, लसूडा २८ तोले, खाँड सब के समान भाग, सब को कूट छान कर चूर्ण बनावे।

मात्रा—७ माशे, दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—प्रमेह और शीघ्र पतन मे उत्तम है।

बीजबन्द चूर्ण

बीजबन्द, हुलहुल बीज, प्रत्येक ३॥ तोला, गोक्षरू, तालमखाना, इन्द्रजौ, प्रत्येक ७ तोला, शतावर २८ तोला, खाँड सब के समान भाग, सब को कूट छान कर चूर्ण कर।

मात्रा—७ माशा, दूध के साथ प्रयोग करे।

गुण—उपरोक्त।

स्फटिका चूर्ण

स्फटिका भुनी हुई, खाँड श्वेत, दोनों सम भाग लेकर बारीक करं।

मात्रा—२ माशा, योग्य अनुपान से दे।

गुण—विषम ज्वर मे उत्तम योग है, बारी को रोकता है।

बातपित शामक चूर्ण

सौफ, छोटी इलायची, धनियां, तबाशीर, समभाग लेकर चूर्ण करें

मात्रा—३ माशा, खाना खाने के पश्चात् प्रयोग करे।

गुण—दीपक पाचक है, अजीर्ण नाशक है।

प्रमेह हर चूर्ण

साहलब मिश्री, तालमखाना, अश्वगन्धा, मस्तगी, नेत्रबाला, छोटी इलायची बीज, निशास्ता, भोफली, तज, बग भस्म, बड़ी इलायची, सब समान भाग लेकर कूट छान कर सम भाग खाँड मिला ले।

मात्रा—६ माशा, दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—प्रमेह, शीघ्रपतन, वीर्य का पतलापन, तथा स्वप्न दोष में उत्तम है।

(२) संगजराहत, शतावर सम भाग लेकर बारीक करें, और सम भाग खाँड मिला लें।

मात्रा—आवश्यकतानुसार १ तोला गोदुग्ध के साथ दे।

गुण—प्रमेह में उपयोगी है।

(३) सिंघाड़ा शुष्क, गोंद कीकर, १-१ तोला, माजू, रूमी-मस्तगी प्रत्येक ६ माशा, तालमखाना, साहलब मिश्री, निशास्ता, प्रत्येक आठ माशा, सब औषध को कूट छान कर सम भाग खाँड मिला ले

मात्रा—१-१ तोला, प्रातः सायं गौ दुग्ध से दे।

गुण—कोष्ट वद्धता को ठीक कर के इस चूर्ण को प्रयोग करें, तो प्रमेह में अत्यन्त उत्तम है।

प्रमेह हर चूर्ण

साहलब मिश्री, वोजीदान, शीतल चीनी, दारचीनी, सुरंजान-मधुर, मस्तगी रूमी, गोक्षरू, समभाग लेकर कूट छान कर चूर्ण करे, सम भाग खाँड मिला लें।

मात्रा—१ तोला, गौ दुग्ध से प्रयोग करे।

गुण—प्रमेह में उपयोगी है।

कुष्ट हर चूर्ण

नीम पत्र, बकुन पत्र, सहदेवी, कण्डयारी पंचांग, आमला, अम्बा हल्दी, सरफोंका, वावची, सब सम भाग ले कर कूट छान कर चूर्ण करे, यह सब चूर्ण ३५ तोला होना चाहिये, इस के ४ भाग करें।

मात्रा तथा उपयोग—१ भाग, प्रात १ भाग साय को प्रयोग करें, पथ्य रूप में चने की रोटी घी के साथ प्रयोग करे, लवण का सर्वथा त्याग करे।

गुण—कुष्ट की प्रारम्भक अवस्था मे विरेचन के वाद प्रयोग करे।

संग्राही चूर्ण

माजू सवज, संगजराहत, माई छोटी, कत्था सफेद, सम भाग लेकर कूट छान ले।

मात्रा—२ माशा, शीतल जल के साथ प्रयोग करे।

गुण—रक्त अतिसार को बन्द करता है।

चुटकी चूर्ण

सेंधव लवण, लवपुरी लवण, मिनहारी लवण, सौभाग्य भस्म, नवसादर, सनाये, चाकसू, सौंफ, कच्चूर, हरड, हरड बड़ी, कृष्ण हरीतकी पोदीना शुष्क, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, वायविड़ंग, गुलाब पुष्प,

जीरा कृष्ण, श्वेत, आमला शुष्क, अपक्व चने, वहेड़ा, काला लवण प्रत्येक १, १ तोला, सब को कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा—४ रत्ती से ३ माशा तक माता दुग्ध वा जल से दें।

गुण—वालको के अजीर्ण, विवन्ध, तथा अतिसार, शूल, यकृत-विकार, कृमिरोग मे उत्तम है।

(२) हरीतकी कृष्ण, पोदीना शुष्क, काली मिरच, सैंधव लवण, नरकचूर, सौहागा भुना हुआ प्रत्येक ३ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा तथा गुण—उपरोक्त।

सफ़ूफ़ खदर जदीद (सुप्तिवात हर चूर्ण)

सुरंजान मधुर, मस्तगी, दरूनज अकरवी, कचूर प्रत्येक ४ माशा, अपक्व आवरेशम कैंची से कुतरा हुआ, बोजीदान, बादरजबोया बीज, गाऊजबान पत्र, छोटी इलायची, बहमन सुरख, सफ़ेद, जदवार, ऊद गरकी प्रत्येक तीन माशा, ऊद सलीब, फरंजमुश्क पत्र (वन तुलसी पत्र), दारचीनी, तज, वालछड, प्रत्येक दो माशा, सब को कूट छान कर सम भाग खाँड मिला कर एक जीव करे।

मात्रा—५ माशा, खा कर ऊपर से नगन्द वावरी का क्वाथ पिलावे।

गुण—सुप्ति वात, अगो का सो जाना मे उपयोगी है।

राजिका चूर्ण

सौभाग्य भुना हुआ १ तोला, राई ३ तोला, दोनों को कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा—१ माशा, जल से दें।

गुण—प्लीहा वृद्धि के लिये उपयोगी है, द्वीपक तथा पाचक है।

खस्ता चूर्ण

मगज तुख़्म नीम, छोटी इलायची, माजू सबज, सम भाग लेकर कूट छान ले।

मात्रा तथा गुण—३ माशा, प्रातः सायं जल से दें, रक्त अर्श तथा रक्त अतिसार में अति उत्तम है।

दारचीनी चूर्ण

सीप भस्म २ तोला, साहलव मिश्री १ तोला, दारचीनी ६ माशा, सब औषध को कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा—६ माशा, जल से दे।

गुण—श्वेत प्रदर तथा प्रमेह में उपयोगी है।

दारचीनी चूर्ण (बृहत योग)

तालमखाना भुना हुआ, खशखाश बीज सफेद, तिल छिले हुये, मगज पिस्ता, मगज वनोला, मगज तुगम खरपजा, मगज तुखम करतम प्रत्येक ४ तोला, छुहारा १० तोला, तज ३ तोला, मगज वादाम मधुर छिले हुये, वीजवन्द, मूसली सफेद तथा काली, निशास्ता, गोंद कतीरा, वहमन रक्त तथा सफेद, वड़ी इलायची बीज, मगज तुखम कौंच, शकाकल, चीनी गोद, मोचरस, ऊटंगन बीज, सरवाली बीज, मूसली, खेलाखेली, तोदरी सुरख तथा सफेद, मेदा लकड़ी, बग भस्म, गोक्षरू, भांग बीज, प्रत्येक दो तोला, मस्तगी रूमी, जोज़जन्दम, इलायची बीज छिलके समेत, कवावचीनी, भोफली, सुरंजान, बोजीदान, तबाशीर, दारचीनी, सोठ, १–१ तोला, अकरकरा ६ माशे, प्रथम मगजयात को बारीक कर के घी मे भून ले, और बाकी औषध के बारीक चूर्ण मे मस्तगी चूर्ण तथा मगजयात चूर्ण मिला कर एक जीव करे, और सम भाग खाँड मिला ले।

मात्रा—६ माशा, प्रातः साय दूध से देवे।

गुण—प्रमेह, वीर्यपतलापन तथा श्वेत प्रदर मे उत्तम है।

श्वास हर योग

सेधव लवण ३ माशा, मत्सय पिस्ता १ दोनों को मिला कर घी कुमारी के गूदे मे पकावे, फिर चूर्ण कर शीशी मे रखे।

मात्रा—१ रत्ती, मधु वा शरवत बनफ़शा से दे।

गुण—कफज कास तथा श्वास मे उत्तम है।

श्वास हर रजनी चूर्ण

गन्धम (गेहू) को मिट्टी के प्याले मे डाल कर आग पर रख कर

कोयला कर ले, राख न होने पाये, इससे आधी, हलदी जला लें, (गन्धम से कम जलाये), दोनो को मिला कर चूर्ण करे ।

मात्रा—५ माशा, प्रात को जल से दे, और प्रतिदिन १ रत्ती बढाये, २५ दिन तक ३० माशा तक पहुच जाये, फिर १–१ माशा कम करके पहिली मात्रा पर आजाये, यह ५१ दिन प्रयोग करे ।

गुण—कफज कास तथा श्वास मे उत्तम है ।

बनफसा चूर्ण

बनफशा पुष्प बारीक पीस कर सम भाग खॉड मिला ले ।

मात्रा—१ तोला उष्ण जल से प्रयोग करे ।

गुण—कोष्ठ बद्धता तथा शिर शूल नाशक है ।

रक्त चूर्ण

गेरू, स्फटिका भुनी हुई, १–१ तोला, बारीक पीस लें, २ तोले कच्ची खॉड मिला ले ।

मात्रा–३ माशा, शरबत बजूरी तथा दूध की लस्सी से ले ।

गुण–सुजाक में मूत्र जलन को बन्द करता है, तथा पीप को भी बन्द करता है ।

श्वेत प्रदर हर योग

धाती पुष्प, सुपारी पुष्प, मोचरस, मोलसरी गोंद प्रत्येक ६ माशा, खॉड २ तोला, सब औषध को कूट छान कर चूर्ण करे ।

मात्रा–६ माशा, जल से प्रयोग करे ।

गुण–श्वेत प्रदर में अति उत्तम है ।

सोज़ाक चूर्ण

माजू सबज, कत्थ सफ़ेद २ तोला, बंशलोचन ६ माशा, प्रवाल भस्म ४ माशा, बारीक पीस कर चूर्ण करे ।

मात्रा–४ माशा, चूर्ण मे, सन्दल तैल मिला कर प्रयोग करें, ऊपर से शरबत बजोरी दूध की लस्सी के साथ दे ।

गुण–सुज़ाक (पूय मेह) मे लाभ प्रद है ।

मधुर चूर्ण

लौंग, छोटी इलायची बीज, नागकेसर, ककोल, दारचीनी, सोंठ, पिप्पली, नेत्रवाला, ख़स, बालछड़, चन्दन सफेद, अगर अपक्व, तगर, कमलगट्टा, जीरा सफ़ेद तथा कृष्ण, तज, तमालपत्र, प्रत्येक ५ माशा, कपूर, १ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—५ माशा, दोनों समय भोजनोपरान्त प्रयोग करे।

गुण—दीपक पाचक है, अजीर्ण नाशक है, अतिसार तथा कफ़ज ज्वरो मे उत्तम है।

सन्दली चूर्ण

सन्दल सफेद ३। तोला, निशास्ता, गोंद कतीरा, काहु बीज, ख़ुरफा बीज, प्रत्येक ४ तोला, गिलारमनी, गुलनार, गोंद कीकर, समाकदाना (तितंड़ीक), बलूत प्रत्येक ५ तोला, कूट छान कर छान कर चूर्ण करे।

मात्रा—७ माशा, दही जल से दें।

गुण—वृक्कों को बल देता है, मधु मेह मे उपयोगी है।

लोचन चूर्ण

तबाशीर, अनारदाना, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, मस्तगी, मोडीयों बीज, गुलाब पुष्प, गिलारमनी, सब को, सम भाग लेकर कूट-छानकर चूर्ण करे।

मात्रा—१ माशा, जल से दें, वा माता के दूध से दे।

गुण—बालको के अतिसार मे लाभप्रद है।

प्लीहा हर चूर्ण (विशेष योग)

पीले पत्र आक के १००, काला लवण, सज्जी क्षार, सुहागा, हल्दी, काला लवण, सैंधव लवण, यवक्षार प्रत्येक ६ तोला, हीग ३ तोला, सबका बारीक चूर्ण करे, अब इस चूर्ण मे सरसो तैल तथा आक दुग्ध ३–३ तोला डाल कर खरल करे, और आक के पत्तो के दोनो तरफ़ लेप कर दे, और मिट्टी के बरतन मे एक के ऊपर एक पत्र रख कर बरतन का मुख बन्द कर कपरौटी कर दे, कपरौटी

अकरबी, नागरमोथा, बालछड़, लौंग, छोटी इलायची, बाबूना जड़, हरड, हरडकृष्ण प्रत्येक ९ माशा, जायफल, जावित्री, छड़ीला, गाऊ-जवान पत्र, वालगू बीज, कवावचीनी, धनिया, तगर, शकाकल मिश्री, दोनों वहमन, अनजदान, चादी वर्क, स्वर्ण वर्क प्रत्येक १।। तोला, गोंदकीकर, छुहारे, गोंदकतीरा प्रत्येक २। तोला, मस्तगी रूमी, मधु की मखीयो के छते का मैल, जदवार खताई, फादजहरहेवानी, गिल मखतूम, रोगन वलसान प्रत्येक २।। तोला, मण्डूर शुद्ध (भस्म), केशर, आबरेशम कुतरा हुआ, जुन्दबदस्तर, कुन्दर, मोती प्रत्येक ३ तोला २ माशा, रेगमाही, सकनकूर,चिडे के शिर का मगज, कुक्ट अण्डकोष, सरतान, कच्छुआ के अण्डे, राल, हाथीदांत बुरादा, कस्तूरी, अम्बर-शहब, महीसाला, रोगन ऊद, प्रत्येक ३।।। तोला, कुरस असकील ४ तोला १।। माशा, शिलाजीत, धस्तूरबीज प्रत्येक ३।। तोला, मायाशुत्र-अहराबी, खसतीयलसहलब, चोबचीनी प्रत्येक ४ तोला ७ माशा, दोनों तोदरी, काली मिरच, करोवीया, सौंफ, अनीसून, मेथी बीज, कालादाना, करफस बीज, अस्पस्त बीज, जरजीर बीज, हालों बीज, अंजरा बीज, गन्दना बीज, शलगम बीज, प्याज बीज, चकन्दर बीज, सोये बीज, गाजर बीज, मूली बीज, हरमल बीज सफेद, खशखाश बीज सफेद प्रत्येक ११ तोला ३ माशा, कुरस अफही१५ तोला, भांग १८।।। तोला, भांगरा, अतीस, काली मिरच, सैंधव, शुद्ध गन्धक, अफीम प्रत्येक १०।। माशा, नेवला का मास सूखा हुआ, मगज तुख़म खयारैन, मगज तुखम कद्दू, मगज तुख़म पेठा, मगज तुख़म ख़रपजा, मगज नारियल, मगज चलगोजा, मगज तुख़म कुटज, मग़ज बादाम मधुर तथा कटु, मगज फिन्दक, मगज पिस्ता, मगज अखरोट, मगज हब्ब किलकिल, अनारदाना, मगज बनोला, मगज हब्बलबान, मगज चरोंजी, हब्बलजलम, अजवायन खुरासानी, मक्कलमक्की, ईरसा, उस्तोखद्दूस, रेवन्दचीनी, सनायमक्की, गारीकून, लाजवरद धुला हुआ प्रत्येक १।। तोला, मधु तथा खाँड प्रत्येक, मिलित औषध के समान, शीरा मुरब्बा गाजर, औषध मानसे द्विगुण, अमरूद जल, अर्क गुलाब, वेदमुशक, अर्क बहार प्रत्येक १ सेर ६ छटॉक, मधुर अनार रस, सेब रस प्रत्येक दो सेर १३ छटॉक, शराब अंगूरी १४ सेर, मधु, खाँड,

अर्कयात वा जलों को शराब मे मिला कर पाक करे, पाकसिद्धि पर औषध का वारीक चूण मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—३ माशा, दूध से।

गुग—पुसक शक्ति को वढ़ाती है, शरीर को सव रोगो से सुरक्षित रख शरीर को दृढ़ वनाती है।

माजून मुशकी

ऊद हिन्दी, लौग प्रत्येक ६ माशा, कस्तूरी, वालछड़, तेज पत्र, तज, हिवजत्याना, रेवन्दचीनी, लाख धुली हुइ १-१ तोला, अजवायन, करफस वीज, अनीसून, मस्तगी, केशर प्रत्येक दो तोला, सब को वारीक पीस कर त्रिगुण मधु का पाक कर के मिलावे।

मात्रा—१ तोला, करतम के क्वाथ से वा अर्क गुलाब तथा सौफ से दे।

गुण—प्रसूत पश्चात रोगों मे उत्तम है, मल को शुद्ध करती है।

माजून मक्कवी बाह

मधु आध सेर ले कर झाग उतारे, साफ होने पर मूली बीज ४ तोला का वारीक चूर्ण छिड़क दे, मिल जाने पर मिरच काली, सोंठ, लौग, मस्तगी रूमी प्रत्येक २ तोला, कूट छान कर मिला दे, यदि कस्तूरी ३ माशा, अम्वर, केशर ६ माशा, भी डाल दे, तो अधिक लाभप्रद होगी।

मात्रा—७ माशा।

गुण—पुंसक शक्ति को बढाती है। -

माजून मुण्डी

हरड़, हरड़ वड़ी, हरड़ काली, वहेडा, आमला, शाहतरा, मधुयष्टि १—१ तोला, मुण्डी पुष्प ७ तोला, प्रथम त्रिफला को वारीक पीस कर बादाम तैल से स्निग्ध करे, फिर वाकी औषध चूर्ण मिला कर त्रिगुणा मधु का पाक कर के यथाविधि माजून तैयार करे।

मात्रा—१ तोला।

गुण—नेत्र रोगों मे उपयोगी है।

माजून मास्कलबोल

कहरबाशमई, हरड़ बड़ी, कृष्णहरीतकी प्रत्येक ९ माशा, सब को बारीक पीस कर गौघृत से स्निग्ध करें, फिर कत्थ सफ़ेद, जुफत-बलूत, कुन्दर का छिलका प्रत्येक ६–६ माशा, शहदानज, मोड़ीयों, साहलब मिश्री प्रत्येक ४॥ माशा, सब को कूट छान ले, और २२ तोला द्राक्षा (बीज रहित) को बारीक पीस कर अर्क गुलाब मे इतना पकावें, कि घन हो जाये, अब इस मे औषध चूर्ण डाल कर पाक करें।

मात्रा––७ माशा।

गुण––बूँद २ मूत्र आने मे लाभ प्रद है, प्रमेह मे भी उपयोगी है।

माजून मगज़यात

मगज कदू मधुर, मगज तरबूज, मगज पेठा, मगज तुखम खशखाश सफेद, मगज बनोला, मगज खरपजा, मगज खयारैन, मगज बादाम १–१ तोला, सब का शीरा बना कर घी मे भून ले, गोक्षरू मगज गुख़म कौच, मगज कमलगट्टा, किशमिश, साहलब, मिश्री, प्रत्येक २॥ तोला, मूसली श्वेत, मूसली काली, दोनो तोदरी, दोनो बहमन, मसली-सेभल, शतावर, समुद्रसोख, इन्द्रजौ, तालमखाना, तुखम, सरवाली, तुख़म रेहा, बालगू बीज, खुरफा बीज, काहू बीज, धनिया, गुल नीलो-फर, छोटी इलायची बीज प्रत्येक ७ माशा, मग़ज चलगोजा भुना हुआ, तिल छिले तथा भुने हुये, सब औषध को बारीक कर त्रिगुण मधु का पाक कर मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा––१ तोला।

गुण––पुसक शक्ति को बढ़ाती है।

माजून बेजामुरग़

साहलब मिश्री, दोनों बहमन, दोनों तोदरी, मस्तगी रूमी, पान की जड़, अकरकरा, दारचीनी, पिप्पली, दोनों मूसली, इन्द्रजौ, सेभल मूसली, उटगन बीज, लौंग, जायफल, जावित्री, सोंठ, छोटी इलायची बीज, बीरबहुटी, प्रत्येक १ तोला, गाजर बीज, शलगम बीज, मली बीज, प्याज बीज, बनोला बीज भुना हुआ, मगज बादाम भुना हुआ,

मगज़ कद्दू, मगज़ खयारैन, मगज-चलग़ोजा, मगज अखरोट, मगज़ नारियल, मगज् पिस्ता, मगज फिन्दक भुना हुआ प्रत्येक दो तोला, केशर ३ तोला, केचवे साफ किये हुये १० तोला, तिल धुले हुये ५ तोला, ५० अण्डों की जरदी, पहिले अण्डों की जरदी को चमचे से हल करे, और घी में भून कर मगजयात मे मिला दे, बाकी औषध का चूर्ण करे, त्रिगुण मधु का पाक कर सब को डाल कर अच्छी तरह मिला कर एक जीव करे।

मात्रा——१ तोला।

गुण—अत्यन्त प्रभावशाली औषध है, पुसक शक्ति वंधक है।

माजून मसीह

जायफल ३ नग, कस्तूरी १।।। माशा, अम्वरशहव ३।। माशा, केशर १०।। माशा, अकरकरा १।।। तोला, मरिच सफेद, मस्तगी, तज प्रत्येक ३२ तोला, बडी इलायची बीज, वादाम रोगन मधुर प्रत्येक पौने ४ तोला, भांग ११। तोला, यथाविधि त्रिगुण मधु का पाक कर औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—५ माशा।

गुण—कमर को दृढ़ करती है, पुसक शक्ति वर्धक है, दीपक पाचक है।

माजून तिल्ला

अम्वरशहव, कस्तूरी, मोती, याकूत, जुमुरद, प्रत्येक ४ माशा, स्वर्ण वर्क १ तोला, मधु ७ तोला, मधुर सेब रस, मधुर अनार रस, मिश्री प्रत्येक १० तोला, अर्क गुलाव २० तोला, अर्क गाऊजवान, अर्क बेदमुशक प्रत्येक ४० तोला, अर्को मे मिश्री तथा मधु डाल कर पाक करे, पाकसिद्धिपर बाकी औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—३ माशा।

गुण—हृदय को वल देती है, गशीं तथा खफकान मे उत्तम है।

माजून महसफ़र

हरड़, हरड़ काबुली, बेहड़ा १—१ तोला, आमला, पितपापड़ा, गिलोय़, जीरा सफेद प्रत्येक दो तोला, धनिया, महसफ़र पुष्प १—१ तोला, सब औषध का चूर्ण कर त्रिगुण मधु का पाक कर माजून तैयार करे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—रक्तदोष को नष्ट करती है।

माजून मग़लज

मस्तगी २ माशा, बत्तम की गोंद, कतीरा, तबाशीर, छोटी इलायची, गोंद कीकर, निशास्ता, खसतीयलसहलब प्रत्येक ६ माशा, मगज वलगोजा १ तोला, मगज़ नारीयल १॥ तोला, मगज बादाम छिले हुये २ तोला, मधु तथा खॉड औषध मान से त्रिगुण, यथाविधि पाक कर चूर्ण मिला कर माजून बनावे।

मात्रा—१ तोला।

गुण—वीर्य को गाढ़ा करती है, पुसक शक्ति वर्धक है।

माजून-मगलज (विशेष योग)

सम्भालू बीज, हरमल, शिलाजीत प्रत्येक ५ तोला, मधुयष्टि, गुलनार, गुलाब पुष्प, काहूबीज प्रत्येक २॥ तोला, मायाशुत्र अहराबी, केशर प्रत्येक १। तोला, कफ अबाबील ७॥ माशा, द्राक्षा का शीरा २५ तोला (कपड़े में छान ले,) मधु उत्तम ६५ तोला, प्रथम शीरा द्राक्षा तथा मधु का पाक करे, बाकी औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करे यदि इस मे कस्तूरी, अम्बर, शिला जीत प्रत्येक ६ माशा, मोती, लाजवरद धुला हुआ, यशप, कहरबा, याकूत, जुमुरद, जहरमोहरा खताई प्रत्येक ९ माशा खरल कर के मिश्रित करे, तो यह माजून मगलज ज्वाहर वाली वन जायगी।

मात्रा—७ माशा से १ तोला।

गुण—वीर्य को वढ़ाती है, पुसकशक्ति वर्धक है।

माजून मक्कल

आमला, हरड काबुली, बहेड़ा, हरमल बीज, गन्दना बीज प्रत्येक १॥ तोला, गुग्गुल ३ तोला, प्रथम गुग्गुलु को गन्दना रस मे हल करे, सब औषध का चूर्ण कर त्रिगुण मधु का पाक कर के मिलावे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—वातिक तथा रक्तज अर्श मे उपयोगी है, विवन्ध नाशक है।

माजून मक्कवी अलवीखान

माया शुत्र अहराबी १ माशा, चादी पत्र, स्वर्ण पत्र, कस्तूरी, अम्बर ३—३ माशा, अजवायन खुरासानी, वरमना तुरकी, केशर, बेख़,लफाह, मोठ जड, नागकेसर प्रत्येक ६ माशा, मोती, कहरबा १–१ तोला, दोनों वहमन, शकाकल मिश्री, सोंठ, पान की जड़, अजरा बीज, शलगम बीज, गाजर बीज, ख़शख़ाश बीज सफेद २—२ तोला, मगज पिस्ता, मगज नारियल, मगज चलगोजा, मगज चरोंजी, तिल छिले हुये, रेगमाही, माही रोबीयान ४—४ तोला, मगज तुखम ख़रपजा, मगज तुख़म ख़यारैन ५—५ तोला, चिडे के शिर का मगज ७ तोला, चने का आटा १० तोला (दूव मे खमीर कर शुष्क किया हुआ), सब औषध को कूट छान कर १० तोला गौ मक्खन मे स्निग्ध करे, और खाँड तथा मधु प्रत्येक १। सेर, शरबत फोवाका मधुर, शरबत हालो २०—२० तोला लेकर यथाविधि पाक कर के माजून वनावें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—पुसक शक्ति वर्धक तथा स्तम्भक है।

माजून मुमस्क व मक्कवी

कस्तूरी १ माशा, अम्बर शहव ४॥ माशा, दारचीनी, मस्तगी, जायफल, वालछड़, ऊद ख़ाम, अजवायन खुरासानी सफेद, कवावचीनी, केशर, साहलब मिश्री, चिड़े के शिर का मगज तथा जिह्वा, भांग ९—९ माशा, मायाशुत्र अहराबी १॥ तोला, पोस्त ख़शखाश सफेद २२॥ माशा, शाह वलूत २२॥ माशा, कालादाना सफेद ४०० नग,

खॉड और मधु औषध चूर्ण से त्रिगुण, प्रथम कालादाना को बादाम रोगन मे १ दिन तर रखे, फिर मधु तथा खॉड के पाक मे सब औषध चूर्ण को मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—१ माशा, स्तम्भनार्थ, प्रमेह मे चने समान प्रयोग करे।

गुण—स्तम्भक है, प्रमेहनाशक है।

माजून मलूकी

इलायची छोटी, कुन्दर प्रत्येक ४॥ माशा, छड़ीला ११। माशा, जायफल, लौग, जावित्री, इन्द्रजौ, अजखरमूल, दारचीनी, सोठ, मस्तगी, केशर, ऊद प्रत्येक १३॥ माशा, खॉड सब औषध मान से दुगनी, अर्क गुलाब १३ तोला, खॉड को गुलाब मे हल कर के और मधु औषध मान के सम भाग लेकर पाक कर माजून तैयार करे।

मात्रा—५ माशा।

गुण—पुसक शक्ति वंधक तथा दीपक पाचक है।

माजून मक्कवी व मुफरह कलब

मुरब्बा आमला ५नग मुरब्बा हरड़ ५ नग, मुरब्बा सेब, मुरब्बा बही २—२ नग, मुरब्बा अन्नास, मुरब्बा नीशकर (गन्ने का मुरब्बा), मुरब्बा पेठा प्रत्येक १० तोला, सबको गरम पानी से धोकर पीस ले, और अर्क गुलाब-बेदमुश्क केवड़ा मे प्रत्येक ३० तोला मे हल करके छान ले, और खाण्ड २५ तोला मिला कर पाक करे, पाक सिद्धि पर कहरबा शमई, छोटी इलायची बीज, तबाशीर, केशर, प्रवाल, मरवारीद (मोती), यशप, चांदी वर्क, स्वर्ण वर्क प्रत्येक ६ माशा खरल करके भली प्रकार मिलावे।

मात्रा—४ से ६ माशा।

गुण—दिल दिमाग तथा यकृत को बल देती है।

माजून मुफ़रह व मक़वी

नागरमोथा, इलायची बडी, कुठ, आमला, कुन्दर, दोनों बहमन, दोनों मरिच, गुग्गुलु, नारीयल दरयाई, तज, छड़ीला, ऊद, मुरमकी,

कवाबचीनी, तेजपत्र, हरड़, केशर, जुन्दवदस्तर, पोदीना, पिप्पलामूल, बोजीदान, लौंग, कबाबचीनी, शिलाजीत, सोंठ, शकाकल मिश्री, मगज़ चलगोजा, पानजड, अजवायन, जदवार, बाबूना पुष्प, आबरेशम, हिंबजत्याना, तगर, जरावन्द गोल, दारचीनी, अकरकरा, साहलबमिश्री प्रत्येक ३५ माशा, द्राक्षा बीज रहित सब औषध के समभाग, खाँड सब के समभाग, मधु औषध से द्विगुण, खाँड तथा मधु का पाक कर के सब औषध का चूर्ण मिलावे।

मात्रा—९ माशा।

गुण—बलप्रद तथा हृदय को बल देने वाली है।

माजून मोचरस

मोचरस, सुपारी, तबाशीर, निशास्ता, माजू सबज, गुलाब पुष्प, मोड़ीयों बीज, हरड़, बहेड़ा, आमला, गिल मख़तूम, मूसली श्वेत तथा कृष्ण प्रत्येक ६ माशा, अनार का छिलका ९ माशा, बही रस, अम्ल अनार रस प्रत्येक २। तोला, खाँड तथा मधु औषध से त्रिगुण, यथाविधि पाक कर औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—१ तोला, गौ दुग्ध से।

गुण—श्वेत प्रदर मे अत्यन्त उत्तम है।

माजून मूसली पाक

मूसली सफेद १ सेर को कूटछान कर दूध मे पकावे, खोया बन जाने पर १ पाव घी मे भून ले, अब इसे ३ सेर खाँड का पाक कर के मिला दे, गोंदकीकर, नारियल, मगज बादाम, मगज चरोजी, प्रत्येक १।। तोला, जायफल, लौंग, केशर, चव्य, बालछड, मगज तुख़म कौंच, दारचीनी, छोटी इलायची, नागकेसर, पत्रज, जावित्री, सोठ, मिरच, पिप्पली प्रत्येक ९ माशा, सबको बारीक पीस कर पाक मे मिलावे।

मात्रा—९ माशा से १ तोला।

गुण—प्रमेह, कास श्वास, तथा शारीरिक दुर्बलता मे उत्तम है।

माजून मोमयाई

शिलाजीत शुद्ध ५ तोला, मोती १॥ तोला, मायाशुत्र अहराबी ३॥ तोला, अम्बरशहब ६ माशा, स्वर्ण वर्क ५० नग, मिश्री औषध मान से द्विगुण, मिश्री का पाक कर यथा विधि माजून तैयार करें, अम्बर और स्वर्ण वर्क पाक के अन्त मे मिलावे।

मात्रा—२ माशा।

गुण—शरीर के सब अंगों को बल देती है, सम्भोग पश्चात की क्षीणता में उत्तम है।

माजून आबरेशम

दारचीनी, बहमन सफेद, बालछड, हब्बबलसान, ऊद सलीब, मस्तगी, केशर, कुन्दरु, सोसन जड, दरूनज अकरबी, नागरमोथा, बहमन सुरख, वज तुरकी, उस्तोखदूस, कबाबचीनी, तगर प्रत्येक २ माशा, हरड़ काबुली, मगज नारियल, प्रत्येक ४ माशा, मगज फिन्दक ३ माशा, आबरेशम अपक्व २० माशा, द्राक्षा बीज रहित १५ नग, पिप्पली, सोठ, मिरच सफेद १—१ माशा, खॉड ५ तोला, मधु १० तोला, सब को कूट छान कर, मधु तथा खॉड के पाक मे मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—विस्मृती नाशक है, हृदय तथा मस्तिष्क को बलप्रद है।

माजून अर्श

मण्डूर शुद्ध, शुद्ध गंधक आमलासार प्रत्येक ४ तोला, गुड पुराना ८ तोला, गुड़ का पाक कर के बाकी औषध चूर्ण मिला दे।

मात्रा—३ माशा।

गुण—शरीर को बल देती है, अर्श मे लाभदायक है।

माजून बलादर

तिल छिले हुये ४ तोला, शीरा भल्लातक, मगज बादाम, मगज चलगोजा, असगन्ध, अकरकरा, पान जड, जावित्री ३—३ तोला,

जायफल, सोंठ, साहलब मिश्री २—२ तोला, पिप्पली, मस्तगी, हालों बीज प्रत्येक १॥ तोला, गाजर बीज, अंजराबीज, कौंच बीज, केशर १—१ तोला, समुद्र सोख, कस्तूरी ६—६ माशा, खाँड औषध मान के समभाग, मधु द्विगुण लेकर यथाविधि पाक कर औषध चूर्ण मिला कर माजून बनावे।

मात्र—९ माशा से १ तोला।

गुण—पुंसक शक्ति तथा सब शरीर को बल देती है।

माजून नानख़्वाह

सातर, अजवायन, जूफा, पोदीना, जीरा कृष्ण, कलौजी प्रत्येक २२ माशा, तज, जावित्री, सौंफ, सोंठ, जायफल, करफस प्रत्येक १३ माशा, आशा ९ माशा, सबका चूर्ण करके त्रिगुण मधु के पाक मे मिला कर यथाविधि माजून बनावे।

मात्रा—५ माशा।

गुण—वातनाशक तथा दीपक पाचक है, आमाशय का शोधन करती है।

(२) अजवायन देसी, सोंठ, गाजर बीज, प्रत्येक ३ तोला, करफ़स जड़ १॥ तोला, मस्तगी ९ माशा, अकरकरा ५ माशा, केशर, बसफाईज ३—३ माशा, मधु त्रिगुण, यथाविधि पाक कर के माजून बनावे।

मात्रा—५ से ७ माशा।

गुण—उपरोक्त।

माजून नजाह

हरीतकी कृष्ण, बहेड़ा, आमला प्रत्येक ३॥ तोला, बसफाईज फस्तकी, अफतीमियून विलायती, उस्तोख़द्दूस, त्रिवृत सफेद प्रत्येक १॥ तोला, मधु त्रिगुण, लेकर यथा विधि माजून तैयार करे।

मात्रा—५ माशा।

गुण—रक्तदोष मे उपयोगी है।

माजून नसीयान

कुन्दर, वर्च, नागरमोथा प्रत्येक ३ तोला, सोंठ, कालीमिरच प्रत्येक १।।तोला को त्रिगुण मधु के पाक मे मिला कर माजून तैयार करे

मात्रा—५ माशा ।

गुण—बुद्धि को तीव्र करती है ।

माजून निशारा आजवाली

हाथीदन्त चूर्ण, सुपारी, गुलनार, आवरेशम छिला हुआ, हिरण-श्रृंग जला हुआ १—१ माशा, मोती, मरजान, बुसद, यशप सफेद, धनियां, ऊद हिन्दी, मस्तगी, कचूर, कबाबचीनी, गुलाब पुष्प, गिल-अरमनी प्रत्येक २ माशा, तुरंजबीन २।। तोला, शीरा आमला आव-श्यकतानुसार, यथाविधि पाक कर के औषध चूर्ण मिला कर माजून बनावे, अन्त में थोडा सा कपूर मिला कर सुरक्षित रखें ।

मात्रा—३ स ६ मागा ।

गुण—जिन स्त्रियों का गर्भ गिर जाता है, उन के लिये उत्तम है, तीसरे मास से प्रारम्भ कर के प्रसवान्त तक प्रयोग करे ।

माजून नकरा

कस्तूरी ३ माशा, अम्बर २ माशा, कहरबा, बुसद, यशप सब्ज १—१ तोला, मोती ३ माशा, बशलोचन १ तोला, सब को अर्क गुलाव मे खरल करे, अव आवरेशम जला कर १ तोला मिलावे,खाँड औषध मान से त्रिगुण लेकर, अर्क गुलाब तथा सेब रस मे मिला कर पाक करें, ४ कुक्कुट अण्डों की जरदी गौघृत मे भून कर तथा चांदी वर्क और ज्वाहरात को पाक मे भली प्रकार मिला कर सुरक्षित रखे ।

मात्रा—३ माशा ।

गुण—दिल, दिमाग को वल देती है, पुसक शक्ति को बढाती है, तथा शरीर को वल देती है ।

माजून नीम

नीम छाल, नीम पत्र, नीम शाख, अंजीर वृक्ष छाल प्रत्येक १३ माशा, पितपापडा, धनियां, चिरायता, हरड, हरड़ वडी, हरीतकी कृष्ण, चित्रक, गुलाव पुष्प, सौफ, सनाय, वसफाईज, दरूनज अकरवी, वहेड़ा सम भाग लेकर चूर्ण करे, त्रिगुण मधु के पाक मे मिला कर यथाविधि माजून वनावे ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—परम रक्तशोधक है ।

माजून भांगरा (वा कायाकल्प)

पिप्पली, पनवाडवीज, चित्रकमूल, शतावर, कृष्ण हरीतकी, आमला, वहेडा, भागरा, सोंठ, गुड प्रत्येक ३० तोला, सब औषध को वारीक कर गुड का पाक कर चूर्ण मिला १—१ तोला की ३०० वटी बनावें, सावन, भादों के मास से प्रारम्भ करके १—१ वटी प्रातः खावें, यह माजून वृद्धो को युवक तथा युवको को वलवान वनाती है ।

माजून जला

शाहतरा (पितपापडा), चिरायता, सरफोका, मुण्डी, उन्नाव, कृष्ण हरीतकी, उगवामगरवी, व्रह्मडण्डी, नीलकण्ठी, शीशम वुरादा, करफस वीज, सोये वीज, गाजर वीज, सौफ, धनियां, अजवायन प्रत्येक १० तोला, मस्तगी, अकरकरा, लौग प्रत्येक ४॥ तोला, अगर २ तोला वारीक पीस कर त्रिगुण मधु के पाक मे मिला कर माजून तैयार करे ।

मात्रा—७ माशा, रक्तशोधक अर्क से ।

गुण—चर्म तथा रक्तदोषो मे उत्तम है ।

माजून हयात

सुपारीपुष्प १० तोला, पिस्तापुष्प, पोस्त वीरून पिस्ता १०—१० तोला, पिस्ता, आमला, खशखाश वीज सफेद भुना हुआ,

कतीरा २०——२० तोला, गोक्षरू २० तोला, माजू सबज १६ तोला, मस्तगी रूमी ८ तोला, ढाक की गोद २० तोला, सिघाड़ा २० तोला, सब को कूट छान कर त्रिगुण मधु का पाक कर यथाविधि माजून तैयार करे।

मात्रा——७ माशा।

गुण——श्वेत प्रदर और प्रमेह मे उत्तम है।

माजून नकछिकनी

नकछिकनी १ सेर लेकर ५ सेर दूध में उबाल कर खोया बनावे, आध सेर गौघृत मे भून ले, फिर खाँड १ सेर, तथा मधु १ सेर का पाक कर के खोया मिला दे, दारचीनी, कबाबचीनी, पानजड़, लौंग ३——३ माशा, कस्तूरी १ माशा बारीक करके पाक मे मिलावें।

मात्रा——६ माशा।

गुण——पुसक शक्तिवर्धक है, प्रमेह तथा शीघ्रपतन में उत्तम है।

माजून हलीला

हरड कृष्ण २॥ तोला, बहेड़ा १। तोला, मरिच सफेद ७॥ माशा, सोंठ, गुलाब पुष्प, वच, कुन्दर ४॥——४॥ माशा, बशलोचन १। तोला, सन्दल, कासनी बीज ९——९ माशा, कूट छान कर द्विगुण मुरब्बा हरड के शीरा के पाक मे मिलाकर माजून तैयार करे।

मात्रा——७ माशा।

गुण——इस के प्रयोग से बुढापा शीघ्र नही आता, शरीर रोग-रहित रहता है।

माजून यदाल्लाह

४ वर्षीय बकरे का रक्त जमा हुआ, काँच सफेद जला हुआ, विच्छू जलाया हुआ, करन्व वती की जड जलायी हुई, खरगोश जलाया हुआ, अण्डा (जिस मे से बच्चा निकला हुआ हो) का छिलका जला हुआ, हिजरलयहूद, गोंद जोज, वज तुरकी, प्रत्येक ४॥ माशा, फितराल-

सालीयून (करफस पहाड़ी), दोको, आलू गोंद, पोदीना, ख़तमीबीज, मिरच काली, प्रत्येक पौने सात माशा, कूट छान कर त्रिगुण मधु के पाक मे मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा, गोक्षरू आदि क्वाथ से प्रयोग करे।

गुण—वृक्क तथा वस्तिगत अश्मरी को तोड़ कर वाहर निकालती है।

माजून ख़ास

वहमन सुरख़, वहमन सफेद प्रत्येक ४ तोला, सहलव मिश्री, अकाकीया, नागरमोथा, जायफल, सोया प्रत्येक २।। तोला, कुन्दर, माया शुत्र अहरावी प्रत्येक १।। तोला, शाहदाना, पानजड, केशर, १-१ तोला, अकरकरा, शाहवलूत, प्रत्येक ६ मागा, स्वर्णभस्म १ माशा, खाड सब औषध के मान के सम भाग, मधु औषध मान से द्विगुण, तुरंजबीन आध सेर, प्रथम तुरंजवीन को जल मे हल कर के छान लें, और इस पानी मे खाँड तथा मधु मिलाकर पाक करे, बाकी सब औषध का बारीक चूर्ण कर के पाक मे मिला कर माजून वनावे।

मात्रा—१ तोला, दूध से प्रयोग करे।

गुण—प्रमेह को शान्त करता है, शरीर को पुष्ट करता है।

माजून हिजरलयहूद

हिजरलयहूद १४ तोला ७ माशा, मगज तुख़म ख़रपजा, गाजर वीज, करफस बीज, मगज तुख़म कुड़, मगज तुख़म ककड़ी, मगज तुख़म तरबूज, मगज तुख़म कदू मधुर, मगज खीरा, काकनज, तगर, कालीजीरी, दोको, सौफ रूमी, प्रत्येक १७ माशा, बारीक चूर्ण कर त्रिगुण मधु मे मिला कर माजून बनावे।

मात्रा—६ माशा से ९ मागा।

गुण—पथरी को टुकड़े कर के वाहर निकालती है।

माजून जालीनूस

काली मिरच, श्वेत मरिच, हमामा, कुठ, सम्भल, चिरायता, तेजपात, केशर, अनीसून, अकरकरा, करफसबीज, उटगन बीज,

सुदाब बीज, सब औषध को बारीक पीस कर कूट छान लें, त्रिगुण मधु मे मिला कर पाक करे।

मात्रा—४॥ माशा, मधु जल से प्रयोग करे।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय को उष्णता देती है, और दोषो को दूर करती है।

माजून

मुरमुकी, कन्दर, अकाकीया, शयाफ मामीशा प्रत्येक ७ माशा, फटकडी भुनी हुई १०॥ माशा, खतमी बीज २४॥ माशा, अलसी, सोंठ, हरड काबुली प्रत्येक ३५ माशा, कूट छान कर मधु मे मिला कर माजून बनावे।

मात्रा—१०॥ माशा।

गुण—बिस्तरे मे मूत्र निकल जाने के रोग मे उपयोगी है।

(२) काली मिरच २ माशा, सोंठ ३ माशा, कुन्दर, कुठ मधुर, नागरमोथा, बलूत, जुफत बलूत, पिप्पली प्रत्येक ५ माशा, कूट छान कर त्रिगुण मधु मे मिला कर पाक करे।

मात्रा—७ माशा से १ तोला।

गुण—बहूमूत्र मे उपयोगी है।

माजून मास्कलबोल

हरीतकी कृष्ण, बडी हरड, (दोनों को बारीक चूर्ण कर घी मे भून ले), कत्थ सफेद प्रत्येक ९ माशा, जुफत बलूत, कशार कुन्दर प्रत्येक २। माशा, साहलब मिश्री ४॥ माशा, कहरबा शमई ७॥ माशा, भाग बीज, मोडीयो बीज, प्रत्येक १८ माशा, द्राक्षा २२ तोला, द्राक्षा को बीज रहित कर के अर्क गुलाब मे पकावे, गल जाने पर बाकी औषध चूर्ण को इसी मे गूंद कर माजून बनावे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—प्रमेह तथा बहूमूत्र मे लाभप्रद है।

माजून हब्बलग़ार

अजवायन, जीरा कृमानी, काशम रूमी, कलौंजी, सातर, शाह जीरा, पहाड़ी अजमोद, मगज बादाम कटु, चलगोजा, मरिच काली, पोदीना, पिप्पली, वर्च, जूफा, हब्बलगार, जुन्दबदस्तर प्रत्येक ७माशा, जाओशीर १०।। माशा, सकबीनज १४ माशा, सुदाब शुष्क १७।। माशा, गोंददार औषध को शराब मे हल करे, बाकी औषध का बारीक चूर्ण करे, मधु मे मिला कर यथाविधि माजून तैयार करे।

मात्रा—९ माशा।

गुण—वातरोग, वातोदर, आन्त्रशूल मे उपयोगी है।

माजून राहत

सकमूनीया २४।। माशा, मिरच काली, पिप्पली, सोंठ, जीरा कृमानी, सुदाब, कुरफा, पानजड़ प्रत्येक ३५ माशा, मधु ५२ तोला, सब औषध को कूट छान कर मधु मे मिलाकर माजून तैयार करे।

मात्रा—४।। माशा।

गुण—आन्त्र शूल को १ घण्टा मे लाभ करता है, विबन्ध नाशक है

माजून फ़ाईक

लौग, सोंठ, मस्तगी, ऊद, जायफल, दारचीनी प्रत्येक ३।। माशा, सकमूनीया १ तोला पौने ४ माशा, बालछड, मगज बादाम प्रत्येक २ तोला आधा माशा, त्रिवृत २ तोला ७।। माशा, शरबत सेव ३३।।। तोला, यथाविधि माजून तैयार करें।

मात्रा—४ माशा से १।। तोला तक।

गुण—शिर शूल, कफज विकार मे उत्तम है, रेचक है।

माजून मुफ़रह

बादरंजबोया, निबू का ऊपर का छिलका, लौग, मस्तगी, तज, जायफल, इलायची, नागकेशर, दोनों बहमन, नरकचूर, दरूनज-अकरबी, केशर, बालंगू, फ़रंजमुशक प्रत्येक पौने ९ माशा, कस्तूरी

९ रत्ती, इन सब को बारीक पीस कर छान ले, इस के बाद हरड़ बड़ी १४ तोला ७ माशा, आमला गुठली रहित २१ तोला को दो सेर पानी मे पकावे, आधा भाग रह जाने पर मल छान ले और आध सेर मधु मिला कर पाक करे, इस मे वाकी औषध का चूर्ण मिला कर माजून बनावे।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक।

गुण—उदर विकार जनित उन्माद मे उपयोगी है।

अपस्मार हर माजून

अफतमियून (आकाशबेल), उसतोखदूस, अकरकरा, बसफाईज सम भाग लेकर कूट छान कर सकजवीन अनसली वा द्राक्षा मे माजून वनावे।

मात्रा—३ माशा।

गुण—अपस्मार में उपयोगी है।

माजून अकरकरा

अकरकरा पौने ४ तोला बारीक पीस करके पौने चार तोले सिरका मिला कर खरल करे, फिर त्रिगुण मधु मिलावे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—अपस्मार मे अत्यन्त उत्तम है।

माजून सुकरात

अनीसून, जुन्दबदस्तर, हव्ब बलसान, तगर, तज, मस्तगी, प्रत्येक ५। माशा, मुरमुकी, वर्च, नरकचूर, दरूनज अकरवी, करफ़सबीज, जरजीर वीज, प्याज वीज, गन्दना वीज प्रत्येक ७ माशा, हिवजत्याना, कालीजीरी, नागकेशर, फरजमुशक बीज, हव्वलगार, जरावन्द लम्वे, केशर, जायफल, लौग, रेवन्दचीनी, दारचीनी, वड़ी इलायची, जावित्री, छड़ीला, वालछड, तालीस पत्र, चित्रक, फूल फरग, जगली प्याज भुनी हुई, प्रत्येक १०॥ माशा, नागरमोथा, मगज तुखम घेवनी प्रत्येक १४ माशा, वादरजवोया, लाख धोई हुई, गुलाव पुष्प

प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा, हरड़ कृष्ण, आमला गुठली निकाला हुआ, वहेड़ा प्रत्येक १॥। तोला, मुसब्बर २ तोला ११ माशा, अगर ३॥ तोला, त्रिवृत ७ तोला ३॥ माशा, सब को कूट छान कर रोग़न बादाम कटू से स्निग्ध कर त्रिगुण मधु में मिला कर माजून तैयार करे, ६ मास पश्चात प्रयोग करे।

मात्रा—७ माशा से १ तोला तक।

गुण—वात कफ रोग, अपस्मार, शिरशूल, हृदय, यकृत तथा वृक्क दुर्बलता, उन्माद, रक्तपित्त, क्षय, प्रवाहिका, चर्मरोग, पाण्डू, वातरक्त, अर्श तथा सब प्रकार के ज्वर में गुणकारी औषध है।

मात्रा—६ माशे से १ तोला।

माजून सुहाल

मग़ज चलगोजा १०॥ माशा, मगज पिस्ता १७॥ माशा, मगज़ बादाम ३५ माशा, खाँड ८ तोला ९ माशा, कूट छान कर यथाविधि माजून तैयार करे।

मात्रा—६ माशे से १ तोला।

गुण—कफज कास मे उत्तम है।

माजून

दारचीनी, कुठ, वहरोजा, जुन्दबदस्तर, अफीम, मिरच काली, पिप्पली, मेहीसाला (शिलारस) प्रत्येक २ तोला ८ माशा, मधु (झाग उतारा हुआ) आध सेर, पहिले वहरोजा को मधु मे हल करें, फिर मधु का पाक कर के बाकी औषध का चूर्ण मिलाकर पाक करे।

मात्रा—१॥ माशा खा कर ऊपर से मधु जल १॥ छटाक मे ३ विन्दू तिल तैल मिला कर पीवे।

गुण—कास, रक्तपित्त, फुप्फुस व्रण, फुप्फुस पूय, वमन, विसूचका, आन्त्र व्रण इत्यादि रोगो मे लाभप्रद है।

माजून

द्राक्षा बीज रहित ३५ माशा, मुरमुकी, कतीरा, मेहीसाला, गोद कीकर, जूफा, चलगोजा प्रत्येक १७॥ माशा, कुन्दर, मगज बादाम

कटु, जरावन्द, कालीजीरी, केशर, हंसराज, इंग्गा, अड़ूसा प्रत्येक १०।। माशा, कूटने वाली औषध को कूट कर तथा गोंददार औषध को आठ तोला जूफा के क्वाथ मे हल करके मधु तथा खांड का पाक कर के माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—खासी, श्वास, आमाशय शूल, आन्त्रशूल और वक्ष पीड़ा मे उत्तम है, आवाज को साफ करता है।

माजून जरावन्द

गोंद कीकर १०।। माशा, जरावन्द गोल, कालीजीरी, मटर का आटा, मिरच काली, श्वेत खुरफा बीज, मगज बादाम कटु छिलके रहित, उटंगन बीज प्रत्येक १७।। माशा, परसाशों, खुलसूस, जूफ़ा शुष्क प्रत्येक ३५ माशा, कूट छान कर मधु मे मिला कर यथाविधि माजून तैयार करे।

मात्रा—१०।। माशा, जूफ़ा के क्वाथ से।

गुण—कास श्वास मे उत्तम है।

माजून तिल्ला

स्वर्णपत्र हल किये हुए २२।। माशा, याकूत रमानी, लाल बदखशानी, मुक्ता प्रत्येक २०। माशा, अम्बर शहब ११। माशा, केशर ९॥माशा, कस्तूरी ४।। माशा, शरबत फोवाका, शरबत मधुर अनार, मधुर बही जल, मधुर सेब जल प्रत्येक २ सेर, अर्क गुलाब ३ पाव, खॉड, अर्क बेदमुष्क, अर्क गुलाब, अर्क गाऊजबान, (जो गुलाब और बेद मुशक में खेंचा गया हो) प्रत्येक १—१ सेर, मधु ९ तोले ४।। माशा, प्रथम मधुर फलो का जल शरबत, खाण्ड तथा मधु और अर्क मिला कर पाक करें, फिर बाकी औषध चूर्ण मिलाकर माजून तैयार करे।

मात्रा—५ से ९ माशा।

गुण—हृदय रोगों मे उत्तम है।

माजून बजूर

गाजर वीज, शलगम बीज, प्याज वीज, गन्दना वीज, हरमल, हालो वीज, चलगोजा, मगज हब्बलजलम, इन्द्र जौ, वोजीदान, वज तुरकी, तोदरी दोनों, दोनों वहमन, शकाकल मिश्री, पिप्पली, कुरफा, हीग १—१ भाग ले कर वारीक चूर्ण कर त्रिगुण खॉड तथा मधु के पाक मे मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—१० माशा।

गुण—पुसक शक्तिवर्धक है।

माजून घीक्वार

कस्तूरी १॥ माशा, केशर २ माशा, मगज पिस्ता, छुहारा प्रत्येक ७ तोला, घृत कुमारी गूदा १ पाव, गो दुग्ध, खॉड प्रत्येक १।—१। सेर, प्रथम घृत कुमारी के गूदा को अच्छी तरह मल कर दूध मे डाल कर अग्नि पर चढावे, दूध में हल होने पर खाँड तथा मगजयात मिला कर पाक करे, पाक सिद्धि पर कस्तूरी तथा केशर अर्क गुलाब से हल करके मिलावे।

मात्रा—१ से दो तोला।

गुण—पुसक शक्ति दुर्वलता तथा आमवात मे उत्तम है।

माजून मग़लज़

कस्तूरी ६ रत्ती, अम्बर शहब ३॥ माशा, मगज हब्व किलकिल १०॥ माशा, दारचीनीं, साहलव मिश्री, शकाकल मिश्री, जायफल, इन्द्रजौ, मस्तगी रूमी, केशर, बोजीदान, गुलाब पुष्प, दोनो बहमन, हालो बीज, गाजर बीज प्रत्येक ९ माशा, भाग ९ तोला ४॥ माशा, मधु त्रिगुण, यथाविधि माजून तैयार करे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—शिश्न मे दृढता तथा उत्तेजना उत्पन्न करता है।

माजून

मगज वादाम, मगज फिन्दक, मगज चलगोजा, मगज अखरोट, मग़ज कुड़, मगर्ज पिस्ता, मगज नारियल, मगज हब्ब किलकिल, मगज

हब्बलजलम, मगज हिवतल्खिजरा, चिड़ो के शिर का मगज, मगज खरबूजा, गाजरबीज, शलगम बीज, तुखम कौंच, तुखम जरजीर, तुखम उटंगन, बादरजबोया बीज, फरज मुशक बीज, बालंगू बीज, दोनों वहमन, दोनो तोदरी, शकाकल मिश्री, सन्दल सफेद, साहलब मिश्री, इन्द्रजौ, गोंद कीकर, मस्तगी रूमी, मायाशुत्र अहरानी, छुहारे प्रत्येक ३।। माशा, अम्बरशहब २ माशा, आबरेशम कुतरा हुआ, दारचीनी, छोटी इलायची, पानजड़, बोजीदान, पोदीनाशुष्क, सोंठ, केशर प्रत्येक ३ माशा, गोक्षरू, गाऊजबान गेलानी, अनीसून बीज प्रत्येक ४ माशा, मगज कदू मधुर, खशखाश बीज प्रत्येक ६ माशा, जदवार, मगज खयारैन, खुरफा बीज छिला हुआ प्रत्येक ९ माशा, मधु औषध से द्विगुण, खाँड औषध मान के सम भाग, खाँड तथा मधु का पाक कर के औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—५ से ९ माशा।

गुण—गुणप्रद तथा प्रभावशाली योग है, पुंसक शक्तिवर्धक है।

माजून

हरमल कृष्ण, जावित्री, जायफल, लौंग, दारचीनी प्रत्येक १७।। माशा, तिल काले छिले हुए २४।। माशा, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुण मधु मे मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—१० माशा।

गुण—उपरोक्त।

माजून

बनफशा १७।। माशा, लौंग २४।। माशा, सौफ, अनीसून, गाऊजबान, दोनों इलायची, पोदीना, कृष्ण हरीतकी, हरड़ बड़ी, हरड़ प्रत्येक ३१।। माशा, बसफाईज फसतकी, सनाय प्रत्येक ४२ माशा, त्रिवृत श्वेत ४५।। माशा, गुलाब पुष्प, पोदीना प्रत्येक ५२।। माशा, ताजा आमला का पानी ३ सेर १२ छटांक, सब औषध को बारीक कर के आमला के जल में मिला कर बिना खाँड के माजून बनावे।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।

गुण—रक्तदोष तथा कुष्ठ मे उपयोगी है।

माजून यहीबिनखालद

तगर, सोंठ, जीरा कृमानी, पिप्पली, प्रत्येक ७ माशा, सनाय १७।। माशा, सुरंजान ३५ माशा, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुण मधु के पाक मे मिला कर माजून बनावें।

मात्रा—९ माशा गरम जल से।

गुण—आमवात मे उत्तम तथा उपयोगी है।

माजन

हरड़, बहेड़ा, आमला, आकाशबेल, दूकू प्रत्येक २२।। माशा, कुरफा, पिप्पली प्रत्येक १८ माशा, जायफल, अकरकरा, शाहतरा प्रत्येक ९ माशा, त्रिगुण मधु मे यथाविधि माजूनब नावे।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।

गुण—मासिकधर्म्म के विकारो को नष्ट करती है।

माजून

मुरमुकी, दारचीनी प्रत्येक ७ माशा, सुदाब पत्र, पोदीना पहाड़ी, कालीजीरी, पोदीना, मजीठ, हीग, सकबीनज, जाओशीर प्रत्येक १०।। माशा, हाऊबेर ३५ माशा, बारीक पीस कर मधु में मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक।

गुण—मासिक धर्म को खोल कर लाती है।

माजून

कस्तूरी ९ रत्ती, बालछड, छड़ीला, अगर, मस्तगी रूमी प्रत्येक ९ माशा, कुरफतलतीब १३।। माशा, जायफल, कोकनार (पोस्त डोडा) प्रत्येक १८ माशा, भाग पत्र ५ तोला १० माशा, काला दाना

सफेद १०० नग, मधु औषध मान से त्रिगुण, प्रथम औषध को कूट छान कर बादाम तैल से स्निग्ध करें, फिर मधु का पाक कर के औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—३ से ९ माशा।

गुण—शीघ्रपतन में उत्तम है।

माजून रशीदी

बेरका आटा, छालीया, लौंग, सहलब मिश्री, बाल छड, मस्तगी, अजवायन प्रत्येक ३५ माशा, मधु आध सेर का पाक करके औषध का बारीक चूर्ण कर के अच्छी तरह से मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—६ माशा।

गुण—शीघ्रपतन तथा विन्दु २ मूत्र आने मे लाभप्रद है।

———

गुप्त विशेष योग

गुप्त विशेष योग

यह योग साधारण योग नही है, परन्तु अत्यन्त प्रभाव शाली तथा गुण प्रद योग है, योगों की औषध को ही ध्यान से देखने से इनके अद्भुत गुणों का परिचय सहज ही मे मिल सकता है—युनानी चिकित्सा पद्धति के प्रसिद्ध तथा अनुभवी चिकित्सकों के अत्यन्त गोपनीय योग है—श्री मसीह-उल-मुल्क हकीम अजमल खान साहिब के वंश के योगों के सिवाये, हकीम जमील खान, हकीम जफ़र मियां तथा अन्य प्रसिद्ध हकीमों के खास सन्दूकचे के यह गुप्त नुस्खे हैं, जो आप को भेट किये जा रहे है—आज के युनानी औषधालय इन्हीं विशेष योगों के सहारे चल रहे है, इस मे कुछ भी सशय नही है।

हब्ब सुरख

द्रव्य तथा निर्माण विधि—शुद्ध हिगुल, शुद्ध वत्सनाभ, सौभाग्य भस्म, सोंठ, काली मिरच, पिप्पली, अकरक़रा १–१ तोला, सब को बारीक खरल कर भागरा रस की सात भावना दे।

मात्रा—१ से २ रत्ती, योग्य अनुपान से।

गुण—वातश्लेष्मक रोग, अर्दित, अर्धांग, वातकम्प, गृध्रसी, प्रसूत ज्वर, अजीर्ण, वातगुल्म मे लाभप्रद है।

हब्ब सुहाल बलग़मी

बॉसापत्र, कंडयारी पचाग २–२ सेर लेकर १० सेर जल मे क्वाथ करें, २ सेर शेष रहने पर मल छान कर १ सेर मधु मिला कर पाक करे, पाक सिद्धि पर, वहेड़ा, पिप्पली, मधुयष्टि, खशखाश वीज, बनफशा पुष्प प्रत्येक ४ तोला बारीक पीस कर मिला दे, और खरल कर चने समान वटी करे।

मात्रा—१ से ४ वटी ।

गुण—कास, श्वास मे उपयोगी योग है ।

अकसीर बवासीर

ककरोंदा छाया मे शुष्क किया हुआ २॥ तोला, काली मिरच २॥ तोला, शुद्ध मल्ल ३ माशा, वारीक पीस खरल कर ४० तोला ककरोंदा के स्वरस से भावित कर मूंग समान वटी करे ।

मात्रा—१ वटी, मक्खन से ।

गुण—अर्श मे लाभप्रद योग है ।

यशद भस्म

यशद उत्तम लेकर कड़छे मे डाल कर पिघला कर ५० वार केला रस मे बुझावे, फिर इस यशद का बुरादा करे, इस बुरादा को निंब रस मे १२ घण्टे खरल करे, फिर निंबू रस मे भिगो कर १० दिन तक धूप मे रखे, इस के पश्चात् इसकी टिकिया बनावे, १ सेर वकुन बूटी को पीस कर दो रोटीयाँ तैयार करे, एक रोटी पर यशद की टिकिया रख कर दूसरी रोटी से ढांक कर कपरौटी कर ६ सेर उपलों की आंच दे, इसी प्रकार निंबू रस से भावित कर और वकुन बूटी मे रख कर ३ बार आंच दे, पीले रग की भस्म तैयार होगी ।

मात्रा—१ से २ रत्ती ।

गुण—प्रमेह, पित्त रोग तथा यक्ष्मा मे लाभप्रद है, रक्त अर्श मे भी गुणकारी है ।

सफ़ूफ़ राहत

असगन्ध, विधारा, शतावर, सम भाग ले कर चूर्ण तैयार करे ।

मात्रा—३ से ६ माशा ।

गुण—प्रमेह, स्वपन दोष मे उत्तम है ।

अर्क मुसफ़ी ख़ून

मुण्डी १ सेर, नीमछाल आध सेर, चिरायता आध सेर, हरड़ एक पाव, सरफोंका एक पाव, चन्दनरक्त २ छटॉक, मको शुष्क

२ छटांक, वसफाईज फ़सतकी २ छटाँक, उन्नाव कांधारी ५० नग, सव को अर्धकुट्टित कर ३६ घण्टे जल मे भिगोवे, और १२ बोतल अर्क निकाले।

मात्रा—५ से १० तोला।

गुण—रक्तशोधक है।

दवाये मक्कवी दिमाग

चांदी भस्म, प्रवाल भस्म, लौह भस्म, हाथदंत वुरादा, मुण्डी पुष्प, सौंफ का मगज, त्रिफला लवण, सम भाग ले कर वारीक पीस कर एक जीव कर ले।

मात्रा—२ से ४ रत्ती, खमीरा वादाम मे मिलाकर प्रयोग करे।

गुण—वुद्धि के लिये उत्तम है।

भल्लातक मंजन

भल्लातक ८ नग (जला हुआ), मांजू ८ नग, सुपारी ८ नग जली हुई, कौड़ी पीली ३२ नग जली हुई, हिंगुल शुद्ध (नीम पत्र वाला) १ तोला ४ माशा, मुर्दासंग भुना हुआ १ तोला ४ माशा, जंगार, राल, १ तोला ४ माशा प्रत्येक, नीलाथोथा सब्ज ८ माशा, सब को वारीक पीसकर मंजन तैयार करे (हिंगुल शुद्ध नीमपत्रवाला—शुद्ध हिंगुल को ५ सेर नीम पत्र के नुगदे मे रख कर हाण्डी मे डाल कर हलकी आंच दे ले, तैयार है)।

गुण—रात्री को दांतों पर मले, प्रातः कुल्ली करे, पाईरिया के लिये रामवान है, दतपीडा, दंतशोथ, दंतकृमि इत्यादि मे लाभप्रद है, वहुत ही उपयोगी योग है।

कासहर वटी

वादाम मगज २५ नग, मुनक्का ३ तोला, मधुयष्टि ६ माशा, पिप्पली ४ नग, काकड़ा सिगी ३ माशा, शकर तैगाल ३ माशा, वंशलोचन ३ माशा, छोटी इलायची ३ माशा, गोंदकीकर, गोंदकतीरा, सुहागा ३—३ माशा, अद्रक रस से चने समान गोलीयां बनावे।

मात्रा—१ से ४ वटी ।

गुण—प्रत्येक प्रकार की खांसी मे उत्तम है ।

तुत्थादि योग

नीलाथोथा, गन्धक ६ माशा, सिंदूर १ तोला, रसकर्पूर ३ माशा, मुर्दासंग १ तोला, बावची २ तोला, पारद ३ माशा, नीम पत्र २।। तोला, हडताल वर्की ३ माशा, कर्पूर २ तोला, मनिशल ३ माशा, सब को मिला बारीक पीस कर रखे, ३ माशा औषध २।। तोला शत धौत मक्खन मे मिला कर मालिश करे, १ घण्टा बाद स्नान करे।

गुण—खारश मे अत्यन्त उत्तम है ।

० प्रमेह हर चूर्ण

इसपगोल सत १। सेर, गोद कतीरा १ पाव, मगज तुख़म तिमर हिन्दी कलान बरयान (इमली के वड़े बीज भुने हुए) आध सेर, पोस्त डोडा १ पाव, खॉड २।। सेर, सब को बारीक पीस कर चूर्ण बनाकर खाँड मिलावे ।

मात्रा—६ माशा, प्रातः ६ माशा सायं दूध से ।

गुण—प्रमेह तथा स्वप्न दोष मे उत्तम है ।

अदरारी

हाऊबेर, सकबीनज, जाऊशीर, हीग, पोदीना, मुरमुकी, दारचीनी, सब को पीस कर चूर्ण बनावे ।

मात्रा—३ माशा, प्रातः, ३ माशा साय को ।

गुण—मासिक धर्म खोल कर लाता है, मासिक धर्म से आठ दिन पहिले प्रयोग करे ।

कुरस पोदीना

पोदीना १ तोला, काली मिरच ६ माशा, अजवायन ३ माशा, सोंठ ३ माशा, बायविड़ग ३ माशा, लौग ३ माशा, लवपुरी लवण १ तोला, बारीक पीस कर ४–४ रत्ती के कुरस बनावे ।

मात्रा—१ से दो कुरस ।

गुण—दीपक पाचक तथा अजीर्ण नाशक है ।

जमीलान

वहमन सफ़ेद २ छटाँक, तालमखाना १ छटाँक, सरवाली बीज, तुख़म तिमर हिन्दी कलान १—१ छटाँक, लोध्र पठानी २॥ तोला, चीना गोंद १ छटाँक, मूसली श्वेत आध छटाँक, वंग भस्म २ तोला, बारीक पीस कर १—१ माशा के कुरस बनावे ।

मात्रा—२ कुरस प्रातः, २ सायं को दूध से प्रयोग करे ।

गुण—प्रमेह के लिये विशेष लाभप्रद योग है ।

शरबत सदर

गाऊजवान ८० तोला, गाऊजवान पुष्प ४० तोला, खतमी बीज ४० तोला, अलसी ५० तोला, सौंफ ५० तोला, पोस्त डोडा २५ तोला, अजवायन देसी ५० तोला, मधुयष्टि ४० तोला, उन्नाव ४० तोला, परसाशों ४० तोला, आबरेशम कुतरा हुआ २५ तोला, बहीदाना २५ तोला, २० सेर जल में क्वाथ करे, आधा भाग रहने पर १० सेर खाँड मिला कर पाक करे ।

मात्रा—२ से ५ तोला ।

गुण—कास, श्वास, प्रतिश्याय में उत्तम तथा विशेष योग है ।

मुसफ़ी

पितपापडा, सरफोंका, उन्नाव, नीलकण्ठी, ब्रह्मडण्डी, हरड़, कृष्ण हरड, चोबचीनी, उशबा मगरबी, चन्दन लाल, बुरादा शीशम, मेहन्दी पत्र, नीम पत्र, सनाय ६—६ छटाक, चिरायता १२ छटांक, नरकचूर ३ छटांक, मुण्डी १ सेर, कमीला १॥ छटाक सब को अर्ध कुट्टित कर २० सेर जल में उबालें, आधा भाग रहने पर १० सेर खाँड मिला कर शरबत का पाक करें ।

मात्रा—२ से ५ तोला ।

गुण—परम रक्तशोधक है, फोड़े, फुसी, खारश मे अत्यन्त उत्तम है ।

सी-को

कासनी जड़, सौफ जड, करफस जड़, अजखर जड़, मुलैठी, सौफ २—२ छटॉक, सनाय २॥ छटाक, इमली छिली हुई २॥ छटांक द्राक्षा वीज रहित, अंजीर पक्व ५—५ छटांक सब को २० सेर जल मे क्वाथ करे, आधा भाग रहने पर गुड पुराना १० सेर डाल कर पाक करे।

मात्रा—२ से ५ तोला ।

गुण—आमाशय तथा यकृत के सब रोगों मे उत्तम है ।

मी-लो

कासनी जड़, सौफ जड, करफस जड, अजखर जड़, मधुयष्टि, सौफ, गुलाब पुष्प, रेशाखतमी २—२ छटांक, सनाय, इमली २॥–२॥ छटाक, मुनक्का, अजीर जरद ५—५ छटाक, इसपगोल (पोटली मे बांध कर) १॰ छटाक–सुहागा २।' तोला सब औषध को २० सेर पानी में उबाले। १० सेर रहने पर छान कर रुब्ब कासनी, रुब्ब मको, रुब्ब बथुआ, २॥–२॥ सेर मिलाकर पाक करें। (रुब्ब बनाने की विधि–मको का पानी आधा सेर, चीनी २॥ सेर, सादा पानी ३ पाव, मिलाकर पाक करे। इसी तरह बाकी औषध का भी रुब्ब बनावे।

मात्रा—१। तोला थोड़े उष्ण जल मे मिला कर ३—४ बार प्रयोग करे ।

गुण—सब प्रकार के अगों की शोथ मे लाभदायक है, यकृत शोथ, गर्भाशय शोथ मे अत्यन्त उत्तम है ।

वात हर चूर्ण

हरड, सनाय १—१ तोला, गुलाब पुष्प १॥ तोला, मुलैठी २ तोला, सौंफ २ तोला, सोठ ६ माशा, शुद्ध गन्धक १ तोला, बडी इलाय-

ची ९ माशा, सुरंजान मीठी २ तोला, खाँड १० तोला मिला ले, वारीक पीस कर चूर्ण करे।

मात्रा —४ माशा से १ तोला तक।

गुण—वातज रोगों मे उत्तम योग है।

माजन करफ़स

रेवन्दचीनी, वर्चं, शहादाना, करफस वीज, सौंफ, अनीसून, अजवायन खुरासानी ५—५ तोला, मधु ३ पाव, खाँड १। सेर, सव का चूर्ण कर मधु तथा खाँड का पाक कर के अच्छी तरह मिला दे।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।

गुण—प्रत्येक प्रकार की शोथ में उपयोगी है, यकृतविकार मे विशष लाभप्रद है।

शरबत मको

वरंजासफ़, शकाही, वादावरद, मको, अफसनतीन, सौंफ की जड़, कासनी जड़, कसूस वीज (पोटली मे बाँध कर), करफ़स मूल, अज़खर मूल, गुलाव पुष्प, अलसी वीज १—१ तोला, द्राक्षा बीज-रहित १ तोला, कासनी, वथुआ, मको, मूली इन का रस १०—१० तोला, पुराना गुड़ १ सेर, यथाविधि शरवत तैयार करे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—यकृत रोगों मे अति उत्तम है।

शरबत नज़ली

गाऊजवान, गाऊजवान पुष्प, अलसी वीज, मधुयष्टि, परसाशों (हसराज), शिरस वीज प्रत्येक ५—५ तोला, आवरेशम ३ तोला, जूफा शुष्क ५ तोला, उन्नाव १० तोला, सपस्तान १० तोला, खाँड २ सेर, यथा विधि शर्वत तैयार करे। (नोट—अलसी वीज ७ तोला है)।

मात्रा—५ से १० तोला।

गुण—कास, श्वास, जीर्ण प्रतिश्याय मे उत्तम है, क्षय मे भी उपयोगी है ।

लहूक सदर

गोंद कतीरा, निशास्ता, गोंदकीकर, रबुलसूस, खशखाश बीज २०—२० तोला, वहीदाना १६ तोला, गाऊजबान पत्र, अजवायन खुरासानी ४—४ तोला, मगज बादाम मधुर, मगज कद्दू, मधु यष्टि १६—१६ तोला, परसाशो १२ तोला, सरतान जला हुआ १२ तोला, खाँड ६ सेर, मधु २ सेर, क्वाथ वाली (वहिदाना, गाऊजबान, मुलैठी, परसाशों), औषध का क्वाथ करके उस मे खाँड तथा मधु का पाक करे, पाक सिद्धि पर बाकी औषध का चूर्ण मिला कर अवलेह तैयार करें ।

मात्रा—६ माशा से १ तोला ।

गुण—प्रत्येक प्रकार की कास तथा श्वास की महौषध है, क्षय कास मे उत्तम है ।

बलप्रद बटी

शुद्ध मल्ल २ तोला, मोम उत्तम (स्वयं मधु के छत्ते से निकाला हुआ), २ तोला कस्तूरी ३ माशा, मिला कर १ सप्ताह तक प्रतिदिन ५–६ घण्टे खूब कूट कर चने समान वटी करे ।

मात्रा—१ वटी ।

गुण—अत्यन्त बलदायक औषध है ।

धूड़ा

कौड़ीयाँ २ तोला, बकरे का माँस जला हुआ २ तोला, रसकपूर ५ माशा, मिला कर बारीक करे ।

गुण—आतशक के व्रण में अत्यन्त उत्तम धूडा है ।

(२) चमड़ा जला हुआ, सुपारी पुरानी जली हुई, कर्पूर, कौड़ी जली हुई ५—५ तोला, नीलाथोथा १५ माशा, मिला कर बारीक करें।

गुण—उपरोक्त ।

० ज्वर हर वटी

सुहागा भुना हुआ, फटकड़ी भुनी हुई, शुद्ध मल्ल सम भाग लेकर कूट कर तुलसी स्वरस से मूँग समान वटी करें।

मात्रा—१ से २ वटी।

गुण—विषम ज्वर, तथा जीर्ण विषम ज्वर मे उपयोगी हैं।

हब्ब पेचश

कर्पूर, अहिफेन, केशर, हरीतकी कृष्ण, आमला शुष्क, माजू १—१ तोला, कूट छान कर चने समान वटी करे।

मात्रा—१ से ४ वटी दूध से।

गण—प्रवाहिका, अतिसार, मरोड़ मे उपयोगी है।

हब्बे चना

वहरोजा तर, चने का आटा १—१ तोला, चन्दन तैल उत्तम ३ माशा, यथाविधि चने समान वटी करे और चने के आटे मे रखे।

मात्रा—४ वटी प्रात· सायं शरबत बजूरी से लें।

गुण—पूयमेह (सुजाक) मे प्रभावशाली औषध है; पीप को नष्ट कर के व्रण को शीघ्र भरती है।

ज्वर वटी

अतीस १ तोला, कुनीन सल्फ ४ तोला, करजुआ २ तोला, बंश-लोचन, छोटी इलायची वीज, काली मिरच, गोदंती हरिताल भस्म १—१ तोला, कूट छान कर चने समान वटी करे।

मात्रा—१ से ४ वटी।

गुण—विषम ज्वर मे अत्यन्त उपयोगी है।

हब्ब मुमस्क

जहरमोहरा १ तोला, केशर १॥ तोला, जायफल, जावित्री, रेगमाही १—१ तोला, समुद्रसोख ६ माशा, चांदी भस्म ३ माशा,

कस्तूरी १ तोला, १०० पान पत्र के रस में खरल कर मूंग समान वटी करे।

मात्रा—२ वटी, मम्भोग से २ घण्टे पूर्व दूध से प्रयोग करें।

गुण—बल प्रद तथा स्तम्भक है।

हब्ब मस्कन कलब

जहरमोहरा, बंशलोचन, यशप सबज, मुक्ताशुक्ति, मरजान २—२ तोला, बुसद, नारजील दरयाई, पपीता, तुखम रेहां, तुख़म खशखाश, मगज कदू, छोटी इलायची बीज, पोदीना शुष्क, जरिशक, मगज बादाम, कहरबा शमई, धनिया शुष्क, मगज तुख़म तरबूज, चादी वर्क प्रत्येक १—१ तोला, सब को कूट छान कर चने समान वटी करे।

मात्रा—१ वटी, अर्क गुलाब तथा अक बेदमुष्क से।

गुण—दिल दिमाग को बल देती है, अजीर्ण नाशक है, रोगों की बाद की क्षीणता को नष्ट करती है।

हब्ब ख़ास

स्वर्णभस्म २ तोला, अलाहमर भस्म (कुशता अलहमर) १ तोला, मगज कदू मधुर २ तोला, अम्बर २ तोला, कस्तूरी १ तोला, अर्क बेदमुशक मे मिला कर मूंग समान वटी करे।

मात्रा—१ वटी, प्रात. सायं भोजनोपरान्त प्रयोग करे।

गुण—पुसक शक्ति को बढाती है, वाजीकरण तथा दीपक पाचक औषध है, शरीर के सब अंगों को बल देती है।

हब्ब मुफ़ैदी

बकरी का दूध १। सेर, शुद्ध वत्सनाभ ९ माशा, दक्षिणी मिरच ९ माशा, एक बारीक कपड़े मे वत्सनाभ तथा मिरच चूर्ण को डालकर दूध मे लटका कर दूध का खोया बनावे और ज्वार समान वटी करे

मात्रा—४ वटी प्रात., ४ सायंकाल को बकरी अथवा गधी के दूध से प्रयोग करे।

गुण—यक्ष्मा मे अत्यन्त उत्तम है, कास तथा ज्वर को नष्ट करती है।

हब्ब अफलातून

रेगमाही, माही रोबीयान २—२ नग, जुन्दबदस्तर २ तोला, यशप, जहरमोहरा, मरवारीद, नीलम, जुमुरद, कस्तूरी, अम्बर, केशर, जायफल, जावित्री ६—६ माशा, चादी पत्र १ तोला, साण्ड का शिश्न सूखा हुआ १ तोला, सब को बारीक पीस कर मूँग समान वटी करे।

मात्रा—१ वटी प्रात., १ सायं भोजनोपरान्त।

गुण—पुसक शक्ति को बल देती है, हृदय, मस्तिष्क को बलवान बनाती है, शरीर की दुर्बलता को दूर करती है, अत्यन्त उत्तम वाजीकरण औषध है।

सफ़ूफ लहलीन

जौहर नवासादर, सत्व पोदीना, काली मिरच, पिप्पली, यवक्षार कलमी शोरा, छोटी इलायची बीज, बडी इलायची बीज, लवपुरी, लवण ३—३ तोला, हिरमची ५ तोला, सब को बारीक पीसकर चूर्ण बनावे।

मात्रा—आधा से १ माशा।

गुण—दीपक पाचक तथा अजीर्ण नाशक है, वातशूल मे उपयोगी है।

सफ़ूफ़ सिया

सौफ़ ५ तोला, पोस्त खशखाश ५ तोला, हरीतकी कृष्ण घी मे भुनी हुई ५ तोला, सब को बारीक कर चूर्ण बनावे।

मात्रा—१ से ३ माशा।

गुण—मरोड़ तथा प्रवाहिका मे सरल और उत्तम योग है।

सफ़ूफ़ जयाबेतस

गुड़मार बूटी ८ तोला ४ माशा, गुठली जामुन २०० नग, काली मिरच ५०० नग, सब को मिला बारीक चूर्ण करे।

मात्रा—५ माशा, योग्य अनुपान से दे।

गुण—मधुमेह मे प्रभावशाली है।

सफ़ूफ़ दवाय हाज़म

हलदी, लवपुरी लवण १—१ सेर, घृतकुमारी आध सेर, हलदी और लवण को पीस कर घृत कुमारी से रगड़ कर पतली २ टिकिया बना लें, और एक घड़े मे डाल मुख बन्द कर आंच दें, शीतल होने पर निकाल कर पीस ले।

मात्रा— १ माशा।

गुण—दीपक, पाचक तथा अजीर्ण नाशक है।

सफूफ दवाये दमा

काला लवण, लवपुरी लवण, साम्भर लवण, अजवायन, अजवायन ख़ुरासानी, करफ़सबीज, गुल तमाकू (हुक्के मे से निकाल कर) ३—३ तोला, के बारीक चूर्ण को आक दूध १ पाव मे मिला कर कबूतर के उदर को मल आदि से शुद्ध कर इस मे भर कर कपरोटी कर आंच दे दे, भस्म तैयार हो जायगी।

मात्रा—१ रत्ती।

गुण—श्वास मे गुणप्रद है।

शरबत सदर

अड़ूसा पुष्प २२ तोला, पोस्त डोडा १२ तोला, खॉड १॥ सेर, सरेशममाही २॥ तोला, क्वाथ कर के खॉड मिला शरबत तैयार करें, अन्त मे सरेशममाही डाले।

मात्रा—१ से ४ तोला।

गुण—प्रतिश्याय तथा प्रतिश्याय जनित विकारों मे उपयोगी है।

शरबत मुफ़रह

धनियां, गाऊजबान पुष्प, नीलोफ़र पुष्प, जरिशक, गाजर बीज, फरजमुशक बीज, किशमिश १०—१० तोला, खाँड ५ सेर, यथाविधि शरबत तैयार करे।

मात्रा—५ तोला।

गुण—दिल दिमाग को बल देता है, तृषा को मिटाता है, चित्त प्रसन्न रखता है।

शरबत महदी

अलसी बीज ३ छटांक, अजवायन देसी १५ तोला, कसौदी पत्र, गाऊजबान पत्र, खतमी बीज, परसाशों, पिया बांसा, मधुयष्टि १०—१० तोला, खाँड ५ सेर, यथाविधि क्वाथ कर शरबत तैयार करे।

मात्रा—२ से ५ तोला।

गुण—आमाशय, यकृत तथा आन्त्र विकार मे अत्यन्त उत्तम है, विबन्ध, आध्मान, वातपीडा, तथा ज्वरों में उपयोगी मधुर औषध है।

शरबत मुदर

करफस बीज ४ माशा, सौंफ, अनीसून, सोये बीज, मजीठ, गाजर बीज ९—९ माशा, हब्ब करतम ४ माशा, खयारैन बीज १॥ तोला, मेथरे २ तोला, खाँड ३ पाव, औषध का क्वाथ कर खाँड मिला पाक करे।

मात्रा—२ से ५ तोला।

गुण—मासिक धर्म्म को खोल कर लाता है।

माजून वजह

हरड कृष्ण, हरड़ बड़ी, त्रिवृत, काली मिरच १—१ तोला, पिप्पली, सोंठ, अजवायन, खशखाश बीज, सैंधव लवण, गोक्षरू, काकला कबार, बालछड़ ९—९ माशा, शकाकल मिश्री, ऊद बलसान, तज, अकरकरा, मस्तगी रूमी, सकमूनीया, हब्ब बलसान ४—४

माशा, खाँड १। सेर, मधु ३ पाव, खाँड तथा मधु का पाक कर औषध चूर्ण मिला माजून तैयार करे।

मात्रा—३ से ६ माशा।

गुण—शरीर के सब प्रकार के दर्दों में लाभप्रद है।

माजून अहमद शाही

केशर ४ माशा, दारचीनी, लौंग, जावित्री, जुन्दवदस्तर, मस्तगी रूमी २॥—२॥ तोला, तेज बल, सरयाली, बीजबन्द गुजराती, समुद्रसोख, अकरकरा, तालमखाना, गोक्षरू, मोचरस, साहलब मिश्री, जायफल, उटगन बीज, कौंच बीज, गोंद ढाक ४—४ तोला, मूसली काली, मूसली सफेद, पिप्पली ३—३ तोला, खाँड ३ पाव, शहद आध सेर, सब औषध को कूट छानकर मधु तथा खाँड का पाक कर यथाविधि माजून तैयार करे।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।

गुण—अत्यन्त बलप्रद औषध है, प्रमेह, क्षीणता तथा पुंसक शक्ति की हीनता को नष्ट करती है।

मरहम मुहलल

बनफशा पुष्प ३ माशा, सौंफ, मको, द्राक्षा बीज रहित, नरकचूर १—१ तोला, बड़ी हरड २॥ तोला, वायविड़ंग, सोया बीज १—१ तोला, गुलाब पुष्प ३ माशा, पुराना नारियल ६ माशा, मगज चलगोजा ९ माशा, बरंजासफ १ तोला, गुड पुराना ३ पाव, मधु १ पाव, मधु तथा गुड़ को गरम कर के बाकी औषध चूर्ण मिलाकर मरहम की तरह बनावे।

शोथस्थान पर इसका लेप करे।

गुण—परम शोथनाशक है।

कुरस सदफ़

इसपगोल २० तोला, गोंद कतीरा १० तोला, धनिया शुष्क, खशखाश सफेद, गुलाब पुष्प, सुदाब पत्र, सदफ (मुक्ता शुक्ति), माजू

सवज, छोटी इलायची, मूसली सफ़ेद, मूसली काली, गोंद कीकर, नीलोफ़र, आमला, सिंघाड़ा शुष्क, मस्तगी १०–१० तोला, वारीक चूर्ण करे, फिर जल के संयोग से कुरस वनावें ।

मात्रा—४ कुरस, दूध के साथ ।

गुण—प्रमेह, स्वपन दोष तथा श्वेतप्रदर में अत्यन्त उपयोगी है ।

कुरस नजात

रेवन्द असारा, मुसब्वर, सनाय, मस्तगी ५—५ तोला, सकमूनीया १० तोला, त्रिवृत सफ़ेद १० तोला, वड़ी हरड़ ५ तोला, हरड़ कृष्ण ५ तोला, गुल गुलाव ५ तोला, शुद्ध जायफल ५ तोला, वारीक पीस कर कुरस वनावे ।

मात्रा—१ कुरस, दूध के साथ रात को प्रयोग करे ।

गुण—कोष्ठवद्धता नाशक है, पित्त विरेचक है, आमाशय, यकृत तथा आन्त्र को शुद्ध करता है ।

कुरस वादायन

शुद्ध विषमुष्टि २ तोला, राई, सौंफ, सुहागा, सोठ, मस्तगी रूमी, अनीसून, काला लवण, नवसादर, सज्जी क्षार, प्रत्येक ४—४ तोला, वारीक चूर्ण कर कुरस वनावे ।

मात्रा—२ कुरस, ज्वारश जालीनूसके साथ प्रयोग करे ।

गुण—अजीर्ण, वमन, उदरशूल, आध्मान मे उत्तम है, दीपक पाचक तथा कोष्ठबद्धता नाशक है ।

कुरस फोरी

वहमन सुरख़, वहमन सफेद, गोंद कीकर, अकरकरा, गोक्षरु, उटगनवीज, मूसली सफ़ेद, मूसली काली, मायाशुत्र अहराबी, शाहदाना, केशर, मोचरस, साहलब मिश्री, फली वबूल अपक्व, तबाशीर, बंगभस्म, तालमखाना, समुद्रसोख, अकीक भस्म, सम भाग लेकर चूर्ण कर के कुरस तैयार करे ।

मात्रा—४ कुरस, प्रातः साय दूध से प्रयोग करें।

गुण—प्रमेह के लिये अत्यन्त लाभप्रद है।

मरहम जिलद

पारद, गन्धक, कमीला, वावची, मुर्दासिंग, काली मिरच, नवसादर, सुहागा, कपूर १—१ तोला, नीलाथोथा ६ माशा, वारीक पीस ले, और २० तोला वेजलीन मे मिला ले, तैयार है।

गुण—खारश के लिये विशेष योग है।

हरीतकी चूर्ण

कृष्ण हरीतकी (घी मे भुनी हुई) ३ तोला, गिलअरमनी २ तोला, दारचीनी १ तोला, जायफल ९ माशा, लौंग ६ माशा, छोटी इलायची वीज ३ माशा, शुद्ध पारद ३ माशा, चाक (खड़िया मिट्टी शुद्ध) १ तोला, खाँड ६ तोला, प्रथम चाक और पारद को मिला कर खरल करे, जव दोनों एकजीव हो जाये, तो फिर गिलअरमनी डाल कर खरल करे, फिर बाकी औषध का चूर्ण मिला कर खरल कर एक जीव करें, तत्पश्चात् खाँड मिलावे, तैयार है।

मात्रा—बालकों को २ रत्ती से १ माशा, वड़ों को १ माशा से ४ माशा।

गुण—बालकों के हरे पीले तथा श्वेत दस्तों मे अधिक लाभप्रद है, हर प्रकार के अतिसार मे अमृत है।

दवालकिबद

कलमीशोरा, जौहर नवसादर १—१ तोला, रेवन्दखताई ५ तोला, बालछड़, तमालपत्र, कालीमिरच १—१ तोला, सब औषध का बारीक चूर्ण करे।

मात्रा—१ से २ माशा, कासनी क्वाथ से।

गुण—यकृत के सब रोगो मे एक विशेष अत्यन्त उत्तम योग है।

ज्वारश मुफ़रह

सोंठ १ तोला, तमालपत्र ६ माशा, लौंग १ तोला, बालछड़ १ तोला, जायफल ६ माशा, अकरकरा १ तोला, पान की जड़ ६ माशा, दरूनज अकरवी २ तोला, स्वर्ण वर्क २ रत्ती, चादी वर्क १ माशा, कस्तूरी ८ रत्ती, मधु त्रिगुण, मधु का पाककर के बाकी औषध का चूर्ण मिला कर अवलेह बनावे, अन्त मे वर्क मिलावे, तैयार है।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।

गुण—कास, श्वास, हृदय दुर्बलता, अपस्मार, बालग्रह, शारीरिक दुर्बलता मे अत्यन्त लाभप्रद योग है, रोग हर तथा शक्तिप्रद योग है।

अकसीर शफा

शंख भस्म ३ तोला, सुपारी भुनी हुई ९ माशा, नीला थोथा ३ माशा, शुद्ध मुर्दासंग, दारचिकना १-१ माशा, कत्थ सफेद ९ माशा, जंगार ९ माशा, रसोत १ तोला, सब को बारीक पीस कर चूर्ण करे और अर्क गुलाब १ बोतल से भावना दे कर रख ले।

मात्रा—१ से २ रत्ती।

गुण—अत्यन्त रक्तशोधक है, सुरमा की तरह लगाने से नेत्र-रोगों मे उपयोगी है, व्रणो मे मरहम बना कर लगावे, व्रण शोधक तथा रोपक है।

सुरंजानी

हरमल २ तोला, शुद्ध गुग्गुलु ३ तोला, शुद्ध कुचला ३ तोला, मालकंगनी २ तोला, सुरजान कड़वी १ तोला, मुसव्वर १ तोला, सब का चूर्ण कर शुद्ध गुग्गुलु मे मिला कर अच्छी तरह से कूट कर ४—४ रत्ती की वटी करे।

मात्रा—१ से २ वटी।

गुण—आमवात, गृध्रसी, वातपीडा मे अत्यन्त उत्तम योग है।

मरहम अहजाज़

सफेदा काशगरी २ तोला, नीलाथोथा ६ माशा, सिन्दूर १ तोला, अहिफेन ४माशा, सत बन्दक हिन्दी १ तोला (रेठे के ऊपर का छिलका लेकर जल मे अच्छी तरह हाथ से मल कर घोले, घुलने पर अग्नि पर चढ़ा कर जल शुष्क कर ले और सत को कार्य मे लायें) मक्खन वा वेजलीन १० तोला, सब को बारीक कर के मक्खन मे मिला कर मरहम बनावे ।

गुण—व्रण का शोधन तथा रोपण करने के लीये अत्यन्त उपयोगी है ।

सफ़ूफ़ मुफ़रह

बंशलोचन, धनियां, चन्दन सफेद, छोटी इलायची, जहरमोहरा खताई, कहरबा प्रत्येक ५—५ तोला, नारजील दरयाई ३ तोला, अकीक भस्म २ तोला, प्रवाल भस्म १ तोला, चांदी वर्क ३ माशा, सब को बारीक पीस कर चूर्ण करे, और चादी पत्र मिलावे ।

मात्रा—१ से ३ माशा ।

गुण—हृदय धडकन, पित्त उग्रता, वमन, अतिसार, रक्त अतिसार, प्यास इत्यादि मे अत्यन्त उत्तम योग है ।

० शरबत अहमर

कौल पुष्प, गाऊजबान पत्र ५—५ तोला, वासा पत्र १० तोला, नीलोफर पुष्प ५ तोला, सन्दल सफेद १० तोला, चूने का पानी आध सेर, रुब्ब फल जकूम (थुहर का रुब्ब) १ पाव, चूने का जल और रुब्ब के सिवाये बाकी औषध को दो सेर जलमे रात्री को भिगोवे, प्रात. क्वाथ करे, आधा भाग रहने पर मल छान कर १॥ सेर खाँड मिला कर पाक करे, पाक सिद्धि पर चूने का पानी डाल कर फिर पाक करे, और उतार ले, थोड़ा शीतल होने पर रुब्ब मिला दे, तैयार है ।

मात्रा—१ से ४ तोला ।

गुण—बालकों के शरीर को पुष्ट करता है, कास, क्षय मे उत्तम

है, तमाम बालामृतों से अधिक गुणकारी तथा प्रभावशाली औषध है, यह एक अपना गुप्त रहस्य वैद्यजनों के अर्पण है।

सुहराब योग

शुद्ध मल्ल, अहिफेन, शुद्ध पारद, लौंग १—१ तोला, कस्तूरी ३ माशा, प्रथम तीनो वस्तु को अत्यन्त बारीक खरल कर के एकजीव करे, ७२ घण्टे के लगातार खरल से यह कार्य सिद्ध हो जाता है, फिर लौंग चूर्ण तथा कस्तूरी मिला कर २४ घण्टे और खरल करे, तैयार है।

मात्रा—१ से ४ चावल, मक्खन, मलाई तथा दूध का अधिक प्रयोग करे।

गुण—वाजीकरण रसायन है, नपुसकता को नष्ट करने मे अद्वितीय है।

अलाहमर (अकसीर सुरख) (हिंगुल भस्म)

शुद्ध वत्सनाभ २ तोला ले कर जिमीकन्द के स्वरस मे गूँद लें, और उत्तम हिंगुल २ तोला की डली ले कर उस के मध्य में रख कर गलोला सा बना ले, और उस पर मोटा मजबूत कपडा लपेट दे, कुड़ तैल तीन सेर ले कर एक ताम्र के देगचे मे डाल कर बीच मे उस गलोला को डाल कर देगची का मुख भली प्रकार बन्द कर ऊपर एक पत्थर रख दे, देगची के नीचे अग्नि १ प्रहर तक मृदु फिर ३ प्रहर तक तीव्र जलाये, जब देगची मे शोर उत्पन्न हो, तो ढक्कन का ध्यान रखे कि खुलने न पाये, जब ४ प्रहर तक अग्नि जल चुके तो देगची को अग्नि पर से उतार ले, शीतल होने पर हिंगुल की डली निकाल कर अत्यन्त बारीक पीस ले।

मात्रा—१ चावल, मक्खन मे मिला कर प्रयोग करे, दूध का प्रयोग अधिक करे।

गुण—वाजीकरण है, नपुसकता को नष्ट करती है, हब्ब खास के योग मे यह भस्म डाली जाती है।

सरतानी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—कीकर गोंद, कतीरा गोंद श्वेत, गुलाब पुष्प, बशलोचन प्रत्येक ४ माशा, मधुयष्टि ५ माशा, निशास्ता, कुलफा, प्रत्येक ७ माशा, रक्तचन्दन, श्वेत चन्दन २—२ माशा, काहू बीज ३ माशा, रबुलसूस ५ माशा, कर्पूर केसूरी १ माशा, मधुर कद्दु बीज गिरी, ख़शख़ाश बीज श्वेत, ख़यारैन बीज गिरी, ख़रबूजा बीज गिरी, प्रत्येक ९ माशा, जलाया हुआ केकड़ा १ तोला, इन सब को कूट छान कर इसपगोल के जलीय रस की सहायता से टिकिया ८—८ रत्ती की मात्रा की बनावे।

मात्रा—६ माशा, अर्क गाऊजबान के अनुपान से प्रयोग करें।

गुण—राजयक्ष्मा, कास, उर क्षत तथा हृदय के रोगों मे अतीव प्रभावशाली औषध है।

ज्वाहर मोहरा (विशेष)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—जहरमोहरा, ख़ताई १॥ तोले, मोती, प्रवाल मूल, कहरुवाशमई, लाजवरद धुला हुआ, माणिक रक्त, माणिक सबज, माणिक पीत वर्ण, यशप सबज, जुमुरद (पन्ना), अकीकरक्त चांदी पत्र, मस्तगी रूमी, प्रत्येक ७ माशा, स्वर्ण वर्क, जदवार-ख़ताई, नारजील ख़ताई, अम्बरअशब, कस्तूरी, शुद्ध शिलाजीत प्रत्येक ३॥ माशा, सब औषध को पृथक २ अत्यन्त बारीक खरल करे, फिर मिला कर दो सप्ताह तक अर्क गुलाब, अर्क गाऊज़बान, अर्क केवड़ा, अर्क बेदमुशक से भावना दे।

मात्रा तथा गुण—२ से ४ चावल तक, दवालमस्क ज्वाहर वाली ५ माशे मे मिला कर दें, उतमागो को तथा सब शरीर के अवयवों को शक्ति प्रदान करने के लिये एक महान सिद्ध औषध है, हृत्कम्प, अपस्मार आदि मे भी प्रभावशाली है, हृदय रोग तथा शरीर बल हीनता के लीये अमृत तुल्य है।

सफ़ूफ़ ज्वाहर

द्रव्य तथा निर्माण विधि—मुक्ता शुक्ति, ज़हरमोहरा खताई, प्रवाल मूल, रक्त माणिक, कहरूवा शमई, मुक्ता, अकीक यमनी, हरायशप, प्रत्येक १—१ तोला सब को ,अर्क गुलाब, अर्क केवड़ा, वेदमुशक मे २ सप्ताह तक खरल करे, शुष्क होने पर शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा तथा अनुपान—३ से ४॥ माशे तक खमीरा गाऊज़बान व अम्बरी एक तोला में मिला कर त्रि अर्क के साथ प्रयोग करे (त्रि अर्क—अर्क गाऊज़बान, वेदमुशक केवड़ा)।

गुण—हृदय बलदायक, तथा उल्लास कारक है।

यक्ष्मा हर औषध

द्रव्य तथा निर्माणविधि—गिलोय सत्व, ज़हरमोहरा, अन्तर्धूम दग्ध केकड़ा, वंशलोचन, संगजराहत (दुग्ध पाषाण), गोंद कतीरा, गोंद कीकर, सफेद कृत्था, गिल मखतूम, मगज वहिदाना, निशास्ता, श्वेत खशखाश बीज, खतमी बीज, गिल अरमनी, मधुर बादाम गिरी, दमुलखवायन, रवुलसूस १—१ तोला, प्रबाल भस्म, मुक्ता शुक्ति-भस्म, ज्वहरमोहरा, अभ्रक भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म ६—६ माशा, यशद भस्म ९ माशा, कर्पूर केसूरी २ माशा सब को कूट पीस कर बहिदाना के लुआब मे १—१ रत्ती की वटी करे।

मात्रा तथा अनुपान—१ वटी, ८ तोला अर्क हराभरा के साथ, छागी दूध वा गर्दभी दूध १५ तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण—उरःक्षत, यक्ष्मा, रक्तपित्त, जीर्ण ज्वर मे अत्यन्त उत्तम योग है, सिद्ध प्रभावशाली महौषध है।

ज्वाहर मोहरा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—ज़हरमोहरा खताई १॥ तोला, मुक्ता, प्रवाल मूल, कहरूबाशमई, लाजवरद धुला हुआ, रक्तमाणिक, नील वर्ण माणिक, (याकूत कबूद), पीत वर्ण माणिक (याकूत असफ़र)

हरा यशप, पन्ना, रक्त अकीक, चांदी पत्र, स्वर्ण पत्र, रूमी मस्तगी, प्रत्येक ७—७ माशे, जदवार खताई, दरयाई नारियल, कस्तूरी, केशर, शिलाजीत प्रत्येक ३—३ माशा, त्रि अर्क में दो सप्ताह तक भली प्रकार खरल करें।

मात्रा तथा अनुपान—२ चावल खमीरा गाऊजवान ज्वाहर वाला ५ माशा वा लबूब कबीर ५ माशा वा खमीरा गाऊजवान सादा १ तोला के साथ प्रयोग करे, अम्ल पदार्थ त्याज्य है।

गुण—निर्बलता को नष्ट करता है, हृदय, मस्तिष्क, यकृत को बल तथा पुष्टि देता है, जीवनी शक्ति का पोषक है।

वक्तव्य—यदि इस में मकरध्वज ६ माशा और मिला दिया जाये, तो अधिक गुणकारी सिद्ध होगा।

दवाए खफ़कान

द्रव्य तथा निर्माणविधि—श्वेत चन्दन, गाऊजबान पुष्प १—१ तोला, धनियां, कहरुबा शमई ९—९ माशा, यशप, अकीक ७—७ माशा, मुक्ता, प्रवाल भस्म, वंगभस्म, मुक्ता शुक्ति ३—३ माशा, बारीक पीस कर त्रि अर्क से भावित कर शीशी मे रख लें।

मात्रा तथा अनुपान—२-४ रत्ती दिन में २—३ बार त्रि अर्क से प्रयोग करें।

गुण—दिल की धड़कन, दिल डूबना में अतीव गुणकारी है।

अकसीर हाफ़िज़ा

मधुर बादाम गिरी (छिलका रहित) कद्दूबीज गिरी मधुर (छिलका रहित) सौंफ, धनियां, सफेद खशखाश बीज ५-५ तोला, छोटी इलायची बीज २ तोला, रौप्य भस्म ६ माशा, मिश्री २ तोला, सब को बारीक पीस कर चूर्ण बना लें।

मात्रा तथा अनुपान—३-६ माशा चूर्ण, दूध संग प्रयोग करें।

गुण—स्मरण शक्ति को बढ़ाता है, दिमाग को बल देता है, प्रतिश्याय तथा मस्तिष्क गत रूक्षता को नष्ट करता है।

माजून फ़ालिज

द्रव्य तथा निर्माणविधि—ऊद वलसाँ, हब्ब वलसाँ, तगर, ईरसा, रूमी मस्तगी, कलमी तज, जराविन्द गोल, ६—६ माशा, जुन्दवदस्तर, केसर ३–३ माशा, मधुर सुरंजान, बोजीदान, बाबूना-मूल, सोंठ १–१ तोला, हरमल, अकरकरा, लौंग, दारचीनी, जायफल, मिरच, पिप्पली, काली जीरी, पानजड़ १—१ तोला, हरड़ का मुरब्बा (गुठली निकाला हरीतकी फल-खण्ड), बीज रहित द्राक्षा प्रत्येक ६–६ तोला मधु, तथा खाँड १५–१५ तोला, मधु और खाँड का अर्क सौफ (मिश्रेयार्क) में पाक करे, (मिश्रयेअर्क आवश्यकतानुसार ले लेवें), बाकी औषध का बारीक चूर्ण कर पाक सिद्धि होने पर पाक मे मिला देवें, पीछे उत्तम कस्तूरी ३ माशा बारीक पीसकर मिला दें, तैयार है।

मात्रा तथा अनुपान—३ माशा, मधुजल से ले।

गुण—वातरोग, वात कफ़ रोग, पक्षवध, अर्द्धांग आदि मे अत्यन्त उत्तम है।

अकसीर ओजाह

संखिया, कलमीशोरा, सुहागा, नवसादर १—१ तोला, सब को ५ तोला फटकड़ी में रख कर ५ सेर उपलों की अग्नि दें, शीतल होने पर निकाल कर आधा भाग मृग श्रृंग भस्म मिला लें, और सबके समान भाग शुद्ध विषमुष्टि मिला दे, तैयार है।

मात्रा—आधी रत्ती से १ रत्ती तक, माजून सुरजान ७ माशा में मिला कर दे।

गुण—समस्त प्रकार की जीर्ण वात वेदनाओं मे परम लाभ-कारी है।

अकसीर नजला

कलमी शोरा ९ माशा, कर्पूर ६ माशा, अर्क फेनचूर्ण (Dover's Powder) ३ माशा, शुद्ध वत्सनाभ १॥। माशा, लोबान सत्व ३

माशा, केशर ३ माशा, सब को बारीक पीस कर पानपत्र स्वरस से ३ भावना देकर १---१ रत्ती की वटी करें।

मात्रा---१ से २ रत्ती, योग्य अनुपान से दें।

गुण---नजला, जुकाम (प्रतिश्याय), कास में अत्यन्त उपयोगी है।

अकसीर सरह

संखिया, नरकपालास्थि भस्म, अकरकरा, हिंगु, ऊद सलीब, जदवार खताई ७---७ माशा, शुद्ध आमलासार गन्धक १॥ माशा, सोंठ ३॥ माशा, शर्करा ४ माशा, इन सब को भांगरा स्वरस से भावित कर १---१ रत्ती की वटी करे।

मात्रा तथा अनुपान---१ वटी, प्रातः सायं योग्य अनुपान से दे।

गुण---अपस्मार में अतीव लाभप्रद है।

मरहम चश्म

शुद्ध चाकसू ६ माशा, शुद्ध अनजरूत २ माशा, बोरक एसिड २ माशा, काज्जल २ माशा, यशद का फूला २ माशा, मिश्री २ माशा, रसौत ३ माशा, येलो अकसाईड आफ मरकरी ४ रत्ती (Yellow oxide of Mercury) इन सब को बारीक पीस कर वेज़लीन (Vaseline) २॥ तोला मे भली भांति मिला ले।

मात्रा तथा सेवनविधि---काजल की भांति पपोटे उलट कर उन में लगा दें।

गुण---नेत्र कण्डु, नेत्रगत लालिमा, पोथकी (कुक्कुरे) और नेत्राभिष्यन्द में अतीव लाभ कारी योग है।

ब्राह्मी वटी

द्रव्य तथा निर्माणविधि---मधुयष्टि ६ माशा, छोटी एलाबीज २ तोला, ब्राह्मी बूटी २० तोला, शंख पुष्पी ४ तोला, बड़ी एलायची बीज २ तोला, केशर १ तोला, चांदी वर्क २० नग, स्वर्ण वर्क १० नग, कस्तूरी २ माशा, मधुर बादाम गिरी ५ तोला, अभ्रक भस्म ६ माशा,

सब को बारीक पीस कर यथाविधि खरल कर धनिये तथा सौफ़ के क्वाथ से ३ दिन तक भावित करें, और २–२ रत्ती की वटी मधु की सहायता से बनावें।

मात्रा—१ से ४ वटी, प्रातः सायं दूध से।

गुण—स्मृतिदोष, उन्माद, प्रतिश्याय, मस्तिष्क की दुर्बलता में अत्यन्त परीक्षित योग है।

शुक्ला अवलेह

खशखाशबीज, मगज तरबूज, मगज तुखम खयार, मगज कद्दू, शंखपुष्पी, ब्राह्मी बूटी ५—५ तोला, बादाम गिरी छिली हुई १० तोला, त्रिफला १२ तोला, पिप्पली, काली मिरच, उस्तोखद्दूस, गाऊ-जवान पुष्प, अभ्रक भस्म, केशर, वंशलोचन १–१ तोला, सौफ, धनिया २–२ तोला, चांदी पत्र ४८ पत्र, मधु सब के मिलित मान के समान, सब को कूट पीस कर मधु में भली प्रकार अवलेह बनावें।

मात्रा—१ से २ तोला दूध से।

गुण—उपरोक्त।

हबूब रेअशा

लौंग, बालछड़, उस्तोखद्दूस, प्रत्येक १०॥ माशा, दारचीनी, कुठ, अभ्रक भस्म, चांदी भस्म ६–६ माशा, हींग, गारीकून, निशोथ, जुन्दबदस्तर ४—४ माशा; अकरकरा १ तोला, केसर, कस्तूरी ३–३ माशा, संखिया २ रत्ती, सब द्रव्यों को बारीक पीस कर मधु के साथ काली मिरच प्रमाण वटी बनावें।

मात्रा—१ से ४ वटी, योग्य अनुपान से।

गुण—रेअशा (बातकम्प), अर्दित, अर्धांग, पक्षवध, तथा समस्त वात कफ रोगों मे अतीव गुणकारी है।

दवाये अजीब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—तारपीन तैल, मालकंगनी तैल, धस्तूर तैल, मोम तैल प्रत्येक ५ तोला, लौंग तैल १ तोला, सब को

मिला ले, अब इस मे कर्पूर १ तोला, अहिफ़ेन १ तोला यथाविधि भली प्रकार मिला लें ।

गुण तथा उपयोग—कम्पवात, आक्षेप, आमवात तथा सब प्रकार की पीड़ा मे उत्तम है, पीड़त अंग पर मर्दन करे, ऊपर से रूई गरम कर के बांध दे ।

सफ़ूफ़ सुरंजान

मधुर सुरंजान १॥ तोला, सनाय मक्की पत्र १० माशा, श्वेत त्रिवृत ४ माशा, कृष्ण जीरक ४ माशे, शुष्क पोदीना ४ माशा, काली मिरच ४ माशा, इन सब का बारीक चूर्ण करे ।

मात्रा—३—६, माशा योग्य अनुपान से ले ।

गुण—वातनाड़ी शोथ, आमवात मे लाभकारी है, मलावरोध नाशक है ।

शकर वटी

मल्लसत्व १ माशा, शिलाजीत १॥ माशा, लौह भस्म ६ माशा, अभ्रक भस्म, अजवायन खुरासानी, लुफाह की जड़, दारचीनी ६—६ माशा, केशर ३ माशा, अम्बर अशहब २ माशा सब को बारीक पीस कर पान पत्र स्वरस से ७ बार भावित कर मरिच समान वटी करे ।

मात्रा—१ से २ वटी, योग्य अनुपान से ।

गुण—जीर्ण प्रतिश्याय, वातकफ़ज विकार, कफ़ज शिरशूल, मे अपूर्व औषध है, स्तम्भक तथा वाजीकरण है ।

हब्ब ख़ास

अन्त धूंम दग्ध मन्दार पुष्प, अन्तर्धूम दग्ध कदली पुष्प, नवसादर, लोबानसत्व, शकर तैगाल ३—३ तोला, बशलोचन, काकड़सिगी, बहेडा, मिरच, मुलैठी का सत १—१ तोला, सब को बारीक पीस कर बहेडे के क्वाथ से ३ भावना दे कर चने समान वटी करे ।

मात्रा—१ से ४ वटी ।

गुण—कफज कास के लिये रसायन है, श्लेष्म का उत्सर्ग करती है, कफ़ज कृच्छ श्वास के लिये बहुत ही गुणकारी है।

खमीरा तिल्ला

बारीक पिसे स्वर्ण वर्क १७॥ माशा, अम्बर अशब १०॥ माशा, चांदी पत्र ८ माशा, मुक्ता उत्तम ८॥। माशा, माणक रूमानी, लाल वदखशानी, हरा पन्ना प्रत्येक ३॥ माशा, केशर ३ माशा, छोटी इलायची बीज १ तोला, रूब्ब सेब, रूब्ब गाजर, रूब्ब नाशपाती, रूब्ब अनार प्रत्येक १० तोला, मधु उत्तम २० तोला, सब को बारीक पीस कर यथाविधि खमीरा प्रस्तुत करे।

मात्रा तथा अनुपान—३–६ माशा तक अर्क मालहम अम्बरी के साथ प्रयोग करे।

गुण तथा उपयोग—हृदय, मस्तिष्क को पुष्टि तथा शक्ति देने मे अद्वितीय महौषध है।

अकसीर नफ़सलदम

संगज्राहत (दुग्ध पाषाण) ५ तोला ले कर नीम की हरी पत्ती एक पाव में रख कर दो प्यालों के मध्य धर कर कपरौटी कर २० सेर उपलों की पुट दे दे, शीतल होने पर निकाल ले, अब यह उपरोक्त भस्म, कहरूबा, हमलखयवैन, गेरू, गेलिक एसिड़ (Gallic acid) ४-४ तोला, फटकड़ी २ तोला, कलश्यैम लिकटेट (Calcium Lectate) १० तोला, सब को बारीक पीस कर भली प्रकार चूर्ण कर ले।

मात्रा—१ से ३ माशा।

गुण—रक्तपित, रक्तप्रदर, नकसीर, रक्त अर्श के लिये अपूर्व औषध है।

अकसीर ज़ीकुन्नफ़स

तीक्ष्ण तमाकू ५ तोले, अहिफेन १ तोला, श्वेत सखिया २ माशा, अर्क क्षीर १० तोला, इन सब को खूब भली भाति खरल करे, फिर २

तोले एलुआ, खुरासानी अजवायन २ तोले और धस्तूर बीज २ तोला मिला कर पुनः खरल करे, शुष्क होने पर सुरक्षित रखे।

मात्रा—४ रत्ती औपध लेकर ४ तोला बादाम रौगन मिला ले, और उसकी १६ मात्रा बनावे, १ या दो मात्रा प्रति दिन प्रातः साय प्रयोग करे।

गुण—यह कृच्छ्र श्वास और कफज श्वास मे परम लाभ कारी है।

आरोग्यदायनी

केशर १॥ माशा, जुन्दबदस्तर (गन्धमार्जार वीर्य), दारचीनी, अहिफ़ेन, तगर, लौग, धस्तूर बीज प्रत्येक ३॥ माशा, मिरच काली, पिप्पली, पान जड़ प्रत्येक २१ माशा, सोठ, रूमी मस्तगी, अजवायन १—१ तोला, सब को बारीक पीस कर त्रिगुण-मधु मे मिला ले।

मात्रा—४ रत्ती से १ माशा।

गुण—दीपक, पाचक, अजीर्ण नाशक, अम्लपित, आमाशय की सरदी, शूल, मुह से लालास्राव को नष्ट करती है॥

कामदेव रसायन

शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध कुचिला ५—५ तोला, लौह भस्म ४ तोला, काली मिरच २ तोला, केसर १ तोला, सब को कूट छान कर मधु मे मिला कर १—१ रत्ती की वटी करे।

मात्रा—१ से २ वटी, दूध के साथ।

गुण—शक्ति दायक तथा बलप्रद, आमाशय, यकृत तथा सब वाततन्तुओं को उत्तेजनाकारक और प्रमेह नाशक औषध है।

अकसीर-ज़याबेतस

अहिफ़ेन १ माशा, लौह भस्म २ माशा, जामुन की गुठली, का चूर्ण १४ माशा, सव को बारीक पीस ले।

मात्रा—१ से २ माशा, बिल्व पत्र स्वरस से प्रातः सायं दे।

गुण—मधुमेह के लिये गुणकारी तथा सरल योग है।

गर्भरोधक वटी

असली पत्थर का जीव (कलबलहिजर) १ रत्ती, वंशलोचन १ माशा, दोनों को पृथक पीस कर मला दे, यह एक मात्रा है, ऐसी २—३ मात्रा दिन मे आवश्यकतानुसार प्रयोग करे।

गुण—गर्भपात तथा गर्भस्राव के लिये अमोघ औषध है।

उजागर चूर्ण

सनाय मक्की, जुलापा उत्तम, काला दाना, सकमूनीया प्रत्येक ५—५ तोला, सोंठ २ तोला, फ़ेनोफेथीलीन २ तोला सब को बारीक पीस चूर्ण करे, सकमूनीया को हलके हाथों खरल करे, अन्त मे फ़ेनोफ़ेथिलीन मिला कर सुरक्षित रखें।

मात्रा—४ रत्ती से १ माशा, रात्री सोते समय।

गुण—अत्यन्त उत्तम विरेचन है, विना किसी कष्ट के दस्त लाता है, स्वानुभूत सिद्ध औषध है।

नरेश वटी

शुद्ध हिंगुल (मकर ध्वज डालें तो अधिक-लाभप्रद है) काली मिरच, शृंग भस्म, कच्छप अस्थि भस्म, जायफ़ल, गोरोचन, मुसब्बर १—१ तोला, कस्तूरी, केशर ३—३ माशा, सब को बारीक पीस कर अद्रक तथा पान रस से भावित कर सरसों समान वटी करें।

मात्रा—चौथाई से १ वटी तक बालकों को आयु अनुसार दे।

गुण—बालकों के कफज ज्वर, सरदी के विकार, श्वास, कास पार्श्व शूल, निमोनीया, प्लूरसी इत्यादि रोगों में अमृत तुल्य है।

०हब्ब ऊदसलीब

ऊदसलीब, जुन्दबदस्तर, कस्तूरी ४—४ रत्ती, हींग, गोरोचन केसर ३—३ माशा, सब को बारीक पीस एक जीव करे, तुलसी पत्र स्वरस तथा करेले की पत्र स्वरस से भावित कर बाजरे समान वटी करें।

मात्रा—१ से ४ वटी, आवश्यकतानुसार।

गुण—बालापस्मार में एक विशेष प्रभावशाली योग है।

सुखदायक चूर्ण

कासनीबीज, जीरा सफ़ेद, गुलाब पुष्प, मगज़ कमलगट्टा, शकरतैगाल, खुरफा बीज ९–९ माशा, वशलोचन, इलायची बीज, जहरमोहरा, छोटी इलायची, गिलोय सत्व ६–६ माशा, मिश्री ४ तोला, सबको बारीक पीस कर एक जीव करे।

मात्रा—१ से ३ माशा, योग्य अनुपान से।

गुण—पित्तज ज्वर तथा जीर्ण ज्वर, संतत ज्वर मे अत्यन्त उत्तमयोग है, वैद्य गौरीशंकरजी का परीक्षित है।

नेत्रामृत

जंगार ४ माशा, नीला थोथा ४ माशा, अहिफेन ६ माशा, सफ़ेदा काशगरी ८ माशा, समुद्रझाग ८ माशा, नवसादर ४ माशा, फ़टकडी भुनी हुई ४ माशा, यशद भस्म, सुरमा काला २॥–२॥ तोला, सब को, वारीक पीस कर सौंफ के पानी तथा शिरस पत्र स्वरस से भावना दे, सुखा कर सुरक्षित रखे।

गुण तथा उपयोग—आवश्यकतानुसार चांदी की सलाई से रात्री को लगावे। तिमर, पोथकी, जीर्ण नेत्राभिष्यन्द, अर्म, नेत्रकण्डू इत्यादि मे अत्यन्त उपयोगी योग है।

शरबत मफ़रह

चन्दन लाल, चन्दन सफेद, नीलोफर पुष्प, गुलाब पुष्प, बेद मुश्क पुष्प, गाऊजबान पुष्प, फरज मुश्क, सेवती पुष्प, छोटी इलायची, धनियां, खस, प्रत्येक ६—६ तोला, खॉड २ सेर, शरबत विधि से शरबत तैयार करे।

मात्रा—२ से ४ तोला, त्रि अर्क १२ तोला के साथ प्रयोग करे। (त्रि अर्क—अर्क गाऊ जबान, अर्क बेदमुश्क, अर्क केवड़ा)।

गुण—हृदय बल्य, तृषानाशक तथा शान्ति दायक मधुर, सुगन्धित तथा गुणप्रद शरबत है, ग्रीष्मऋतु मे अमृत तुल्य सिद्ध हुआ है।

रेवन्द वटी

सकमूनीया, जुलापा, रेवन्द असारा, मस्तगी रूमी, इन्द्रायण का गूदा, मुसव्वर २—२ तोला, सोंठ, मुरमुक्की १—१ तोला, सब को पीस कर जल से २—२ रत्ती की वटी करे।

मात्रा—१ से २ वटी रात्री को सोते समय दूध वा जल से प्रयोग करें।

गुण—कोष्ठबद्धता नाशक है, यकृत विकारों में अत्यन्त उत्तम है आन्त्र का शोधन कर आरोग्य प्रदान करती है, शीघ्र प्रभावी विरेचन है।

० अकसीर दर्दगुरदा

हिजरलयहूद, संग मकनातीस २॥—२॥ तोला, संग सरमाही १॥ तोला, संग लाजवरद १ तोला, संग रासख १ तोला, घृत कुमारी गूदा १ पाव, सब ऊपर के पाषाण को बारीक पीस कर घृत कुमारी रस से खरल कर टिकिया बना सुखाकर यथाविधि १० सेर उपलों की आंच दें, इसी प्रकार १० पुट दे, तैयार है।

मात्रा—२ से ४ रत्ती विजयचूर्ण (यवक्षार, पपड़ीया क्षार, अजवायन खुरासानी, सुहागा अपक्व, नवसादर, मिरच काली, सैंधव, शुद्ध हीग, कलमी शोरा १—१ तोला मिला कर बारीक चूर्ण करें) ३ माशा मे मिला कर उष्ण जल से प्रयोग करावें।

गुण—दर्द गुरदा की अकसीर औषध है, मूत्रावरोध को नष्ट करती है, वायूनाशक तथा पीड़ा शामक है।

०अर्शान्तक बटी

मुर्दासंग शुद्ध, समुद्र झाग, मिरच काली, नीलाथोथा, रसौत शुद्ध गुग्गुलु, कौड़ी जली हुई १—१ तोला बारीक पीस कर मूली रस ककरोदा रस २०—२० तोला से भावना दे कर चने समान व टी करें।

मात्रा—१ से ४ वटी।

गुण—प्रत्येक प्रकार के अश के लिये अत्यन्त उत्तम है।

० स्फटिका योग

कलमी शोरा २ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, मनशिला १ तोला, चूना कली ८ तोला, मुक्ता शुक्ति १ तोला, मल्ल १ तोला, सुहागा चोकीया १॥ तोला, फटकड़ी २ तोला, सब को बारीक पीस कर घृतकुमारी गूदा में खरल कर ५ सेर उपलों की पुट दे।

मात्रा—आधा से १ रत्ती बालाई मे रख कर प्रात प्रयोग करें।

गुण—जीर्ण, पूयमेह की अन्तिम औषध है।

बालामृत वटी

हींग घी में भुनी हुई १॥। तोला, मिरच सफेद ७ माशा, नीम पत्र २२ पत्र, कत्थ सफेद १४ माशा, अहिफेन ७॥ माशा सब को बारीक पीस कर जल से आधी रत्ती की वटी करे।

मात्रा—आधा से १ वटी आयु अनुसार दें।

गुण—बालकों की वमन, अतिसार, अजीर्ण, कास आदि मे लाभप्रद है।

अकसीर ओजा

शुद्ध हिंगुल १ तोला, अहिफेन १ तोला, कुचला शुद्ध २ तोला, पिप्पली, चाकसू, सुरंजान मधुर, अजवायन, रसौत, मिरच काली, सोंठ २—२ तोला, शुद्ध गुग्गुलु ६ तोला, सब को मिला कर यथा-विधि हरमल के क्वाथ से भावित कर १—१ रत्ती की वटी करे।

मात्रा—१ से २ वटी प्रात सायं २ तोला घृत से दे।

गुण—वातकफज पीड़ा, गृध्रसी, आमवात, कटिशूल मे अत्यन्त प्रभावशाली औषध है।

युनानी औषध परिचय

ॐ

युनानी औषध परिचय

वह औषध जिनका वर्णन आयुर्वेद में नही है—और युनानी वैद्यक मे जिनका प्रचुरता से व्यवहार किया जाता है, युनानी योग वनाते समय अपरिचित औषध के गुणधर्म, रूप, तथा उत्पत्ति-स्थान न जानने के कारण वैद्यजनो को असुविधा रहेगी, इस असुविधा को दूर करने के लिये तथा वैद्यबन्धुओं के ज्ञानवृद्धि के हेतु हमने उचित समझा, कि युनानी औषध का परिचय भी दिया जाये।

यह वर्णित औषध प्रायः इसी नाम से बाजार मे मिल जाते है॥

(अ)

१. अकलीलुलमलिक (Tringonellauncata)

वर्णन—इसे नाखूना भी कहते है, एक बूटी की फलियां है, जो छोटी २ कटे हुये नख के समान तथा नखरूप होती है, इसके भीतर छोटे २ गोल वीज होते है। उत्पत्तिस्थान इसका फ़ारस है।

गुण तथा उपयोग—शोथनाशक तथा शोथपाचक, वेदना-शामक, मूत्र तथा रजप्रवाही और अंगो को वल देती ह। शोथ को हल करने, वल देने तथा उष्णता पहुंचाने के लिये इसे लेप और मालिश के रूप मे प्रयोग किया जाता है; यकृत, प्लीहा, आमाशय, गर्भाशय, गुदा, और वृषण इनकी शोथ को नष्ट करने के लिये इसका वाह्यातरिक प्रयोग होता है।

२. अकाकीया

वर्णन—कीकर वा कीकर सदृश वृक्षों की फलियों और पत्रों का घन सत्व है, जिसे शुष्क करके टिकिया बना लेते है।

गुण तथा उपयोग--संग्राही, रक्त स्तम्भक, शोषक तथा दोष विलोमकर्ता है। प्रवाहिका, रक्त अतिसार और प्रत्येक अंग के रक्तस्राव में उपयोगी हैं।

३. अकीक (**Agate**)

वर्णन--यह रंगीन, चमकदार बहुमूल्य खनिज पाषाण है। इसकी खान यमन देश में है, रोमनदी के तीर पर भी मिलता है, परन्तु पीतता लिये हुये लाल वर्ण का यमनी अकीक सर्वोत्तम होता है, वैसे वर्णभेद से यह कई प्रकार का होता है ॥

गुण तथा उपयोग--हृदय वल्य, रक्त स्तम्भक, शरीर में चूने (Calcium) की कमी को पूर्ण करता है। शीतल वीर्य है, रक्त-स्राव, रक्तपित्त, पित्तज हृदयरोग, पैत्तिक ज्वर तथा चूने की कमी के कारण दुर्बलता मे अत्यन्त उपयोगी है॥

४. अखरोट (**Juglans regia**)

वर्णन--एक बहुत बडे और ऊंचे वृक्ष का फल है, जिसका ऊपरी भाग कठोर और बीच मे श्वेत रग का मग़ज निकलता है, यह स्वाद मे स्वादिष्ट, मधुर और चिकना होता है।

गुण तथा उपयोग--स्तम्भक शक्ति को बढ़ाने वाला, वाजीकर तथा मस्तिष्क को बल देने वाला है, वाजीकरण योगो मे विशेषतया डाला जाता है।

५. अजखर मक्की (**Andropogon laniger**)

वर्णन--हिन्दी अजखर को गन्धेल और संस्कृत मे लामजक कहते है, यह खस जाति का एक सुगन्धित तृण है, स्वाद तिक्त तथा चरपरा होता है। हजाज से जो अजखर आता है उसे अजख़र मक्की कहते है। गुण मे यह उत्तम होता है। इसकी जड तथा पुष्प जिनको शगूफा तथा फ़क्काह अज़ख़र युनानी वैद्य कहते हैं, औषध रूप मे काम आता है।

गुण तथा उपयोग—उष्णवीर्य, साद्रदोषपाचक, अवरोध-नाशक, शोथनाशक, वातानुलोमक, मूत्रल, ऋतुप्रवर्त्तक, आमाशय-वल्य ग्राही, परन्तु जड से पुष्प अधिक गुणप्रद है। वात, वात-कफ़ज रोग, अर्दित, पक्षवध, आक्षेप, अपतन्त्रक, विस्मृति तथा कफज ज्वर मे (दोषो को पाचन करने के लिये) प्रयोग किया जाता है, जलोदर, आमाशय शोथ, यकृत तथा प्लीहाशोथ, मूत्र तथा रजाव-रोध, वृक्क और मूत्राशय अश्मरी मे अकेला वा और औषधियों के साथ इसका क्वाथ दिया जाता है, आमाशय दुर्बलता, कफज वमन तथा अतिसार में भी उपयोगी है।

६ अजवायन खुरासानी (**Hyoscyamus albus**)

वर्णन—इसे बजरलबंज भी कहते है, इसका रूप अजवायन (यवानिका) की तरह है और यह खुरासान (ईरान) से भारत मे आती है, इसलिये इसे अजवायन खुरासानी कहते है, इसके पौदे का काड मोटा और रूईदार, पत्र विल्लीलोटन की भाति मोटे, चौड़े, लंबूतरे, पत्र प्रांत कटे हुये कंगूरेदार, रंग मे हरी कालिमा लिये हुये और रूईदार होते है। इसके बीज अजवायन से दुगने बड़े वृक्काकार और भूरे होते है, स्वाद तेज तिक्त और चरपरा अजवायन की भांति होता है। इसके बीज ही औषध मे प्रयोग किये जाते हैं। यूरोप, मिश्र, साईबेरिया, खुरासान, समस्त हिमालय पर्वतमाला में तथा बलोचस्तान मे स्वय उत्पन्न होती है।

गुण तथा उपयोग—वेदनाशामक, निद्राप्रद, नशा लाने वाली, दोषविलोमक तथा ग्राही है। वेदनाशामक तथा अवसादक गुण के कारण कफज कास, प्रत्येक प्रकार की पीड़ा तथा अनिद्रा मे उपयोग की जाती है।

७. अजदान बीज

वर्णन—हीग वृक्ष के बीज है, ईरान, तुरकस्तान, अफगानस्तान और पंजाब इसका उत्पत्तिस्थान है।

गुण तथा उपयोग---शोथविलयन, वातानुलोमक, आमाशय बल्य, मूत्रल, रज:प्रवर्तक तथा वाजीकरण है। इसको मस्तिष्क तथा वात संस्थान के रोग अर्दित, पक्षाघात, विस्मृति आदि रोगो में प्रयोग करते है। अजीर्ण, आध्मान, मूत्र तथा रजावरोध में भी प्रयोग किया जाता है, पुंसक क्षीणता निवारक योगो मे भी डाला जाता है।

८. अंजबार (**Polganum Barlatum**)

वर्णन---यह श्याम, तबरिस्तान देश मे नहरों, नदियो और झीलों के किनारे पैदा होता है। यह एक क्षुद्र बनस्पति है, जिसकी ऊंचाई दो गज, लालिमा लिये हुये पतली शाखाये, और लाल फूल होते है, इसकी जड़ गहराई मे होती है, रग उसका कालिमा लिये लाल होता है, यही जड़ अधिकतर प्रयोग मे लाई जाती है।

गुण तथा उपयोग---शीतल, ग्राही, रक्तपित्तनाशक, रक्त-स्तम्भक, आन्त्र तथा आमाशय को बल देने वाली है, रक्त अतिसार, जीर्ण पित्त अतिसार मे उपयोगी है, रक्तस्राव को बन्द करने मे लाभकारी है॥

९. अंज़रूत (**Astagalus sarcocola**)

वर्णन---यह एक कांटेदार वृक्ष की गोंद है---लालिमा लिये पीत रंग की गोंद होती है---स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग---व्रण लेखन तथा रोपण, शोथनाशक, वातानुलोमक तथा कफ रेचक है, व्रणशोधन तथा रोपण गुण के कारण मरहमों मे डाला जाता है, नेत्र रोगो यथा नेत्र अभिष्यन्द, नेत्रकण्डु, पक्ष्मशात तथा फोले के लिये अजनों मे मिला कर प्रयोग किया जाता है॥

१०. अंजरा बीज (**Urtica Pilulifera**)

वर्णन---उटंगन के बीज को कहते है, यह मिश्र देश से भारत मे आते है, यह हृदयाकार, चपटे, लम्बे, शिबी, द्विकोष एवं द्विबीज

युक्त बीज होते है, मोटे वालों से आच्छादित होते हैं, जल मे भिगोने पर यह वाल जल सोख कर फूल जाते है।

गुण तथा उपयोग—वीर्य को गाढ़ा करते है, इसीलिये शुक्र तारल्य, शीघ्रपतन और शुक्र प्रमेह के योगो मे डाले जाते है। मूत्रल तथा मूत्रजलन को दूर करते हैं।

११. अंजीर (Ficus Carica)

वर्णन—गूलर जातीय एक वृक्ष का प्रसिद्ध फल है, मधुर तथा स्वादिष्ट होता है, भारतवर्ष मे भी उत्पन्न होता है, परन्तु अफगानिस्तान से आने वाला फल गुणो में श्रेष्ट होता है, और वही फल औषध रूप मे प्रयोग किया जाता है॥

गुण तथा उपयोग—मृदु विरेचक, कफस्रावी, अपक्व दोषों का पाक करने वाला, मूत्रल तथा स्वेदल है। इसलिये प्रतिश्याय, कफज कास, तथा कोष्ठवद्धता में उपयोगी है, प्लीहावृद्धि मे भी लाभकारी है, मोतीभरा तथा मसूरिका मे दानो को वाहर निकालने के लिये इसका उपयोग भी होता है॥

१२. अजीर दशती (Ficus Oppositifolia)

वर्णन—यह अंजीर के ही समान है, परन्तु उससे अधिक उष्ण तथा तीक्ष्ण होती है।

गुण तथा उपयोग—रक्तशोधक, तीव्र विरेचक, लेखन तथा जलाने वाली है, रक्तशोधक होने के कारण किलास तथा श्वेत कुष्ठ पर इसकी जड़ का लेप करते है, इसके दूध को तिल और मस्सो पर लगाते है, इसका लेप कण्ठमाला पर भी किया जाता है।

१३. अनन्नास (Ananas Sativus)

वर्णन—इसका पौदा केवड़े के पौदे के समान होता है। इसके पत्रों के मध्य मे से शाखा निकलती है, उसी पर फल लगता है,

जिसे अनन्नास कहते हैं। इसको छीलकर खाया जाता है इसका गूदा मधुर अम्लता लिये हुये होता है।

गुण तथा उपयोग—मन. प्रसादकर, हृदय बल्य, पित्त शामक, मूत्र तथा रजप्रवाही है, इसका शरवत तथा मुरब्बा बनाया जाता है, जो पैत्तिक हृदय धडकन. वृक्क तथा वस्तिगत अश्मरी तथा सिकता के निष्कासनार्थ और रज:प्रवाहण के लिये प्रयोग किया जाता है।

१४. अनीसून (**Anisi Fructus**)

वर्णन—इसे बादायन रूमी (सौफ रूमी) वा ज़ीरा रूमी भी कहते है। यह फ़ारस, यूरूप, अफ़रीका, मिश्र देश से आता है, यह एक सौफ़ जाति की एक क्षुद्र बनस्पति के फल है। यह फल सौफ से छोटा, रंगत सबजी लिये हुये, सफेदी, तथा पीलाई लिये हुये अथवा कालिमा लिये हुये पीला होता है। स्वाद कुछ तिक्त, तीक्षण तथा गन्ध युक्त होता हैं।

गुण तथा उपयोग—वातानुलोमक, शामक, कफ़स्रावी, मूत्रल, आर्तव प्रवर्त्तक तथा दूध बढ़ाने वाली औषध है, दीपक, पाचक तथा आमाशय को बल देता है। इसके गुण शतपुष्पा के गुण के समान है।

१५. अफ़तीमियून (**Cuscuta europea**)

वर्णन—इसे आकाशबेल विलायती कहते हैं, यह भारतीय आकाश बेल (अमर बेल) की तरह है, परन्तु इसकी बेल अधिक पतली धागे की भांति है, गुणो मे भी विशेषता रखती है, स्वाद कटु, इसके बीजों को तुखम कसूस कहते है। यूरूप, पश्चिम, मध्य एशिया और फारस इसका उत्पत्तिस्थान है।

गुण तथा उपयोग—शोथ विलयन, अपक्व दोषों को पकाने वाली, उदर कृमि नाशक, वातकफ विरेचक, वातानुलोमक तथा मस्तिष्क रोगों मे लाभप्रद है। उन्माद, मद, अपस्मार, नीद मे डरना

इत्यादि रोगों मे इसे प्रचुरता से प्रयोग किया जाता है—आमाशय, यकृत, प्लीहा दुर्बलता, कामला तथा जीर्ण ज्वरों मे भी उपयोगी है।

१६. अफ़सनतीन (**Artemisia Absinthium**)

वर्णन—यह एक सबज्ज वर्ण की बूटी है, यह एशिया, अमरीका, अफरीका आदि देशों से आता है, भारतीय मुसत्यारा जो काशमीर, नैपाल आदि पर्वतीय देश मे उत्पन्न होता है, इसका पूर्ण रूप से प्रतिनिधि है, गुणों मे दोनो समान है. इसके पत्रों तथा शाखों पर मृदु श्वेत रग की रूई लगी होत्ती है, वू दुर्गन्धयुक्त तथा स्वाद कटु होता है, इसके पत्र तथा पुष्प औषध–मे प्रयोग किये जाते है।

गुण तथा उपयोग—उष्णवीर्य, शोथघ्न, लेखन, मूत्रल, रज-प्रवर्त्तक, उदर कृमि नाशक, शामक, आमाशय तथा यकृत को वल देने वाला और ज्वरनाशक है। यकृत के रोगों मे विशेष उपयोगी है–विषमज्वर मे भी उत्तम है।

१७. अमाज बीज (**Rumex Vesicarius**)

वर्णन—हिन्दी मे इसे चोका के वीज कहते है।

गुण तथा उपयोग—यह ग्राही, पित्तज हृदय धड़कन, आमाशय की सोजश, पाण्डु, आन्त्रव्रण तथा यकृत रोगो मे लाभप्रद है। भुने हुये बीज पित्तज अतिसार, रक्तज अतिसार तथा यकृद्व विकार जनित अतिसार में प्रयोग किये जाते है।

१८. अम्बर(**Amergis**)

वर्णन—सुगन्धित मूल्यवान औषध है, यह निकोबार तथा भारतीय अन्यान्य टापुओ से आता है, यह एक स्पर्मह्वेल मत्स्य के उदर से निकाला जाता है, इसमे शुक्लता प्रधान श्याम वर्ग का अम्बर जिसे अम्बर अशहब कहते है, उत्तम होता है, और यही औषध रूप मे ग्रहण किया जाता है।

गुण तथा उपयोग—वातनाडिया, मस्तिष्क, हृदय, ज्ञानेन्द्रियां, आमाशय तथा पुसक शक्ति को बल देने वाला है। उष्णवीर्य है, वात, वातकफ रोग, यथा पक्षवध, अर्दित, कम्पवात, अपतानक मे अत्यन्त उपयोगी है। कामोत्तेजक है॥

१९. अम्बाहलदी (Curcunver arowotica)

वर्णन—इसे बन हल्दी तथा कर्पूर हलदी भी कहते है, एक बूटी की जड़े है, जो हलदी के समान होती है, परन्तु उससे बड़ी होती है, बू तीव्र, स्वाद तिक्त तथा तीक्ष्ण होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथ विलयन, पीड़ा शामक और रक्त-शोधक है, अधिकतया आघात, प्रत्याघात और फोड़े, फुंसियों मे लेप और मालिश आदि के रूप मे प्रयोग की जाती है। कुछ चिकित्सक ज्वर, कास और रक्तदुष्टि मे भी इसका उपयोग करते है।

२०. अमामा

वर्णन—यह एक वृक्ष है, जिसके पुष्प खैरा पुष्प की तरह हैं, पत्र स्वर्ण वर्ण के और सुगन्धित, लकड़ी लाल वर्ण की तथा सुगन्धित होती है, उत्पत्तिस्थान आरमिनीया देश है।

गुण तथा उपयोग— शोथघ्न, आमाशय शोधक, यकृत, प्लीहा तथा गर्भाशय दोष निवारक और शोथ नाशक है, लेप के रूप मे भी शोथनिवारणार्थ प्रयोग किया जाता है।

२१. अम्लतास का पोस्त
(Husk of Cathartocarpusfi Stula)

वर्णन—अम्लतास का ऊपर का छिलका भी औषध रूप मे काम आता है।

गुण तथा उपयोग—आर्त्तव प्रवर्त्तक, गर्भ तथा अमरा निःसारक, इसको अधिकतया आर्त्तव अवरोध वा रज.कृच्छ्रता मे अन्य

योग्य औषध मे मिला कर क्वाथ रूप मे देते हैं, गर्भ तथा अमरा को निकालने के लिये इसका क्वाथ पिलाया जाता है ।

२२ अलसी (Linum Usitatissmum)

वर्णन—इसका पौदा १ गज तक ऊचा होता है, इसका तना तथा पत्र वारीक होते है, पुष्प लाजवरदी रंग का तथा फल कोषवत होता है, जिसमे बीज भरे होते है, यह बीज छोटे २ चमकदार, चिकने, लाल तथा कालिमा लिये हुये वर्ण के होते है। यह बीज तथा तैल औषध रूप प्रयोग मे आता है ।

गुण तथा उपयोग—शोथघ्न, विरेचक, पाचक, लेखन, पीड़ाशामक, कफ स्रावक, वामक तथा मृदु मूत्रल है, इसको अधिकतया फोड़े, फुंसी तथा शोथ आदि पर लेप रूप मे प्रयोग किया जाता है, यह शोथ को लीन कर देता है, परन्तु यदि फोडा पक रहा हो, तो इसे शीघ्रता से पका कर फाड देता है, निमोनिया पर भी इसका लेप किया जाता है, कफस्रावी होने के कारण इसका क्वाथ कास तथा श्वास मे पिलाया जाता है, वा इसका वारीक चूर्ण करके मधु में मिला अवलेह रूप मे चटाया जाता है, मूत्र तथा आर्त्तव को भी खोल कर लाता है ।

अलसीतैल—अलसीवीजो को सरसो समान कोल्हू मे दवाकर तैल निकाला जाता है, यह भी शोथघ्न, पीडाशामक, लेखन, तथा व्रण रोपक है, पीड़ाशामक होने से इसकी दर्दो पर मालिश की जाती है, व्रणरोपण होने से मरहमो मे डाला जाता है, अलसीतैल और चूने का पानी समभाग मिला कर दग्ध स्थान पर लगाया जाता है, जलन को नष्ट करके शीघ्रता से व्रण का रोपण करता है।

२३. असकनकूर (Lacerta scincus)

वर्णन—यह एक प्रकार का जानवर है। जो मगरमच्छ की जाति से है, नील नदी के किनारे पाया जाता है। इसका शिकार खेलते है । प्राय· दो गज लम्बा और आधा गज चौड़ा होता है। इसके मांस को सुखाकर औषध रूप मे प्रयोग किया जाता है ।

गुण—शीत रोग, अर्दित, वातकम्प, अपतानक, वातरक्त तथा आमवात मे प्रयोग किया जाता है। पुसक शक्ति वर्धक तथा वाजीकरण है।

२४. असकोलोकन्द्रयून

वर्णन—एक बूटी है, पत्र दनदानेदार लालिमा लिये हुये, और किनारा ऊपर से सवज होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, मूत्रल, लेखन, पथरी तोड़ने वाला, अपस्मार, हिक्का, पाण्डु, प्लीहा और वात सस्थान के विकारो मे भीतर औषध रूप मे तथा बाहिर लेप रूप मे प्रयोग किया जाता है, बढ़ी हुई प्लीहा तथा अश्मरी मे विशेष उपयोगी है।

२५ अस्पन्द (**Peganum harmala**)

वर्णन—यह एक बूटी है। इसके बीज औषध प्रयोग मे आते है, सोखतनी तथा अरवी इसके दो भेद है। सोखतनी से अभिप्राय हरमल होती है, यह राई के समान तथा कृष्ण वर्ण का बीज होता है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, शरीरपुष्टिकर, कफस्रावक तथा शोषक, वातानुलोमक, गाढे दोषों को निकालने वाला, उदर-कृमिमारक, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवाही, दुग्ध प्रवाही, इसको अधिकतया वाजीकर लाभ के लिये प्रयोग किया जाता है, श्वास, कफज कास मे कफ का स्राव कराने के लिये इसका प्रयोग होता है, वातसस्थान तथा मस्तिष्क रोग, अपस्मार, अर्दित, अर्धांग, उन्माद, विस्मृति, गृध्रसी आदि मे दोषों को निकालने के लिये और शरीर मे उष्मा पहुंचाने के लिये इसका उपयोग होता है। शीत रोग और गृध्रसी मे विशेषतया उपयोगी है।

२६. असफन्ज (**Spongia Officinalis**)

वर्णन—यह एक छोटे २ कीडो के योग से बना हुआ रूई के समान मृदु तथा सुराखदार पीत वर्ण का द्रव्य है, जो समुद्र के किनारे

पत्थरों पर उत्पन्न होता है, यह जल का चूषण कर लेता है और निचोड़ने पर पानी छोड़ देता है।

गुण तथा उपयोग—जला हुआ शोषक, रक्त स्तम्भक तथा लेखन है, यह जल को चूस लेता है, इस लिये इससे कपडे के स्थान पर उष्ण वा शीतल जल मे भिगो कर रोगी के शरीर को पूछते है, वा सेक करते है, इसे जलाकर रक्त रोधक गुण के लिये भीतर खिलाते है। वा वाहर व्रण पर धूड़ा धूड़ते है, आख मे भी दृष्टि-प्रसादन के लिये सलाई से लगाते है।

जलाने की विधि—प्रथम इसको सावुन से अच्छी प्रकार धो ले, इसके पश्चात कैंची से छोटे २ टुकडे करके मिट्टी के पात्र मे डाल कर आगपर रखे और किसी चमचे से उलटते पलटते रहे, जव पिसने योग्य हो जाये तो आग पर से उतार कर काम मे लावे, ध्यान रखें, कि जल कर राख न हो जाये ॥

२७. असारा रेवन्द (Gam bogia)

वर्णन—यह नामानुसार रेवन्द चीनी का असारा (घन सत्व) नही है, परन्तु श्याम देश में उत्पन्न होने वाले एक वृक्ष का राल-दार गोंद है, जो कि उस वृक्ष के तने मे चीरा देकर निकाली जाती है।

गुण तथा उपयोग—इसका रूप तथा गुण रेवन्द चीनी के घन सत्व से मिलते है, इसी कारण इसका नाम भी असारा रेवन्द पड़ गया है, यह तीनो दोषों को विरेचन द्वारा वाहर निकालता है। वामक भी है, अधिक समय तक आमाशय मे नहीं ठहरती है, शीघ्र-ही अपना कार्य करती है, कृमिनाशक भी है। कोष्ठवद्धता, जलोदर तथा वात कफज रोगो मे उत्तम है, अधिक मात्रा मे प्रयोग करने से प्रवाहिका तथा मरोड हो जाते है, गर्भिणी को प्रयोग नही कराना चाहिये। कफज कास श्वास मे कफ को वमन तथा विरेचन द्वारा निकाल कर कास श्वास मे लाभ देती है।

२८. असारून (Asarum europoeum)

वर्णन—इसे तगर कहते हैं, यह ग्रन्थियुक्त जड़ होती है, सुगन्धि युक्त तथा स्वाद मे कटु होती है, किसी का वर्ण पीतता लिये हुये तथा किसी का भूरा होता है। श्यामदेश तथा अफगानस्तान आदि शीतप्रधान देशो मे उत्पन्न होती है। भारत मे भी उत्पन्न होती है।

गुण तथा उपयोग—उष्णवीर्य, अवरोधनाशक, शोथघ्न, मस्तिष्क तथा उत्तमागो को बल देने वाली, मूत्रल, रजः प्रवाही, वात तथा मस्तिष्क रोगों मे गुणप्रद औषध है। वातसंस्थान के रोग अपस्मार, अर्दित, पक्षवध, गृध्रसी, आमवात तथा नसो की क्षीणता मे प्रयोग किया जाता है। अवरोधजनित, पाण्डु, जलोदर, प्लीहा शोथ, मूत्र तथा रज अवरोध मे भी लाभकारी है।

(आ)

२९. आवनूस (Diospyros ebenum)

वर्णन—एक बृहत् काय सदा बहार वृक्ष है, इसके पत्र सनोवर के पत्तो की भांति परन्तु उनसे कुछ चौड़े होते है, फल अगूर की तरह पीला, लालिमा लिये हुये, स्वाद किंचित मधुर और बहुत कसैला होता है, बीज और पुष्प मेहन्दी के बीज तथा पुष्पो के समान होते है। इसकी लकड़ी भारी कृष्ण वर्ण की होती है, तोडने पर भीतर से भी कृष्ण वर्ण की निकलती है, यह लकडी ही औषध मे प्रयोग की जाती है। भारत, जंजबार और अफ़रीका मे उत्पन्न होती है।

गुण तथा उपयोग—शोषक, शोथनाशक, लेखन, रक्तस्तम्भक, तथा रक्तशोधक है, अधिकतया रक्तशोधक योगों मे इसका बुरादा डाला जाता है, व्रण तथा नेत्ररोगो मे भी उपयोगी है।

३० आबरेशम (Bombys Mori)

वर्णन—एक कृमि का घर है, जिसको वह अपनी लार (थूक) से बनाता है, जब तक यह घर अपने विशेष रूप में रहता है,

इसको कोया आबरेशम, वा आवरेशम ख़ाम (अपक्व) कहते है, इसे कैंची से कुतर कर (कीट को बाहर निकाल कर) औषध मे प्रयोग करते हैं।

गुण तथा उपयोग—मनः प्रसाद कर, कफस्रावी, गाढे दोषों को तरल करने वाला, कास-श्वास और प्रतिश्याय मे कफ को पतला करने तथा बाहर निकालने के लिये प्रयोग किया जाता है, हृदय रोगों मे हृदय को वल देने के लिये उपयोग में लाया जाता है, आवरेशम जला हुआ लेखन होने के कारण नेत्ररोगो मे सुरमे के योगो मे डाला जाता है ॥

३१. आलूबखारा (**Prunus Bokhariensis**)

वर्णन—यह आलूचे की जाति का एक प्रसिद्ध फल है, बड़े वेर वा आलु के समान आकार वाला, वर्ण लालिमा लिये कृष्ण, और स्वाद मे चाशनीदार खट्टमिट्ठा होता है, यह बुखारा देश का उत्तम समझा जाता है। भारत मे बलख तथा अफ़गानिस्तान से आता है ॥

गुण तथा उपयोग—पित्त शामक, रक्त उग्रता संशमन करने वाला तथा मृदु विरेचक है। पैत्तिक शिरशूल, ज्वर, वमन और तृष्णा मे लाभप्रद है, हृदय की उष्णता तथा दाह को शान्त करता है, पित्त विरेचक है ॥

३२. आलूबालू (**Purnus Cerasus**)

वर्णन—एक वृक्ष का फल है, जो पश्चिम हिमालय, पजाब तथा काश्मीर, सयुक्त प्रांत मे उत्पन्न होता है, स्वाद के भेद से यह चार प्रकार का होता है, मधुर, खटमिट्ठा, अम्ल और कसैला, और प्रत्येक के गुण भिन्न भिन्न हैं ॥

गुण तथा उपयोग—मधुर स्वाद वाला, उर को नरम करने वाला, मूत्रल, वृक्क तथा वस्ति की अश्मरी को बाहर निकालने वाला है। इस लिये इसे कण्ठ की शुष्कता, तथा कास में उपयोग किया जाता है, रेचक है, सौफ़ के सहित प्रयोग करने

से रज को खोल कर लाता है, इसका गोंद भी यही गुण करता है तथा इन रोगो मे ही प्रयोग किया जाता है, अम्ल स्वाद वाला, मतली, वमन, पित्त तथा रक्त के जोश को शान्त करता है, विबन्धकारक है, यकृत तथा आमाशय बल्य है, परन्तु मधुर आमाशय के लिये हानिकर है; कसैला काबज़ है, आलूबालू का शरबत बनाया जाता है, जो मूत्रावरोध तथा अश्मरी को निकालने के लिये लाभकारी है ॥

३३. आशा

वर्णन—यह पहाडी पोदीना का एक प्रकार है, शाखायें बारीक और पतली होती है, और उन पर छोटे २ पत्र लगते है, जिन पर रुई सी लगी होती है, पुष्प छोटा सा गोलाकृति और इसके बीज राई की तरह होते है।

गुण तथा उपयोग—स्वेदल, मूत्रल तथा रज प्रवाही, अधिक मात्रा मे प्रयोग करने से गर्भपात कर देती है, कफस्रावी, वातानोलोमक, विरेचक तथा कृमिनाशक है। वात तथा वात कफज रोगो मे भी उपयोग की जाती है।

३४. आस (**Myrtus Communis**)

वर्णन—यह एक बड़ा वृक्ष है, इसके पत्र और फल (काली मिरच) के समान परन्तु उससे बड़े तथा कृष्ण वर्ण के होते हैं। यही औषध रूप मे ग्रहण किये जाते है, पत्रो को बरग आस वा बरग मोरद और बीजों को हब्बलास कहते है।

गुण तथा उपयोग—बीज–सग्राही, रक्तस्तम्भक, स्वेदावरोधक, आमाशय तथा हृदय बल्य, अतिसार, रक्त अतिसार मे उपयोगी है, शरबत हब्बअलास इसका विख्यात योग है। पत्रों को दग्ध अग, उष्ण शोथ, तथा शिरशूल शान्ति के लिये लेप रूप से उपयोग किया जाता है। वेदनाशामक, शोषक तथा शिर के केशो के लिये गुण दायक है।

(इ)

३५. इमली बीज (**Tamarindus Indicaseeds**)

वर्णन—प्रसिद्ध द्रव्य है, कठोर, लाल वर्ण के कालिमायुक्त होते हैं, तोड़ने पर भीतर से श्वेत वर्ण की गिरी निकलती है, जो कि औषधरूप मे प्रयोग की जाती है।

गुण तथा उपयोग—सग्राही, स्तम्भक, वीर्य शोषक, इसे प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का 'पतलापन' में पृथक वा अन्य औषध के साथ प्रयोग करते है, प्रमेह मे विशेषतया गुणप्रद है।

३६. इसपग़ोल (**Plantago ovata**)

वर्णन—यह एक वूटी के छोटे २ बीज होते है, वर्ण कुछ श्वेत गुलावी होता है, मुख मे इसको रखने से लुआब उत्पन्न होता है, इसके छिलके को सबूस इसपगोल तथा सत इसपगोल कहते है।

गुण तथा उपयोग—शोथनाशक, पित्तज शोथ शामक, तृषा तथा तीव्र ज्वर शामक, मृदु विरेचक, चिपकने वाला, भुना हुआ इसपगोल संग्राही होता है। इसको अधिकतया अतिसार तथा प्रवाहिका, मरोड़ आदि में प्रयोग किया जाता है, यह अपने चिपकने के गुण के कारण सुद्धों को फिसला कर बाहर निकाल देता है, और आन्त्र की खराश को शान्त करता है, इसी पिच्छिलता के कारण ही इसे शुष्क कास, जिह्वा रूक्षता तथा उर की रूक्षता मे प्रयोग करते है, अन्त्र रूक्षता के कारण कोष्ठ बद्धता मे बहुत लाभप्रद है, इसे उष्ण शोथ मे लेप रूप मे प्रयोग किया जाता है, यह पित्तशामक तथा प्रवाहिका नाशक है।

(ई)

३७. ईरसा (**Iris Germanica**)

वर्णन—यह नीले फूल वाली सोसन की जड़ है, यह कठोर ग्रन्थियुक्त सुगन्धित जड़ होती है, इसकी त्वचा नील वर्ण तथा लालिमा वर्ण की होती है, भीतर से पीली लाल वर्ण की होती है,

उत्तर भारत, ईरान तथा यूरोप के मध्य तथा दक्षिणी देश इसके उत्पतिस्थान हैं ॥

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, अवरोधनाशक, कफस्रावी, दोषपाचक, शोषक, लेखन, मूत्रल, मृदु विरेचक, पित्त श्लेष्म विरेचक, विषनाशक, फुप्फुस को कफ दोष से शुद्ध करना इसका विशेष कार्य है ॥ वात, कफ, तथा वात कफ़ज रोग, प्रतिश्याय, कास, श्वास, कण्ठ तथा श्वास नलिका की रूक्षता, पार्श्वशूल, उरः शूल, वातकफ सन्निपात, कम्पवात, सन्यास, पक्षवध, और विस्मृति में लाभप्रद है, दोष तारल्यजनन तथा प्रमाथी होने के कारण मूत्र तथा रज को खोलता है, और इसीलिये जलोदर तथा यकृत विकार जनित पाण्डु मे उपयोगी है। लेखन गुण होने से नेत्ररोगो मे तथा व्रण मे लाभकारी है ॥

(उ)

३८. उक़्वान (**Matricaria Parthenium**)

वर्णन—यह एक वूटी है, पत्र धनियाँ के पत्र के समान, पुष्प श्वेत वर्ण का मध्य से पीला होता है, बू खराब तथा स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथघ्न, प्रमाथी, वातानुलोमक, स्वेदल, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवाही, इसे जलोदर, आमाशय दुर्बलता, आध्मान, आमाशय तथा मूत्राशय मे जमे रक्त को पिघलाने तथा शोथ को नष्ट करने के लिये प्रयोग किया जाता है, कास तथा श्वास मे इसका अवलेह मधु मे बना कर चटाते है, मूत्र तथा आर्त्तव अवरोध मे इसका क्वाथ पिलाते है।

३९. उन्नाब (**Zizyphus**)

वर्णन—प्रसिद्ध फल है, जो बेर के समान गोल, लाल वर्ण तथा स्वाद मे मधुर सूखा हुआ होता है, भारतवर्ष मे भी उत्पन्न होता है, परन्तु ईरान से आने वाला गुणों मे उत्तम होता है ॥

गुण तथा उपयोग—त्रिदोष पाचक, वक्ष को मृदु करने वाला, कफस्रावी, मृदु विरेचक, शीतल, रक्त को शोधन करने वाला तथा उसकी उग्रता को शान्त करने वाला है। इसे प्रसेक, प्रतिश्याय, कास, श्वास, वक्ष रूक्षता तथा दोषों को पकाने के लिये अधिकतया प्रयोग किया जाता है, रक्त तथा पित्तविकार-जनित ज्वरों मे यथा शीतला, मसूरिका आदि मे शान्ति प्रदान करने तथा तृषा शान्त करने के लिये क्वाथ करके पिलाया जाता है, इसका शर्बत वना कर रक्त दुष्टि (फोडे, फुँसी, खाज) मे तथा कास आदि मे पिलाया जाता है।

४०. उशक (Dorema Amoviacum)

वर्णन—यह एक वृक्ष का गोंद है, इसके अश्रुवत गोल दाने होते है। वर्ण पीला, स्वाद तिक्त और एक विशेष प्रकार की गन्ध युक्त होता है। जल मे घुल कर एक दूधिया मिश्रण सा बनाता है। फारस, यूरोप तथा अफगानस्तान इसका उत्पत्तिस्थान है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, कफस्रावी, विरेचक, लेखन, रजप्रवाही, उदर कृमि नाशक, प्रमाथी, इसको कण्ठमाला, संधिशोथ और वद्ध को लीन करने के लिये लेप रूप मे लगाया जाता है, दाद आदि चर्म रोगों पर प्रयोग किया जाता है, कास, श्वास मे कफ का स्राव कराने के लिये तथा कफ की दुर्गन्ध दूर करने के लिये इसका उपयोग होता है। कण्ठरोहणी, प्लीहा शोथ, अपस्मार, पक्षवध, आमवात, वातरक्त, अर्दित आदि मे उपयुक्त औषध मे मिलाकर इसका उपयोग किया जाता है। प्रधानतया गहरी तथा कठिन शोथ को नष्ट करने के लिये इसका प्रयोग होता है।

४१. उशनान (Soda Plants)

वर्णन—यह एक वूटी है, जिसके दो भेद है, एक मे पत्र नही लगते, परन्तु इसकी वारीक २ शाखाये होती है और इन शाखो मे

गांठें लगती है, दूसरी प्रकार के भी वारीक २ शाखाये होती है परन्तु उसमें छोटे २ पत्र भी लगते हैं, जो मोटे एक ओर से सबज नीलवर्ण और दूसरी ओर से गहरे सवज होते है, इन पत्रों को जिस वस्तु पर रगड़ा जाये, उसे काला कर देते है, दोनो प्रकार का स्वाद खारा होता है, और इनसे क्षार बनाई जाती है।

गुण तथा उपयोग—लेखन, मूत्र तथा आर्त्तवप्रवाही, रेचक इसको जलाकर यथाविधि इसकी क्षार वनाई जाती है, जो कि वहुत से रोगों मे लाभदायक है, वैसे भी उशनान को मूत्र, आर्त्तव अवरोध तथा गर्भपात के लिये प्रयोग करते है, रेचक तथा मूत्रल होने के कारण जलोदर मे प्रयुक्त करते है।

४२. उशबा मग़रबी (**Sarsa Redix**)

वर्णन—यह चोबचीनी की जाति की एक बेलदार बूटी की लम्बी २ पतली गोल शाखाये और जडे होती है, जो झुरी दार तथा उनके साथ-मुड़े हुये तन्तु लगे रहते है, रंगत भूरी लालिमा युक्त, स्वाद तिक्त तथा कुछ तीक्ष्ण हाता है।

गुण तथा उपयोग—शोथध्न, स्वेदल, मूत्रल, रक्तशोधक, इस लिये इसे वातरोग, पक्षवध, अर्दित, जलोदर, आमवात मे प्रयोग किया जाता है, जीर्ण आमवातमे अधिक उपयोगी है—रक्त-शोधक होने के कारण प्रत्येक प्रकार की रक्तदुष्टि तथा कुष्ट आदि मे और आतशक मे विशेष करके उपयुक्त होता है।

४३. उसरब (**Plumbum**)

वर्णन—हिन्दी मे नाग तथा सीसा कहते है, प्रसिद्ध धातू है, इसका वर्ण श्वेत सबज़ी लिये हुआ होता है और यह अत्यन्त मृदु होती है।

गुण तथा उपयोग—शोषक, वीर्यप्रद तथा स्तम्भक, सग्राही, रक्त स्तम्भक, इसे शुद्ध करके इसकी भस्म बनाई जाती है, जो शीघ्रपतन, प्रमेह, स्वप्नदोप, रक्तपित्त तथा मधुमेह में प्रयोग करते है। सीसे को

घिस कर पित्तज शोथ तथा अर्श के मस्सों पर लगाते हैं, कण्ठमाला पर इसका पत्रा बनाकर बांधा जाता है, इसे जलाकर (सफेदा तथा सिंदूर) को व्रणो मे अधिकतया प्रयोग किया जाता है।

४४. उस्तोखुदूस (Lavendula stoechas)

वर्णन—यह एक बूटी है, जिसमे पुष्प बहुत लगते हैं और उनसे कर्पूर सी तीव्र गन्ध आती है, इसके शुष्क किये हुये पत्र तथा पुष्प औषधरूप मे ग्रहण किये जाते है, उत्पत्तिस्थान यूरोप, अरब तथा भारतवर्ष मे बिहार और बंगाल है ॥

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, वातसंस्थान तथा मस्तिष्क-शोधक तथा बल देने वाला, प्रमाथी, आमाशय बल्य, वातनुलोमक, वातकफ विरेचक, उस्तोखदूस को अधिकतया मस्तिष्क तथा वात-संस्थान के रोगो मे यथा पक्षवध, अपस्मार, अर्दित, आमवात तथा कफज प्रतिश्याय मे प्रयोग किया जाता है, मस्तिष्क को शुद्ध-करने तथा उसे बल देने के लिये अपूर्व औषध है ॥

(ऊ)

४५. ऊदकुमारी, ऊदग़रकी (Aquilaria agallocha)

वर्णन—उत्तम ऊद (अगर—अगरू) जो काला—चिकना, भारी और सुगन्धित होता है—और विशेपतया जो जल मे डालने से डूब जाता है, उसे युनानी वैद्य ऊद गरकी कहते है—ऊद कुमारी भी अगरू का एक प्रसिद्ध भेद है, व्यवहार मे कच्चा ऊद (ऊद खाम) लिया जाता है—इसके गुण तथा उपयोग से वैद्य जन भली भाति परि-चित है, इस लिये पिष्टपेषण व्यर्थ है ॥

४६. ऊदबलसान (Balsamodendron Opobalsamum)

वर्णन—इसका एक बडा वृक्ष होता है—इसकी लकड़ी सुग-न्धित, भारी और लाल गन्धमी वर्ण की होती है, मिश्र, श्याम और अरब देश इसका उत्पत्तिस्थान है, इसके वृक्ष मे चीरा

देने से ललाई लिये हुये पीला राल्दार सुगन्धित तैल निकलता है-- जिसे रोगन बलसान कहते हैं---काष्ठ, बीज तथा तैल औषध प्रयोग मे आते है ।। इसके बीजो को हब्ब बलसान कहते है ।।

गुण तथा उपयोग---बल्य, मस्तिष्क के दोषों को बाहर निकालने वाला, कफनि.सारक, आमाशय दोपहर तथा आमाशय बल्य, गर्भस्रावक, ऊदबलसान को मस्तिष्क शोधक होने के कारण मस्तिष्क रोगो, यथा अपस्मार, शिरोभ्रम, मोह मे प्रयोग किया जाता है, कफ नि सारक होने के कारण कफज कास, श्वास मे देते हैं, आमाशय के कफज दोष को नष्ट करने के लिये तथा उसे बल देने के लिये भी प्रयोग किया जाता है । बीज (हब्ब बलसान) भी इन्ही रोगो मे प्रयोग किये जाते है विशेष करके आमाशय बल्य है । तैल (रौगन बलसान) वात कफज रोगो मे और विशेषतया औपसर्गिक पूयमेह मे उपयोगी है---कुछ वाजीकरण भी है ।

४७. ऊद सलीब (**Paeonia officinals**)

वर्णन---यह एक बूटी की जड है---इसके दो भेद है, स्त्रीलिंग, और पुलिग, पुलिग जड को तोडने से इसके भीतर दो रेखा एक दूसरे को काटती हुई गुजरती है जैसे कि सलीब मे होता है---इस लिये इसे ऊद सलीब कहते है । औ यही औषध मे उपयोग किया जाता है ।

गुण तथा उपयोग---यह शोषक, स्रोत शोधक, शोथ विलयन, लेखन, मूत्रल, रज प्रवर्त्तक, वेदना शमक तथा ज्ञानतन्तुओं को बल देने वाला है, अधिकतया मस्तिष्क तथा वातसस्थान के रोगो मे व्यवहार किया जाता है---यथा अपस्मार, कम्पवात, अर्दित, पक्षवध, उन्माद, मस्तिष्क शोथ, अपतन्त्रक, और बालग्रह मे प्रचुरता से उपयोग किया जाता है, यकृत अवरोध, आमाशय, वृक्क, तथा बस्ति के शूल मे भी प्रयोग किया जाता है---अपस्मार मे विशेष करके उपयोगी है ।

क

४८. ककड़ी बीज (**Cucumis utilissimus**)

वर्णन—ककडी एक प्रसिद्ध वेलदार पौदे का फल है। इसके वीज खीरे के वीज के समान होते है, परन्तु इनसे कुछ वारीक होते है। खीरे तथा ककड़ी वीज को युनानी चिकित्सक तुखम खयारैन कहते है।

गुण तथा उपयोग—मूत्रल, पित्तशामक, रक्त उग्रता को शान्ति प्रदान करने वाले, तृषा नाशक तथा लेखन और स्रोत विशोधक है। इस लिये पैत्तिक ज्वरो, सुजाक, दाहयुक्त मूत्र मे तथा यकृत आमाशय के दाह को शान्त करने के लिये और वृक्क तथा वस्ति की अश्मरी को निकालने के लिये अधिकतया प्रयोग किया जाता है।

४९. कजमाजज (**Tamarix galls**)

वर्णन—छोटी माई वा वड़ी माई दोनो को कजमाजज कहते है। परन्तु अधिकतया वडी माईं को कहते है, जो झाऊ वृक्ष का फल है। यह कुछ गोल ग्रंथिल, और विभिन्न आकार के मटर से लेकर रेठे समान होते है।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, रक्तस्तम्भक, लेखन, शोषक, अवरोध नाशक, काटने वाली, आमाशय, यकृत तथा प्लीहा को वल देने वाले होते है। सग्राही होने के कारण दंतशूल, तथा मसूडो की शोथ मे मजन रूप मे प्रयोग होता है, अतिसार तथा रक्त अतिसार मे भी प्रयुक्त किये जाते है, कण्ठपीडा, तथा गलेकी भीतरी सूजन मे इसके क्वाथ के गरारे कराये जाते है। रक्तपित्त, रक्त-प्रदर, नकसीर में भी इसका उपयोग होता है॥

५०. कतीरा (**Persian Tragacanth**)

वर्णन—यह एक काटेदार वृक्ष का गोद है, यह श्वेत तथा पीतता लिये हुये होता है, यह जल मे डालने से फूल जाता है, परन्तु गोद कीकर (सनमय अरवी) के समान हल नही होता।

गुण तथा उपयोग—यह चिपकने वाला, मृदु सारक, दाह तथा

उष्मा को शान्त करने वाला, रक्त स्तम्भक तथा छाती को नरम करने वाला और शरीर को मोटा करने वाला है, अधिकतया कास, रक्तपित्त, कण्ठ तथा छाती की रूक्षता, फुप्फुसव्रण तथा स्वरभेद मे उपयोग किया जाता है, इसी प्रकार आन्त्रव्रण, प्रवाहिका, मूत्रनलिका व्रण तथा वस्तिव्रण मे भी प्रयोग करते है, जयपाल आदि तीव्र विरेचक औषध के पश्चात् दाह शान्ति के लिये भी उपयोगी है।

५१. कद्दूबीज (**Cucurbita Lagenaria**)

वर्णन—लम्बे कद्दू (लौकी, घीया) के बीज है, सारे भारतवर्ष मे उत्पन्न होता है।

गुण तथा उपयोग—दाह प्रशमन, स्निग्ध, पित्त तथा रक्त की उग्रता को सशमन करने वाला, मूत्रल, बृहण तथा छाती मे मृदुता उत्पन्न करने वाला है, इन्ही गुणो के कारण कद्दूबीज तथा गिरी कद्दूबीज, (मग़ज तुख़म कद्दू) शारीरिक दुर्बलता, वृक्क दुर्बलता, पित्त तथा रक्त की उग्रता, तृषा की अधिकता, आमाशय सोजश, फुप्फुस रूक्षता, पित्तज कास, रक्तपित्त और पैतिक ज्वरो मे इसका शीरा (जल से घोट कर सरदाई की भांति) निकाल कर पिलाया जाता है, मस्तिष्क की रूक्षता मे तथा अनिद्रा मे पान, लेप तथा नस्य रूप मे प्रयोग किया जाता है, मूत्रल होने के कारण मूत्र दाह, सुजाक, मूत्रकृच्छ्र में भी उपयोग मे लाया जाता है, बीजों का तैल भी निकाला जाता है। **रोग़न मग़ज़ तुख़्म कद्दू** अनिद्रा, शिर पीड़ा तथा मस्तिष्क को तरावट पहुंचाने के लिये अभ्यग रूप मे प्रयोग किया जाता है, विशेषतया मगज तुखम कद्दू मस्तिष्क बल्य तथा वृष्य है।।

५२. कनौचा (**Phyllanthus Madraspatensis**)

वर्णन—यह एक पौधे के बीज है, जो अलसी के समान भूरे तिकोने और कोषावृत होते है, स्वाद फीका और लुआबदार होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथ को पकाने वाला, चिपकने वाला और शामक गुण वाला है, आमाशय तथा आन्त्र को बल देने वाले, वातानुलोमक तथा मृदु सारक है, परन्तु भुने हुये सग्राही गुण रखते है । इसी लिये आमाशय तथा आन्त्र को बल देने के लिये तथा प्रवाहिका और रक्त अतिसार मे भुने हुये उपयोग किये जाते है, गम्भीर शोथ, और फोडे, फुसियो को पकाने के लिये लेप रूप में वा पुल्टस बना कर प्रयोग किये जाते हैं

५३. कन्तरीयून दकीक

वर्णन तथा उपयोग—यह एक बूटी है, जो खड़े पानी के किनारे तथा गढो मे जमती है, कफज रोगो, सधिशूल, प्लीहा, यकृत सशोधन करने के लिये प्रयोग की जाती है । शोषक, विरेचक तथा दोषो को निकालने वाली है । व्रणशोथ नाशक तथा लेखन धर्म भी इसमें है ।

५४. कबाबा खन्दान (Xanthoxylum alatum)

वर्णन—कबाबचीनी से बड़ा बीज होता है, जो अर्ध भाग तक फटा होता है, और इसके गर्भ मे छोटा सा गोल, कृष्ण वर्ण का चमकदार बीज होता है, इस की बू सुगन्धित, स्वाद तीव्र तथा तीक्ष्ण गन्ध वाला होता है ।

गुण तथा उपयोग—यह एक सुगन्धित औषध है, इसका सूघना तथा खाना हृदय तथा मस्तिष्क के लिये उत्तम है, यह शीत आमाशय तथा यकृत को बल देता है, पाचन शक्ति को बलप्रद, तथा वातानुलोमक और ग्राही है, यह अधिक करके आमाशय तथा यकृत के शीत रोगो मे तथा दस्तों को बन्द करने के लिये प्रयोग किया जाता है, सुगन्धित होने के कारण मुख की बदबू को दूर करने के लिये चबाया जाता है, मस्तिष्क के शीत रोगों मे भी उपयोगी है ।

५५. कबूतर (Pigeon)

वर्णन तथा प्रयोग—प्रसिद्ध सुन्दर पक्षी है, इसका मांस विशेषतया इसके बच्चे का मास शीघ्र पचता ह, और इसमे आहार विशेष

होता है, शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है, क्षीण तथा दुर्बल मनुष्यो के लिये उपयोगी है, शरीर को मोटा करता है, और वाजीकर है, इसे अर्दित, अर्धांग, पक्षवध, तथा श्वास मे भी प्रयोग करते है. जगली कबूतर को कृष्ण लवण सहित जला लिया जाता है, यह राख श्वास रोगी को मधु मे मिला चटाने से बहुत ही लाभ होता है।

५६. करतम बीज (**Carthamus Tinctorious**)

वर्णन---इसे हिन्दी मे कुड़ वा कुसुम्भे के बीज कहते है, इस की शाखाये अपक्व अवस्था मे सबज, परन्तु पक्व होने पर श्वेत वर्ण की हो जाती है, फूल काटेदार लालिमा लिये केशरीय वर्ण का होता है, और यह अधिकतया कपडे रंगने के काम आता है, फूल के प्रत्येक कोष मे सात, आठ दाने बीज के होते है, और यही बीज औषध प्रयोग मे आते है।

गुण तथा उपयोग---कफदोष पाचक तथा विरेचक, कफस्रावक, वीर्यप्रद, बल्य तथा आर्तवजनन–कफज रोग, कास, श्वास, प्रतिश्याय, यकृतविकार जनित जलोदर, तथा आन्त्र शूल मे प्रयोग किया जाता है, स्वरभेद तथा कण्ठ की खरखराहट मे उत्तम है, आर्तवविकारनाशक तथा वीर्यप्रद योगो मे भी डाला जाता है ॥

५७. करफ़स (**Apium Graveolens**)

वर्णन---एक पौदे के बीज है, जो रूप मे सौंफ रूमी (अनीसून) के समान स्वाद मे तीव्र और किंचित सुगन्धित होते है। यह बीज और इस पौदे की जड प्रयोग मे लाई जाती है।

गुण तथा उपयोग---अवरोध नाशक, स्वेदल, वातानुलोमक, क्षुधाकारक, अश्मरी भेदक तथा मूत्रल और आर्त्तव प्रवाही है। इसे कास, कफज्वर, वातकफ़ सन्निपात, गृध्रसी, वातरक्त, कटिशूल तथा कफज रोगो मे देते है, जलोदर, मूत्र तथा आर्त्तव अवरोध और आध्मान मे उपयोगी है, वृक्क तथा वस्ति की अश्मरी को भेदन कर उसे नि सरण करने के लिये भी उपयोग किया जाता है ॥

५८. करजुआ (Caesalpivia bonducella)

वर्णन—यह एक बेलदार बूटी है, इसकी शाखों पर कांटे है, इसमें बडी २ कांटेदार फलियां लगती है, जिनके भीतर सुपारी समान वा उससे छोटे बीज निकलते है, जिनका वर्ण नीलिमा लिये होता है, बीज को तोड़ने पर इसके भीतर से श्वेत वर्ण की गिरी निकलती है, यह गिरी ही औषध रूप मे काम मे आती है, इसका स्वाद तिक्त होता है, इसे ही मगज तुख़म करजुआ कहते है।

गुण तथा उपयोग—शोषक तथा दूषित तरल को चूसता है, वातानुलोमक तथा उदरकृमिनाशक है, शोधक तथा मृदुकारक है, ज्वरो और विशेष कर विषम ज्वरों मे उत्तम है, आक्षेपहर तथा शोथ प्रतिबंधक है, इसे शोषक तथा चूषक होने के कारण जलोदर तथा अण्डकोषों मे जल भर जाने में लेप करते है, नौबती ज्वरो के नष्ट करने के लिये बहुत से योगों मे विशेष करके डाला जाता है, इसकी गिरी को तिलो के तैल मे जलाने के पश्चात् इस तैल को साफ कर गन्दे व्रणों पर तथा खाज पर लगाते है ।

५९ कसूसबीज (Cascuta Europeaseeds)

वर्णन—यह आकाश बेल (अमर बेल) के बीज है, यह बीज मूलीबीज के समान होते है, वर्ण लाल, पीतता युक्त तथा पीत श्वेतता लिये होता है ।

गुण तथा उपयोग—गाढे दोषो को तरल कर निकालने वाले, अवरोध नाशक, आमाशय तथा यकृत को बल देने वाले, शोथ विलयन, वातानुलोमक, जीर्ण ज्वरनाशक, मूत्रल तथा ऋतुप्रवाही, यकृत तथा आमाशय शोथ, जीर्ण कफज विबन्ध युक्त ज्वर तथा यकृत-विकार जनित पाण्डु मे अतीव गुणकारी है ।।

६०. कहरूबा (तृणकान्त)

वर्णन—यह एक वृक्ष का गोंद है, जो उज्ज्वल पीतता लिये होता है, इसमे घास और तृण को अपने ओर चुम्बक के समान

खेंच लेने का गुण होता है। कहरूवा शमई इसका सर्वोत्कृष्ट भेद है, और यही औषध रूप मे ग्रहण करना चाहिये।

गुण तथा उपयोग—हृदय वल्य, आमाशय तथा आन्त्र बल्य, और बाहर तथा भीतर के रक्त प्रवाह का रोधक तथा स्तम्भक है, दिल की धड़कन मे विशेप लाभप्रद है, इसे हृदयावसाद, ख़फ़कान, के लिये हृद्य योगों मे डाला जाता है तथा नकसीर, रक्तपित्त, रक्त-प्रदर आदि रोगों मे सफलता से विशेषतया प्रयोग किया जाता है।।

६१ काकनज (**Physalis alkakenji**)

वर्णन—यह मकोय की जाति की एक विदेशीय बनस्पति है, सका फल मकोय से बड़ा होता है, अपक्व अवस्था मे सबज और पक्व अवस्था मे लाल वर्ण का होता है—यही फल औषध रूप मे लिया जाता है, यह फल ईरान से भारत म आता है।

गुण तथा उपयोग—निद्रा लाने वाला, मूत्रल, पित्त विरेचक, यकृत शोधक, कृमि नि.सारक, मूत्रल होने के कारण वृक्क, मूत्राशय अश्मरी तथा वृक्क, मूत्राशय व्रण तथा मूत्रमार्गस्थ व्रण और पूयमेह मे लाभकारी है, पित्तविरेचक होने के कारण यकृत-विकारों मे तथा पैत्तिक पाण्डु मे उपयोगी है।

६२. कागज (**Paper**)

वर्णन तथा उपयोग—प्रसिद्ध वस्तु है, काग़ज जला हुआ सग्राही, रक्त स्तम्भक तथा शोषक है, इसे जलाकर प्रतिश्याय मे धूनी देते है, इसकी राख को नकसीर रोकने के लिये नासा मे प्रधमन करते है, मसूड़ो का रक्त बन्द करने के लिये मजन रूप मे इसका प्रयोग किया जाता है, ताजा व्रणो मे रक्त रोकने के लिये तथा व्रण को शुष्क करने के लिये इसका धूडा धूड़ते है, इसी प्रकार फुफ्फुस व्रण, आन्त्रव्रण तथा आमाशय व्रण मे भी योग्य औषध के साथ इसका उपयोग होता है।

६३. कालादाना (Pharbitis nil)

वर्णन—इसे हब्बलनील और तुख्म इश्कपेचा भी कहते है, यह कृष्ण वर्ण के बीज है, जिनके भीतर से श्वेत गिरी निकलती है, स्वाद मधुर परन्तु कुछ तिक्तपना लिये और तीक्ष्ण होता है।

गुण तथा उपयोग—इसका बाह्य गुण लेखन है, भीतर देने से यह विरेचक गुण करता है, रक्तशोधक तथा उदरकृमिनाशक है, जल समान दस्त लाता है, इसे चर्म रोगो पर लेप रूप मे प्रयोग करते है, सब प्रकार की खाज मे खाड मिलाकर चूर्ण रूप मे भीतर खिलाते है, सधिशूल, गृध्रसी, जलोदर तथा कृमिरोग मे भी इसका प्रयोग होता है।

६४. कासनी (Cichorium intybus)

वर्णन—कासनी एक प्रसिद्ध स्वयजात बूटी है, इसके पत्र चौड़े पालक के पत्तों की तरह होते है—पुष्प नीलिमा लिये हुये होता है, बीज श्वेत मिट्टी वर्ण के होते है, स्वाद तिक्त होता है, कासनी के पत्र बीज तथा जड उपयोग मे लाई जाती है, तीनों के गुण एक जैसे है, भारत मे उत्तरी पजाब और काश्मीर मे उत्तम होती है।

गुण तथा उपयोग—अवरोधनाशक, मूत्रल, रक्तशोधक, पित्त तथा रक्त की उष्णता तथा प्रकोप को शान्त करने वाली है, यकृत, प्लीहा के पैत्तिक शोथ को नष्ट करने वाली तथा आमाशय और यकृत को बल देने वाली है, यकृत, प्लीहा अवरोध तथा शोथ, पाण्डु, जलोदर, आमाशय के पैत्तिक विकार तथा प्रदाह मे प्रयोग की जाती है, मूत्रल होने के कारण मूत्र नाली के शोधन के लिये पिलाते है। पैत्तिक शोथ मे पत्रो को और औषध के साथ मिला कर लेप रूप मे प्रयोग किया जाता है।

कासनी की जड—दोषो को पकाने वाली, मूत्र तथा रज-प्रवाही, प्रमाथी, शोधक, शोथनाशक है, दोषपाचक होने के

कारण कफ़ ज्वरों मे सफलता से प्रयोग की जाती है, शोथनाशक तथा मूत्रल होने के कारण यकृतशोथ, जलोदर, संधिवात, तथा मिश्रित दोष जनित जीर्ण ज्वरों मे विशेपतया उपयोग में लाई जाती है, गर्भाशय शोथ तथा आर्त्तव अवरोध मे इसका प्रयोग होता है।

कासनी बीज--पित्त तथा रक्त शामक, अवरोध नाशक, मूत्रल, पैत्तिक ज्वर विनाशक, इस लिये यकृत तथा प्लीहा रोग यथा पाण्डु, जलोदर, यकृतावरोध, यकृतशोथ, जीर्ण ज्वर जो यकृत-विकार से हो, के लिये विशेषतया प्रयोग किये जाते है।

६५. काहू (**Lactuca staina**)

वर्णन---यह एक बूटी है---जो बागी (लगाया हुआ) और जगली स्वय जात इस भेद से दो प्रकार की है, बागी काहु के पत्तो का साग पका कर खाया जाता है, और इसके बीज औषध रूप मे प्रयोग किये जाते है, काहू के पौदे से खशखाश की भाति अहिफेन निकलती है, जो कि अहिफेन काहू कहलाती है, यह भी औपध रूप मे प्रयोग की जाती है।

गुण तथा उपयोग---काहू रक्त की उष्णता तथा उग्रता को कम करता है, रक्तशोधक तथा तृषा शामक है, निद्राप्रद और मूत्रल है, आमाशय बल्य और दीपक पाचक है, स्त्रियो मे दूध बढ़ाता है, जलवायु परिवर्तन से जो शरीर मे विकार उत्पन्न होते है, यह उनको शान्त करता है। पत्र शाक की भाति अधिकतया उपयोग किया जाता है, पित्ताज तथा रक्तज प्रकृति वाले मनुष्यो के लिये बहुत सात्मय है, पित्ताज कास, खारश, उन्माद, मद, पाण्डु, कामला, पैत्तिक ज्वर तथा पूयमेह मे उपयोगी है, जलवायु जनित दोषो को नष्ट करने तथा अजीर्ण दोष जनित वायु दोष को नष्ट करने मे भी इसका प्रयोग किया जाता है।

काहू वीज---काहू बीज श्वेत वर्ण के छोटे २ और चमकीले तथा लम्बे होते है। इनका स्वाद फीका होता है।

गुण तथा उपयोग—वेदना शामक, निद्राप्रद तथा नशा लाने वाला, शान्तिदायक, रक्त की उग्रता और पित्त की तेजी को नष्ट करने वाला तथा तृषा शामक, वीर्यशोषक तथा बालो को वल देता है। इस लिये पैत्तिक शिरशूल तथा अनिद्रा मे माथे पर लेप करते है, तथा बालों को गिरने से रोकने के लिये भी शिर पर लेप करते है, पैत्तिक तथा रक्तज ज्वरो मे उन्माद, मद आदि मे अकेला तथा अन्य औषध सहित प्रयोग किया जाता है, स्वप्न-प्रमेह और कामवासना को कम करने के लिये भी प्रयोग करते है।

रोग़न काहू—बीजों से तैल निकाला जाता है, जो निद्रा लाने के लिये शिर पर मला जाता है तथा नाक मे टपकाया जाता है, शिर के बालो के लिये भी उत्तम है।

काहू की अफीम—काहू के पौदो के तने को चीरा देने से रस निकलता है, जो वायु लगने से शुष्क होकर जम जाता है, इसकी रंगत भूरी वा किंचित लालिमा लिये भूरी होती है, परन्तु भीतर से श्वेत वा पीतता लिये होती है, टूटे मोम की भांति किंचित चमकीली होती है, स्वाद तिक्त और बू ख़शख़ाश की अफ़ीम के समान होती है।

गुण—ख़शख़ाश की अफीम के समान गुण है, परन्तु उसकी तरह ग्राही, तथा पाचन विकार करने वाली नही है, और इसके खाने से आलस्य तथा कमजोरी भी नही होती है।

६६. किबर (Capparis Spinosa)

वर्णन—एक कांटेदार वृक्ष है, जो कठोर तथा रेतली पृथवी पर उत्पन्न होता है, इसकी जड़ श्वेत वर्ण की वडी और लम्बी होती है, इस की छाल मोटी होती है, जो शुष्क होने पर लकड़ी से पृथक हो जाती है, इसे पोस्त बेख़ किबर कहते है, स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग---अवरोधनाशक, लेखन, कफनाशक तथा कफस्रावी, वेदना शामक तथा कृमिनाशक, वातानुलोमक, मूत्रल तथा रज प्रवाही । किवर के फल आमाशय बल्य, क्षुधाजनिक, वातानुलोमक तथा मृदु करने वाला है। इसका प्रयोग वात-संस्थान के रोग, कफज रोग, पक्षाघात, स्वप्ति वात, आमवात, गृध्रसी, वातरक्त मे होता है, शोथविलयन गुण के कारण कण्ठ-माला तथा दूसरे शोथ को निवारण करने के लिये इसकी जड़ तथा पत्रो का लेप किया जाता है, मस्तिष्क शोधन तथा प्लीहावृद्धि और आर्त्तवजनन के लिये विशेषतया प्रयोग किया जाता है ।

६७. किशमिश (**Vytis Vinifera**)

वर्णन---किशमिश एक प्रकार का बीजरहित मुनक्का है, जिसके अंगूर छोटे होते है, शुष्क होकर यही किशमिश कहलाता है, रगत सबज होती है, यह अफगानस्तान तथा बलोचस्तान मे उत्पन्न होता है ।

गुण तथा उपयोग---मन प्रसादकर, बल्य, शोथघ्न, लेखन, सारक, वीर्यप्रद, उर सशोधक, मेध्य तथा शरीर पोपक है, मस्तिष्क, यकृत तथा हृदय को विशेषतया बलप्रद है,. मधुर तथा स्वादिष्ट होती है ।।

६८. कीकर गोद (सनमय अरबी) (**Gum acacia**)

वर्णन---नामानुसार कीकर का गोंद है, इसकी डलिया पीतता लिये अर्ध स्वच्छ होती है, स्वाद फीका लुआबदार होता है ।

गुण तथा उपयोग---चिपकने वाला, शीत सग्राही, छाती तथा कण्ठ की रूक्षता को दूर करने वाला है, फुप्फुस व्रण, रक्तपित्त, रक्तातिसार, प्रवाहिका मे प्रचुरता से प्रयोग किया जाता है, प्रमेह तथा श्वेतप्रदर मे भी उपयोगी है, इसके लुआब की सहायता से औषध की गोलिया तथा चक्रिकाये बनाई जाती है ।

६९. कुन्दर (Boswellia Floribunda)

वर्णन—यह दो तीन गज ऊंचे कांटेदार वृक्ष की गोंद है, जो कटु तथा कुस्वाद होता है, आकृति और रगभेद से यह पाच प्रकार का होता है, परन्तु ताजा, मृदु, ऊपर से सफेद, लेसदार, सुनहरी वर्ण का, जो टूटा हुआ न हो, और जो अग्नि पर शीघ्र ही जल उठे, उत्तम समझा जाता है, यह अच्छी तरह से पिस नही सकता, इसे और औषध के साथ हलके हाथो रगड़ना चाहिये या उष्ण जल मे घोल कर औषध मे डालना चाहिये ।

गुण तथा उपयोग—वातानुलोमक, स्मृति वर्धक, चक्षुष्य, दीपक, पाचक, संग्राही, दोष पाचक, लेखन, हृदय वल्य, रक्त स्तम्भक तथा विष को नष्ट करने वाला है, इस लिये वमन, अतिसार, रक्त अतिसार, रक्तपित्त, रक्त अतिसार मे उपयोगी है, वहुमूत्र मे भी प्रयोग किया जाता है, लेखन होने के कारण नेत्र-रोगों में भी लाभप्रद है और उपयोग मे लाया जाता है ॥

७०. करूवीया (Carum Cauri)

वर्णन—इसे शाह जीरा भी कहते है—यूरूप और ईरान इसका उत्पत्ति स्थान है, यह एक क्षुद्र वनस्पति के बीज है, जीरा श्वेत के के समान इसके बीज है, वर्ण पीला, स्वाद तिक्त तथा तीव्र होता है ।

गुण तथा उपयोग—करूवीया आमाशय तथा आन्त्र पर संग्राही और वातानुलोमक प्रभाव करता है, कृमिनाशक, मूत्रल तथा दीपक पाचक है, उदर रोगों मे अजीर्ण नष्ट करने के लिये वहुधा प्रयोग किया जाता है ॥

७१. कुलफ़ा बीज (तुख़म ख़ुरफ़ा)
(Portulaca Oleracea)

वर्णन—यह एक कोमल, रसदार, प्रसिद्ध साग है, इसके वीज तथा पत्र औषध प्रयोग मे आते है, वीज खशखाश वीज समान तथा कृष्ण वर्ण के होते है ।

गुण तथा उपयोग—शीतल तथा संशमन गुण होने के कारण पित्त तथा यकृत संताप, रक्तपित्त, तृषा, आमाशय, आन्त्र तथा मूत्र-दाह संशमन के लिये अधिकतया प्रयोग किये जाते है, मूत्रल तथा किंचित ग्राही है। भुना हुआ पित्त प्रकृतिवालों के लिये आमाशय, आन्त्रबल्य, संग्राही तथा मधुमेह मे उपयोगी है ॥

७२. कुलंजन (**Alpinia officivarum**)

वर्णन—इसे पान की जड़ भी कहते है। जिसका वर्ण बाहर से लालिमा लिये और भीतर से श्वेत पीतता लिये होता है, स्वाद तीक्ष्ण, काली मिरच समान और चरपरा होता है, यह जड़ प्राय: ग्रथियुक्त होती है।

गुण तथा उपयोग—हृदय बल्य, आमाशय तथा यकृत बल्य उष्णवीर्य, वात तथा कफ़ रोगो मे उपयोगी, वातानुलोमक-मुख को सुगन्धित करता है, कफ़नाशक तथा कफ़स्रावक, लाला, प्रसेक जनन, शीतजनित वेदना नाशक, वाजीकर तथा लेखन है, मन को प्रसन्न करने वाली उपयोगी औषध है ॥

(ख)

७३. खतमी बीज (**Althœ officinalis**)

वर्णन—यह कृष्ण वर्ण के बीज है, भारत मे इसका आयात फारस से होता है। ख़तमी का पौदा मनुष्य समान लम्बा होता है, पत्र बडे २ और खुरदरे होते है, पुष्प सुन्दर गन्धरहित तथा बहु वर्ण होते है, नील वर्ण पुष्प वाली खतमी को खैरु कहते है। इसकी जड़ को रेशा ख़तमी कहते है।

गुण तथा उपयोग—खतमी के बीज और पत्र शोथविलयन, शोथपाचक तथा शोथनाशक होते है, कफदोष पाचक और फुप्फुस को मृदु रखने वाले तथा पीड़ा शामक है। इसकी जड़ सारक है, पित्तज अतिसार, प्रवाहिका, मरोड़ मे लाभप्रद है, मूत्रदाह, पित्तज कास, प्रतिश्याय तथा श्वास मे बहुधा प्रयोग की जाती है ॥

७४. ख़बाजी बीज (Malva sylvestris)

वर्णन—एक बूटी के बीज है। भारतवर्ष मे भी उत्पन्न होती है, परन्तु औषध के लिये फारस से भारतवर्ष मे इसके बीज आते है, यह बीज, गोल, चिपटे और श्वेत वर्ण के होते है।

गुण तथा उपयोग—दोष पाचक, मृदु सारक, चिपकने वाले, मत्रल, पित्त दोष का पाक करने के लिये, उर तथा फुप्फुस की रूक्षता दूर करने के लिये, पित्तज कास तथा स्वरभेद मे उपयोग किये जाते है। चिपकने गुण कारण आन्त्र व्रण, प्रवाहिका, आन्त्र-दाह, वृक्क तथा वस्ति दाह मे भी प्रयोग किये जाते है। खासी, फुप्फुस विकार मे विशेषतया प्रयोग किये जाते है॥

७५ खयारैन वीज।

वर्णन—ककडी तथा खीरे के मिलित बीजो को कहते है।

गुण तथा उपयोग—शीतल पित्त तथा रक्तोष्णता शामक, मूत्रल, शीतल तथा पित्त, रक्त शामक होने के कारण पित्त तथा रक्तोल्वणता, तृषा, आमाशय दाह, पित्तज कास, पैत्तिक ज्वर मे इनका शीरा निकाल कर पिलाते है, मूत्रल होने के कारण यकृत प्लीहा की पैत्तिक शोथ, मूत्रदाह तथा सुजाक मे प्रयुक्त किये जाता है।

७६. ख़रनोब (Ceratonia siliqua)

वर्णन—इस वृक्ष के उत्पत्ति भेद से दो भेद है, (१) बागी (२) जगली, जगली को खरनोब नबती कहते है, बागी एक वडा वृक्ष होता है, इसका पुष्प पीले वर्ण का होता है, इसको एक हाथ लम्बी पतली २ फलीया लगती है, जिस के भीतर बाकला बीज समान बीज होते है और इनका स्वाद मधुर होता है, उत्पत्तिस्थान—फिलसतीन, श्यामदेश, पुर्तगाल और अफरीका आदि देश है।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, रक्तरोधक, पीडाशामक तथा कफनाशक है, मूत्रल तथा आमाशय के मास धातुओ को बल देता है। बीज भी सग्राही तथा रक्तस्तम्भक गुण रखता है॥

७७. खरनोब नबती

वर्णन—इसके पुष्प पीले और दागदार होते हैं, इनकी शाखायें इतस्ततः होती हैं, और उन पर बारीक २ तेज़ कांटे लगे होते हैं, इसका फल छोटे वृक्क समान और कालापन लिये लाल होता है, इसके भीतर बीज होते हैं।

गुण तथा उपयोग—बाह्य त्वचा पर लेप करने से संग्राही गुण करता है, आमाशय तथा आन्त्र पर भी इसका संग्राही प्रभाव पडता है, बाह्य शरीर पर लगाने पर शरीर की थकान को दूर करता है, शिर पर लेप करने से बालो को बल देता है, तथा समय से पूर्व श्वेत होने से रोकता है, अतिसार तथा मन्दाग्नि में उपयोगी है, दंतरोगों मे मजन के योगो मे पड़ता है, दातो को दृढ करता है॥

७८. खरपजा बीज (Cucumis melo)

वर्णन—यह ककड़ी के समान एल लता का प्रसिद्ध फल है, जो स्वादिष्ट मधुर और किंचित सुगन्धित होता है। भारतवर्ष मे अधिकतया उत्पन्न होता है। इसके बीज औषध मे काम आते हैं

गुण तथा उपयोग—मूत्रल तथा आर्तव प्रवाही, वृक्क तथा वस्ति की अश्मरी को बाहर निकालने वाला, लेखन, तथा स्रोत शोधक है, यकृतावरोधक नाशक है। अधिकतया मूत्र तथा रजः अवरोध वृक्क तथा वस्ति अश्मरी और सुजाक मे प्रयोग किया जाता है। ज्वरदाह, यकृत शोथ, वृक्क तथा वस्ति रोगों मे विशेष करके प्रयोग किया जाता है।

७९. खरातीन (Earth worm)

वर्णन—इसे हिन्दी में केंचवे कहते हैं, ताम्रवर्ण लम्बे २ कीड़े होते हैं, जो बरसात मे अधिकतया उत्पन्न होते है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, शोथ शामक, व्रण नाशक। यह अधिकतया वाजीकर लेपों (तिल्ला-जो शिश्न पर उसको उत्तेजना देने के लिये तथा वृद्धि करने के लिये उपयोग किये जाते हैं)

मे डाला जाता है, आंतरिक उपयोग भी वाजीकरण गुण के लिये किया जाता है, चोट आदि पर भी लेप रूप मे प्रयोग करते हैं ।।

८०. ख़शखाश (पोस्त तथा तुख़म)
(White popy seeds)

वर्णन—फल को पोस्त खशखाश वा डोडा ख़शख़ाश (Papauor Somni ferum) कहते है, फल के भीतर से जो वारीक दाने निकलते है, उन्हे तुखम खशखाश कहते है–शाखाओ तथा फलो को चीरने से जो रस निकलता है, वही शुष्क होने पर अहिफेन कहलाती है ।।

गुण तथा उपयोग—आमाशय तथा आन्त्र पर सग्राही प्रभाव करती है, रक्त को वन्द करती है । वेदना शामक, निद्राप्रद, वेदना नाशक तथा निद्राप्रद होने के कारण सव प्रकार की पीड़ा मे इसका लेप किया जाता है, उन्माद, मद मे निद्रा लाने के लिये तथा मस्तिष्क पर शामक प्रभाव डालने के लिये इसका उपयोग होता है, पित्तज तथा कफ़ज कास, श्वास, प्रतिश्याय तथा अतिसार, प्रवाहिका, आन्त्र से रक्त आने मे सफलता से प्रयुक्त की जाती है, वादाम गिरी के साथ प्रयोग मस्तिष्क दुर्बलता तथा वार २ प्रतिश्याय हो जाने पर किया जाता है, बीज औषधरूप मे अधिकतया प्रयुक्त किये जाते है ।। हलका नशा लाने वाले, निद्राप्रद तथा अवसादक इसके विशेष गुण है ।।

८१. ख़सतीयाल सहलब (सहलव मिश्री)
(N. O. Orchideae)

वर्णन—यह प्याज के समान एक क्षुप की प्रसिद्ध जड़ है, जो पीतता लिये सफेद होती है, इसका एक भेद पजा सहलब भी है, गुण तथा उपयोग दोनो का समान ही है, इस की शकल पजा के समान होती है, जड, सुरजान से छोटी वा वड़ी होती है, स्वाद मधुर, लेसदार तथा किंचित तीक्ष्ण होता है । मोटी, बडी और मधुर

तथा जिसमें गन्ध वीर्य के समान हो, उत्तम होती है। अफगानस्तान, रोम तथा मिश्र इसका उत्पत्तिस्थान है।

गुण तथा उपयोग—वातनाडी बल्य, वीर्यप्रद, वीर्य उत्पादक तथा वीर्य को गाढा करने वाली और शरीरपोषक तथा उसे मोटा करने वाली है, वीर्य उत्पन्न तथा पुष्ट करने के लिये दूध से इसे अन्य औषध के साथ वा पृथक ही प्रयोग किया जाता है।

८२. खाकशी (खूब कलान) (**Sisymbrium Iorio**)

वर्णन—पीत लालिमा लिये वारीक बीज होते है, खशखाश बीज से भी छोटे होते है, इसका पौदा आधा गज से लेकर एक गज तक होता ह, पत्र लम्बे, शाखाये वारीक, फलिया सरसो की फलियो के समान परन्तु वारीक होती है। जो वारीक बीजो से भरी होती है, यही बीज औषध मे प्रयोग किये जाते है। भारत मे उत्पन्न होती है परन्तु फारस से इसका आयात होता है।

गुण तथा उपयोग—ज्वरनाशक, श्लेष्म नि.सारक, विसूचिका में लाभकारी है, ज्वरनाशक होने के कारण ज्वरों मे विशेषतया आन्त्रिक सन्निपात, मोतीझरा, चीचक तथा खसरा मे प्रयोग की जाती है, इसके देने से चीचक, खसरा मे दाने शीघ्र निकल आते है, कास, श्वास मे भी उपयोग की जाती है, पैत्तिक विसूचिका मे तृषा तथा वमन को शान्त करने के लिये भी प्रयुक्त की जाती है॥

८३. खुरमा (**N. O. Palmeae**)

वर्णन—यह ताल जाति का एक वृहत काय वृक्ष का फल है, जब यह सूख जाता है, तब इसे छुहारा कहते है, यह अरब, उत्तरी अफरीका, मिश्र का प्रसिद्ध फल है, अपने सब गुण करके खजूर की तरह है।

गुण तथा उपयोग—शरीरपोषक, वाजीकर, वातनाड़ी तथा शारीरक दुर्बलता मे प्रयोग किया जाता है, उष्णवीर्य है, कफज रोग, कास, कटिशूल मे उत्तम है।

८४. खेलाखेली

वर्णन—यह एक पहाड़ी वृक्ष का पोस्त (त्वचा) है, जो कठोर और मोटा होता है, इसका वर्ण मटियाला लालिमा लिये हुये होता है।

गुण तथा उपयोग—संग्राही होने के कारण कटिशूल तथा श्वेत प्रदर मे वहुधा उपयोग मे लाई जाती है॥

(ग)

८५. गन्दना बीज (**Allium Ampelop rasum**)

वर्णन—इसके पौदे गेहूं तथा चने की खेती में स्वयं उत्पन्न होते है, इसके पत्र, वीज और पुष्प प्याज के समान परन्तु उससे कुछ छोटे और वारीक होते है, उत्पत्तिस्थान भारत तथा ईरान है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, शान्तिदायक, लेखन, वातकारक, वाजीकर, मूत्रल, आर्तव प्रवाही, कफस्रावी। इसके वीज अर्श तथा रक्त अर्श मे अत्यन्त उपयोगी है, अर्श के मस्सों को इसके वीजों का धूम्र भी दिया जाता है।

८६. ग़रीलमस्क़ (सरेशममाही)

वर्णन—चरबी के समान एक शुष्क जमी हुई रतूबत है, जो एक प्रकार की मछली के उदर से निकाली जाती है। तथा एक प्रकार की मछली के फंकनों को वारीक २ तन्तुओं मे काट कर शुष्क कर लेते है। आज कल अधिकतया यही बाजार में मिलती है।

गुण तथा उपयोग—चिपकने वाली, शोषक, लेखन तथा रक्त स्तम्भक है, इसी गुण के कारण उरःक्षत, रक्तष्ठीवन मे अधिकतया प्रयोग की जाती है, लेखन तथा शोषक होने के कारण व्रण औषध में भी डाली जाती है।

८७. गाऊजबान (**Caccinia glauca Sani**)

वर्णन—यह एक युनानी औषध मे प्रसिद्ध वूटी है, इसके सब अंग खुरदरे और रूई युक्त होते है, पत्र वड़े २ गो की जिह्वा के

समान, वर्ण सबज श्वेतता युक्त होता है, इन पर सफेद २ नुकते चुभने वाले होते है, पुष्प अनार पुष्प के समान परन्तु इससे लघु और लाजवरदी वर्ण का होता है, पत्रो का स्वाद फीका और लुआव युक्त होता है । पत्र तथा पुष्प औषध रूप मे प्रयोग किये जाते है ।

गुण तथा उपयोग--मन. प्रसादकर, उत्तमागो को वल्य, स्निग्धता उत्पन्न करने वाला, कफ़सारक, जला हुआ, ग्राही तथा शोषक गुण रखता है, गाऊजबान पत्र तथा पुष्प, उन्माद, मद, वातदोष, हृदय धडकन, चित्त विभ्रम मे अत्यन्त उपयोगी है, प्रतिश्याय, प्रसेक, कास, श्वास, उर की रूक्षता को नष्ट करता है, इसे जलाकर मुखपाक मे दाह शमन तथा व्रण शोपणार्थ प्रयुक्त किया जाता है, हृदय रोग मे विशेपतया लाभकारी है ।

८८. गाजरबीज (**Daucus Carota**)

वर्णन--समस्त भारतवर्ष मे इसकी खेती होती है, बहुधा कच्ची ही खाई जाती है, पकाकर इसका हलवा अत्यन्त उत्तम बनता है, इसका मुरब्बा भी बनता है ।

गुण तथा उपयोग--बीज, मूत्रल, आर्तव प्रवाही, गर्भाशय शोधक, गर्भपातक, अश्मरी नाशक तथा वातानुलोमक है, कामोत्तेजक तथा शिश्न मे भी उत्तेजना उत्पन्न करने वाले है, गाजर मन.-प्रसादकर, उत्तमागो को बलप्रद, मूत्रल तथा वाजीकर है ।

८९. ग़ाफ़स (**Gentiana dahurica**)

वर्णन--भारतवर्ष मे इसका आयात फारस से होता है, यह एक काटेदार बूटी है, जिसके पत्र लम्बे, चौड़े और रूई युक्त होते है, पुष्प नीला लम्बा नीलोफर पुष्प के समान होता है, इसके सब अगो का स्वाद तिक्त होता है, इसके पुष्प तथा घन रस क्रिया (असारा गाफस) औषध रूप मे प्रयोग की जाती है ।

गुण तथा उपयोग--गाढे दोषो को पतला करने वाला, त्रिदोष नाशक, लेखन, स्रोत शोधक, मूत्रल, आर्तव प्रवाही, रक्त-

शोधक, स्वेदल, स्तन्य जनन, दीपन तथा आमाशय बल्य है, यकृत-शोथ, आमाशय तथा यकृत काठिन्य, सर्वांग शोथ, जलोदर, जीर्ण-ज्वर, मे उपयोग किया जाता है, इसका असारा भी इन्ही रोगों मे प्रयुक्त किया जाता है ।

९०. ग़ारीक्यून (Agaricus albus)

वर्णन—ग़ारीक्यून खुम्बी जाति की एक पराश्रयी क्षुद्र वनस्पति है, जो सनोवर के पुराने वृक्षों पर उत्पन्न होती है, बाजार मे यह श्वेत वर्ण, विपम टुकड़ो के रूप मे मिलती है, वजन मे हलकी तंतुल और स्पजवत होती है, स्वाद प्रथम मधुर और पीछे अम्ल तथा तिक्त होता है, जब इसको वारीक तारो वाली छाननी से छाना जाये, तो इसे गारीक्यून मुगरंवल कहते है, और औषध म यही काम आता है ।

गुण तथा उपयोग—त्रिदोष विरेचक, और त्रिदोष नाशक है—सुद्धों को खोलती है, गाढे दोपो मे तरलता उत्पन्न करने वाली है, रक्त संग्राही तथा रक्त स्तम्भक है, वामक, मूत्रल तथा आर्तव-प्रवाही है। इसे विरेचक औषध के समान आमवात, सधिशूल, गृध्रसी, वातरक्त, अपस्मार, श्वास, कास, यकृतावरोध मे प्रयोग किया जाता है, जलोदर, कामला और कफज ज्वरो मे उपयोगी है, सकजवीन के साथ प्लीहावृद्धि मे भी प्रयुक्त करते है ।

९१. गिल अरमनी (Bobus Armenia rubra)

वर्णन—लाल वर्ण की मृदु तथा चिकनी मिट्टी है, जो किंचित सुगन्धित तथा स्वाद मे फीकी होती है, और जिह्वा पर चिपक जाती है ।

गुण तथा उपयोग—शोषक, संग्राही, चिपकने वाली, ज्वर-नाशक, दुर्गन्धनाशक, शोथनाशक, हृदय बल्य तथा विशेपतया रक्त स्तम्भक और रोधक है, शरीर के किसी अग से रक्त जाने मे लाभप्रद है, रक्तपित्त, उरक्षत, आन्त्र तथा आमाशय क्षत,

और अतिसार, रक्त अतिसार में विशेपतया उपयोग की जाती है, व्रण को शुष्क करके रोपण कार्य शीघ्रता से करती है, हृदय बल्य होने के कारण ग्रंथिक ज्वर (प्लेग) आदि में भी प्रयोग की जाती है ।

९२ गिल मखतूम (**Marl**)

वर्णन—हलके गुलाबी वर्ण की चिकनी मिट्टी है, जिसकी टिकिया बनी हुई मिलती है ।

गुण तथा उपयोग—मन.प्रसादकर, हृदय बल्य, चिपकने वाली, शोषक, सग्राही और रक्त स्तम्भक है, शीघ्रता से फैलने वाले तथा मारक ज्वरो मे अमृत के समान प्रभाव करती है । इसे उर·क्षत, फुप्फुस व्रण, रक्तष्ठीवन, आमाशय तथा आन्त्र व्रण मे उपयोग करते है, हृदय बल्य होने तथा अगद गुण करके प्लेग मे भी प्रयोग कराते है, रक्तातिसार तथा पित्त अतिसार मे लाभप्रद है, सद्य· व्रण मे रक्त रोकने के लिये इसे बारीक पीसकर धूड़ा जाता है ।

९३. गिल मुलतानी (**Fuller's Earth**)

वर्णन—गिल मुलतानी वा मुलतानी मिट्टी, श्वेत पीतता लिये एक परतदार मिट्टी है, जो अधिकतया शिर धोने के काम आती है, यह सग्राही तथा रक्त स्तम्भक है, इसी कारण इसे शीतल जल मे घोल कर ठैरा कर उपर का निथरा जल नकसीर तथा मूत्र मे रक्त के आने मे पिलाया जाता है । नकसीर मे शिर तथा मस्तक पर लेप भी किया जाता है, पित्तज गरमी के दानो पर लेप करने से शान्ति मिलती है । तथा दाने भी मुरझा जाते है ।

९४. गुलनार

वर्णन—जंगली अनार की कलिया है, जो औषध रूप मे प्रयोग की जाती है, इस अनार को फल नही लगता है ।

गुण तथा उपयोग—सग्राही, शोषक, रक्त स्तम्भक, दोषो को वापिस करने वाला, इस गुण करके शोथ की प्रारम्भक अवस्था मे

इसका लेप किया जाता है। दोपों के स्थान छोड़ देने के कारण शोथ नष्ट हो जाती है, और फोड़ा आदि फिर नही बनता, संग्राही तथा रक्त स्तम्भक होने से दातो के लिये मंजनो मे डाला जाता है, रक्तष्ठीवन, पित्तज तथा रक्तज अतिसार, रक्त प्रदर तथा श्वेत प्रदर मे भी इसका उपयोग किया जाता है। शोषक होने के कारण व्रणों पर इसका वारीक चूर्ण धूड़ा जाता है।

९५. गुलाव पुष्प (**Rosa damaseena**)

वर्णन—एक प्रसिद्ध पौदा है, इसका पुष्प सुन्दर हलके गुलावी वर्ण का और सुगन्धित होता है, यह पुष्प ही औषध रूप मे प्रयोग किया जाता है।

गुण तथा उपयोग—सौमनस्य जनन, उत्तमांगों को वलप्रद और आमाशय, आन्त्र को वल देने वाला, सारक परन्तु शुष्क पुष्प का चूर्ण सग्राही है, पित्ताज उल्वणता को शान्त करता है, इसका ताजा फूल सूघना हृदय को प्रसन्न करने वाला, इसका परिस्रुत जल (अर्क) नेत्र रोगों मे उत्तम है, इस अर्क को हृदय, मस्तिष्क को वल देने के लिये तथा खफकान, गशी, वा पैत्तिक ज्वरो मे अधिकतया प्रयोग किया जाता है, इसके ताजा फूलों से गुलकन्द बनाया जाता है, जो उत्ताम अंगो को वल देता है तथा उत्तम विरेचन है, यह जमे हुये दोपों को बाहर निकालता है। इसका तैल भी वनाया जाता है, जिसे गुल रोगन कहते है। यह दोषों को लोटाने वाला, शोथघ्न पीडा, शामक, विरेचक, भीतरी पीड़ाओ को शान्त करने वाला, आमाशय, आन्त्र दाह शामक है, तीव्र ज्वर मे अर्क गुलाब तथा सिरका मिला कर बार २ तालु पर रखते है इससे ज्वर शान्त होता है। अनिद्रा तथा मस्तिष्क दुर्वलता के लिये उपयोगी है। कर्ण शूल ओर दत शूल मे भी लाभकारी है।

जरवरद—गुलाव पुष्प के भीतर जो छोटे २ दाने होते है, उन बीजों को जरवरद (गुलाव का जीरा) कहते है, यह आमाशय बल्य, रक्त स्तम्भक, शोषक, मांसततु संग्राहिक तथा अतिसार नाशक है।

(च)

९६. चटक (चिड़िया)

वर्णन तथा उपयोग—एक प्रसिद्ध पक्षी है, यूनानी चिकित्सक वाजीकर, तथा बल्य गुण इसके मांस में मानते है—इस लिये वाजीकर योगों मे इसका अधिकता मे प्रयोग करते है, कफज तथा वात सस्थान के रोग, अर्दित, पक्षवध यकृत, वृक्क, तथा पुंस्त्व शक्ति की दुर्बलता मे विशेषतया इसका उपयोग करते है—परन्तु आधुनिक चिकित्सक इसमें वाजीकर तथा बल्य गुण नही मानते और इसे एक मिथ्या धारणा समझते है।

९७. चलगोज़ा (N O Coniferac)

वर्णन—सनोवर वृक्ष का फल है, जो खिरनी के समान लम्बा होता है, इसके ऊपर कठोर पतला छिल्का होता है। इसके भीतर से श्वेत वर्ण की मधुर स्वादिष्ट गिरी निकलती है। यही औषध मे काम आती है, इसे हब्ब सनोवर भी कहते है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, वीर्यप्रद, शरीरपोषक, श्लेष्मनिसारक तथा उष्ण वीर्य है, शरीर को पुष्ट करता है, दीर्घ पाकी है, इसको दूसरी औषध के साथ वीर्य बल्य तथा वाजीकर गुण के लिये प्रयोग करते है, अर्दित, पक्षाघात, कटिशूल, संधिशूल मे भी उपयोगी है।

९८. चाकसू (Ceassia absus)

वर्णन—यह बहिदाना के समान कृष्ण वर्ण का चिकना और चमकदार बीज होता है, यह भारत, ईरान तथा अरब देश में उत्पन्न होता है।

गुण तथा उपयोग—रक्त स्तम्भक, सग्राही, लेखन, शोथघ्न, नेत्ररोग हर तथा दृष्टि बल्य, इसे रक्त स्तम्भनार्थ प्रयोग किया जाता है, रक्त अर्श तथा वृक्क विकार जनित रक्तमय मूत्र मे रक्त को रोकने के लिये प्रयोग करते है, नेत्र रोग, दृष्टि दुर्बलता

नेत्र कण्डु, जाला, नेत्र जलस्राव मे अंजन रूप मे विशेषतया प्रयोग किया जाता है।

९९. चिरोंजी (Buchananialatifolia)

वर्णन—यह एक वृक्ष का फल है, फल की गिरी को चिरोंजी कहते है, बड़ी मसूर के दाने के समान होती है, स्वादिष्ट तथा मृदु होती है।

गुण तथा उपयोग—इसमे आहार की अधिक मात्रा है, दुर्बल मनुष्यो के लिये उत्ताम वस्तु है, शरीर पुष्टिकर तथा वाजीकर है, वाजीकर योगो मे डाली जाती है, इसका बारीक चूर्ण कर पृथक वा अन्य औषध के साथ मुख पर मलने से मुख के वर्ण को निखारती है।

१००. चियूटा (Black ant)

वर्णन—यह एक प्रसिद्ध छोटा सा जानवर है, लघु तथा बृहत भेद से दो प्रकार का है, लघु को च्यूँटी कहते है, बृहत को च्यूँटा, मकोड़ा तथा मोरचा कहते है, यह भी लाल तथा कृष्ण वर्ण से दो प्रकार का होता है।

गुण तथा उपयोग—इनका तैल बनाया जाता है, जिसे रोगन मोरचा कहते है, (निर्माण विधि—१०० बृहत चयूँटे पकड कर सवा तोला रोग़न चम्बेली मे डालकर तीन सप्ताह तक धूप में रखें, इसके पश्चात सभाल कर रखे, प्रतिदिन शिश्न पर इसका यथाविधि लेप करे, और ऊपर पानपत्र बांध दे, यह तैल शिश्न को बल देता है, उसमे दृढता, उत्तेजना तथा मोटापन उत्पन्न करता है) चियूटा को सिरके मे पीस कर किलास पर लेप करते है, चियूटो को जैतून तैल मे जोश देकर छान कर कर्ण रोगो मे भी प्रयोग करते है। कर्ण पूय तथा कर्णनाद मे उत्तम है।

१०१. चीनी (Kaolinum)

वर्णन—यह एक प्रकार की मिट्टी है, इसके वरतन वनाये जाते है, सुची चीनी अत्यन्त श्वेत तथा पारदर्शक होती है।

गुण तथा उपयोग—स्थानीय रक्तरोधक है, यह वारीक पिसी हुई दातो के लिये मंजन मे तथा नेत्र रोगों के लिये सुरमे में अपने लेखन गुण करके डाली जाती है ।

ज

१०२ जदवार (Delphinium denudatum)

वर्णन---एक वूटी की जड़ है, जो वत्सनाभ की भाति भारी, कुछ कठोर और स्वाद मे तिक्त होती है---वर्ण बाहर से मिटियाला और भीतर से वनफशी होता है, यह पाँच प्रकार की है, परन्तु अधिकतया औषध रूप मे जदवार खताई उपयोग मे लाई जाती है, जो कि पर्वतीय देश खता मे वहुत उत्पन्न होती है, यह यदि चखी जाये तो पहिले किंचित मधुर तथा तत्पश्चात् तिक्त स्वाद देती है । इसे हिन्दी मे निर्बसी कहते है ।

गुण तथा उपयोग---अगद, विषनाशक, मन प्रसादकर, उत्तमागों को बल्य, शोथविलयन, प्रमाथी, दोषपाचक, स्तम्भक, मूत्रल, अश्मरी भेदक, पीडा शामक, लेखन, ज्वर नाशक, वात कफ नाशक,तथा विपनाशक होने के कारण सर्प तथा वृश्चिक आदि के दश पर इसका लेप भी करते है, और भीतर भी प्रयोग करते है---विसूचका तथा प्लैग मे लाभप्रद है, शोथ पर भी इसका लेप उपयोगी है, यह मस्तिष्क रोगों, वातसस्थान के रोग, कफज रोग, प्रसेक, प्रतिश्याय, अपस्मार, अर्दित, पक्षाघात, वातकम्प, तथा सुप्तिवात आदि मे बहुधा प्रयुक्त की जाती है, बालग्रह मे विशेष उपयोगी है---बहुत उत्तम और उपयोगी वस्तु है ।

१०३ ज़मुरद (Smara gdus)

वर्णन तथा उपयोग---यह एक सबज वर्ण का मूल्यवान पाषाण है, यह वर्ण से कई प्रकार का होता है, यह सौमनस्यजनक,

उत्तमांगों को वलप्रद, शोषक, मूत्रल, अश्मरी भेदक और अगद है, अधिकतया हृदय वल्य होने के कारण याकूती मे डाला जाता है, खफ्कान, रक्तपित्त, आमाशय दुर्बलता, यकृत दुर्बलता, जलोदर, वृक्क दुर्बलता, और जीर्ण रक्त अतिसार मे घिसकर पिलाया जाता है, इसकी भस्म भी उपरोक्त गुण करती है, प्राकृतिक उष्मा को तथा हृदय और मस्तिष्क को वल देने मे अपूर्व है।

१०४. जरजीर बीज

वर्णन—यह एक बूटी है—इसके बीज मूलीबीज के समान होते है और यही बीज औषधरूप मे प्रयोग किये जाते है। फारस तथा खुरासान देश मे उत्पन्न होता है।

गुण तथा उपयोग—दीपक, पाचक, वातानुलोमक, वीर्यप्रद, पुसक शक्ति उतेजक, मूत्रल, आर्तव प्रवर्तक, लेखन तथा त्वचा पर लगाने से त्वचा को अपनी तीक्ष्णता से लाल कर देने वाला है, इसी लिये इसको त्वचा के रोग झाई, छीप तथा श्वेत कुष्ठ मे प्रयोग करते है—पुसक शक्तिवर्धक योगों मे भी डालते है, वीर्य उतेजक इसका विशेष गुण है।

१०५ जरावन्द (**Aristolochia longa**)

वर्णन—यह एक बूटीकी जड़ है, जो नर तथा मादा दो प्रकार की होती है, नर को जरावन्द तवील, मादा को जरावन्द मदहरज वा जरावन्द गिरद कहते है—तवील, एक हाथ लम्वी और एक अगुल मोटी, वर्ण कृष्ण लालिमा लिये हुये, और इसका स्वाद तिक्त होता है। मदहरज गोलाकार, फिन्दक के समान (वा उससे कुच्छ छोटी वा वड़ी) किसी कदर चपटी होती है—इसका वर्ण बाहर से पीला और भीतर से लालिमा लिये हुये होता है। दोनो के गुण समान ही है—परन्तु अधिकतया मदहरज ही औषध प्रयोग मे आती है।

गुण तथा उपयोग—मूत्रल, आर्तिव-प्रवंत्तक, कफ विरेचक, कृमि नाशक, लेखन, पीड़ा शामक, शोथध्न, आदि गुण है। तवील

आर्तवावरोध, गर्भ शोधक, तथा गर्भ निःसारक के लिये बाह्य तथा भीतर प्रयोग में आता है। सीने को कफ से शुद्ध करने तथा उदरज कृमि नाश के लिये भी प्रयोग किया जाता है, नाड़ी घात, आक्षेप, अपस्मार और अपतानक जैसे रोगों में भी उपयोगी है। मदहरज भी कफज रोगों, आर्तव लाने, तथा कफज खांसी में प्रयुक्त होता है—शोथ विलयन तथा पीड़ा शामक होने के कारण वक्ष पीड़ा, जीर्ण सन्धि शूल, गृध्रसी, वातरक्त तथा यकृत और प्लीहा शोथ में भी आन्त्रिक और बाहर लेप रूप मे प्रयोग किया जाता है, इसका विशेष गुण कफ विरेचक है।

१०६. जरिशक

वर्णन—यह एक कांटेदार पहाड़ी वृक्ष का फल है, जो किश-मिश से छोटा, वर्ण में लालिमा लिये कृष्ण वर्ण और स्वाद में अम्ल मधुर होता है, इसके वृक्ष की लकड़ी ही दारुहल्दी कहलाती है। इसका घन सत्व रसौत कहलाता है।

गुण तथा उपयोग—पित्तशामक, तथा रक्तशोथ शामक, आमाशय तथा यकृत के पित्तदोष को शान्त करने वाला, संग्राही तथा आमाशय, यकृत को बल देने वाला है। इसे पैत्तिक ज्वरों में तृषा, वमन, मतली को रोकने के लिये जल वा उपयुक्त अर्क में पीस छान कर पिलाते हैं, आमाशय तथा यकृत की उष्मा को नष्ट करने के लिये तथा बल देने के लिये प्रयोग करते हैं, पैत्तिक अतिसार तथा प्रवाहिका मे भी इसका उपयोग होता है।

१०७. ज़हर मोहरा (**Serpentine**)

यह एक खनिज पाषाण है, वर्णभेद से इसके कई प्रकार हैं, परन्तु पिलाई लिये हरे रंग का जो खता नामी पर्वतीय देश से आता है, उत्तम होता है।

गुण तथा उपयोग—सौमनस्य जनन, उत्तमांगो को बलप्रद और अगद माना गया है, हृदय रोग, प्लैग, विसूचिका में अधिक-तया प्रयोग किया जाता है, शरीर की रोग रोधक शक्ति को बढ़ाता

है, तथा हृदय को बलवान करता है। इसे फाद जहर महदनी भी कहते ह।

१०८. जाऊशीर (**Galbanum**)

वर्णन—एक वृक्ष का गोंद है, जिसका वर्ण बाहर से हरापन लिये पीला, वा अर्धस्वच्छ नारजी वर्ण का होता है, भीतर से श्वेत पीलापन लिये, स्वाद तिक्त और खराव होता है, यदि इसे पानी मे हल किया जाये तो जल दूध के समान श्वेत हो जाता है, यह ईरान, तुरकस्तान और यूनान से आता है।

गुण तथा उपयोग—उष्णताजनक, शोथविलयन, सारक, कफविरेचक, प्रमाथी, गाढ़े दोषों को पतला करने वाला, उत्तमांगों को बल देने वाला, कफनिःसारक, मूत्रल, आर्तव प्रवर्तक तथा वातानुलोमक है, इसे अधिकतया वातसस्थान के रोग, मस्तिष्क रोग, अर्दित, पक्षवध, वातकम्प, अपस्मार, बालग्रह, प्रतिश्याय, जलोदर, आमाशय दुर्बलता तथा कफज उदरशूल मे प्रयोग किया जाता है, कास, श्वास मे कफ को निकालता है, वातानुलोमक होने के कारण आध्मान, वातशूल तथा गर्भाशय शूल मे लाभकारी है, लेखन होने के कारण खराब व्रणो मे मरहम रूप मे प्रयोग किया जाता है, गम्भीर शोथ पर इसका लेप शोथ को विलीन कर देता है।

१०९. जुगनू (**Fire fly**)

वर्णन—मक्खी समान परो वाला कृमि है, जो रात्री को चमकता है।

गुण तथा उपयोग—जुगनु को शुष्क करके इसका शिर पृथक करके हीग जल के साथ आठ दिन तक पिलाने से वृक्क तथा वस्ति की अश्मरी टूट कर निकल जाती है, मुसब्बर और सफेदा काशगरी के साथ अर्श के मस्सो पर लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते है, एक नग जुगनु को शुष्क करके बारीक पीस कर गुलाव तैल मे मिलाकर टपकाने से कर्ण पूय नष्ट हो जाती है।

११०. जुन्दबदस्तर (Castor fiber)

वर्णन—यह एक ऊद बिलाव समान बीवर नामक जलस्थल-चारी चतुष्पद प्राणी के दोनों वृषणों में सञ्चित सूखा हुआ द्रव्य है, जो तिक्त, ऊत्क्लेश कारक, किंचित चरपरा स्वाद वाला, कुछ चिकना, कस्तूरी समान तीव्र गन्ध वाला, हलके भूरे रग का पदार्थ है, वर्ण के नाते यह पीत, लाल तथा कृष्ण तीन प्रकार का है, परन्तु पीला, सुगन्धित तथा शीघ्र टूट जाने वाला उत्तम है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, शोपक, उष्णताकारक, दोष तारल्य कारक, वातनाड़ी बल्य, पीडा शामक, वातानुलोमक, मूत्र तथा आर्तव प्रवर्तक तथा शीतल विष नाशक है। लेप करने से शोथ को लीन करता है, शरीर तथा त्वचा मे उष्णता पहुंचाता है, और उत्तेजना उत्पन्न करता है। इस लिये शिश्न शिथिलता मे इसका तिल्ला किया जाता है, वातनाड़ी दुर्बलता, नाड़ी तथा सधिशूल, वातकम्प, सुप्तिवात, अर्दित, पक्षाघात, आमवात तथा बालग्रह में विशेषतया प्रयोग किया जाता है।

१११. जुफ़त बलूत

वर्णन—यह बलूत नामी वृक्ष के बाहरी छिलके के नीचे उस की गिरी से चिमटा हुआ एक बारीक छिलका होता है, इसे जुफत बलूत कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, शोषक, रक्त स्तम्भक,—इन गुणों करके अतिसार, रक्त अतिसार आन्त्र व्रण, मूत्र अतिसार, रक्तप्रदर मे इसका उपयोग होता है, ताजे व्रणों को शुष्क करने तथा रक्त को बन्द करने के लिये भी लेप तथा धूड़े के रूप मे यह प्रयोग किया जाता है।

११२. जुफ़त रूमी

वर्णन—यह सरू वृक्ष की गोद है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, बल्य, अर्दित, अर्धांग, गृध्रसी, सधिशूल मे लाभप्रद है, गाढ़े दोषों को पकाती है, कफ-

स्रावी होने के कारण कास, श्वास म भी लाभप्रद है, गर्भाशय की कठिन शोथ में इसका लेप भी किया जाता है। वल्य होने के कारण शिश्न को मोटा करने के लिये तथा उत्तेजना उत्पन्न करने के लिये तिल्ला रूप मे इसका प्रयोग किया जाता है।

११३. जूफा (**Hyssopus officinalis**)

वर्णन—जूफा एक बूटी है, जो पृथ्वी पर फैली होती है, इसके पत्र सुगन्धित और उनका स्वाद तिक्त होता है, प्रत्येक शाखा के जोड़ पर पीतवर्ण का फूल होता है, शाम देश इसका उत्पत्ति स्थान है।

गुण तथा उपयोग—कफनाशक, शोथविलयन, वातानुलोमक, लेखन, उदरकृमि नाशक, प्रमाथी और विशेषतया खांसी तथा शुष्क कास मे लाभकारी है। इस लिये श्वास, कफज कास, श्वसनक ज्वर, प्रसेक, प्रतिश्याय मे विशेष करके प्रयोग किया जाता है—शोथ मे इसका लेप करते है।

११४. जोज जन्दम

वर्णन—यह एक श्वेत पीतता लिये हुये वस्तु है, जो पथरों पर जमती है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, शरीर को मोटा करने वाला, अश्मरीघ्न तथा उत्तेजना नाशक है।

११५ जोज़लसर

वर्णन—यह प्रसिद्ध सरू वृक्ष के फल है, जो औषध रूप मे प्रयोग किये जाते है।

गुण तथा उपयोग—सग्राही, शोषक, तथा रक्त स्तम्भक है, वीर्यस्राव तथा अतिसार मे इनका चूर्ण लाभप्रद है, श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, मूत्रातिसार मे भी प्रयोग किये जाते है।

११६. जंगार (Cupri subacetas)

वर्णन—हलके सबज रग का चूर्ण है—जो ताम्र से तैयार किया जाता है इसके दो भेद है, खनिज जिसे दाहने फिरग भी कहते है, और दूसरा कृत्रिम ।

गुण तथा उपयोग—आग्नेय, व्रणकारक, व्रणलेखन, शोषक, गन्दे व्रणो मे मरहम मे मिला कर उपयोग किया जाता है—उत्सन्न और दूषित मास तथा पूय को नष्ट करता है, नेत्र रोगो मे जाला, शुक्ल (फूला), दृष्टिमाद्य, नेत्रव्रण मे अन्य औषध के साथ अंजन रूप में उपयोग किया जाता है ।

(त)

११७. तरंज (उतरज, बिजौरा निम्बू)

(N. O. Aurantiaceae)

वर्णन—एक प्रकार का निबू है, जिसका वर्ण पीला लालिमा लिये और सुगन्धित होता है। हमाज अतरज—(वह भाग जो बीजों के साथ लिपटा हुआ होता है)।

गुण तथा उपयोग—सग्राही, पित्तशामक, रक्त शामक, आमाशय तथा यकृत बल्य, हृदय बल्य तथा लेखन है, यह पित्तज अतिसार, पित्त तथा रक्त की उग्रता, मतली, वमन मे प्रयोग किया जाता है, इससे बनाया हुआ मुरब्बा पित्तज खफकान तथा आमाशय, यकृत को बल देने के लिये प्रयोग किया जाता है । इसके ऊपर का छिलका जिसे पोस्त उतरज कहते है, लालिमा लिये पीत होता है और सुगन्धित होता है, यह उत्तमागो को बल देने वाला, आमाशय बल्य, वमन नाशक, वातानुलोमक तथा दीपक पाचक है, हृदय, मस्तिष्क तथा यकृत, आमाशय को बल देने के लिये प्रयोग करते है, विसूचिका मे वमन तथा मतली को शान्त करता है ।

बीज—सनोबरी शकल के श्वेत वर्ण के होते है, इनके भीतर से श्वेत गिरी निकलती है, जिसका स्वाद कटु होता है, यह शोथघ्न,

आर्तव प्रवाही तथा विप नाशक है, विच्छू के दंश स्थान पर इनका लेप लगाना विषनाशक है ।

११८. तरबूजबीज (Citrullus vulgaris)

वर्णन—प्रसिद्ध फल के वीज है, फल की गिरी मधुर होती है ।

गुण तथा उपयोग—इस फल का निचोडा हुआ पानी शीतल, पित्त तथा उष्मा शामक, मूत्रल, तथा चित को शान्त करने वाला है, पैत्तिक ज्वर, मूत्रदाह, पूयमेह तथा कामला और वृक्क अश्मरी मे उपयोगी है—इसके बीज भी शीतल स्निग्ध, पित्त तथा रक्तदोष शामक, मूत्रल तथा उर मार्दवकर है, शरीर पोषक है, पित्तज उल्वणता तथा रक्त उग्रता, तृषा, आमाशय प्रदाह, उर शुष्कता, फुंफुस रूक्षता, पित्तज कास, रक्तष्ठीवन और पित्तज ज्वरों मे इनका शीरा निकाल कर दिया जाता है, मस्तिष्क रूक्षता तथा अनिद्रा मे उपयोगी है, मूत्रल होने के कारण—मूत्रजलन, पूयमेह तथा मूत्रावरोध मे भी प्रयोग किये जाते हैं ।

११९. तारपीन तैल (Turpintine oil)

वर्णन—यह सनोवर के समान एक वृक्ष का तैल होता है, इस मे एक विशेष प्रकार की तीव्र वू आती है ।

गुण तथा उपयोग—इस का वाह्य प्रयोग त्वचा संक्षोभक और खराश उत्पन्न करता है, और खराश के पश्चात शामक तथा सुप्तिकर गुण करता है, अधिक मात्रा मे प्रयोग करने से छाले डाल देता है, और त्वचा को जखमी कर देता है । दुर्गन्धित व्रणों पर टपकाने से व्रण जनित कृमि का नाश करता है, नासा कृमि मे भी उत्तम कार्य करता है, भीतर प्रयोग करने से आमाशय तथा आन्त्र मे उत्तेजना उत्पन्न करता है, वातानुलोमक तथा उदर कृमि नाशक है, अधिक मात्रा मे प्रयोग करने से दस्तों मे खून आने लगता है, परन्तु थोडी मात्रा में रक्त स्तम्भक है, दुर्गन्धित कफ़ को शुद्ध करता है, तथा

कफ को खारज करता है, मूत्रल है, परन्तु अधिकमात्रा में इसे प्रयोग नही करना चाहिये, इसे निमोनीया, संधि शोथ, कटिशूल आदि में कर्पूर के साथ मिला कर मालिश किया जाता है, एरण्ड तैल में मिला कर उदर कृमिनाश के लिये प्रयोग किया जाता है, मूत्र में खून आना, खून की उल्टी आने मे थोड़ी मात्रा में दिया जाता है, पुरानी कास निमोनीया तथा क्षय में भी इस उबलते जल में डाल कर इस के वाष्प सुघाये जाते है, उदर शूल में भी उदर पर इसी तैल तारपीन मिले उबलते जल मे कपड़ा भिगो कर सेक करते है।

१२०. तुख़्म तेरातजीक

यह जरजीर बीज का ही दूसरा नाम है, इस का वर्णन ज प्रकरण मे जरजीर के वर्णन मे देख लें ॥

१२१. तुख़्म नील (Indigofera tinctoria)

वर्णन—भारतवर्ष मे बंगाल, सिंध, अवध, मद्रास और बम्बई इसका उत्पत्ति स्थान है, इसका पौदा २—३ फुट ऊँचा, सरल, मृदु तथा लोम युक्त होता है, औषध रूप मे इसके बीज काम मे आते है। इनका प्रधान गुण लेखन है—इस गुण करके इसे मोतिया विन्दु और फोले मे सुरमा के समान प्रयोग किया जाता है, किलास छीप, झाई, दद्रु आदि त्वचा के रोगो मे भी इसका उपयोग होता है। इसके पत्रो से खिजाब बनाया जाता है।

१२२. तुखम बालंग (N. O. Labiatae)

वर्णन—रेहा की जाति की एक बूटी है, इस के बीज भी रेहा की तरह है, परन्तु उन से कुछ दीर्घ होते है, यही बीज औषध रूप मे काम आते है। भारतवर्ष मे उत्पन्न होते है। तुखंम मलंगा भी इन बीज का ही नाम है।

गुण तथा उपयोग—सौमनस्यजनक, हृदयबल्य, किंचित संग्राही, इस लिये खफकान, भ्रम, और हृदय दौर्बल्यता मे विशेषतया प्रयोग किये जाते है, संग्राही तथा पिच्छिल होने के कारण रक्त अतिसार, मरोड, प्रवाहिका मे भी प्रयोग किये जाते है।

१२३. तुख़्म मवीज़

वर्णन तथा उपपोग—यह मुनक्का के बीज हैं, जो इसमें से निकाल कर उपयोग में लाये जाते हैं, यह संग्राही, आमाशय तथा आन्त्र को वल देने वाले हैं, इनका पृथक वा अन्य औपध के साथ जल वा अर्क मे शीरा निकाल कर अतिसार मे प्रयोग करते हैं, और यह आमाशय तथा आन्त्र विकार जनित अतिसार को वन्द करने मे उपयोगी है।

१२४. तुख़्म सरवाली (**Celosia argentea**)

वर्णन—यह ज्वार, बाजरा की खेती मे उत्पन्न होती है, इसका क्षुप एक वा १।। गज ऊँचा होता है, इसकी शाखाये सबज लालिमा लिये हुये और चिकनी होती है, पत्र भी चिकने तथा किनारे से लाल होते है, इसमे सनवूरी आकार के सुन्दर गोशे लगते है। जो मृदु तथा गुलावी श्वेतता लिये हुये वर्ण के होते है—इनमे कृष्ण वर्ण, चमकीले, चपटे छोटे, २ वीज निकलते है, औपध मे यही प्रयोग मे आते हैं। भारत ही इसका उत्पत्ति स्थान है।

गुण तथा उपयोग—वीर्य को गाढा करने वाले, संग्राही, शरीर बल्य और पित्तानाशक। वीर्य को गाढा करने के गुण के हेतु प्रमेह, शीघ्रपतन तथा वीर्य के पतलेपन के नाशकारक औषधं मे मिला कर वा पृथक प्रयोग किये जाते हं, सग्राही होने से रक्त प्रदर, अर्श, मधुमेह, मूत्रातिसार मे भी प्रयोग किये जाते है। प्रमेह मे विशेष उपयोगी है।

१२५. तुखम स्पन्दान

वर्णन—यह एक वूटी के वीज है, जो श्वेत पीतता लिये हुये वर्ण के तथा स्वाद मे तीक्ष्णता होती है

गुण तथा उपयोग—कफशोपक, क्षुधावर्धक, मूत्रल, तथा आर्त्तवजनक, उदरकृमिनाशक, गर्भस्रावक, वाजीकर, लेखन, विस्फोटक तथा शोथविलयन कर्ता है। कफशोषक होने के कारण

श्वास तथा कास में प्रयोग करते है, आमाशय, आन्त्र तथा पुंसक शक्ति क्षीणता में भी उपयोग होता है, श्वेत कुष्ठ, किलास, व्यग आदि को नष्ट करने तथा शोथ को विलीन करने के लिये इसका लेप करते है।

१२६. तुखम हमाज (Rumex Vesicarius)

चोका एक प्रकार का घास है जिसमे छोटे २ कृष्ण वर्ण के चमकदार और कुछ लालिमा लिये त्रिकोणाकार बीज लगते है. यही औषध रूप मे काम आते है।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, चिपकने वाला, उष्मा शामक, पित्तोल्वणता, पित्तज खफकान, कामला, आमाशयप्रदाह, तथा मूत्रनाली प्रदाह को शान्त करने के लिये प्रयोग किया जाता है, इसे भूनकर वा विना भूने अतिसार रोकने, आन्त्रव्रण तथा मरोड आदि नष्ट करने के लिये अन्य पिच्छिल बीजो सहित (इसपगोल आदि) प्रयोग कराया जाता है।

१२७. तुरमुस (Lupinus albus)

वर्णन—यह एक पौदे के बीज है, जो बाकला समान चपटे तथा गोलाकार और स्वाद मे तिक्त होते है, इसका उत्पतिस्थान मिश्र देश है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, लेखन, मूत्रल, आर्तव प्रवर्तक, उदरकृमि नाशक, विशेष गुण शोथनाशक तथा उदरकृमिनाशक है, आर्तवावरोध मे भी प्रयोग करते है, व्यग तथा किलास को नाश करने के लिये और औषधियो के साथ मुख पर इसका पतला लेप किया जाता है। शोथ पर इसका लेप लाभप्रद है।

१२८. तुरंजबीन (यवास शर्करा)

वर्णन—यह यवासा का गाढा द्रव है, जो निर्यास के समान उसके पत्र तथा शाखाओं पर स्रावित होकर जम जाता है,

भूरे २ गोल रग के दाने जिनका स्वाद मधुर होता है, यह अधिक कर खुरासान देश में पैदा होती है, झाऊ के वृक्ष पर जो तुरंजबीन जमती है उसको गज़ानगबीन कहते हैं ।

गुण तथा उपयोग—सारक, पित्त विरेचक, कफ स्रावक, वाजीकर तथा शरीर पोषक है, सारक तथा मधुर होने के कारण छोटे बालकों को विरेचन देने के लिये उत्तम औषध है, वीर्य प्रद तथा शरीर की पुष्टि करती है ।

१२९ तूत सियाह (Morus indica)

वर्णन तथा उपयोग—यह एक वृक्ष का प्रसिद्ध फल है, इस वृक्ष की शाखायें लम्बी २ और लचकदार होती है, पत्र पान के समान परन्तु खुरदरे और दनदानेदार होते है, फल तीन उगुल से पांच उंगल तक लम्बा होता है, और यही फल औषध रूप मे प्रयोग किया जाता है, यह फल दो प्रकार का होता है, श्वेत तथा दूसरा काला लालिमा युक्त और इसे तूत सियाह वा तूत शामी कहते है, औषध रूप में अधिकतया काला लिया जाता है ।

गुण तथा उपयोग—शीतल, सग्राही, मृदुकर, सुद्धों को निकालने वाला, रक्त की उष्मा को शान्त करने वाला, पित्तनाशक, कण्ठ तथा स्वरयन्त्र की पित्तज शोथ को विलयन करने वाला, इसकी जड की छाल उदर कृमि नाशक, शोथघ्न होने से कण्ठ पीड़ा तथा शोथ, रोहणी, जिह्वा मूल शोथ, मुखपाक तथा मुख व्रण मे अत्यन्त उत्तम है, इन रोगो में इसका स्वरस निकाल कर पिलाया जाता है, वा इस स्वरस मे अन्य औपध मिला कर इसके गरारे कराये जाते है, वहां के दोपो को नष्ट करता है, शीतल होने के कारण तृष्णा नाशक है, और रक्त की तेजी को शान्त करता है, इसके पत्र और मूल के क्वाथ से गरारे कराना दत पीडा को भी लाभ प्रद है, और इसके पिलाने से उदर कृमि का नाश होता है ।

१३०. तेलनी मक्खी (जगरोह) (Mylabris chicorii)

वर्णन—यह भॅवरे की किसम की एक मक्खी है जिसके कृष्ण वर्ण के दो लम्बे पर होते है, और उन परों पर नारंजी वर्ण की दो रेखाये होती है और परो की जड मे एक बड़ा नारंजी वर्ण का विन्दु होता है, इन वडे परो के नीचे झिल्ली के समान दो पर और होते है, जिनका वर्ण भूरा होता है। वर्ण भेद से यह कई प्रकार की होती है।

गुण तथा उपयोग—विस्फोटक, मूत्रल, वाजीकर, त्वचा को जलाने वाली है, शिश्न दुर्वलता को नष्ट करने के लिये रोगन वलसान वा तिल तैल मे मिला कर इसका तिल्ला किया जाता है तथा कतिपय तिल्ला मे यह डाला जाता है, रक्तपरिभ्रमण क्रिया तीव्र होकर शिश्न पुष्ट होता है, इसी गुण करके शिर के वालों को वढ़ाने वाले तैलो मे भी इसका मिश्रण किया जाता है, इसका आन्त्रिक उपयोग विस्फोटक होने के कारण वहुत देख भाल करके करना चाहिये।

१३१. तेवाज खताई

वर्णन—इन्द्र जौ की छाल को कहते है, जिसके सग्राही गुण तथा उपयोग से वैद्य भली भाति परिचित है॥

१३२. तोदरी (Lepidium Iberis)

वर्णन—यह एक कटीली क्षुद्र वनस्पति के फलियो के बीज है–जो मसूरवीज से छोटे तथा चपटे होते है। तोदरी वर्ण के नाते तीन प्रकार की होती है, लाल, श्वेत तथा पीली। तोदरी श्वेत का बीज बाकी दोनो वर्ण के बीज से किंचित बडा तथा चपटा होता है, पीत तोदरी गुण मे उत्तम है। उत्पत्ति स्थान भारत तथा ईरान है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, शुक्रप्रद, दुग्धजनन, उष्णता–कारक, दोषो को सूक्ष्म करने वाला, कफ शोषक तथा नि.सारक,

आमाशय वल्य, शरीर पोषक, इसका लेप शोथनाशक है, इसका विशेष गुण शुक्रप्रद तथा कफ नि सारक है। वीर्यक्षीणता तथा वीर्य के पतलेपन मे पृथक तथा अन्य औषध मे मिला कर चूर्ण वा अवलेह रूप मे दिया जाता है। इसका अवलेह कास श्वास में भी प्रयुक्त होता है।

द

१३३. दमुल ख़वैयन (**Dracaena Cinnabari**)

वर्णन—इसे हीरा दोखी, ख़ूनखरावा वा ख़ून सियाशों कहते है, यह एक वृक्ष का गोंद है जो निलाई लिये हुये लाल रंग का होता है।

गुण तथा उपयोग—प्रबल सग्राही, रक्त स्तम्भक, शोषक, रक्त अतिसार, रक्तप्रदर, रक्तष्ठीवन, रक्त अर्श मे इस का उपयोग विशेपतया किया जाता है, व्रण का रक्त रोकने के लिये इसके बारीक चूर्ण का धूडा डाला जाता है।

१३४. दरमना तुरकी (**Artimisia Stechmaniana**)

वर्णन—यह एक बूटी है, जो सोये बूटी समान ऊचा तथा पुष्प अफसनतीन रूमी के समान सुगन्धित तथा स्वाद में किंचित तीक्ष्ण और तिक्त होता है। पत्र छोटे २ मृदु, कोमल और बीज कसूस-बीज समान परन्तु किंचित वड़े होते है!

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, व्रणशोषक, विरेचक, मूत्र, आर्तव प्रवर्त्तक, वायु तथा कफनाशक, मिश्रित तथा जीर्णज्वर नाशक, परन्तु इसका विशेष गुण उदर कृमि (गण्डूपद कृमि) नाशक है। शोथघ्न और वातनाशक है—कफ़ज गाढ़े शोथ पर इसका लेप करते है, इस को जलाकर रोगन जैतून मे मिला कर इन्द्रलुप्त पर लगाते है, और शिर के वालो को शीघ्र उत्पन्न करने के लिये भी इसका लेप करते है, आमाशय शोथ, जलोदर तथा कृमि नष्ट करने के लिये इसका क्वाथ करके पिलाते है॥

१३५. दरूनज अकरवी (Doronicum Pardalianches)

वर्णन—विच्छू के समान छोटी ग्रथिल कठोर जड होती है, जो वाहर से मिटयाली और भीतर से श्वेत होती है, इसका उत्पत्ति स्थान शाम तथा तबरस्तान है ।

गुण तथा उपयोग—हृदयवल्य तथा प्रसन्न करने वाली, आमाशय तथा यकृतवल्य, कफ तथा वातविलयन, गाढे वातदोष का अनुलोमक, अवसादक तथा गर्भाशय पीड़ा शामक, गर्भरक्षक तथा विष नाशक है। हृदय वलकारक होने के कारण हृदय वलप्रद योगो मे डाली जाती है, फालज, अर्दित, उदरविकारजनित उन्माद, वात उदरशूल, तथा वातज गर्भाशय शूल मे उपयोग किया जाता है। गर्भ की रक्षा के लिये भी इसका प्रयोग सफलता से किया जाता है, अगद होने के कारण प्लैग तथा विच्छूदश पर भी इसका प्रयोग होता है।

१३६. दारचिना (Hydrargyri Perchloridum)

वर्णन तथा उपयोग—यह पारद तथा सखिया का मिश्रिण है, जो श्वेत भारी और चमकदार होता है, यह मृदुकर, रक्तशोधक, व्रण शोपक तथा दुर्गन्धनाशक है, इसका जौहर उडा कर रक्त शोधक तथा व्रण शोपक होने के कारण आतशक मे प्रयोग करते है, मरहमों मे इन्ही गुणो के कारण डाला जाता है।

१३७ दूकू (Peucedanum grande)

वर्णन—यह जगली गाजर के वीज है, जो अजवायन के समान परन्तु उससे छोटे तथा स्वाद मे तीक्ष्ण होते है, इसकी जड उगली के समान मोटी और स्वाद मे गाजर के समान होती है। इसके वीज औषधरूप मे काम आते है।

गुण तथा उपयोग—शोथ तथा कफ नाशक, भेदक, कफशोषक, आमाशयवल्य तथा वाजीकर, वातानुलोमक, मूत्र तथा आर्तव प्रवर्त्तक, वृक्क, बस्ति अश्मरी भेदक, स्वेदल तथा उदरकृमि नाशक

हैं। विशेष करके मूत्र तथा आर्तव प्रवाहण करने के लिये तथा वृक्क, बस्तिगत अश्मरी के लिये प्रयोग किया जाता है, वातानुलोमक होने के कारण यकृतावरोध, वातज जलोदर तथा कफ नाशक होने से उर को कफ से शुद्ध करने के लिये भी इसका उपयोग किया जाता है।

न

१३८. नगन्द बावरी (**Orthosiphon pallidus**)

वर्णन—यह रैहाँ की जाति की बूटी है, जो एक हाथ ऊंची होती है, इसके पत्र पोदीनापत्र समान तथा पुष्प तुलसीपुष्प समान होते हैं।

गुण तथा उपयोग—रक्त शोधक, अगद, शोथघ्न, चौथीया ज्वर नाशक, अधिकतया रक्तदुष्टि, फोडे, फुंसी, कुष्ठ, दद्रु तथा अन्य रक्त तथा चर्म रोग मे प्रयोग करते हैं, इसके अधिक देर तक प्रयोग करने से किलास जैसा दुष्ट रोग नष्ट हो जाता है।

१३९ नारजील दरयाई (**Lodoicea Seychellarum**)

वर्णन—रूप मे यह हिन्दी नारियल (खोपा) के समान है, परन्तु उससे अधिक कठोर और मोटा होता है, यह एक वृक्ष का फल है।

गुण तथा उपयोग—वात तथा कफज्वर नाशक, प्राकृतिक शरीर उष्मा उत्तेजक, विसूचिकानाशक तथा विषनाशक। इसे अधिकतया विसूचिका मे गुलाव जल के साथ घिस कर पिलाते हैं, जब तक उदर मे विसूचिका की विष होगी, वमन आती रहेगी, विष समाप्ति पर वमन वन्द हो जायगी, तृषा को कम करता है, ज्वाहर मोहरा मे प्राकृतिक उष्मा उत्तेजक होने के कारण इसे डाला जाता है।

१४०. नारदीन

वर्णन—इसे सम्बल रूमी भी कहते हैं, यह एक फूलदार वृक्ष है।

गुण तथा उपयोग—शोथघ्न, मूत्रल, अवरोधनाशक तथा उष्णवीर्य है, आमाशयशोथ, प्लीहाशोथ तथा यकृतशोथ मे उपकारी है, वृक्क तथा बस्तिशूल नाशक है और मूत्र खोलकर लाता है, मूत्रावरोध तथा कामला मे लाभकारी है।

१४१. नारमुशक (Mesua Ferrea)

वर्णन—इसे नागकेशर भी कहते है, यह एक बडा वृक्ष है, इस के पत्र अमरूद के पत्तों के समान और पुष्प सफ़ेद जरदी लिये हुये सुगन्धित होता है, इस फूल को ही नागकेशर कहते है,

गुण तथा उपयोग—सग्राही, शोषक, सौमनस्यजनक, हृदय यकृत तथा आन्त्र को बल देने वाला है, वाजिकर है, इसे अधिकतया हृदय तथा मस्तिष्क बल्य योगो मे डाला जाता है, अर्श का रक्त बन्द करने के लिये भी इस का सफलता से प्रयोग होता है।

प

१४२. पनीर माया

वर्णन—किसी चतुर्पाद जानवर के बच्चे को प्रसवोपरान्त उसी समय वध करके उसका दूध सहित आमाशय निकाल कर सुखा लेते है। इसे पनीरमाया कहते है और औषध रूप मे काम मे आता है। ऊंट के पनीरमाया को पनीरमाया शुत्र अहराबी कहते ह।

गुण तथा उपयोग—प्रत्येक पशु के पनीरमाया के पृथक् २ गुण है, परन्तु सर्वसाधारणतया यह जमे हुये रक्त को पिघलाता है, प्रत्येक अग तथा आमाशय के जमे हुये रक्त को पिघलाता है। बल्य, मन प्रसादकर, सग्राही—सग्राही होने के कारण अतिसार मे प्रयुक्त करते है, इसमे वाज़ीकर गुण है, परन्तु शुत्रमाया अहरावी मे यह गुण विशेष करके है, इस लिये इस कार्य के लिये पृथक् वा अन्य योग्य औषध के साथ इसका प्रयोग करते है।

१४३. पपीता (**Ignatia Amara**)

वर्णन—यह कुचिला जातीय वृक्ष के प्रसिद्ध बीज है। जो त्रिकोण आकार के बाहर से किञ्चित भूरे तथा कालिमा युक्त परन्तु भीतर से अर्धस्वच्छ होते है। कुचिले की भाति अत्यन्त कठोर तथा तिक्त होते है। इसका वृक्ष अमरूद से बडा होता है, उत्पत्ति स्थान—फिलापाईन के जजीरे, और कोचीन चाईना है।

गुण तथा उपयोग—सर्वप्रकार के विष का नाशक, शोथघ्न, कफस्रावक, वातानुलोमक, आमाशय, आन्त्रशूल शामक, वमन तथा अतिसार नाशक, आर्तव प्रवर्तक, वाजीकर तथा उष्णता कारक है। विषनाशक तथा वमन अतिसार नाशक होने के कारण विसूचिका मे अत्यन्त उपयोगी है, आमाशय, आन्त्रशूल, कफज कास, श्वास, जलोदर, वातज पीड़ा, अर्श, सधिशूल, पक्षवध मे प्रयोग किया जाता है। इसका तैल (तिल तैल मे बना) मर्दन करने से पक्षघात, खाज तथा सुप्तिवात मे उपयोगी है, विषज प्राणियों के दंश स्थान पर घिस कर लगाने से विष तथा शोथ दोनों को नष्ट करता है।

१४४. प्याज़ जङ्गली (हन्सल, असकील)
(**Urginea indica**)

वर्णन—जंगली प्याज भी सामान्य प्याज के समान होता है, परन्तु इसके पत्र प्याज के पत्रो से अधिक वड़े तथा चौड़े होते है, स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, दोषपाचक, विस्फोटक, रक्त आकर्षणकर्ता, वाजीकर, विषनाशक, मूत्र, आर्तव प्रवाही, कफशोषक, उदरकृमि नाशक, साधारण प्याज से यह अधिक गुणप्रद है, विशेषतया मूत्रल तथा कफस्रावक है, जलोदर और खासी मे अधिकतया प्रयोग होता है, चक्षुष्य तथा कामला नाशक है।

१४५. प्याज नरगस

वर्णन—नरगस एक बूटी है जिसका पुष्प सुन्दर तथा सुगन्धित होता है, पत्र तथा मूल प्याज के समान होता है, इसका मूल जिसे प्याज नरगस कहते है उपयोग मे आता है ।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, लेखन, शोपक, रक्त आकर्षणकर्ता, गर्भस्रावी तथा उदरकृमि नाशक है, शोथनाशक होने के कारण फोडे आदि की शोथ नष्ट करने के लिये इसका लेप किया जाता है, लेखन होने से झाई, छीप और गज पर लेप करते है, तरल दोष शोषक तथा रक्तपरिभ्रमणक्रिया वर्धक होने के कारण शिश्न दुर्बलता मे तिल्लारूप मे अन्य औपध के साथ मिलाकर प्रयोग किया जाता है । इसका क्वाथ गर्भपातक तथा उदरकृमि नाशक है ।

१४६. प्याजबीज (**Allium cepa**)

वर्णन—प्रसिद्ध बीज है, रूप मे त्रिकोण, वर्ण काला और स्वाद तिक्त होता है ।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, लेखन । अधिकतया वाजीकर अवलेह तथा योगों मे डाला जाता है, लेखन होने के कारण व्यग, छीप, झाई तथा खालित्य पर भी पीस कर इसका लेप लगाते है ।

१४७. पियारांगा (**Thalictrum Foliolosum**)

वर्णन तथा उपयोग—यह एक ग्रथिल कटोर जड है, जो अगुल समान मोटी और दो हाथ तक लम्बी होती है, वर्ण पीला लालिमायुक्त और स्वाद तिक्त होता है । शामक, शोथघ्न, आमाशय बल्य, कफस्रावक, विसूचिकाहर तथा सर्पविषनाशक है, यह अधिकतया विसूचिका मे प्रयोग किया जाता है, शीतजन्य शोथ पर इसका लेप किया जाता है, निमोनिया, कास, श्वास मे भी योग्य औषध के साथ इसका प्रयोग करते है, सर्प से काटे रोगी को घिस कर पिलाते है तथा दशस्थान पर इसका लेप भी लगाया जाता है ।

१४८. पिस्ता (N. O Anacardiaceae)

वर्णन--एक वृक्ष का प्रसिद्ध फल है, फारस और अफगानस्तान इसका उत्पत्ति देश है, इसकी त्वचा को तोडने से भीतर से सबज वर्ण की गिरी निकलती है, जो मधुर और स्वादिष्ट होती है, इसका छिलका जिसे पोस्त वीरून पिस्ता कहते है औषध प्रयोग मे आता है, पिस्ते के पत्रो पर विभिन्न आकार तथा वर्ण के कीड़े के घर को पिस्ते का फूल (गुल पिस्ता) कहते है, यह भी औषध प्रयोग मे आता है ।

गुण तथा उपयोग—हृदय तथा मस्तिष्क वल्य, वाजीकर, शरीर पोषक तथा कफ नाशक है । पिस्ता गिरी को हृद्य, मेध्य तथा वाजीकरण होने के कारण हृदय, बुद्धिवर्धक तथा वाजीकर योगो मे डाला जाता है, वृक्क तथा शारीरक दुर्वलता मे उपयोगी है, कफ स्रावक होने के कारण कफज कास मे लाभकारी है, गुल पिस्ता (पिस्ते के फूल) कास मे गुणदायक है, हब्ब गुल पिस्ता इसका प्रसिद्ध योग है । पोस्त वीरून पिस्ता पिस्ता के ऊपर की कठोर त्वचा है, यह सग्राही, हृदय, आमाशय वल्य, वमन शामक तथा उत्क्लेश नाशक है, इसे अतिसार को नष्ट करने तथा हृदय, आमाशय और आन्त्र को वल देने के लिये प्रयोग करते है, मुखपाक मे भी लाभप्रद है, वमन तथा उत्क्लेश नाश के लिये इसका शीत कषाय पिलाते है ।

१४९ पोस्त अनार (Punica granatum)

वर्णन—अनार के छिलका से तात्पर्य है, इसे नासपाल भी कहते है ।

गुण तथा उपयोग—शोषक, सग्राही, कण्ठ पित्तज शोथ नाशक, रक्तष्ठीवन अवरोधक । इन गुणो के कारण मसूडो के मृदु हो जाने मे, दांत हिलने मे तथा मुखपाक मे मंजन तथा धूडे के रूप मे इसका उपयोग होता है, कण्ठशोथ नष्ट करने के लिये इसके क्वाथ से गडूष कराया जाता है, रक्तपित्त, रक्तातिसार, रक्तप्रदर, श्वेत-

प्रदर, प्रवाहिका, रक्त अर्श मे आवश्यकतानुसार चूर्ण करके खिलाया जाता है, इसके क्वाथ से डूश (उरत्तबस्ति) कराई जाती है।

पोस्त बेख अनार (अनार मूल जड़ छाल) यह अनार छाल से अधिक गुणकारी है, यह भी सग्राही, उदर- कृमि नाशक, कण्ठशोथ तथा पीडा शामक, अधिक मात्रा मे प्रयोग करने से विरेचक, इसका क्वाथ उदरकृमि नाशक (कद्दू दाना कृमि) है, और विशेषतया यह इसी रोग मे प्रयुक्त किया जाता है।

१५०. पोस्त वेज़ा मुरग (अण्डे का छिलका) (**Ovum**)

वर्णन—मुरग के अण्डे से पीतता तथा सफेदी निकाल कर जो खोल बाकी रहता है वही अण्डा का छिलका कहलाता है। और आगे इसी का गुण वर्णन है।

गुण तथा उपयोग—सग्राही, शोषक, लेखन, प्रमेह, श्वेतप्रदर, मधुमेह, प्रमेह मे इसकी भस्म अत्यन्त प्रभावशाली औषध है, इसे जला कर तथा इसकी भस्म नेत्ररोग, शुक्ल मे अंजन रूप मे प्रयोग की जाती है। नासा मे प्रधमन करने से नकसीर मे लाभ करती है।

१५१. पोस्त सगदाना मुरग (**Inglovies**)

वर्णन—सगदान एक अग है, जो पक्षियो के आमाशय के स्थान पर उसका प्रतिनिधि अग होता है, मुरग का सगदान औषध रूप मे अधिकतया प्रयोग किया जाता है।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, आमाशय तथा यकृत वल्य। इसे योग्य औषध के साथ, ग्रहणी, जीर्ण सग्रहणी तथा आन्त्रक्षीणता मे विशेषतया प्रयोग करते है, माजून सगदाना मुरग इसका प्रसिद्ध योग है जो आमाशय तथा आन्त्रविकार जनित अतिसार को नष्ट करने के लिये तथा आमाशय को बल देने के लिये प्रयोग की जाती है।

१५२. पंबादाना (Cotton Seeds)

वर्णन तथा उपयोग—इसे बनोला भी कहते हैं, यह कपास के बीज हैं, इस की गिरी निकाल कर प्रयोग की जाती है। यह शरीर पुष्टिकर, वाजीकर, वीर्य तथा दुग्ध उत्पादक, लेखन तथा कफनि सारक है, इस की खीर पका कर पृथक वा अन्य औपध के साथ शरीर को पुष्ट करने, पुंसक शक्ति के लिये तथा वीर्य और दुग्ध उत्पादक हेतु प्रयोग करते है, कफ स्रावक होने से इसे कास में भी देते है।

फ

१५३. फरंजमुशक (Ocimum gratissimum)

वर्णन—इसे राम तुलसी भी कहते है, और यह रेहा की जाति की एक बूटी है, इसका क्षुप तथा पत्र रैहा से अधिक बडे होते है, और रैहा जैसी सुगन्ध उनमे से आती है, इसके पत्र तथा बीज औपधरूप मे प्रयोग किये जाते है, भारत तथा ईरान मे उत्पन्न होती है।

गुण तथा उपयोग—मन प्रसादकर तथा हृदय बल्य, प्रमाथी, आमाशय तथा यकृत बल्य, वातानुलोमक, मरोड शामक, दुर्गन्ध-नाशक, उदर स्तम्भक, रक्त स्तम्भक तथा शोपक है। हृदय बल्य होने के कारण खफकान, भ्रम, तथा अन्य हृदय रोगो मे उपयुक्त होता है, आमाशय तथा आन्त्ररोगो मे उपयोगी है, शीतलता के कारण शिरशूल मे लाभप्रद है, विशेषतया मस्तिष्क सशोधक, आमाशय तथा यकृत बल्य है।

१५४. फरफयून (Euphorbium)

वर्णन—यह अफरीका देश के डण्डा थुहर का जमा हुआ दूध है, जिसका वर्ण पीत, बू तीव्र और स्वाद तीक्ष्ण तथा काटने वाला होता है, जीर्ण होने पर इसका वर्ण लाल तथा गन्धला हो जाता है।

गुण तथा उपयोग—वाह्य उपयोग लेखन तथा जलाने वाला विस्फोटक है, अगों को उष्णता पहुंचा कर पुष्ट करता है। इसका भीतरी प्रयोग विरेचक है। इसको अधिकतया रोग़न कुठ वा रोग़न बलसान मे मिला कर अर्दित, अर्द्धाङ्ग, वातकम्प, सुप्तिवात, सधिवात आदि पर मर्दन तथा लेप रूप में लगाते है, शिश्न को पुष्ट करने के लिये इसको अन्य औषध मे मिलाकर तिल्ला करते है। और ऊपर के रोगों मे इसे विरेचक औषध के रूप मे खिलाते है, वात सस्थान के रोग तथा कफज रोगों मे विशेषतया उपयोगी है।

१५५. फ़ाद जहर हेवानी

वर्णन तथा उपयोग—यह एक प्रकार की पत्थरी होती है, जो पहाडी बकरे-बन्दर और बाराहसिघे आदि मे इनके दुग्ध उत्पादक अग मे उत्पन्न हो जाया करती है, यह इनके पित्ताशय तथा आन्त्र मे भी उत्पन्न होती है, अधिकतया बकरे के भीतर उत्पन्न हुई पथरी को ही उपयोग मे लाते है। और इसे ही फाद जहर हेवानी कहते है, इसका वर्ण सबज कालिमा लिये वा साफ होता है और इसमे प्याज के छिलको के समान परत होते है। यह वाजीकर, प्राकृतिक उष्माबल्य तथा उत्तमागों को बल देने वाली है, विसूचिका नाशक है, यह उष्णवीर्य है, इसलिये उष्ण प्रकृति वालों के लिये हानिकर है, सब प्रकार की विषों को नष्ट करती है, दशस्थान पर धूडने पर उस विष को पी लेती है, प्लेगशोथ पर इसका लेप लाभकारी है।

१५६. फ़ालसा (**Grewia asiatica**)

वर्णन—एक बडे वृक्ष का प्रसिद्ध फल है, जो जंगली बेर समान तथा उससे कुछ छोटा होता है, अपक्व अवस्था मे इसका वर्ण सबज और स्वाद कसैला और अर्ध अपक्व अवस्था मे वर्ण लाल, स्वाद अम्ल, परन्तु पक्व अवस्था मे लाल वर्ण किञ्चित कालिमा लिये हुये और स्वाद अम्ल मधुर होता है, इसके दो भेद है।

फालसा शरबती—इसका वृक्ष एक गज वा इससे कुछ अधिक ऊंचा होता है, दूसरा फालसा शक्करी इसका वृक्ष शरबती से बड़ा होता है, भारत में अधिकतया उत्पन्न होता है।

गुण तथा उपयोग—पित्तज उल्वणता नाशक, रक्त की उष्मा तथा उग्रता शामक, उत्क्लेश तथा वमन शामक, संग्राही, पित्तज विकार जनित हृदय, आमाशय तथा यकृत दुर्बलता नाशक, पैत्तिकज्वर शामक, यह पित्तज विकारो के लिये विशेष उपयोगी है, इसका शरबत, पित्तज ज्वर, वमन, अतिसार तथा तृषा और उत्क्लेश मे प्रयोग किया जाता है, पोस्त बेख फ़ालसा शक्करी (शक्करी फ़ालसा मूल त्वचा) पूयमेह तथा मूत्र प्रदाह मे उत्तम है, हृदय वल्य होने से खफकान तथा हृदय दुर्बलता मे लाभकारी है, मूत्र कृच्छ्रता तथा मूत्र मे रक्त जाने मे भी उत्तम औषध है, इसके वृक्ष की छाल का शृत शीत कषाय मधुमेह मे प्रयोग कराया जाता है।

१५७. फ़ितरा सालीयून (Apium petroselinum)

वर्णन—इसे युनानी वैद्य करफस कोही (करफ़स पहाड़ी) कहते है, इसके बीज जो लम्बे, कृष्ण वर्ण और अजवायन के समान होते है, औषध रूप मे उपयोग किये जाते है, यह तीक्ष्ण तथा सुगन्धित होते है।

गुण तथा उपयोग—उष्णवीर्य, कफ़नि:सारक तथा कफ़-नाशक, वातानुलोमक, प्रमाथी, मूत्र तथा आर्तव प्रवर्तक, गर्भ तथा अश्मरी नि:सारक, अश्मरी भेदक तथा वाजीकर है। इसलिये कफ़ज कास, श्वास, वक्षपीडा, आन्त्रशूल और मरोड मे उपयोगी है, मूत्रल होने के कारण यकृत, वृक्क, वस्ति तथा गर्भाशय का शोधन करते है, मूत्रावरोध तथा आर्तव अवरोध मे इसका उपयोग करते है। यह गर्भ तथा अश्मरी का भी निष्कासन करते है।

१५८. फिन्दक (Corylus anellana)

वर्णन—यह एक वृक्ष का प्रसिद्ध फल है, जो त्रिकोण गोलाई लिये होता है, इसको तोडने से बादामगिरी के समान गिरी

निकलती है, जो उसी के समान मधुर तथा स्वादिष्ट होती है, यह गिरी औषध के काम आती है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, उष्णवीर्य तथा शरीर पोषक है। आन्त्र, मस्तिष्क बल्य, कफनि:सारक है। वाजीकर तथा शरीर पुष्टिकर योगों मे डाला जाता है, वृक्क दुर्बलता मे उपयोगी है, मधु मे मिलाकर कफ तथा प्रतिश्याय मे भी उपयोग कराया जाता है।

(ब)

१५९. बकायन (**Melia azedarach**)

वर्णन—यह एक नीम के समान बडा वृक्ष होता है, इसके पत्र, पुष्प, और फल सब नीम के समान होते है, इसके फल के भीतर चार खाने होते है, और हर एक खाने मे एक बीज होता है, इसके ऊपर कृष्ण वर्ण की एक झिल्ली होती है, भीतर से गिरी श्वेत वर्ण की होती है, नीम के समान इस वृक्ष के सब अंग स्वाद मे तिक्त होते है।

गुण तथा उपयोग—रक्तशोधक, पीड़ाशामक, अर्शनाशक, व्रणशोधक तथा शोषक, उदरकृमि नाशक तथा जीर्ण ज्वर नाशक गुण इसमे विद्यमान है, इसके पत्र और छाल रक्तशोधक होने के कारण रक्तदुष्टि के रोग, कुष्ठ, किलास प्रभृति रोगों मे प्रयुक्त की जाती है, इसके बीज की गिरी अर्श रोग की प्रधान औषध है, जीर्ण ज्वर तथा चातुर्थिक ज्वर मे बकायन वृक्ष की मध्य की छाल का कासनी बीज सहित क्वाथ करके पिलाते है, इसकी मूल छाल का क्वाथ कद्दूदाने तथा केचवे कृमि का मारक है तथा उन्हे बाहर निकालता है।

१६०. बटेर (**Tetrao Coturnix**)

वर्णन—एक प्रसिद्ध चिडिया है, इसका मांस पुष्टिकर, उष्णता उत्पन्न करने वाला, वाजीकर तथा शीतल, वात कफ रोग,

सधिशूल, अर्दित, अर्धाङ्ग आदि मे औषध रूप तथा आहार रूप मे प्रयोग की जाती है। शरीर में शक्ति देने वाला तथा वृंहण आहार है।

१६१. बतुम (**Pistacia terebinthus**)

वर्णन---यह एक वड़े वृक्ष का फल है, जो हरे रंग का होता है इसे हब्बतुलखिजरा कहते है---इसके तोड़ने पर इसके भीतर से चपटी सी गिरी निकलती है, जो खाने मे स्वादिष्ट होती है, इसे **मगज तुखम वतुम** कहते है---इसकी गोद को **अलकलवतुम** कहते है--- फल, गिरी तथा गोंद औषध मे प्रयोग किये जाते है।

गुण तथा प्रयोग---वाजीकर, कफ नि सारक, सारक, लेखन तथा मूत्र, आर्तव प्रवर्त्तक है, कास, श्वास मे उर को कफ से शुद्ध करने के लिये इसे प्रयोग करते है, वाजीकर योगो मे भी इसे डाला जाता है, लेखन होने के कारण रंग साफ करने के लिये तथा झाई, छीप आदि नष्ट करने के लिये इसका लेप बना कर मुख पर तथा त्वचा पर लगाया जाता है।

१६२. बनफशा (**Viola odorata**)

वर्णन---यह एक बूटी है, जो नैपाल और काशमीर मे वहुत उत्पन्न होती है, इसके पत्र अनारपत्र समान और पुष्प लाजवरदी वर्ण के सुगन्धयुक्त होते है। सर्वाग यह औषधरूप मे काम आती है, परन्तु पुष्प अधिकतया प्रयोग मे आते है।

गुण तथा उपयोग---पित्त शामक, सारक, रक्त उग्रता शामक, कण्ठ तथा उर मृदुकारक, सुप्तिजनक, इसे अधिकतया प्रसेक, प्रतिश्याय, वातकफ सन्निपात, कास, श्वास मे प्रयोग किया जाता है, ज्वरो मे विबन्ध नष्ट करने के लिये तथा तृपा शान्त करने के लिये पित्तशामक गुण करके इसका क्वाथ पिलाते हैं, कास, श्वास तथा विबधनष्ट करने के लिये इसका गुलकन्द तथा शरवत वना कर प्रयोग करते है, इसके फूलों को तैल मे वसा कर तैल वनाया जाता है, जो शिरशूल नाशक तथा निद्राप्रद है।

१६३. बरंजासफ़ (**Achillea millefolium**)

वर्णन—अफ़सनतीन की भाँति एक बूटी है, इसे बूये मादरान भी कहते है। इसकी शाखाये बारीक, पत्र छोटे २, फूल सोये समान छत्राकार, पीत, श्वेत तथा नीलिमा लिये होते है, इस बूटी पर एक चिपकने वाला द्रव्य लगा हुआ होता है।

गुण तथा उपयोग—उष्णताजनक, शोथघ्न, प्रमाथी, मूत्र तथा आर्तव प्रवाही, वृक्क, वस्ति अश्मरीभेदक, ज्वरनाशक, शरीरके भीतरी अगों की शोथ के लिये उपयोगी है, मूत्र तथा आर्तव अवरोध मे इसका क्वाथ लाभकारी है, गर्भाशय शोथ को नष्ट करता है, कफ़ज ज्वर जिसमे यकृत भी दूषित हो अत्यन्त उपयोगी है, विशेषतया यह शोथनाशक तथा जीर्णज्वर नाशक है॥

१६४. बरग तब्त

वर्णन—इसे काश्मीरी पत्र भी कहते है, पत्र तेजपात के समान परन्तु उससे वडे तथा मोटे होते है। काशमीर इसका उत्पत्ति स्थान है।

गुण तथा उपयोग—इसका बारीक चूर्ण करके नस्य रूप मे शिरशूल, प्रसेक तथा प्रतिश्याय मे उपयोग करते है।

१६५. बसफाईज (**Polypodium vulgare**)

वर्णन—एक बूटी की जड़ है, इसका रूप कनखजूरे के समान प्रतीत होता है, वर्ण बाहर से रक्त कालिमा लिये हुये और तोड़ने पर सबज पिस्ते के वर्ण की तरह होता है, जीर्ण होने पर भीतर से भी बाहर सा वर्ण हो जाता है, जिसका वर्ण भीतर से पिस्ते के समान सबज हो, वह उत्तम मानी जाती है और उसे बसफ़ाईज फ़स्तकी कहते है।

गुण तथा उपयोग—वात कफ़ दोष विरेचक, वातानुलोमक, इन गुणो के कारण इसे कुष्ट, अपस्मार, उन्माद और सधिशूल में प्रयोग कराते है, वातानुलोमक होने के कारण यह हृदय को बल देता है, तथा आन्त्रशूल, आध्मान में भी उपयोगी है॥

१६६. बहमन

(Centaurea behemen & Saliva hemotodes)

वर्णन—छोटी २ शुष्क गाजरे के समान एक बूटी की जड़े होती है। जिनके ऊपर झुर्रियां पड़ी हुई होती है, यह रक्त और श्वेत दो प्रकार की होती है, फारस, भारतवर्ष तथा खुरासान उत्पति स्थान है।

गुण तथा उपयोग—हृदयवल्य, वाजीकर, वीर्यप्रद, शरीर पुष्टिकर इन गुणों के कारण हृदय, खफ़कान नाशक तथा वीर्यप्रद योगों में इन दोनों प्रकार के बहमन को डाला जाता है, शरीर-पोषक तथा वीर्य बल्य इनका विशेष गुण है॥

१६७. वहरोजा

वर्णन—यह एक वृक्ष का जमा हुआ दूध समान निर्यास है, जो प्रथम श्वेत रंग का किंचित पतला तथा गाढ़ा होता है, फिर यह शनै.शनै पीले वर्ण का गाढा हो जाता है, और अन्त मे लाल वर्ण का शुष्क हो जाता है—बाजार मे यह दो प्रकार का मिलता है—शुष्क तथा तर, इसके वृक्ष हिमालय पर बहुत होते है।

गुण तया उपयोग—उष्णताकारक-शोथघ्न, वातानुलोमक, व्रण शोषक, वातकफ रोग नाशक, कफशोषक तथा नि.सारक, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवाही, गर्भ तथा अमरा नि:सारक, कृमिनाशक, इसे अधिकतया सुजाक मे प्रयोग करते है—व्रणों के लिये मरहमो मे डाला जाता है, शोथघ्न होने के कारण कण्ठमाला, गर्भाशय शोथ, मे प्रयोग करते है—आर्तव अवरोध को नष्ट करने के लिये भी इसका उपयोग होता है।

१६८. बही (N. O. pomea)

वर्णन—एक प्रसिद्ध फल है, अम्ल तथा मधुर दो प्रकार का होता है, इसके बीजो को बहीदाना कहते है। ईरान, अफ़गानस्तान, काशमीर इसके उत्पत्तिस्थान है।

गुण तथा उपयोग—सौमनस्यजनन, मस्तिष्क तथा हृदय बल्य, आमाशय तथा यकृत बलप्रद, ग्राही तथा मूत्रल है, फल की तरह बही को खाया जाता है, भारी तथा ग्राही होता है, इसका प्रसिद्ध औषध रूप इसका मुरब्बा है, जो पित्तज अतिसार, आमाशय, यकृत की उष्मा तथा हृदय पित्तज खफकान मे उपयोगी है, प्यास, मतली को भी नष्ट करता है। इसके बीज (बहीदाना) लुआबदार, चिपकने वाले तथा पित्त शामक है, इसका लुआब पित्तज प्रतिश्याय, कास, कण्ठ रूक्षता, जिह्वा का दाह, ज्वर सहित रक्तपित, यक्ष्मा, अतिसार, प्रवाहिका तथा उष्ण प्रकृति के ज्वरों मे उत्तम लाभकारी औषध है, इसकी गिरी यक्ष्मा कास तथा रक्तष्ठीवन मे उपयोगी है।

१६९. बाकला बीज (**Vicia faba**)

वर्णन—बाकला मटर के समान एक प्रकार का बीज है, इस की फली तीन चार अगुल लम्बी और गोल होती है, इन पर बारीक २ रूई सी होती है, प्रत्येक फली के भीतर ४–५ बीज होते है।

गुण तथा उपयोग—इसकी फलिया तथा बीज साग की भांति पकाकर खाये जाते है, वातल तथा भारी होते है, बीजों की गिरी योग्य औषध मे मिलाकर खांसी और श्वास मे कफस्राव करने के लिये प्रयोग करते है, शोथ मे लेप रूप मे लगाते है, शोथघ्न है।

१७०. बादरजबोया (**Melissa officinalis**)

वर्णन—इसे **बिल्ली लोटन** भी कहते हैं, इसके पत्र रैहापत्र के समान होते है और बिजौरे निम्बु समान गन्ध होती है, मध्य एशिया, यूरूप, उत्तरि अमरीका तथा फारस इसके उत्पत्ति स्थान है।

गुण तथा उपयोग—मन प्रसादकर, हृदयबल्य, वातदोष-पाचक, रक्तदोष नाशक, सुगन्धित, शोथविलयन तथा उष्णता-जनक, इसे अधिकतया वात कफज रोग, यथा अपस्मार, अर्दित, अर्धाङ्ग और हृदय दुर्बलता मे प्रयोग करते है, सधिशोथ और स्तन शोथ पर इसका लेप करते है।

१७१. बादाम तलख़ (Amygdala amarars)

गुण तथा उपयोग—यह मधुर बादाम के समान ही होता है, इसका स्वाद तिक्त तथा अरुचिकर होता है, इसे विषैला होने के कारण भीतरी औषध रूप मे प्रयोग नही किया जाता, इसे अधिकतया दाद, झाईं आदि दूर करने तथा मुख वर्ण निखारने के लिये मुख पर लेप किया जाता है, इसका निकाला हुआ तैल कर्णनाद, कर्णशूल के लिये किंचित उष्ण करके डाला जाता है, कर्णकृमि के लिये भी अत्यन्त उत्तम है, यूका को मारने के लिये इसे शिर पर भी लगाते है।

१७२. बादावर्द (Volutarella divaricata)

वर्णन—एक कांटेदार बूटी है, जिसकी शाखायें श्वेत वर्ण की चौपहल और बीच मे खाली होती है, पुष्प नीले और बीज कुटज बीज समान परन्तु उससे कुछ गोल होते है। स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—सुद्धा नि.सारक, मूत्रल, रक्त स्तम्भक, ज्वरनाशक और पीडा शामक है, इसको अधिकतया जीर्ण ज्वरो मे अन्य उपयोगी औषध के साथ प्रयोग किया जाता है, रक्तष्ठीवन, यकृतशूल, जीर्ण अतिसार तथा यकृत अवरोध मे इसका उपयोग होता है, कफज ज्वरों मे विशेष उपयोग है।

१७३. बादायान खताई (Illicium Verum)

वर्णन—लाल कालिमायुक्त धूम्र वर्ण के तारे की शकल के क्षुद्र बीज है, स्वाद मे सौंफबीज के समान है।

गुण तथा उपयोग—आमाशय बल्य, पाचक, वातानुलोमक और मूत्रल गुण वाले है, और इन्ही गुणों के कारण आमाशय-विकार मे प्रयोग किये जाते है।

१७४. बादियान जड़ (**Foeniculum Vulgare**)

वर्णन—सौफ वृक्ष की जड है, इसका वर्ण श्वेत पीतता लिये हुये होता है।

गुण तथा उपयोग—कफ दोष पाचक, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवाही होने के कारण इन्ही रोग मे अधिकतया उपयोग होती है।

१७५. बाबूना (**Matricaria Chamomilla**)

वर्णन—एक बूटी है, इसके पत्र छोटे २ रूई युक्त होते हैं–पुष्प पीत तथा श्वेत होते है, इसकी गन्ध तीक्ष्ण और स्वाद तिक्त होता है, पुष्प तथा मूल औषध मे प्रयुक्त होते है।

गुण तथा उपयोग—आमाशय बल्य, वातानुलोमक, शोथघ्न, मस्तिष्क तथा वातनाड़ी बल्य, मूत्र तथा आर्तव प्रवर्तक, इसे अधिकतया शोथ तथा कठोर शोथ मे शोथ को विलीन करने के लिये लेपों मे डालते है। मूत्र तथा आतर्व को लाने के हेतु इसका आंत्रिक प्रयोग करते है तथा इसके क्वाथ से कटिस्नान कराते है। मस्तिष्क दुर्बलता, वातरोग, कामला, आमाशय दुर्बलता तथा आमाशयिक वातज शूल और कफ़ज कास मे इसका उपयोग होता है।

१७६. बाये खुम्बा (**Careya arborea**)

वर्णन तथा उपयोग—यह शहतूत के समान एक बड़ा वृक्ष है, इसका फल औषधरूप काम मे लाया जाता है, जो भूरा मिटयाले वर्ण का होता है, यह पाचक, सारक, वातानुलोमक तथा आमाशय बल्य है, इसको अधिकतया अमाशय शुद्धी तथा शक्ति देने के लिये वालकों को क्वाथ रूप मे देते है, वातानुलोमक होने के कारण बालको के उदरशूल मे भी उत्तम है।

१७७. बारतग (**Plantago mojor**)

वर्णन—यह एक बूटी है, जिसके पत्र भेढ़ की जिह्वा के समान, और ब्रीज छोटे २ काले वर्ण रंग के वनफ़शी वर्ण युक्त होते है,

इसके पत्र वा इन का फाड़ा हुआ पानी तथा बीज औषध मे उपयोग किये जाते है ।

गुण तथा उपयोग—पत्रों का फाडा हुआ तथा छाना हुआ पानी शरीर के आन्त्रिक अगों मे से रक्त जाने को लाभप्रद है । इसलिये रक्तष्ठीवन, रक्त अर्श तथा रक्त प्रदर मे इसका उपयोग होता है, बीज भी अतिसार, रक्त अतिसार तथा यक्ष्मा अतिसार मे प्रयोग किये जाते है । दत तथा कण्ठपीड़ा मे इसके क्वाथ से ग़रारे किये जाते है, उष्ण शोथ मे इसके लेप करने से लाभ होता है ।

१७८. बारूद

वर्णन—यह कलमी शोरा, गन्धक तथा कोयला का मिश्रण है ।

गुण तथा उपयोग—काटने वाला तथा लेखन, इसके विशेष गुण है। इसे तिल तैल मे मिलाकर नाडीव्रण मे भरते है, यह दूषित मांस को नष्ट करके व्रण का रोपण शीघ्रता से करता है । दाद पर भी लगाते है, रक्त स्तम्भक भी है ।

१७९. बावची (**Psoralea corylifolia**)

वर्णन—यह एक बूटी के बीज है, जो मसूर समान परन्तु इससे कुछ वडे, गोल, लम्बूतरे और चिपटे होते है, भीतर से श्वेत गिरी निकलती है, स्वाद तिक्त तथा तीक्ष्ण होता है, जो जिह्वा पर लगता है ।

गुण तथा उपयोग–रक्तशोधक, सारक, उदरकृमि नाशक, वातानुलोमक, आमाशय वल्य, इसे रक्तशोधक होने के कारण रक्तदोषजनित रोग, कुष्ठ, दद्रू, खाज, व्यग आदि मे वहुधा प्रयोग किया जाता है, किलास, छीप और झाईं पर इसका लेप भी किया जाता है, यदि रक्तदुष्टि के साथ विवन्ध, अर्श तथा क्षुधानाश आदि उपद्रव हो, तो इसके प्रयोग से उक्त उपद्रव भी नष्ट हो जाते है। इसे शुद्ध करके प्रयोग करते है, इसकी शुद्धि गोमूत्र वा अद्रक रस मे एक सप्ताह तक भावित करने से हो जाती है।

१८०. बांस (**Bambusa Aurndinacea**)

गुण तथा उपयोग---एक प्रसिद्ध वनस्पति है, हम यहां पर इसकी मूल (जड़) का गुण वर्णन करते है, यह लेखन, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवाही है, इसका क्वाथ प्रयोग किया जाता है। इसको पृथक तथा अन्य औषध के साथ चीचक के दागो पर तथा मुख को सुन्दर करने के लिये लेप करते है, इसको जलाकर गंज तथा दाद पर भी लगाते है।

१८१. बिच्छू (**Scorpion**)

वर्णन---एक विख्यात विषैला तथा डकदार जानवर है, इसके काटने से तीव्र पीडा होती है।

गुण तथा उपयोग---इसको जला कर वृक्क तथा मूत्राशय की पथरी को तोडने के लिये विशेषतया प्रयोग किया जाता है, इसका तैल बनाकर अर्दित, अर्धाङ्ग और सधिशूल मे मर्दन किया जाता है। अर्श के मस्सो पर भी लगाते है, सर्पदशस्थान पर इसे कुचल कर बाधने से विष का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

१८२. बीज अस्पस्त

वर्ण तथा उपयोग---यह मोटे तथा पीले वर्ण के बीज है, अधिकतया वाजीकरण तथा संग्राही होने के कारण यह वाजीकर योगो मे डाले जाते है, शरीर को मोटा करते है, आर्तव प्रवर्तक है, अर्दित, पक्षाघात, वातकम्प मे भी प्रयोग किये जाते है, शुद्ध रक्त उत्पादक है–कास तथा उर रूक्षता मे भी प्रयोग किये जाते है।

१८३. बीजबन्द

वर्णन---इसके बीज प्याजबीज समान त्रिकोण तथा मिटयाला वर्ण के होते है, स्वाद फीका और बुरा होता है।

गुण तथा उपयोग---वीर्य पुष्टिकर, स्तम्भक इसके विशेष गुण है। प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, तथा वीर्य तारल्यता मे अतीव उपयोगी है।

१८४. बीर बहूटी (**Mutella Occidentalis**)

वर्णन—फारसी मे अरूसक भी कहते हैं, यह एक लाल रग का रीघने वाला कीट है, वर्षा ऋतु के आरम्भ मे पृथ्वी से निकलता है ।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, वात नाड़ी वल्य, इसे अधिक-तथा शिश्न दुर्वलता मे तिल्ला तथा लेप रूप मे उपयोग किया जाता है, भीतर औपध रूप मे वाजीकर गुण के लिये दिया जाता है।

१८५. वुरादा हाथीदांत (**Ivory**)

वर्णन तथा उपयोग—प्रसिद्ध द्रव्य है, हाथी के दात जो बाहर निकले हुये होते है, उनका बारीक चूर्ण कर औपधरूप मे प्रयोग करते है । इसे मधु के साथ खाने से बुद्धि तीव्र होती है, योग्य औपध के साथ मिला कर देने से रक्तप्रदर तथा रक्त अतिसार मे उत्तम कार्य करता है, वध्या स्त्री को रजोधर्म पश्चात मिश्री के साथ एक सप्ताह तक खिलाने से उसमे गर्भधारण की शक्ति आ जाती है और अधिकतया इसी गुण के लिये प्रयोग किया जाता है, नेत्ररोगो मे और विशेषतया दृष्टिदुर्बलता मे उत्ताम है ।

१८६. बुसद

वर्ण—खोखला, सुराखदार, पाषाणवत कठोर और लालिमा लिये एक द्रव्य है—कई इसे प्रवालमूल कहते है, परन्तु कई पृथक पदार्थ मानते है ।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, रक्त स्तम्भक, शोषक, लेखन, हृदय वल्य, शीतल वीर्य होने के कारण रक्तष्ठीवन, रक्तपित्त, रक्तार्श, रक्त अतिसार, आन्त्रव्रण मे उपयोगी है, लेखन तथा शोषक होने के कारण दतमजनो मे भी डाली जाती है, जली हुई लेखन गुण के कारण नेत्ररोग, दृष्टिमांद्य, नेत्र शुक्ल, नेत्र कण्डू यथा-पक्ष्मशात मे गुण कारक है—व्रण रोपण तथा शोधन के लिये इसका बारीक चूर्ण व्रणो पर डाला जाता है ।

१८७. बूरा अरमनी

वर्णन—यह एक प्रकार का लाल वर्ण का लवण है, स्वाद इसका खारी होता है, आरमीना देश मे उत्पन्न होने के कारण इसे बूरा अरमनी कहते है।

गुण तथा उपयोग—अधिकतया इसे उदररोगो मे अजीर्ण, मन्दाग्नि, आध्मान, उदावर्त मे प्रयोग किया जाता है, वातानुलोमक होने के कारण उपरोक्त रोगों मे लाभप्रद है, आमाशय को वल देता है।

१८८. बेख लुफाह (Atropa balladonna)

वर्णन—इसे सूची वुटी भी कहते है, इसके पत्र धस्तूरपत्रवत होते है, इसकी मूल दो आपस मे लिपटे मनुष्य की तरह होती है, उस पर वारीक रेशे लगे होते है—इसके पत्र तथा मूल औपध प्रयोग मे आती है।

गुण तथा प्रयोग—बाह्य प्रयोग पीड़ा शामक तथा सुप्तता उत्पन्न करने वाला है। त्वचा को रक्तयुक्त करती ह और पित्तज शोथ को विलीन करती है, स्वेद तथा दुग्ध की उत्पति को रोकती है, भीतरी प्रयोग से वात ज्ञान तन्तु के ज्ञानशक्ति को नष्ट करके पीड़ा को शान्त करती है, अधिक मात्रा मे खिलाने से मद तथा प्रलाप उत्पन्न करती है और अन्त मे गहरी बेहोशी लाती है, इसको सन्धिशूल, वात रक्त तथा अन्य सधिपीड़ाओ मे लेप करते है, तथा शोथ को विलीन करने के लिये स्तन शोथ (जो दूध की लधिकता से प्रसूता को हो जाता है) मे इसका लेप गुणकारी है, आन्त्रिक प्रयोग प्रमेह, स्वप्नदोष, जीर्ण कास तथा काली खासी मे किया जाता है।

१८९. बेद मुश्क (Salix caprea)

वर्णन—इसका वृक्ष फारस, यूरूप मे और भारतवर्ष मे काश-मीर तथा पजाब में होता है, इसके फूल अत्यन्त सुगन्धित होते है।

गुण तथा उपयोग—हृदयवल्य, सौमनस्यजनन, मस्तिष्कवल्य उष्मा शामक, मूत्रल, पीड़ा शामक, उदर को मृदु करने वाला, अधिकतया इसका परिस्रुत जल (अर्क) प्रयोग किया जाता है, जो पित्तज प्रकृति के लिये अत्यन्त उत्तम है, पित्तज शिरशूल तथा खफकान के लिये लाभकारी तथा उपयोगी है।

१९०. वेद सादा (**Salix alba**)

वर्णन—यह एक प्रसिद्ध वृक्ष है, इसके पत्ते बारीक २ एक हाथ तक लम्बे होते है, पुष्प पीले वर्ण के मृदु होते है, इस वृक्ष के पत्र और पुष्प औषध रूप मे प्रयोग किये जाते है।

गुण तथा उपयोग—उष्मा शामक, हृदयवल्य तथा मनप्रसादकर है, मूत्रल, पीडा शामक, इसके पत्रो पर सोना पित्तज प्रकृति वालो के लिये, यकृत और हृदय की उष्मा, रक्तज और पित्तज ज्वरो मे अत्यन्त उपयोगी है, इसके ताजा पत्रो का रस रक्त अतिसार नाशक तथा कर्णशूल मे डालने से शूल को शान्त करता है, यकृतावरोध, कामला, प्लीहाशोथ मे भी प्रयोग किया जाता है, इसका परिस्रुत अर्क शामक होने के कारण पित्तज खफकान, यक्ष्मा, मसूरिका तथा पित्तज ज्वरो मे अति लाभप्रद है। हृदय, मस्तिष्क वल्य तथा पित्तज ज्वर मे विशेपतया प्रयोग किया जाता है।

१९१. बोजीदान (**Tanacetum Umbelliferum**)

वर्णन—श्वेत वर्ण की ठोस और कठोर जड़ है, जो अगुल समान वा उससे वड़ी होती है—और इसके ऊपर रेखाये खेची होती हैं।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, वातनाड़ी तथा सधि शोधक, वाजीकर योगो मे इसे डाला जाता है, वातनाडी तथा संधि शोधक होने के कारण सधि शूल तथा वातरक्त में उपयोगी है। इसका विशेप गुण पित्त विरेचक है।

(म)

१९२. मकोय (**Solanum dulcamara**)

वर्णन—इसे अनबल सहलब भी कहते है, इसका पौदा आधे से एक गज तक ऊंचा होता है, शाखों और पत्रों की रगत सबज कालिमा युक्त होती है, फल चने समान और सबज वर्ण का होता है, इसके भीतर ख़शखाशबीज समान छोटे २ बीज भरे होते हैं, अपक्व परन्तु शुष्क फल तथा हरे पत्र औषधप्रयोग मे आते है। भारतवर्ष, ईरान, तुरकस्तान, यूरूप इसका उत्पत्ति स्थान है।

गुण तथा उपयोग—सग्राही, दोष को लोटानेवाला, शोषक, मृदुकर, उष्मा शामक, शोथ नाशक—इसका यकृत तथा आमाशय-शोथ मे बाह्य तथा आन्त्रिक प्रयोग होता है—इसका पत्र स्वरस फाड कर उपरोक्त रोगो मे पिलावे—यकृत विकार जनित ज्वर तथा शोथ मे अधिक उपयोगी है।

१९३. मरज़नजोश

वर्णन—इसे दोनामरवा भी कहते है, यह एक सुगन्धित श्वेत वर्ण की घास है, उष्णवीर्य है।

गुण तथा उपयोग—मृदु करती है तथा विलयन है, लेखन, अवरोधनाशक, अश्मरीघ्न, शोषक, अर्दित-शिरशूल, मस्तिष्क गत दोष, छातीपीडा, आन्त्रशूल मे लाभप्रद है, यकृत अवरोध, प्लीहाविकार, जलोदर सब मे उपयोगी तथा गुणकारी है, मस्तिष्क को शुद्ध करती है, सूघने से प्रतिश्याय को लाभ करती है।

१९४. मवीज-मुनक़्का (**Driedgrapes Seeds**)

वर्णन तथा उपयोग—यह वास्तव मे शुष्क अगूर ही है, इसकी उत्पत्ति काशमीर और अफगानस्तान है, इसमे आहारतत्व अधिक होता है, गाढे दोषो का पाक करता है, सुद्धो को निकालता है, उदर को मृदु करके सारक गुण करता है, शोथघ्न, लेखन, आमाशय, आन्त्र तथा यकृतबल्य, वाजीकर और पुष्टिकर है, जिन रोगियों

को भोजन अपथ्य है उनकी शक्ति को ठीक रखने के लिये भोजन-रूप में यह मुनक्का खिलाई जाती है, यह तीनों दोषों का पाक करता है, विरेचक क्वाथ मे इसे भी डाल कर देते है और विरेचन आसानी से विना कष्ट के खुल कर हो जाता है।

१९५. मस्तगी (Mastiche)

वर्णन—एक वृक्ष का जमा हुआ रालदार गोंद है, इसका वर्ण श्वेत पीतता युक्त स्वच्छ, स्वाद मधुर और सुगन्धित होता है, श्याम, रोम तथा अरमानीया आदि इसका उत्पत्ति स्थान होने से इसे मस्तगी रूमी कहते है।

गुण तथा उपयोग—आमाशय तथा यकृत बल्य, वातानुलोमक, सारक परन्तु सग्राही गुण युक्त, कफनाशक, मृदुकर, शोथघ्न, शोषक, लेखन, सग्राही तथा रक्तस्तम्भक, इसे अधिकतया आमाशय दुर्बलता मे प्रयोग किया जाता है, ज्वारश मस्तगी इसका प्रसिद्ध योग है, शोथघ्न होने के कारण लेपो मे भी डाली जाती है, रक्त स्तम्भक होने के कारण मजनो में डाली जाती है, तथा रक्तष्ठीवन, रक्तप्रदर रक्त अतिसार मे भी उपयोग की जाती है, विरेचक औषधियों के साथ प्रयोग करने से यह त्रिदोषो को विरेचन द्वारा वाहर निकालने मे सहायता करती है तथा विरेचन के अवगुणों को भी नष्ट करती है।

१९६ माजरियून (Mezerei folia)

वर्णन—यह एक तेज और विषैले दूध वाली बूटी है, इसके पत्र औषध रूप मे प्रयोग किये जाते है, इसे सिरके मे ४८ घण्टे तक भिगो रखने के पश्चात् (अर्थात् सिरके मे शुद्ध करके) औषध प्रयोग मे लाते है, वीच २ मे सिरके को वदलते रहने चाहिये।

गुण तथा उपयोग—लेखन, तीव्र विरेचक, कृमिनाशक तथा नि सारक, मूत्र तया आर्त्तव प्रवाही, इसे तीव्र विरेचक (पानी के समान पतले दस्त लाता है) होने के कारण जलोदर, कामला

तथा उदरकृमियों के नाश के लिये प्रयोग करते हैं, लेखन होने के कारण चर्मरोग झाईं, किलास तथा दद्रु आदि में इसका लेप लगाते हैं।

१९७. मामीरान (**Coptis teeta**)

वर्णन—एक बूटी की छोटी सी जड़ है, जो ग्रन्थिल और टेढ़ी होती है, इसका वर्ण पीला कालिमा लिये होता है, मामीरान चीनी इसका सर्वोत्तम भेद है।

गुण तथा उपयोग—लेखन तथा दृष्टि बल्य है—इसका भीतरी प्रयोग वातानुलोमक और मूत्रल गुण करता है। अधिकतया इसे नेत्ररोग मे और उपयुक्त औषध के साथ अजन रूप मे प्रयोग किया जाता है, दृष्टिमाद्य, जाला, फोला तथा धुन्ध को नष्ट करता है, चर्म रोग किलास, खाज तथा त्वचा के दाग धब्बो को नष्ट करने के लिये इसका लेप करते हैं, मूत्रल होने के कारण कामला तथा पूयमेह मे भी इसका प्रयोग किया जाता है।

१९८. मामीशा

वर्णन—एक बूटी है, जो पृथ्वी पर फैली होती है, इसे कूट कर बलूती आकार की चक्रिकाये बनाई जाती है, जिनको **असार मामीशा वा श्याफ मामीशा कहते हैं।**

गुण तथा उपयोग—शीतल, सग्राही, शोषक, तथा दोषविलोम-कारक, इसी कारण इसे नेत्ररोगो मे, नेत्र अभिष्यन्द आदि मे तथा पैत्तिक शिरशूल, पैत्तिक सधिशूल, विसर्प, तीव्र विसर्प तथा रक्तज शोथ मे इसे लेप किया जाता है, और नेत्रजलस्राव, तथा दृष्टि-दुर्बलता मे सुरमे की भाति प्रयोग किया जाता है, सग्राही तथा शीतल होने के कारण पैत्तिक अतिसार मे भी उपयोग किया जाता है।

१९९. माही जहरज (**Anamirta cocculus**)

वर्णन तथा उपयोग—यह एक शीरदार बूटी है, इसे कूट कर जलाशय मे डालने से मछलियों की मृत्यु हो जाती है, इसकी छाल

औपध रूप मे प्रयोग की जाती है। यह तीव्र विरेचक औषध है, इसे संधिशूल, गृध्रसी, जलोदर मे क्वाथ करके पिलाते है, यूका को मारने के लिये इसे शिर के बालों में लगाते है। यह कफ़दोष को दस्तो द्वारा निकालती है।

२०० माही रोबीयान

वर्णन—इसे झींगा मछली कहते है—यह एक प्रकार की मछली है—जिसकी मूछें लम्बी २ होती है, रंग श्वेत तथा स्वाद मधुर होता है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, शुद्ध रक्त उत्पादक, वृक्क तथा गर्भाशय को उष्मा पहुचाये, वाजीकर गुण इसमे विशेष करके है, और अधिकतया इसी लिये प्रयोग में आती है।

२०१. मुरदा संग (**Pulmbi Oxidum**)

वर्णन तथा उपयोग—इसकी जरदी लिये डलिया होती है, यह सीसा (नाग) से तैयार की जाती है, यह लेखन, व्रणकारक, व्रण-शोपक, उदरकृमिनाशक है, यह अधिकतया व्रणो के लिये मरहमों मे डाला जाता है, उदरकृमिनाशक होने के कारण भीतर भी इसका प्रयोग होता है, परन्तु विषैला होने के कारण इसका उपयोग कम किया जाता है।

२०२. मुरमुक्की (**Myrrha**)

वर्णन—एक वृक्ष का रालदार गोद है, जो उसके तने में चीरा देकर ग्रहण किया जाता है,—इसके गोल २ क्रमरहित दाने होते है, इन दानो के आपस मे मिलने से बहु तथा विभिन्न आकार की डलिया बन जाती है, इसका वर्ण लालिमा लिये हुये पीला, स्वाद तिक्त तथा सुगन्धित होता है, मक्का का मुर उत्तम होता है, उसे मुरमुक्की कहते है।

गुण तथा उपयोग—दुर्गन्ध नाशक, शोषक, लेखन, वातानुलोमक, आमाशय बल्य, उदर कृमि नाशक, आर्त्तव प्रवर्तक,

शोथघ्न, प्रमाथी, कफनिसारक तथा उष्णवीर्य है। प्लेग आदि ज्वरो मे इसका प्रयोग करते है—लेखन, होने के कारण नेत्ररोगों मे उपयोग होता है, आमाशय को वल देने, वात को निःसरण कराने तथा कृमिनाश के हेतु इसे प्रयोग किया जाता है, कफ, कफज श्वास, स्वरभेद और गले की रूक्षता मे उपयोगी है, विरेचक औषध के साथ मिलाने से उसके गुण को तीव्र करती है, तथा उसके अवगुणो का नाश करती है। शोथ मे लेप रूप मे इसका उपयोग किया जाता है।

२०३. मुलीम

वर्णन—यह एक पौदे की जड़ है, जिसका वर्ण भूरा कालिमा-युक्त होता है, स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—कृमिघ्न, जिस व्रण मे कृमि पड़ गये हो, इसके वारीक चूर्ण को धूडने से वह कृमि नष्ट हो जाते है, मस्तिष्क कृमिरोग मे तथा उसके उपद्रव शिरशूल मे इसकी नस्य देते है—कृमि मर कर वाहर निकल आते है, और शिरशूल नष्ट हो जाता है।

२०४. मुशकतरामशीह (**Zizishora tenuior**)

वर्णन—इसे जंगली पोदीना कहते है—यह पोदीना की जाति मे से ही है, जिसकी वू तीव्र और स्वाद तीक्ष्ण होता है, इसके पत्र छोटे २ फूल विपुल और बारीक २ लोमयुक्त होते है।

गुण तथा उपयोग—वातानुलोमक, मत्र तथा आर्त्तव प्रवर्त्तक, उदरकृमिनाशक—अधिकतया आर्त्तव लाने के लिये, अमरा तथा गर्भ निकालने के लिये इसको क्वाथ रूप मे पिलाते है, उदर-कृमिनाश के लिये इसका क्वाथ पिलाते है, तथा क्वाथ की बस्ति भी करते है, कर्ण तथा नासाकृमि के लिये इसका स्वरस कान तथा नाक में डाला जाता है।

२०५. मुशक दाना (**Hibiscus abemoschus**)

वर्णन तथा उपयोग—मसूर के समान एक वटी के बीज है, जिसका वर्ण मिटियाला कालिमा युक्त होता है और इसके भीतर चिकनी सुगन्धित गिरी होती है। दृष्टिबल्य, सग्राही तथा शामक है, इसे खरल करके आखो मे लगाते है, इसका चूर्ण प्रमेह मे उपयोगी है, इसकी जड को जल मे घोट कर, छान कर पूय मेह मे प्रयोग किया जाता है।

२०६. मूली वीज (**Raphanus sativus**)।

वर्णन—मूलीवीज राईबीज ससान होते है।

गुण तथा उपयोग—बाहर त्वचा पर लगाने से लेखन गुण करता है, भीतरी प्रयोग वमन कारक, मूत्रल तथा वातानुलोमक है। इसका क्वाथ कफरोगों मे वामक गुण के लिये पिलाया जाता है, वातानुलोम करने तथा मूत्रावरोध और आर्त्तवावरोघ मे इसका प्रयोग सफलता पूर्वक किया जाता है, किलास, छीप, व्यगं आदि चर्मरोगों मे इसका लेप करते है।

२०७. मेदालकड़ी (**Litsea chivensis**)

वर्णन—यह एक वृक्ष की मोटी और दृढ़ त्वचा है, इसका वर्ण लाल घूसर होता है।

गुण तथा उपयोग—इसको अधिकतया चोट वा मोच पर लेप रूप मे प्रयोग किया जाता है—यह शोथघ्न, सग्राही और वातसंस्थान वल्य है, आमाशय वल्य तथा वाजीकर है, अस्थिभग्न, चोट-मोच आदि पर लेप के इलावा इसे कफजरोग और वातनाड़ीरोग, कटिशूल, संधिशूल, गृध्रसी, वातरक्त, कामदुर्बलता, अस्थिभग्न और शोथ विलयन के लिये इसका प्रयोग सफलता से किया जाता है।

२०८. मेहीसाला (**Liquid amber orientalis**)

वर्णन—इसे शिलारस भी कहते है, यह एक वृक्ष का दूध वा गोद है, जो वृक्ष मे से टपकने के वाद मधु समान गाढा हो जाता

है, इसका वर्ण लाल पीतता लिये हुये और स्वाद तथा बू मनोरम होती है, इसका एक भेद मेहीयावसा भी है, जो इस वृक्ष की लकडी आदि का क्वाथ करके छान कर फिर अग्नि पर रखकर घन कर के इसको शुष्क कर लिया जाता है, यह कृष्णवर्ण का तथा भारी होता है।

गुण तथा उपयोग––शरीर को बल देती है, पीड़ा शामक तथा कफनि सारक है, यकृत को बल देती है, वृक्क तथा बस्तिगत रोगो मे उत्तम है, कीटाणुनाशक तथा दुर्गन्धनाशक है, मूत्रल तथा आर्तव-प्रवर्त्तक है, अधिकतया इसे जीर्ण खासी तथा यक्ष्मा मे दुर्गन्धित कफ को निकालने तथा फुप्फुस को शुद्ध करने के लिये प्रयोग करते है, स्वरभेद तथा प्रतिश्याय मे भी लाभप्रद है, कफनि सारक, मूत्रल तथा रज प्रवर्त्तक इसके विशेप गुण है।

(र)

२०९. रबूलसूस

वर्णन––इसको मुलैठी का सत कहते है, यह मुलैठी का शुष्क घन सत्व है, जो बाजार मे लम्बे २ गोल टुकडों मे मिलता है।

गुण तथा उपयोग––इसके गुण मधुयष्टि के समान है, अधिकतया खासी के योगों मे पडता है, इसे मुखमे रखकर चूसने से खासी नष्ट होती है, तृषा-शान्त होती है, स्वरभेद मिटता है।

२१०. रातीनज (Resina)

वर्णन––इसे राल कहते है, सनोबर की जाति के वृक्षो मे से एक प्रकार का रालदार गाढा तैल निकलता है, परिस्त्रावण विधि से तैल तथा राल को पृथक कर लेते है, तैल को रोगन तारपीन कहते है, राल की अर्धस्वच्छ डलिया होती है और उनसे तारपीन के समान गन्ध आती है।

गुण तथा उपयोग––बाह्य व्रणो पर प्रयोग करने से दुर्गन्धि का नाश करके शोषक प्रभाव करती है, व्रण शीघ्र भरता है––इसका आन्तरिक प्रयोग कफनि.सारण तथा फुप्फुस को दूषित

दुर्गन्धयुक्त कफ से शुद्ध करने के लिये किया जाता है। अतः व्रणों के लिये यह मरहमों मे डाली जाती है; खाज, दाद, छीप तथा अर्श में भी इसकी मरहम उपयुक्त होती है, मक्खन मे मिलाकर हाथ पैर फटने पर भी प्रयोग करते है, कास, श्वास मे इसका प्रयोग लाभप्रद है।

२११. रासन

वर्णन--इसे जंजबील (सौंठ) शामी कहते है, सोंठ इसका प्रतिनिधि औषध है, यह लाल वर्ण की तथा तीव्र सुगन्ध और तीक्ष्ण स्वाद वाली एक प्रकार की जड़ है।

गुण तथा उपगोग---मन को प्रसन्न करती है, हृदय, आमाशय, मूत्राशय को वल देती है, वाजीकर, दीपक पाचक है, यकृत के अवरोध का नाश करती है, वातानुलोमक होने के कारण उदावर्त तथा आध्मान मे उपयोगी है।

२१२. रेग माही (**Mabuia carivata**)

वर्णन---यह एक प्रकार की मछली है, जो रेत मे होती है, एक अंगुल समान मोटी, भूरे वर्ग की, लगभग ६ इच लम्बी होती है, त्वचा चमकदार, कड़ी और चिकनी होती है, इसका उदर फाड़कर अन्त्र तथा मलादि से शुद्ध करके लवण लगा कर सुखा लेते है, और यह सूखी हुई वाजार मे मिलती है।

गुण तथा उपयोग---वातसस्थान बल्य, वाजीकर, उत्तेजना प्रदायक, दुर्वलता नाशक तथा वीर्य प्रद है, इसे वाजीकरण योगो मे डालते है, शिश्न को वल देकर उसमे उत्तेजना शक्ति प्रदान करती है, कामवर्धक तथा शक्ति प्रद है।

२१३. रेवन्दचीनी (**Riheum, Rehi Radix**)

वर्णन---यह कई प्रकार का है, यह रेवास की जड़ है, जो खता देश से रेवन्द आती है, उसे रेवन्दखताई कहते है और यह गुणों मे उत्तम है, इसका वर्ण पीत कालिमा लिये हुये, वू तीव्र, स्वाद

तिक्त तथा कुस्वाद होता है। इसको चबाने से थूक पीला हो जाता है।

गुण तथा उपयोग——यह विरेचक तथा संग्राही दोनों गुण रखती है, बाह्य प्रयोग से यह लेखन, सक्षोभजनक तथा शोथ-विलयन है, इसे चर्मरोग दाद, त्वचाके दागोपर भी लेप किया जाता है, भीतरी प्रयोग से यह फुप्फुस को शुद्ध करती है, कफ का निष्कासन करती है, यकृतावरोध नाशक तथा पित्त विरेचक है, इसलिये कामला, यकृतशोथ,प्लीहाशोथ,जीर्ण ज्वर मे प्रयोगकी जाती है, आमाशय तथा आन्त्र को बल देती है, वात अनुलोमक तथा अजीर्ण अतिसार मे उपयोगी है, आर्त्तव प्रवर्तक है, गर्भाशय शोथ तथा आर्त्तव अवरोध मे भी इसका उपयोग सफलता पूर्वक किया जाता है।

२१४. रैहां बीज

वर्णन——यह तुलसी जाति का एक क्षुप है, इस में तुलसी जैसी सुगन्ध आती है, इस के बीज जो कृष्ण वर्ण के होते है, औषध प्रयोग मे आते है।

गुण तथा उपयोग——यह प्रवाहिका तथा मरोड़ मे उपयोगी है, शुष्क कास और छाती की रूक्षता को दूर करता है, वीर्य को गाढा करता है, इसपगोल आदि बीजों क साथ प्रवाहिका तथा मरोड़, मे बहुधा उपयोग मे लाया जाता है॥

२१५. रोगन जैतून (**Oleum olive**)

वर्णन——यह किंचित पीले वर्ण सबज रंगयुक्त का कुछ गाढा तैल होता है, जो जैतून वृक्ष के पक्व फलों को दबा कर निकाला जाता है।

गुण तथा उपयोग——बाह्य प्रयोग मे त्वचा पर यह मृदु, शोथघ्न तथा शामक गुण करता है, इसके मर्दन से रक्ताभिसरण-क्रिया उत्तम होकर शरीर पुष्ट होता है, मृदु विरेचक है, यकृत की पित्तज अश्मरी को हल करके बाहर निकाल देता है, यकृतशूल में

अत्यन्त उपयोगी है, अंगपीड़ा, अर्दित अर्धाङ्ग, संधिशूल, गृध्रसी आदि में शोथनाशक तथा पीड़ाशामक गुण करके इसका प्रयोग करते है, शरीर की रूक्षता दूर करता है, चम्बल तथा शुष्क इन्द्रलुप्त मे उपयोगी है; दग्ध अग पर लगाने से शामक गुण करता है, इसे गुदाव्रण, तथा गुदा का फट जाना और विबन्धमे प्रयोग करते है, शरीरपोषक तथा उपयोगी औषध है।

(ल)

२१६. लाजवरद (**Lapis lazulei**)

वर्णन—एक स्वच्छ नीलिमा लिये चमकदार पाषाण है इसे धोकर औषध मे प्रयोग करते है।

गुण तथा उपयोग—सौमनस्य जनक, हृदय वलय, गाढे दोषों को वाहर निकालने वाला, रक्त शोधक, आर्त्तव प्रवर्त्तक, वाह्य प्रयोग से यह लेखन तथा शोषक है, यह अधिकतया भ्रम, उन्माद, मद जैसे रोगों मे प्रयुक्त होता है, नेत्र रोगो नेत्राभिष्यन्द, नेत्र स्राव, नेत्रव्रण आदि मे अजन रूप में अन्य औषध के साथ मिला कर प्रयोग करते है, नकसीर रोकने लिये इसका वारीक चूर्ण नासारन्ध्र मे प्रधमन करते है, अतिसार मे इसे बिना धोये प्रयोग करते है, अतिसार को वन्द करता है।

२१७. लोबान (**Benzoinum**)

वर्णन—यह एक प्रकार का जावा, सुमात्रा और स्याम अदि देशो मे उत्पन्न होने वाले एक विशेष जाति के वृक्षो का सुगन्धित निर्यास है, जो उन को चीरा देकर ग्रहण किया जाता है। फारसी मे इस वृक्ष को कमकाम तथा अरवी मे जिर्व कहते है। लोवान का वर्ण वाहर से भूरा लालिमा लिये वा पीत और भीत्तर से दूध के समान होता है, एक लोवान जिसका रग श्वेत और लालिमा लिये भूरा दागदार होता है, जिसे कोड़ीया लोवान कहते है।

गुण तथा उपयोग—दुर्गन्धनाशक, शोषक, लेखन, यकृत उत्तेजक, कफ़ नि:सारक तथा कफ शोषक, कफ़रोग नाशक, आमाशय बल्य,

वाजीकर, ज्वरनाशक, और स्वेदल है, दुर्गन्धनाशक होने के कारण इसका धूम्र मकानो मे दिया जाना है तथा व्रणों के लिये मरहम बना कर प्रयोग करते है, कफ़ को निकालने के लिये तथा फुप्फुस को शुद्ध करने के लिये इसका धूम्र कास, श्वास तथा यक्ष्मा रोगी को दिया जाता है। इस के खिलाने से स्वेद आकार ज्वर टूट जाता है, शोथघ्न होने से शोथ पर तथा अर्दित, अर्धांग, गृध्रसी आदि पर इस का लेप किया जाता है, इसका जौहर भी वनाया जाता है, जो कि लोबान से अधिक गुणप्रद है, शोथ नाशक तथा वाजीकर इसके विशेष गुण है।

(व)

२१८. वज तुरकी

वर्णन—वर्च का युनानी नाम है, गुण तथा उपयोग से वैद्य भली भाति परिचित है।

(श)

२१९. शकर तेगाल

वर्णन—यह तेगाल नामी बड़ी मक्खी की भाति एक कीट का घर है। जो वह अपनी लाला (थूक) से बनाता है, यह घर नवीन होने से स्वाद मे मधुर होता है, परन्तु जीर्ण होने पर इसकी मधुरता कम हो जाती है, यह घर भीतर से खोखला होता है।

गुण तथा उपयोग—चिपकने वाला, छाती को मृदु रखने वाला, इसका अधिक प्रयोग आमाशय को शिथिल करने वाला तथा उत्क्लेश कारक है, इसे वायु प्रणालियो तथा अन्न प्रणाली के प्रदाह, शुष्क कास को नष्ट करने के लिये प्रयोग करते है, स्वर भेद, कण्ठ रूक्षता, और आमाशय की रूक्षता मे उपयोगी है।

२२०. शकाकल (**Trachydium lehmanni**)

वर्णन—इसे फारसी मे गजर दशती तथा शकाकल मिश्री भी कहते है, यह एक बूटी की जड है, जो छोटी गाजर के समान वर्ण

में श्वेतता लिये पीली होती है, इसका स्वाद लेसदार और किञ्चित मधुर होता है । और प्राय. यह काबुल से आती है ।

गुण तथा उपयोग—शरीर बल्य, वीर्यप्रद, वाजीकर, दुग्ध जनन तथा वीर्य को गाढा करने वाली है, अधिकतया वीर्य वर्धक और प्रमेह नाशक योगों मे डाली जाती है, प्रसूता स्त्रियों के दूध बढ़ाने के लिये भी इसका चूर्ण दूध के साथ प्रयोग करते हैं, इसका मुरब्बा शरीर पोषण तथा वाजीकर गुण के हेतु प्रयोग कराया जाता है ।

२२१. शकाही

वर्णन—एक कांटेदार बूटी है, इसका तन्ना त्रिकोण, अगुली समान मोटा होता है, पत्र त्रिकोण, किंचित मोटे और रूईदार होते हैं, इसकी नोक कांटेदार होती है, इसका पुष्प "बनफशी पीतता लिये वर्ण का होता है ।

गुण तथा उपयोग—शोषक, संग्राही, शोथविलयन और पीड़ा-शामक है, आमाशय, यकृत को बल देने वाला तथा ज्वरनाशक है, इसे अधिकतया आमाशय, यकृतविकार तथा ज्वरो मे प्रयोग किया जाता है, इसके क्वाथ से कौआ के शोथ मे तथा दतपीडा मे गरारे कराये जाते है। इसके मूल का क्वाथ रक्त प्रदर मे तथा जीर्ण अति-सार मे पिलाते हैं, रक्तप्रदर और गुदाशोथ मे इसके क्वाथ से कटि स्नान कराते है।

२२२. शलगम बीज

वर्णन तथा उपयोग—यह बीज सरसों बीज समान लाल वर्ण के किसी कदर धूसर होते है, यह लेखन, उत्तेजक, मूत्रल गुण रखते है । इसे उबटनो मे डाला जाता है, यह त्वचा के रोगो को नष्ट करके वर्ण को सुन्दर बनाता है, वाजीकर तथा कामशक्ति वर्धक योगो मे भी इसे डाला जाता है ।

२२३. शादनज

वर्णन—यह एक प्रकार का मृदु पाषाण है, जो कई प्रकार का होता है, मसूर बीज के समान लाल वर्ण का उत्तम समझा

जाता ह, जिसे शादनज अदसी कहते है, इसे धोकर औपध में प्रयोग किया जाता है ।

गुण तथा उपयोग—यह शोपक, ततु सग्राहक, रक्तावरोधक तथा नेत्रों को वल प्रदान करता हं । इसे अधिकतया नेत्र रोग, नेत्र कण्डु, नेत्र व्रण, नेत्रस्राव तथा दृष्टि दुर्बलता मे पृथक वा अन्य योग्य औषध के साथ अजन रूप मे प्रयोग किया जाता है, व्रणों पर रक्त स्राव को रोकने और शुष्क करने के लिये इस का वारीक चूर्ण धूडा जाता है । रक्त प्रवाहिका, अतिसार तथा रक्त प्रदर मे भी उपयोग किया जाता है । इस को धोने को विधि यह है कि इसे वारीक पीस कर जल मे हल करे, ओर जो हल होने से वाकी शेप रहे, उसको दुबारा हल करे, यहा तक कि सम्पूर्ण घुल जाये और धुल जाये ॥

२२४. शाहपसन्द

वर्णन तथा उपयोग—यह एक बेलदार बूटी है, जो अपने पास की वस्तु पर लिपट जाती है, इसके पत्र लोविया पत्र समान परन्तु उनसे कुछ चौड़े और पुष्प श्वेत तथा सुन्दर होते हैं, पुष्प के शुष्क होने पर इसके नीचे से २-३ दाने पीतता लिये हुये और बीरबहुटी के समान रूईयुक्त निकलते हैं, यही वीज औपध रूप मे प्रयुक्त होते है । यह तीव्र विरेचक है, तीनों दोषो को दस्तों द्वारा निकालता है, सुद्धो को खारज करता है, अम्लतास के गूदा के साथ शरीर के आशयो की शोथ मे इसे पिलाते है, सधि शोथ, जीर्ण ज्वर तथा बच्चो के रोग मे भी इसका प्रयोग होता है, बीजो को कूट कर चूर्ण बना कर लवण अथवा गुलकन्द के साथ खिलाने से अत्यन्त सरलता से दस्त आ जाते है ।

२२५. शाहतरा (**Fumaria officivalls**)

वर्णन—यह एक बूटी है, जो गेहूं और चने के खेतो मे उत्पन्न होती है, इस के पत्र धनिया के पत्र समान और पुष्प बनफ़शी होते है, और उसका स्वाद तिक्त है ।

गुण तथा उपयोग—शाहतरा रक्त शोधक, मूत्रल, आमाशय बल्य, तबीयत को मृदु करने वाला तथा ज्वरनाशक है। इसको अधिकतया रक्त दोष, आतशक, खुजली, दाद, फोडे, फुसी मे पृथक वा अन्य रक्त दोष नाशक औषध के साथ मिला कर प्रयोग करते है, जीर्ण ज्वरों मे उपयोगी और सिद्ध औषध है ।

२२६. शीरखि़शत (**Manna**)

वर्णन—यह एक प्रकार का मधुर, गाढ़ा जमा हुआ द्रव्य है, जो कई प्रकार के वृक्षों से स्वयं स्रावित होकर जम जाता है। सिसली, दक्षिण यूरूप, ईरान तथा खुरासान इसके उत्पत्तिस्थान है, यह दो प्रकार का बाजार मे मिलता है, शीरखिशत तख़्ता जो अधिकतया इग्रेजी औषधालयो मे प्रयोग किया जाता है, शीरखि़शत अशकी–इसके बड़े २ मृदु दाने होते हैं, जो श्वेतता लिये हुये स्वच्छ, गोद के समान होते है, स्वाद मधुर होता है, यही औषध मे प्रयुक्त किया जाता है ।

गुण तथा उपयोग—लेखन, पित्तविरेचक, दग्धदोषनिसारक, उर मृदुकारक, कफशोषक तथा स्रावक, इसे सारक तथा विरेचक होने के कारण पित्तज रोग, पित्तज ज्वर मे अर्क गुलाब के अनुपान से प्रयोग कराते है, बालको तथा मृदु प्रकृति वाले पुरुषों मे यह विशेपतया प्रयोग किया जाता है, इसे कफ निकालने के लिये पित्तज कास मे तथा उर रूक्षता, फुप्फुस रूक्षता मे भी उपयोग करते है, इसका अधिक प्रयोग वातल, शीघ्रपतनकारक तथा वीर्य को पतला करता है, आन्त्रशूल मे भी हानिकर है ।

२२७. शीशम (**Dallbergia sissoo**)

वर्णन—यह एक भारत का प्रसिद्ध वृक्ष है, जिसके पत्ते छोटे २ गोल, नोकदार होते है, इसकी फलियां गुच्छो मे लगती है, जो कि छोटी २ चपटी और बारीक होती है, प्रत्येक फली मे दो, तीन बारीक बीज होते है, अधिकतया इसकी लकडी का बुरादा औषध प्रयोग मे आता है ।

गुण तथा उपयोग—रक्तशोधक, शरीर को दुबला करने वाला, उदरकृमिनाशक, शोषक गुण वाला है, इसकी लकडी का बुरादा रक्तविकार नाशक, आतशक, कुष्ठरोग, किलास, खाज, फोडे, फुंसी और अन्य त्वचा के रोगों मे विशेषतया प्रयोग होता है, रक्तशोधक यही इसका विशेष गुण है ।

(स)

२२८. सकबीनज (Sagapenum)

वर्णन—एक वृक्ष का गोंद है, जो बाहर से लाल वा पीला और भीतर से श्वेत आर्द्रतायुक्त अश्रुवत दानो से बनी डली के समान होता है, बू तीव्र और स्वाद किंचित तिक्त होता है ।

गुण तथा उपयोग—बाह्य प्रयोग लेखन, चूपक, शोथघ्न और शामक है, भीतरी प्रयोग विरेचक तथा अन्य विरेचक औषध शोधक है, उदरकृमिनाशक, मूत्र, आर्तव प्रवर्त्तक तथा वृक्क, बस्ति अश्मरीनाशक है, इसे अर्धांग, संधिशूल, कफज शिरशूल, अपस्मार, गृध्रसी, जलोदर मे प्रयोग किया जाता है, यह कफ-विरेचक है और जल समान दस्त लाता है, गहरी तथा कठोर शोथ पर लेप करते है, शिश्न दुर्बलता के लिये इसका तिल्ला करते है, कृमि तथा अश्मरी और आर्तवावरोध मे भी इसका प्रयोग होता है ।

२२९ सकमूनीया (Scammonium)

वर्णन—यह एक प्रकार का गोंद है, जो एक बेलदार बूटी की जड़ मे चीरा देने से निकलता है, इसका वर्ण बाहर से मिटयाला वा कालिमा लिये भूरा होता है, आसानी से टूट जाता है, ताजी टूटी हुई डली चमकदार, अर्धस्वच्छ और सुषिरपूर्ण तथा गहरे भूरे वर्ण की होती है, गंध एक विशेष प्रकार की तथा स्वाद खराब होता है ।

गुण तथा उपयोग—यह बाह्य प्रयोग से लेखन तथा शोथघ्न है, आंतरिक प्रयोग करने से यह तीव्र विरेचक है, पतले जल समान

और पीले वर्ण के दस्त आते है । अधिक मात्रा में प्रयोग करने से यह आमाशय तथा आन्त्र मे ख़राश उत्पन्न करता है, किंचित आमाशयवल्य तथा यकृतवल्य और कृमिनाशक है, और विरेचक औषध के साथ मिलाने से उनके गुण को अधिक करता है, इसे शिरशूल, जलोदर और तीव्र विबन्ध मे प्रयोग करते है, इसे निम्नविधि से शुद्ध करके प्रयोग करना चाहिये, एक सेव वा वहीफल को लेकर उसके भीतर सकमूनीया को रख कर मुख बन्द कर ऊपर आटा लपेट कर गरक भूभल वा तन्दूर मे रख दे, आटा लाल होने पर उसे पृथक कर सकमूनीया निकाल प्रयोग मे लावे ।

२३० सपस्तान (**Cordia Myxa**)

वर्णन—इसे लिसूडे भी कहते है, यह एक वृक्ष का फल है, जो आमला से छोटा होता है, अपक्व सबज वर्ण का और पक्व पीले वर्ण का होता है, पक्व लिसूडे का स्वाद मधुर लुआवदार होता है, शुष्क लिसूड़े ही औषध प्रयोग मे आते है। इनका वर्ण कालिमायुक्त और उन पर झुरियां पडी होती हे, पानी में भिगोने से लुआब उत्पन्न होता है।

गुण तथा उपयोग—सारक, कण्ठ तथा उर मे मृदुता उत्पन्न करने वाला, कफ नि सारक, पित्त शामक, चिपकने वाला और विरेचक औषध के साथ मिलाने से उनके सक्षोभक गुण को कम करने वाला है, इसे अधिकतया शुष्क कास, पित्ताज प्रतिश्याय, कण्ठ तथा उर की रूक्षता को नष्ट करने के लिये क्वाथ रूप मे देते है। पित्ताज और रक्तविकारजनित ज्वर , (ख़सरा, मोती झारा आदि) मूत्रदाह, तथा तृषा मे इसका उपयोग सफलता पूर्वक किया जाता है, प्रवाहिका, मरोड मे भी इसका प्रयोग किया जाता है ।

२३१. सफेदा काशगरी (**Plumli Carbonas**)

वर्णन—श्वेत वर्ण का मृदु तथा भारी चूर्ण है, जो वग तथा नाग (सीसा) को जला कर बनाया जाता है, कलई से जो

सफेदा बनाया जाता है, उसे सफेदा काशगरी कहते है।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, शोषक, शीतल, शामक, चिपकने वाला, व्रण रोपण तथा रक्त स्तम्भक है। इसको अधिकतया नेत्र-रोग, नेत्र अभिष्यन्द, नेत्रव्रण, पोथकी, आदि मे अंजन मे मिला कर वा पृथक प्रयोग किया जाता है, अग्निदग्ध में इसे अण्डे की सफेदी मे मिला कर अग्निदग्ध स्थान पर लगाया जाता है, व्रणशोषक तथा रक्त स्तम्भक होने के कारण इसे मरहमों मे प्रयोग किया जाता है।

२३२. सबूस गन्धम

वर्णन—यह गेहूं की ऊपर की भूसी है, जो इसके आटे को छान लेने के पश्चात छलनी मे बाकी रह जाती है।

गुण तथा प्रयोग—कफनिसारक तथा शोथघ्न है, कफ़ को निकालने के लिये खांसी तथा प्रतिश्याय मे योग्य औषध के साथ क्वाथ बना कर दिया जाता है, स्तनशोथ मे इसका लेप करते हैं, इसकी रोटी बना कर मधुमेह रोगियों को आहार रूप मे दी जाती है, मधुमेह मे उत्तम गुणदायक आहार है॥

२३३. समाक (**Rhus Parveiflora**)

वर्णन—यह एक वृक्ष का फल है, जो मसूरबीज समान उससे छोटे वा बडे होते है, इन फलो का बारीक छिलका जिसे पोस्त समाक अथवा गिर्द समाक कहते है, औषध रूप मे प्रयोग करते हं, इसका स्वाद अम्ल और उत्ताम होता है।

गुण तथा उपयोग—सग्राही, दोष विलोमकारक, आमाशय बल्य, पित्त शामक, रक्तप्रवाह तथा मूत्र की अधिकता मे लाभ-कारी है, इसे अधिकतया पित्तज अतिसार, सग्रहणी, यकृतविकार-जनित अतिसार, मतली, वमन तथा तृषा शान्त करने के लिये पृथक वा अन्य योग्य औषध के साथ प्रयोग करते है, पित्तज प्रकृति के पुरुषों मे आमाशयबल्य तथा क्षुधाजनक है, दातो को दृढ करने के लिये तथा पीड़ा नष्ट करने के लिये इसके क्वाथ की कुलियां

की जाती हैं, रक्तप्रदर तथा मूत्र अतिसार मे भी सफलता पूर्वक प्रयोग किया जाता है, आमाशयवल्य तथा पित्तज अतिसार नाशक इसके विशेष गुण है ॥

२३४. सरतान (Scilla Serrata)

वर्णन—इसे केकडा कहते है, यह एक दरयाई जानवर है, इसके दो जवड़े, चुगल, नाखून, दात तथा कठोर पीठ होती है। इसके शिर और दुम नही होती, सरतान नर तथा मादा इन दो भेदो का होता है, मादा उत्तम समझी जाती है, मादा की पीठ मे यदि सूई चभोई जाये, तो एक लेसदार द्रव श्वेतवर्ण का निकलता है।

गुण तथा उपयोग—पित्तज शोथ विलयन, लेखन, यक्ष्मा तथा ज्वर सहित रक्तपित्त मे उपयोगी, रक्तष्ठीवन तथा आमाशय से रक्त के आने मे लाभप्रद, कुत्ते, विच्छू तथा अन्य विषैले जानवरो के विप का अगद है। अधिकतया इसे जलाकर (मुहरक) यक्ष्मा, रक्तपित्त आदि रोगो मे वर्ता जाता है, पित्तज, तथा शुष्क कास, छाती की रूक्षता, शरीरक क्षीणता तथा दुर्बलता मे उपयोगी है, शरीर मे चूने (Calcium) की कमी को पूरा करता है।

२३५. सातर (Zataria Multiflora)

वर्णन—यह एक बूटी है, इसका फूल नीला, स्वाद तीक्ष्ण और सुगन्धित होता है, इसके कई भेद है। यह फ़ारस, अफगानस्तान, वलोचस्तान आदि देश मे होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथघ्न, छेदन करने वाला, वातानुलोमक, पीडाशामक और कफ नि.सारक तथा शोषक है, आमाशय यकृत तथा आन्त्र को दोपो से शुद्ध करता है, वृक्क, मूत्राशय से अश्मरी को निकालता तथा मूत्र, आर्त्तव प्रवंतक है, कद्दूदाना कृमिनाशक है, शोथ को नष्ट करने के लिये शोथ पर इसके पत्रों का लेप सिरके के साथ किया जाता है, दतशूल मे इसके क्वाथ से गरारे कराये जाते है, कूलहे की पीडा, मूत्राशय शूल मे इसका

क्वाथ पिलाते हैं, कास तथा श्वास मे कफ़ निकालने के लिये और फुप्फुस को कफ से शुद्ध करने के लिये इसका क्वाथ प्रयोग किया जाता है, वृक्क तथा बस्तिगत अश्मरी मे भी उपयोगी है, उदरवातनाशक, वाजीकर तथा क्षुधावर्धक इसके विशेष गुण हैं।

२३६. सिरखस (**Male fern**)

वणन—यह एक बूटी की ग्रंथिल, कृष्ण वर्ण लालिमा युक्त जड होती है, तोडने पर भीतर से पीतता युक्त वर्ण की होती है ।

गुण तथा उपयोग—शोषक, गर्भपातक, सक्षोभक तथा उदर-कृमि (कद्‌धू दाने) नाशक, शोषक होने के कारण व्रणों मे इसका धूडा किया जाता है । कद्‌धूदाने कृमि नष्ट करने के लिये यह एक सिद्ध तथा प्रभावशाली औषध है, अधिक मात्रा मे वामक है, इसके क्वाथ से शिर धोने से शिर के बालो की यूका (जूये) नष्ट हो जाती है ।

२३७. सिंदूर (**Plumbi Oxidum rubrum**)

वर्णन तथा उपयोग—यह लाल वर्ण की भारी वस्तु है, जो कलई और सीसा से तैयार की जाती है, यह व्रणशोषक, दूषित मास नाशक, कृमिनाशक, व्रणशोधक तथा रक्त स्तम्भक है, अधिकतया पृथक वा अन्य औषध के साथ मिला कर इसे व्रण शोधन तथा रोपण कार्य के लिये मरहमों मे डालते हैं, दग्ध स्थान पैर मरहम रूप मे प्रयोग करने से शीघ्रता से उसे ठीक करता है, व्रण मे कृमि पड गये हो तो उनको नष्ट करके रोपण कार्य सफलता से करता है, व्रणो के लिये विशेष गुण-कारी है ।

२३८. सुदाब (**Ruta Graveolens**)

वर्णन—यह एक जड है, जो दो गज लम्बी होती है, पत्र इमली के पत्रो के समान और दुर्गन्धित होते है, पुष्प पीले वर्ण के, बीज ३ नग त्रिकोण आकार के एक कोश के भीतर होते हैं, इस

का आयात फ़ारस से होता है । वैसे इसकी उत्पत्ति भारत मे भी होती है ।

गुण तथा उपयोग—शोथघ्न, काटने वाला, मूत्रल, वातानुलोमक, शोषक, संग्राही, विषनाशक, शोथघ्न तथा वातानुलोमक होने के कारण दीपक, पाचक गुण करता है, यकृत-प्लीहा तथा आमाशय के शीत के कारण दुर्बलता मे उपयोगी है, आध्मान, उदावर्त तथा आर्त्तव अवरोध मे उपयोगी है, विषैले दोषो को मूत्र द्वारा वाहर निकालता है ॥

२३९. सुन्द्रुस

वर्णन तथा उपयोग—यह कहरुवा की भाति एक प्रकार की गोंद है यह मस्तिष्क के दूषित तरलदोष को शुष्क करता है, प्रत्येक अंग से रक्त आने को रोकता है, उदर कृमिनाशक है, मूत्रल तथा आर्तव प्रवर्त्तक है, खफकान, भ्रम, श्वास, प्लीहा के लिये भी गुण-प्रद है ।

२४०. सुरंजान (Colchicum)

वर्णन—मग़ज सिघाडे के समान एक वटी की जड है, इस के पत्र गन्दना के पत्रो के समान होते है, मूल पर लाल वर्ण का छिलका होता है, उसके छीलने से भीतर से श्वेत मधुर गिरी निकलती है, इसे सुरजान शरीन (मधुर) कहते है, इसका एक और भेद है जिसका वर्ण पीला वा काला और स्वाद तिक्त होता है, इसे सुरजान तलख (कटु) कहते हैं ॥

गुण तथा उपयोग—कफविरेचक, पीडाशामक, शोथघ्न, प्रमाथी तथा वाजीकर गुण वाली है, परन्तु तिक्त सुरजान पीडा शामक तथा शोथघ्न हैं। मधुर सुरजान सधिशूल, आमवात, वातरक्त, गृध्रसी म प्रयोग किया जाता है, शोथ को विलीन करने के लिये इसका लेप भी लगाया जाता है, तिक्त सुरंजान मे गुण उपरोक्त ही हे, परन्तु गुणो में यह मधुर सुरजान से उत्तम तथा अधिक प्रभावशाली है, विदेशो चिकित्सा मे इसी का प्रयोग होता है ॥

२४१. संगज्राहत (Silicate of Magnesia)

वर्णन तथा उपयोग---यह एक प्रकार का पत्थर है, जो मृदु और श्वेत होता है, शोषक, रक्त स्तम्भक तथा सग्राही गुण वाला होता है, शोषक तथा रक्त स्तम्भक होने के कारण व्रणों के लिये मरहमो मे डाला जाता है, शोषक होने के कारण प्रमेह, श्वेत प्रदर, वृक्क तथा वस्ति व्रण मे उपयोगी है, उपरोक्त गुणो करके दातो को दृढ करने के लिये यह मजनो में भी डाला जाता है।

२४२. सग वसरी

वर्णन---मिटियाले वर्ण के टुकडे है, जो सीसा (नाग) की कान की मिट्टी तथा संगरेजों से सीसा और ताम्र पृथक करते समय भट्ठी के धूम्रकश मे धूम्र के जम जाने से वन जाते है।

गुण तथा उपयोग--व्रणशोषक, दृष्टिवल्य, सग्राही तथा आमाशय को वल देने वाला, इसे धोकर प्रयोग किया जाता है, अधिकतया नेत्ररोगो मे, दृष्टिदुर्वलता तथा नेत्रव्रण के लिये सुरमे में डाला जाता है, व्रणो पर शोपक होने के कारण इसके वारीक चूर्ण का धूडा डाला जाता है, और मरहमो मे भी डाला जाता है, संग्राही तथा आमाशयवल्य होने के कारण सग्रहणी मे प्रयुक्त होता है॥

२४३. संग पुश्त (Tortoise)

वर्णन तथा उपयोग---प्रसिद्ध जलीय जानवर है, इसे हिन्दी मे कच्छप तथा कछुआ कहते है, इसकी पीठ ढाल के समान होती है। इसी पीठ की हड्डी औषध मे प्रयोग की जाती है, इस ऊपर वाली अस्थि की भस्म यक्ष्मा तथा उरक्षत मे अत्यन्त उपयोगी है, इसमे चूना तथा फासफोरस होता है, इसके प्रयोग से भूख बढ़ जाती है, खासी और कफ़ मे कमी आ जाती है और अतिसार बन्द हो जाता है। मोती झरा मे देने से मोतीझरा के दाने शीघ्रता से बाहर आ जाते है। वालशोष मे अत्यन्त उत्तम औषध है।

२४४. संगयशप (Jade)

वर्णन तथा उपयोग—यह एक प्रसिद्ध मूल्यवान पाषाण है, वर्णभेद से यह कई प्रकार का होता है, यह जितना स्वच्छ साफ तथा कठोर होगा, उतना ही उत्तम गिना जाता है, वर्ण भेद से जेतूनी वर्ण का फिर पीततायुक्त, इसके पश्चात गहरा सवज़ तथा सवज श्वेतता लिये वर्ण का उत्तम होता है। यह खफकान तथा आमाशय रोगो मे उत्तम है, रक्तस्राव, रक्त अतिसार, प्रवाहिका तथा पूयमेह को नष्ट करता है, वृक्क तथा मूत्राशय की अश्मरी को भेदन कर खारज करता है, हृदय को बल देने से विशेषतया लाभप्रद है, यह भी शरीर मे चूने की कमी को पूरा करता है।

२४५. संग सरमाही

वर्णन तथा उपयोग—यह श्वेत वर्ण का त्रिकोण चपटा पाषाण है, जो कि पत्थरचट्टा तथा स्नोल नामी मत्स्य के शिर से निकलता है, इसका विशेष गुण अश्मरीभेदन है और इस गुणनुसार इसका वृक्क तथा मूत्राशय की अश्मरी तोडने के लिये प्रयोग करते है ।।

(ह)

२४६. हब्ब किलकिल

वर्णन—इसे जगली अनारदाना कहते है, मिरच के समान कृष्ण बीज होते है, इसके भीतर से मधुर स्वाद वाली गिरी निकलती है ।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर तथा पुष्टिकर, इस गुण करके वाजीकर योगो मे डाला जाता है, मिश्री और तिल के साथ वा मुनक्का और मधु के साथ वाजीकर तथा पुष्टिकर गुण के लिये इसका उपयोग किया जाता है।

२४७. हब्बजितियाना (Centianae Radix)

वर्णन—यह एक विदेशीय क्षुप की जड है, यह जड़ बाहर से पीले वर्ण की भूरी और भीतर से पीतता युक्त लाल वर्ण की है,

इसकी गन्ध विशेष प्रकार की है, स्वाद पहिले मधुर पीछे अत्यन्त तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—दीपक, पाचक, वातानुलोमक, मूत्र, आर्त्तव प्रवाही, विषनाशक, बल्य, तथा गर्भपातक है, इसे अधिकतया उदर रोगो मे अजीर्ण, मन्दाग्नि, आमाशय दुर्बलता आदि मे प्रयोग किया जाता है।

२४८. हब्बलगार (Laurus nobilis)

वर्णन—भारतवर्ष मे यह मिश्र से आता है, इसके अण्डाकार गोल छोटे २ तथा कुछ लम्बे फल होते हैं, यही औषध रूप में काम मे आते हैं।

गुण तथा उपयोग—कफनाशक, बुद्धिवर्धक, वात तथा वात कफ रोग नाशक, अश्मरी भेदक तथा अगद है। इसलिये कफज शिर-शूल, कास, श्वास, पक्षवध, अर्दित, सिधी शूल, अपस्मार, विस्मृति मे बहुधा प्रयोग किया जाता है, प्रवाहिका तथा मरोड को नष्ट करता है। हस्तिमेह तथा बूद २ मूत्र आने मे लाभप्रद है, कफनिसारक होने के कारण फुप्फुस शोधक है।

२४९. हब्बलजलम

वर्णन—चने से बडा चपटा सा दाना है, जिसकी बाह्य त्वचा कृष्ण वर्ण की और उसके भीतर श्वेत गिरी निकलती है, जो स्वाद मे मधुर और सुगन्धित होती है, यह मिश्र से भारत मे आता है।

गुण तथा उपयोग—शरीरपुष्टिकर, वीर्य उत्पादक, वाजीकर तथा लेखन गुण वाला है, इसे अधिकतया वाजीकर तथा पुष्टिकर योगो मे डाला जाता है, मुख के झाई, दाग आदि दूर करने के लिये इसका लेप मुख पर करते है।

२५०. हिजर अरमनी

वर्णन—यह एक लाजवरदी, मिटियाला वर्ण का पाषाण है।

गुण तथा उपयोग---सौमनस्यजनक, वातदोषविरेचक, वृक्क-लेखन, तथा कुष्ठ के लिये उत्तम है, इसे अरमना नामी देश से लाया जाता है, इस लिये इसे हिजर अरमनी कहते है।

२५१. हिजरल यहूद (Fossil encrinite)

वर्णन---यह एक प्रकार का पाषाण है, जो बलूती आकार का लम्बा और दोनों ओर से नोकदार होता है, स्याम तथा मदीना से आता है। इसे बेर पथ्थर और सग यहूद भी कहते है।

गुण तथा उपयोग---हिजरल यहूद को वृक्क तथा मूत्राशय की अश्मरी निकालने के लिये अधिकतया प्रयोग करते है, इसकी भस्म भी बनाई जाती है, जो इसी काम आती है, वृक्क, बस्ति अश्मरी नाशक तथा मूत्रल गुण ही इसमे विशेप करके है।

२५२. हुलहुल बीज

वर्णन---इसका वृक्ष गज भर ऊचा होता है, पत्र सभालु पत्र समान होते है, पुष्प छोटे श्वेत वर्ण के, फलिया बारीक, बीज गोल तथा कृष्ण वर्ण के होते है।

गुण तथा उपयोग---वातशामक, शोथघ्न, पीडाशामक, ज्वर-नाशक तथा अर्श नाशक है, जलोदर, आन्त्रशूल, आध्मान, उदावर्त, चातुर्थिक ज्वर तथा अर्श मे उपयोगी है।

॥ इति ॥

कोष

युनानी नाम	वैद्यक नाम
अकरव	बिच्छू
अडूसा	वासा
अदस	मसूर
अनवलसहलव	मको
अवहल	हाऊवेर
अगूजा	हींग
अरूसक	वीर वहूटी
असारून	तगर
अस्पन्द	हरमल
असल	मधु
असललसूस	मधुयष्टि
अशगार	स्वर्जिकाक्षार
उशना	छडीला
ऊद	अगर
एलवा	मुसव्वर
किरमानी	जीरा
कुन्जद	तिल
कुन्दश	नकछिकनी
कुस्त	कुठ
कतान	अलसी
कनव	भाग
कफदरया	समुद्रझाग
कवावा	शीतल चीनी
कवरीयत	गन्धक
करफल	लौग
कशनीज़	धनिया
कसवलज़रीरा	चिरायता
खारखशक	गोक्षरू
खुरमा हिन्दी	छुहारे
खुलजान	पान की जड
ख़वसल हदीद	मंडूर
खरातीन	केंचवे
ख़रपजा	ख़रबूजा

युनानी नाम	वैद्यक नाम
ख़रदल	राई
ख़र मुहरा	कौड़ी
ख़यारशम्बीर	अमलतास
गुल सुरख़	गुलाब फूल
गो गिरद	गन्धक
चरचटा	पुठकण्डा
जाज़	फटकरी
जोजवुआ	जायफल
जोजमासल	धत्तूर वीज
जरनीख	हरताल
जरारीह	तेलनी मक्खी
ज़रनव	ब्राह्मी
जरनवाद	कचूर
ज़कूम	स्नुही
जरवरेद	गुलाब का जीरा
ज़न्जफर (शिगरफ)	हिंगुल
जजबील	सोंठ
जहफरान	केशर
तिमिर हिन्दी	इमली
तुखम खयारैन	ककडी तथा खीरे के बीज
तुरवद	त्रिवृत
तुरव	मूली
तूतीया	तुत्थ
तन्कार	सुहागा
तलक	अभ्रक
दार फिलफिल	पिप्पली
दार चोव	दारू हल्दी
दमलखवायन	खूनसयाशो
नानखवाह	अजवायन
नार जील	खोपा
नुकरा	चादी
नखूद	चना
पवाह	कपास

युनानी नाम	वैद्यक नाम	युनानी नाम	वैद्यक नाम
फिलफिल अहमर	लाल मरिच	शबस्त	सोये
,, गिरद	काली मरिच	शहम हिन्जल	तुम्बे का भीतरी गूदा
,, दराज	पिप्पली	साजज हिन्दी	तमालपत्र
फिजाह	चादी	सीमाब	पारद
फोफल	सुपारी	सोम	लहसुन
फरजमुश्क	रामतुलसी	सदफ	शुक्ति
बादयान	सौफ	सदफ मरवारीदी	मुक्ताशुक्ति
बेद अंजीर	एरण्ड	सन्मयअरबी	गोंद कीकर
बुजरलन्नज	अजवायन खुरासानी	सपस्तान	लसूडे
बन्दक	रीठा	सबर सकूतरी	मुसब्बर
बलादर	भल्लातक	सम्बलतीब	बालछड
बसबासा	जावित्री	समलफार	सखिया
बलीला	बहेडा	सलेखा	तज
माही	मत्सय	हिन्ना	मेहन्दी
मिस	ताम्र	हिन्जल	तुम्बा
मुश्क	कस्तूरी	हिन्सल	प्याज
मक्कल	गुग्गुलु	हील कलान	बडी इलायची
मरवारीद	मुक्ता	हील खुरद	छोटी इलायची
मरजान	प्रवाल	हब्बकिलत	कुलथ
मशकतरामशीह	परसागो	हब्बलनील	कालादाना
शाख गोजन	शृग बारा सिंघा	हलतीत	हीग
शैतरज हिन्दी	चित्रक	हलीला	हरड

॥ इति ॥

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
१०३	२२	रावकान	राफ़कान
११५	१६	उतार का	उतार कर
११८	२१	फ़वकान	रफकान
१२३	२७	सघव	सैंधव
१२६	७	सखाचूर्ण	सूखाचूर्ण
१२६	७	ंध	वाध्य
१२६	८	योग ह	योग है
१३२	४	धस्तर पत्र	धस्तूर पत्र
१३२	२८	ध्रसी	गृध्रसी
१३३	२६	वातगल	वातशूल
१३३	२३	म पकाव	में पकावें
१३४	२६	कुठतल	कुठतैल
१३५	१३	ह	हैं
१४९	२३	मत्सय पित्ती	मत्सयपित्ता
१५०	१८	धाती पुष्प	धावी पुष्प
१६२	१४	सरदा	सरदी
१६४	१४	धावी	धावी
१६६	९	नाखना	नाखूना
१७१	५	कामीस	कासीस
१७६	४	रवत	शरवत
१८०	१४	ह	है
१९१	१०	मली पत्र	मूली पत्र
१९२	१०	ह	है
१९७	१३	कर	करके
१९८	१५	दुखत	दुखने
२०२	१	स	से
२०३	३	ह	हैं
२०८	२२	दीर वहुटी	वीर वहुटी
२३०	६	म	में
२३३	१४	मवतख़	मतवूख
२३५	१३	ह	है
२३६	२५	वकरी	वकरी का
२३७	३०	ह	है
२९२	२४	तम भाग	समभाग
२९५	१३	त्यार कर	त्यार करें
२९६	२४	वहमन	वहमन
३०५	१७	कौचा	कौच
३०५	१७	मसली	मूसली
३०८	११	मला दें	मिला दें
३१०	३	हिरलयह	हिजरलयहूद
३२६	१४	वखम	तुख़म
३२६	१५	मसली	मूसली
३२६	२७	मली	मूली
३४५	९	माजन	माजून
३५८	१२	अक	अर्क
३६३	९	जायफल	जयपाल वीज
३७१	११	वेवें	लेवें
३८०	२	अश	अर्श

॥ इति ॥

यूनानी औषध सूचि

॥ इति ॥

योग अनुक्रमणिका

॥ इति ॥

रोगानुसार अनुक्रमणिका

अतिसार–संग्रहणी इसहाल–ज़रव **Diarrhea & Sprue**

अनिद्रा सहर **Insomnia**

अपस्मार मृगी (सरह) **Epilepsy**

उन्माद मालखोलीय–जनून Melencholia & Insanity

उपदंश आतशक–आबला फरंग Syphilis

उष्णवात सुजाक Gonorrhea

कण्ठमाला खनाजीर Scrofula

कण्ठ रोग — गले के अमराज़

कर्ण रोग — अमराज़ कान — Ear Diseases

कृमि रोग — दीयान इमा — Worms

केश बल्य — हिफ़्ज़ुलशयर — Hair Tonics

कास-श्वास — खांसी-दमा — Cough & Asthma

कुष्ट जज़ाम Leprosy

चर्म रोग अमराज़ जिल्द Skin Diseases

जलोदर असतस्का Dropsy

ज्वर वुखार Fevers

दंत रोग   अमराज़ दंदान   Diseases of Teeth

नेत्र रोग   अमराज़ चशम   Eye Diseases

पित्त रोग   अमराज़ सफ़रावी

हृदय रोग — अमराज कलब — Heart Diseases

।। इति ।।

एलोपैथिक गाइड

लेखक—डा० रामनाथ बर्मा

पुस्तक क्या है। गागर मे सागर। आज जब भारत स्वतन्त्र हो चुका है और हिन्दी भाषा राष्ट्र भाषा बन गई है। आधुनिक ढंग से लिखी हुई डाक्टरी चिकित्सा की पुस्तक की अत्यन्त आवश्यकता थी जो सर्व साधारण तथा हर एक वैद्य, हकीम के काम आ सके और वह रोगो का ऐलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा पद्धति से बड़ी सरलता से इलाज कर सके। इसी कमी का अनुभव करते हुये डाक्टर जी ने अपनी सारी आयु के अनुभव का निचोड इस पुस्तक मे दे दिया है। हमारा तो यह दावा है कि जो साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसे एक बार देखेगा इसे अवश्य अपने पास सदा के लिये रखने का प्रयत्न करेगा। डाक्टरजी ने ऐलोपैथिक (डाक्टरी) सिद्धान्तानुसार शरीर के भिन्न २ अगो का वर्णन तथा उनका कार्य, शरीर की सूक्ष्म रचना तथा भिन्न २ तन्तुओं का वर्णन, दन्तोद्गम, टीका लगवाना, बच्चो के विषय मे कुछ जानने योग्य बातें, रक्त सञ्चार, नाडी परीक्षा, रक्तभार, लसीका वाहिनिया, प्रणाली विहीन ग्रन्थिया, हमारा भोजन, खाद्य पदार्थों का रसायनिक सगठन, भोजन बनाने के संबध में कुछ जानने योग्य बाते, भिन्न २ प्रकार के खाद्य पदार्थ, भोजन से रक्त की उत्पत्ति, भोजन किस स्थान पर कितनी देर रहता है, पाखाना, मूत्र परीक्षा, मूत्र के स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक अवयव, भिन्न २ आयु में मूत्र का परिमाण, विटेमिन्स, भिन्न २ खाद्य पदार्थ और उनकी विटेमिन्स, खाद्य तालिका, पाण्डु रोग और दौर्बल्य, कब्ज, मधुमेह, अतिसार, अजीर्ण, ज्वर, गठिया, सूजाक, नाडी दौर्बल्य, मोटापा, क्षयरोग, गर्भावस्था, वाय, टाइफाइड, रोगियो के लिये भिन्न २ प्रकार के आहार, मक्खी, मच्छर, खटमल आदि का वर्णन, सक्रामक रोग और उनसे बचने के उपाय, औषधियों को शरीर मे प्रवेश करने के भिन्न २ मार्ग, व्यवस्था पत्रलेखन, औषधालय के सबध मे कुछ आवश्यक बाते, इन्जेक्शन्स (सची भेद चिकित्सा इसमे प्रायः सभी प्रकार के इन्जेक्शन्स का वर्णन है, किन २ बीमारियो में और कौन २ से) वैक्सीन थैरेपी सीरम चिकित्सा, मुख्य २ रोग और उनके पूर्ण अनुभूत नुस्खे, अन्य उपयोगी नुस्खे इन्हेलेशन्स स्प्रे, लिक्टस, लिनिमेन्ट्स लोशन्स, मिक्सचर्स आइन्टमेन्टस, पिग्मेन्ट्, पल्प पाऊडर्स, रोग और उनमें प्रयोग किये जाने वाले इन्जेक्शन्स और पेटन्ट औषधिया, कुछ पेटन्ट औषधियों का वर्णन, नवीन औषधिया जैसे पैनीसिलीन, सल्फोनेमाइड, आदि उनके गुण दोष प्रयोग, उपचार, औषधिया हिन्दी अग्रेजी नाम आदि अनेको विषय इस पुस्तक म वर्णन कर दिये है। मू० ७॥) रु०।

प्रकाशक—

मोतीलाल बनारसीदास,

पोस्ट बक्स ७५, चौक, बनारस।

गंगयति निदान

(सरल हिन्दी मे)

कपडे की जिल्द सहित मूल्य रु० ६)

मूल लेखक पंजाब निवासी जैन यति गङ्गाराम। हिन्दी अनुवादकर्त्ता आयुर्वेदाचार्य श्रीनरेन्द्रनाथ जी शास्त्री। पक्की कपडे की जिल्द मूल्य ६) रु०।

पंजाब के गावो में प्राय वैद्य लोग इसी पुस्तक के आधार से रोगो का निदान करते है। भाषा इतनी सरल है कि सर्वसाधारण भी वडी आसानी से समझ सकता है। इसमें रोग जानने के उपाय, लक्षण, पूर्वरूप, उपशम, सम्प्राप्ति के लक्षण, भेद, स्वरूप, मिथ्याहार-विहार के लक्षण, ज्वर के पूर्वरूप, वात, पित्त, कफ, वातपित्त, वातकफ, पित्तकफ, सन्निपात आदि लक्षण ५२ प्रकार के सन्निपात का सविस्तर वर्णन है। विषमज्वर की सम्प्राप्ति, लक्षण, भेद, साध्यासाध्य, अर्थात् हर प्रकार के ज्वर का सविस्तर वर्णन है। स्थान स्थान पर पाश्चात्य मतानुसार भी वर्णन किया गया है। संग्रहणी रोग, अर्श (बवासीर) अजीर्णरोग, क्रिमिरोग, पाण्डुरोग, रक्तपित्तरोग राजयक्ष्मा, कासरोग, श्वासरोग, स्वरभेद, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृष्णारोग, मूर्छारोग, मदात्यरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतोन्माद, अपस्माररोग, वातरोग, शूलरोग, उदावर्तरोग गुल्मरोग, हृदरोग, मत्राघात, अश्मरीरोग, प्रमेहरोग, मेदारोग, उदररोग, शोथरोग, वृद्धिरोग, अर्बुदरोग, श्लीपदरोग, विद्रधिरोग, व्रणशोथरोग, शारीरव्रणरोग, सद्योव्रणरोग, नाडीव्रणरोग, भगन्दररोग, उपदश, शकरोग, कुष्ठरोग, अम्लपित्तरोग, विसर्परोग, विस्फोट, मसूरिकारोग, मन्थर (टायफायड) ज्वर, स्नायुकारोग, क्षुद्ररोग, प्लेग, चिप (चंडा) रोग, कुनखरोग, मुखरोग, ओष्ठरोग, दन्तरोग, जिव्हारोग, तालुरोग, कठरोग, सर्वसररोग, कर्णरोग, नासारोग, नेत्ररोग शिररोग, शीर्षकलाशोथरोग, मस्तिष्करोग, बादगठियारोग, हस्तमैथुनरोग, प्रदररोग, योनिव्यापदरोग, बाधकरोग, हिस्टीरिया गर्भरोग, योनिसवरण, गर्भिणी परिचर्या, प्रसूतरोग, स्तनरोग, दुग्धरोग, बालरोग, विषरोग, जगमविषरोग, नाडीविज्ञान, मूत्र विज्ञान, शारीरिक विज्ञान, धरनरोग उरोग्रह पार्श्वशूलरोग आदि प्राचीन काल तथा आजकल में होने वाले हर एक प्रकार के रोगो के पूर्वरूप, भेद, सम्प्राप्ति, लक्षण, सामान्यनिदान विशेष लक्षण, वातज, पित्तज, कफज तथा साध्यासाध्य तथा पाश्चात्यमतानुसार सविस्तर वर्णन दिया गया है हिन्दी भाषा में इस प्रकार की कोई पुस्तक आज तक नही छपी। इस एक ही पुस्तक से सर्वसाधारण मनुष्य हर प्रकार के रोगो का ठीक ठीक निदान कर सकता है। भाषा इतनी सरल है कि हर एक मामूली पढा लिखा भी इसे अच्छी तरह समझ सकता है।

प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता :—

मोतीलाल बनारसीदास

किनारी बाजार, देहली। } पोस्ट बक्स ७५, चौक, बनारस। { बाकीपुर, पटना।

शुष्क होने पर उपलो मे रख कर अग्नि दे, शीतल होने पर औषध निकाल ले।

मात्रा—१ माशा, प्रात. साय जल से दे।

गुण—प्लीहा वृद्धि के लिये अति उत्तम है।

सफ़ूफ़ तैयन

इसपगोल, रेहां बीज, कनोचा बीज, निशास्ता, तुख़्म अमाज़ भूना हुआ, गोद कीकर, गिलारमनी, बशलोचन, सम भाग लेकर कूट छान ले, पहिले तीन औषध का चूर्ण न करके सावित ही मिला ले।

मात्रा—७ माशा, चूर्ण को घी मे मिला कर प्रयोग करे, ऊपर रेशा ख़तमी का स्वरस जल मे निकाला हुआ पिलावे।

गुण—रक्त तथा पितज अतिसार मे उपयोगी है, प्रवाहिका मे भी गुणकारी है।

लौह चूर्ण

हरड, हरड बडी, आमला, सौफ, कासेनी बीज, बहेड़ा, १—१ तो० साम्भर लवण, लवपुरी लवण, मिनहारी लवण, नमक शोर (समुद्री लवण) १—१ तोला, गिलोय सत्व २ माशा, बुरादा फौलाद (लौह भस्म) सब के आधा भाग, (५ तोला १ माशा), सब को कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा—७, माशा जल से दे, पथ्य रूप मे चने की बेसनी रोटी तथा तक्र प्रयोग करे।

गुण—रक्त शोधक है, शरीर की शक्ति तथा पाचन शक्ति को बढ़ाता है, अर्श के रक्त को बन्द करता है।

काकला चूर्ण

छोटी इलायची बीज, तज, तमाल पत्र, नागकेसर, लौग, जायफ़ल, जीरा सफेद, कालीजीरी, बिल्वकत्थ, चित्रक, धावी पुष्प, सुहागा, नागरमोथा, नाई छोटी, पाषाण भेद, नेत्रबाला, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अजवायन, तगर, तबाशीर, सज्जी क्षार, यवक्षार, अजमोद, हीग, धनियाँ शुष्क, सोठ, मिरच, पिप्पली, सौफ़, अनार की कली, कुटज-

छाल, इन्द्रजौ, राल, लोध्र पठानी, कृष्ण हरीतकी घृत मे भुनी हुई, मोचरस, वजतुरकी सम भाग लेकर चूर्ण करे, चूर्ण के समान खाँड मिला ले।

मात्रा—६ माशा, प्रातः ६ माशा सायं दूध के साथ खाये।

गुण—स्तम्भक शक्ति को वढाता है, मुह की वदवू तथा वायु का नाश करता है, दीपक पाचक है।

वंग भस्म चूर्ण

गिलोय सत्व, शिलाजीत सत्व, छोटी इलायची वीज, पाषाण भेद, मधुयष्टि, तालमखाना, वंशलोचन, वंग भस्म १–१ तोला, मिश्री सब के समान, सब का भली प्रकार चूर्ण करे।

मात्रा—४ माशा।

गुण—प्रमेह, श्वेत प्रदर, नये तथा पुराने सुजाक मे भी लाभद है।

(२) वंग भस्म, छोटी एला बीज, वंशलोचन, कवावचीनी सम भाग लेकर कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा—प्रथम दिन १ माशा, दूसरे दिन २ माशा, तीसरे दिन ३ माशा शरवत वजूरी के साथ प्रयोग करे।

गुण—उपरोक्त।

(३) वंशलोचन, ४ माशा, शुद्ध शिलाजीत ३ माशा, छोटी इलायची वीज, गिलोय सत्व, कवाव चीनी २ माशा, वंग भस्म आधा माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा—५ माशा, चूर्ण खाकर ऊपर से ख़यारैन बीज को पीस कर जल मे घोट कर शरवत वजूरी ४ तोला मिला कर पीवे।

गोंद कतीरा चूर्ण

वालछड़, कहरूवा शमई, रूमीमस्तगी, गिल अरमनी, साहलव, मिश्री, शक़ाकल, इन्द्रजौ, पोदीना शुष्क, पाषाण भेद, मायाशुत्र-अहरावी, पठानीलोध्र १–१ तोला, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, गुलनार, सन्दल सफेद, तवाशीर, मोचरस, निशास्ता, गोक्षरू, माई छोटी, वंग भस्म प्रत्येक १६ माशा, मोलसरी छाल, काचनार छाल, झड़वेरी छाल, कीकर छाल, सिघाड़ा, प्रत्येक २० माशा, तोदरी

सुरख तथा सफेद, बहमन सुरख़ तथा सफेद, प्रत्येक ३ तोला, छोटी एलाबीज १॥ तोला, मिश्री सबके समान, सब का भली प्रकार चूर्ण कर खाँड मिला ले।

मात्रा—१ तोला, गाय के दूध के साथ प्रयोग करे।

गुण—यह चूर्ण प्रमेह तथा वीर्य के पतलेपन को दूर करके शक्ति उत्पन्न करता है।

मामीरान चूर्ण

गोद कीकर, गोद कतीरा, मामीरान चीनी प्रत्येक ४ माशा, गुलनार ६ माशा, जरिशक, अहिफेन, जरावन्द मदहरज़, प्रत्येक आठ माशा, तबाशीर, शुद्ध गन्धक, प्रत्येक ४ तोला आठ माशा, मग़ज खयारैन ९ तोला ४ माशा, तूखम खुरफा कृष्ण १ तोला ६ माशा, तिल छिले हुये ९ तोला, मिश्री सब के समान भाग, सब को कूट छान कर चूर्ण कर खाण्ड मिला ले।

मात्रा—४ माशा, चूर्ण शीरा तुखम खयौरन ३ मांशा, शीरा तुखम खरपजा ३ माशा, शीरा खारखस्क ३ माशा, शरबत नीलोफर ४ तोला मिला कर प्रयोग करे। (इन चीजों को जल मे घोट कर शीरा निकाल ले।)

गुण—यह चूर्ण सुजाक के व्रण को भरनें मे उत्तम है।

कमलगट्टा चूर्ण

गोक्षरू मग़ज कमलगट्टा, गूलर वृक्ष छाल, तालमखाना प्रत्येक ६ माशा, बीजबन्द, सरवाली बीज, भोफली, ढाक गोद प्रत्येक ३ तोला, खाण्ड सब के समभाग सबको कूट छान कर खाण्ड मिला ले।

मात्रा—६ माशा, दूध के साथ।

गुण—वीर्य का पतलापन, शीघ्रपतन तथा प्रमेह मे लाभकारी है।

सफूफ मग़लज़ा जदीद

निशास्ता ५ माशा, साहलव मिश्री ६ माशा, मोचरस ४ माशा, जायफल २ माशा, जावित्री ३ माशा, इलायची बड़ी २ माशा, अजवायन खुरासानी ४ रत्ती, लौंग ४ रत्ती, दारचीनी ४ रत्ती, सबको कूट छान कर समभाग खाण्ड मिला ले।

मात्रा—७ माशा, दूध के साथ प्रयोग करे।

गुण—प्रमेह तथा शीघ्रपतन मे उपयोगी है, वीर्य उत्पन्न करता है तथा स्तम्भक है।

शिलाजीत चूर्ण

शुद्ध शिलाजीत, कस्तूरी प्रत्येक ४ रत्ती, केशर, मण्डूर भस्म, गिलारमनी, गोदकीकर, दमलखवायन (खूनसाशो) १-१ माशा, लेकर भली प्रकार बारीक चूर्ण करे। आवश्यकता पर इसे गीली रूई पर लगाकर योनी के भीतर रखे।

गुण—गर्भाशय की क्षीणता को दूर करता है, गर्भाशय शोथ उत्तर जाने पर इसे सात दिन तक प्रयोग करे।

(२) वालछड़, जावित्री, सातर, कुन्दर का ऊपर का छिलका, शगूफ़ा अजख़र, मरज़नजोश, किवर वृक्ष जड़ त्वचा, जोज़लसर, गुलाब पुष्प का जीरा, सब का बारीक चूर्ण करे।

उपयोग विधि—चमेली के तैल मे रूई की वत्ती स्निग्ध कर, फिर चूर्ण मे लतपत कर, योनी के भीतर गर्भाशय के पास रक्खे।

गुण—गर्भाशय को वल देता है।

प्रवाहिका हर चूर्ण (मकलयासा सफ़ूफ़)

जरजीर बीज ६ तोला, जीरा कृष्ण, अलसी, गन्दना बीज, कृष्ण हरीतकी, रोगन ज़ैतून मे भुनी हुई, प्रत्येक ९ माशा, मस्तगी ४॥ माशा, जरजीर बीज के सिवाये बाकी सबका बारीक चूर्ण करे। जरजीर साबत ही मिला ले।

मात्रा—३ माशा, चूर्ण घृत में स्निग्ध कर रेशाखतमी के स्वरस से प्रयोग करे।

गुण—प्रवाहिका और पुराने अतिसार में लाभप्रद है।

प्रमेह हर (सफ़ूफ़ मोलफ)

सिंघाडा शुष्क, गोदकतीरा प्रत्येक ६ माशा, निशास्ता, तालमखाना, साहलब मिश्री प्रत्येक ४ माशा, माजू, मस्तगी प्रत्येक ३ माशा, खाण्ड सफ़ेद सब के समभाग कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा—५ माशा, दूध के साथ प्रयोग करे, वा जल से।

गुण—प्रमेह, वीर्य का पतलापन, तथा शीघ्रपतन में अपूर्व है।

सफ़ूफ महज़ल

अजवायन, सौफ, जीरा कृष्ण, सुदाव पत्र प्रत्येक १४ माशा, धुली हुई लाक्षा ७ माशा, मरजनजोश, बूराअरमनी प्रत्येक ३।। माशा, सबको कूट छान कर चूर्ण तयार करे।

मात्रा—५ माशा, जल के साथ प्रयोग करे।

गुण—बदन को दुबला करता है।

सफ़ूफ़ मोया

सौफ, पोस्त खशखाश, हरीतकी कृष्ण प्रत्येक ६ माशा, सबको गौ घृत मे भून ले, फिर कूट पीस कर चूर्ण करे।

मात्रा—७ माशा, जल के साथ।

गुण—अमाशय तथा आन्त्र की क्षीणता के कारण अतिसार में उपयोगी है, प्रवाहिका मे भी उत्तम योग है।

सफूफ नना

पोदीना ३ माशा, समाक १।। तोला, कृष्ण लवण १।। तोला, काली मिरच ७ माशा, सबको कूट छान कर चूर्ण तयार करे।

मात्रा—३ माशा, जल से दे।

गुण—वायूनाशक, आध्मान, शूलनाशक तथा दीपक पाचक है।

लवण चूर्ण

नमक इन्द्राणी ९ तोला, (टुकड़े करके गरम तवा पर रखे ऊपर से तेज सिरका डाले। शुष्क होने पर दोबारा तिबारा ऐसा ही करे)। धनिया, जरिशक घन सत्व, अनारदाना भुना हुआ, समाक (ततड़ीक), प्रत्येक तीन तोला, सबका चूर्ण करे।

मात्रा—३ माशा, भोजनोपरान्त प्रयोग करे।

गुण—भूख बढ़ाता है, दीपक पाचक तथा वायु नाशक है।

नमक सुलेमानी

साम्भर लवण आध सेर, लवपुरी लवण, नवसादर प्रत्येक ५।।

तोला, इन्द्राणी लवण ४ तोला, करफ़स वीज २ तोला, काली-मिरच १॥ तोला, मिरच सफ़ेद, अजखर प्रत्येक आठ माशा, आकश वेल, हींग, वाल्छड, जीराकृष्ण प्रत्येक सात माशा, दारचीनी, अंजदान वीज, मगज तुख़म करतम, सोंठ, सौफ़ रूमी, मधुयष्टि प्रत्येक ३॥ माशा, सवको कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा तथा गुण---३ माशा, भोजनोपरान्त प्रयोग करे, दीपक, पाचक।

(नमक सुलेमानी विशेष)

काला लवण, साम्भर लवण, इन्द्राणी लवण, नवसादर, प्रत्येक ७ तोला, अजमोद, अजवायन, कालीमिरच, सोंठ, लौंग, जीरा कृष्ण, जावित्री १-१ तोला, सवको कूट पीस कर सिरका में उवाले, फिर शुष्क करके खरल कर लें।

मात्रा---दो माशा।

गुण---उपरोक्त।

शेखलरहीस लवण चूर्ण

साम्भर लवण, सफेद मरिच प्रत्येक ७॥ तोला, नवसादर, सोंठ, पोदीना शुष्क, कालीमिरच, प्रत्येक ५ तोला ४ माशा, करफस वीज पौने चार तोले, अनीसून, जरजीर वीज, अजवायन, वालछड़ प्रत्येक ढाई तोला, सबको कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा---५ माशा, भोजनोपरान्त।

गुण---अमाशय तथा यकृत को बल देता है, वायु नाशक तथा दीपक पाचक है, जोड़ों की पीड़ा मे उपयोगी है।

हिन्दी चूर्ण

नकछिकनी; मूली लवण, पोदीना लवण, भटकटैया लवण, आक लवण, (लवण से अभिप्राय क्षार है), सवका वारीक चूर्ण करे, और दारचीनी तैल की कुछ बूंदे डालकर अच्छी तरह मिला लेवे।

मात्रा---२ माशा, भोजन से पूर्व प्रयोग करे।

गुण---अजीर्ण तथा गुल्म नाशक है, दीपक पाचक है।

नवीन प्रमेह हर चूर्ण

इसपगोल सत्व श्वेत १० तोला, गोंद कतीरा, इमली के वड़े बीज का मग़ज ४–४ तोला, पोस्त डोडा २ तोला, खाँड सफ़ेद २० तोला, सबका बारीक चूर्ण कर खाँड मिला ले।

मात्रा–६ माशा, दूध के साथ प्रयोग करे।

गुण–प्रमेह में बहुत उपयोगी है।

लोलवी चूर्ण

अनारदाना १७॥ माशा, मोती अनविधे १४ माशा, मरजान (प्रवाल) जड़ जली हुई, गुलनार, वंशलोचन, गिलारमनी, ख़रनोब शामी, गिल कबरसी, गुलाव का जीरा, सन्दल सफेद, समाक़, ज़रिशक़, मोड़ीयों बीज, झडबेरी छाल, मोलसरी फल का आटा, हमाज़ बीज, बारतंग भुना हुआ, जौ का छिलका भुना हुआ, धनियां भुना हुआ, बलूत भुना हुआ, इसपग़ोल भुना हुआ, बिल्वगिरी भुनी हुई, खुरफ़ा भुना हुआ प्रत्येक १०॥ माशा, अकाकीया धुला हुआ, कहरूबा, प्रत्येक सात माशा, गिल मखतूम, मस्तगी प्रत्येक ३॥ माशा, सब औषध को बारीक पीस चूर्ण करे, इसपगोल और बारतग को न कूटे।

मात्रा–३॥ माशा।

गुण–यकृत विकार जनित अतिसार मे लाभप्रद है, आमाशय तथा यकृत को बल देता है, पित तथा तृषा को शान्त करता है।

(२) केशर ६ रत्ती, रेवन्दचीनी ९ रत्ती, हमाज बीज भुने हुये, गोद कीकर भुना हुआ, निशास्ता, चन्दन सफेद, तवाशीर, मंजीठ, प्रत्येक १७॥ माशे, लाक्षा धुली हुई, ज़रिशक साफ़ किया हुआ, प्रत्येक २। माशे, कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा–७ माशे, कासनी बीज स्वरस और वही स्वरस से दे।

गुण–यकृत अतिसार मे लाभप्रद है।

सफ़ूफ़ लना

हरीत की कृष्ण १५ माशे, वादरंजबोया ७ माशा, ग़ारीकून, अफ़तीमियुं प्रत्येक ५ माशा, हिंजल का भीतरी गूदा, सब का कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—४॥ माशा ।

गुण—वातज दोष, उपदंश, रक्तदोष मे उत्तम है ।

सफूफ़ लाजवरद

लाजवरद धोया हुआ, हिजर अरमनी प्रत्येक २ माशा, बादरंजबोया बीज ३ माशा, कृष्ण हरीतकी, बड़ी हरड़ प्रत्येक ४ माशा, सनाय, बनफशा पुष्प प्रत्येक ५ माशा, पितपापडा बीज ६ माशा, आकाश वेल, वसफाईज फस्तकी प्रत्येक ७ माशा, सब को कूट छान कर खांड ४८ माशा मिला ले ।

मात्रा—४ माशा ।

गुण—वात दोष, रक्त दोष, कुष्ट, खुजली, दाद आदि में उपयोगी है ।

सफ़ूफ़ मरवारीद

बड़ी हरड, गाऊजवान, वहमन सुरख़ तथा सफेद, प्रत्येक २तोला ११ माशा, दरूनज अकरबी, रेहा बीज, बादरंजबोया, गुलाब पुष्प, मस्तगी, बालंगू बीज प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा, आबरेशम कुतरा हुआ, हिजर अरमनी धुला हुआ प्रत्येक १०॥ माशा, याकूत सुरख़, मरजान करमजी, मोती उत्तम, स्वर्ण पत्र, चांदी पत्र दोनों प्रत्येक ४॥ माशा, सब को यथा विधि चूर्ण करे ।

मात्रा—४॥ माशा ।

गुण—दिल, दिमाग को बल देता है, उन्माद, हृदय डूबना मे बहुत ही उपयोगी है ।

कास श्वासहर चूर्ण

आक के पीले पत्र जो सूख कर झड़ गये हो १ सेर, चूना, लवण प्रत्येक ४ तोला ४॥ माशा, इन दोनो को जल में पीस कर पत्तों पर लगा कर सुखा ले, और मिट्टी की हाण्डी में रखकर १ प्रहर उपलों की आग दे ।

मात्रा—१ से ३ माशा ।

गुण—कफ़ज कास, तथा श्वास में अत्यन्त उत्तम है ।

रक्तपित्त हर चूर्ण

कपूर १ माशा, जहरमोहरा ३ माशा, अजवार विलायती, दमलखवैयन, गोंद कीकर, कहरवा, अकाकीया, मुक्ता, बुसद, चन्दन रक्त तथा श्वेत, सरतान (केकडा) जला हुआ, काहू बीज, निशास्ता प्रत्येक ३॥ माशा, खशखाश बीज ७ माशा, नीलोफर पुष्प १०॥ माशा, गुल दागस्तानी २। माशा, गोंद कतीरा, खुलसूस, गिल अरमनी प्रत्येक ४॥ माशा, खुरफा बीज ९ माशा, कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक दें।

गुण—रक्तपित्त के लिये अत्यन्त उत्तम है।

दरूनज चूर्ण

दरूनज अकरबी, गाऊजबान प्रत्येक २१ माशा, कचूर सात माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा—४॥ माशा, मधुमे समभाग जल मिला कर प्रयोग करें।

गुण—सरदी के कारण खफकान मे उत्ताम है।

बीज चूर्ण

शलगम बीज, अस्पस्त बीज, मूली बीज, गन्दना बीज, प्याज बीज, जौ का आटा, सौफ, जरजीर बीज, बारीक पीस कर चूर्णकरे।

मात्रा—३॥ माशा।

गुण—दूध तथा, वीर्य बढ़ाता है।

सफूफ़ बजूर

शाह जीरा, अनीसून, जीरा करमानी, बड़ी इलायची, तज, अजवायन, करफस बीज प्रत्येक सात माशा, लौग पौने दो माशा, सोंठ, पिप्पली प्रत्येक १॥ माशा, सब को कूट छान कर १॥ छटांक खाँड मिलाकर चूर्ण करे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—दीपक पाचक है, वातनाशक है।

विड़ंग चूर्ण

हरड़ बड़ी, आमला, वायविड़ंग, (छिली हुई) प्रत्येक ३५ माशा, त्रिवृत सफेद आठ तोला ९ माशा, खाँड सब औषध से दुगनी, मिलाकर चूर्ण करें और फिर खाँड मिला लें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—उदर के लम्बे तथा छोटे क्रमियों को नष्ट करता है।

वीनाई चूर्ण

अगर, लौंग प्रत्येक दो माशा, पोदीना, सौंफ़ प्रत्येक १४ माशा, कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—२ से ४ माशा।

गुण—दीपक पाचक है, कफज स्राव को रोकता है आमाशय विकार जनित प्रतिश्याय में उत्तम है।

सफूफ़ अवाली

बडी इलायची, छोटी इलायची, कवावा, तीनो सम भाग लेकर चूर्ण कर ले, सम भाग खाँड मिला लें।

मात्रा—७ माशा, उष्ण जल से।

गुण—गर्भावस्था में मिट्टी खाने की आदत तथा दूसरी अशुभ बातों को नष्ट करती है।

(२) अनीसून, करफस वीज, जीरा करमानी, अजवायन प्रत्येक ३५ माशा, लौंग १७॥ माशा, मिरच सफेद पौने ९ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—४॥ माशा, प्रातः, सायं। गुण—उपरोक्त।

ग्रहणी हर चूर्ण

मोचरस, माईं, धावी, बिलगिरि, पोस्त डोडा, राल, प्रत्येक १४ माशा, मस्तगी २८ माशा, सब को कूटछान कर चूर्ण करे।

मात्रा—४॥ माशा, प्रातः, सायं।

गुण—संग्रहणी में बहुत उत्तम है।

सौफ़ चूर्ण

गुलाब का जीरा १०॥ माशा, किबर मूल छाल १४ माशा, करफ़स जड छाल २१ माशा, वनफशा पुष्प २४॥ माशा, मस्तगी, कसूस बीज प्रत्येक १ तोला ४ माशा, अनीसून दो तोला आठ माशा, सोसन जड ५ तोला ४ माशा, सौफ आठ माशा, सब को कूट छान कर समभाग खाँड मिला लें।

मात्रा—४॥ माशा।

गुण—दीपक पाचक है, भूख बढ़ाता है, वायु को नष्ट करता है

अगर चूर्ण

बालछड़, मस्तगी प्रत्येक १०॥ माशा, लौंग, कबाबा, प्रत्येक १७॥ माशा, ऊद अपक्व २८ माशा, खाँड सब के समान, सब का चूर्ण कर खाँड मिला ले।

मात्रा—४॥ माशा।

गुण—आमाशय की सरदी मे उत्तम है।

कहरुबा चूर्ण

जरिशक ३५ माशा, कहरूबा, फूल गुलाब प्रत्येक १७॥ माशा, आमला, वंशलोचन प्रत्येक १०॥ माशा, अगर अपक्व ७ माशा, बालछड ३ माशा, केशर, कपूर प्रत्येक १॥ माशा, सब को कूटछान कर चूर्ण करे।

मात्रा—३॥ माशा।

गुण—ज्वर के कारण अजीर्ण मे लाभप्रद है।

यवक्षार आदि चूर्ण

यवक्षार, दारचीनी, लौंग, निंबू का छिलका, बालछड, जीरा सफेद, पत्रज, पिप्पली, तज प्रत्येक ३ माशा, कृष्ण हरीतकी, समाक, गुलाब पुष्प, सौफ, मस्तगी, पोदीना, अजवायन, तबाशीर, पितपापड़ा, प्रत्येक ४ माशा, हरड़, हरड बड़ी, आमला, लघुएला बीज, धनियां, सोठ, त्रिवृत, आम की कचरियां भुनी हुई, प्रत्येक ६ माशा, अनारदाना ७ माशा, काला लवण, सैंधव लवण १-१ तोला, सब को कूट छान कर निंबू के रस से भावित करे, और शुष्क करके चूर्ण करे।

मात्रा—४ माशा ।

गुण—दीपक, पाचक तथा अजीर्ण नाशक है ।

अजवायन चूर्ण

अजवायन, करफ़स बीज, समभाग लेकर बारीक करे, और थोड़ी सी खांड मिला कर ७ माशा की मात्रा मे प्रयोग करे ।

गुण—अजीर्ण नाशक है, आमाशय शूल, प्लीहा शूल में उत्तम है ।

सनाय चूर्ण

सनाय, सोंठ, हरड़, काला लवण, सब समभाग लेकर औषध को कूट छान कर चूर्ण करें ।

मात्रा—७ माशे से १ तोला तक ।

गुण—उदरशूल, आन्त्रशूल, तथा कोष्टबद्धता के लिये उपयोगी है।

कुटजादि चूर्ण

कुटजछाल २। माशा, नीलोफ़र ४॥ माशा दोनो को बारीक चर्ण कर लें, यह एक मात्रा है ।

गुण—अर्श जनित अतिसार के लिये लाभप्रद है ।

लोलवी चूर्ण

अम्बरशद, स्वर्णवर्क प्रत्येक ९ रत्ती, मस्तगी २। माशा, मस्तगी २। माशा, मोती, यशब सबज, ज़हर मोहरा खताई, जरिशक साफ किया हुआ, समाक, अनारदाना, दारचीनी प्रत्येक ४॥ माशे, चादी के वर्क ५ माशा २ रत्ती, चन्दन सफ़ेद, आबरेशम कुतरा हुआ, तबाशीर, पिस्ता के बाहर का छिलका, आमला, लघु एलाबीज भुना हुआ, धनियां भुना हुआ, सौंफ़ भुना हुआ, हरीतकी कृष्ण गौघृत में भुनी हुई प्रत्येक पौने सात माशा, सब औषध को कट छान कर चूर्ण करें ।

मात्रा—३ माशा ।

गुण—रक्त अतिसार, अर्श जनित अतिसार, पित्त, ज्वर, पादशोथ, ख़फ़कान तथा आधमान में उपयोगी है ।

रक्त अतिसार हर

गोद कीकर, गोद कतीरा, तवाशीर, संगजराहत १-१ माशा, कहरूवा पिसा १।। माशा, रसौत २ माशा, मिलाकर बारीक पीस कर चूर्ण करें।

मात्रा—३ माशा ।

गुण—अतिसार, रक्त अतिसार में उत्तम योग है ।

यहूदी चूर्ण

तेरातज़ीक बीज, ईसबगोल, हाऊबेर, प्रत्येक भुना हुआ ७-७ माशा, जीरा किरमानी, खशखाश बीज, अनीसून,गन्दना बीज,सोये बीज, करफ़स बीज, प्रत्येक पौने ९ माशा, अहिफ़ेन ११।। माशा, कूट छान कर चूर्ण करे ।

मात्रा—१ से ४ रत्ती ।

गुण—पुराने अतिसार और प्रवाहिका मे उत्तम है

धावी चूर्ण

धावी पुष्प,राल,दोनों को समभाग लेकर बारीक कर चूर्ण करे।

मात्रा—३ माशा से १ तोला, लौहे गरम से बुझाई छाछ के अनुपान से दे ।

गुण—अहिफेन खाने वालों के अतिसार मे उत्तम है ।

भांग चूर्ण

पोस्त डोडा भुना हुआ ५। माशा, भांग के पत्ते भुने हुये, सोंठ अर्ध भूनी, पिप्पली प्रत्येक २। माशा, मस्तगी रूमी, अनारदाना भुना हुआ, धनियां शुष्क भुना हुआ प्रत्येक ३ माशा, गोद कीकर ६ रत्ती, सब को कूट छान कर चूर्ण करे ।

मात्रा तथा गुण—३।। माशा, जल से । अतिसार मे लाभप्रद है ।

बाल अतिसार हर चूर्ण

सद, कुन्दर, मोडीयों बीज, खशखाश सम भाग लेकर कूट छान ले ।

मात्रा—२ माशा, माता के दुध में दें ।

गुण—बालकों के अतिसार मे उत्तम है ।

अनार चूर्ण

गुलनार, समाक, फटकड़ी, बलूत, ख़रनूब वती, मोड़ीयों बीज, अनारदाना, कीकर की फली, हरमल, अजवायन खुरासानी, कजमाज़ज, बेलगिरी, अनार का छिलका, सुरमा, अहिफेन, माजू, बेर का आटा, अभ्रकभस्म, धनियां भुना हुआ, अगूर के बीज, सब समभाग ले, भुने हुये चने सब औषध के समान, सब को कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा तथा गुण—९ माशा, जीर्णातिसार मे उपयोगी है।

अशमरी हर चूर्ण

सुरख़ कबूतर का मल ७ माशा, दारचीनी १०॥ माशा, कूट छान कर चूर्ण करे, यदि लाल कबूतर को अलसी खिला कर उसके मल से चूर्ण बनावे, तो अधिक लाभप्रद है।

गुण—अशमरी को टुकड़े २ करके निकालता है।

धनियां चूर्ण

धनिया शुष्क ५ माशा, इसपग़ोल ७ माशा, खुरफ़ा बीज १०॥ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—४॥ माशा, प्रातः प्रयोग करे।

गुण—पित्त के कारण शीघ्रपतन मे लाभप्रद है।

संभालू चूर्ण

संभालू चूर्ण ३५ माशा, सुदाब पत्र, पोदीना पत्र शुष्क, जीरा क़ूमानी, नागरमोथा, गुलनार फ़ारसी, धनियां प्रत्येक १ तोला ५ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करे।

मात्रा—६ माशा, प्रातः ६ माशा सांयकाल जल से।

गुण—सम्भोग की इच्छा को कम करता है।

श्वेत प्रदर हर योग

इमली के बीज का चूर्ण, बकायन बीज, चन्दन सफ़ेद, समभाग लेकर चूर्ण करे, और समभाग खाण्ड मिला ले।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।

गुण—श्वेत प्रदर मे उत्तम है।

मुरंजान आदि चूर्ण

केशर १॥। माशा, सकमूनीया ३॥ माशा, हरड, बादाम मगज छिला हुआ प्रत्येक १०॥ माशा, फूल गुलाब २१ माशा, सनाय २४॥ माशा, सुरंजान मधुर ३५ माशा, खाण्ड ८ तोला ६ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करे, पीछे खाण्ड मिला लें ।

मात्रा—९ माशा, यदि कफ़ की अधिकता हो, तो त्रिवृत सफ़ेद २२॥ माशा मिला ले, और सकमूनीया १॥। माशा अधिक डाले ।

गुण—आमवात, गृध्रसी और वातरक्त मे उत्तम है ।

अकसीर अहतलाम

सिघाड़ा शुष्क ६ माशा, साहलब मिश्री, तालमखाना, निशास्ता, ४-४ माशा, माजु सबज, मस्तगी ३—३ माशा, बगभस्म २ तोला, खाण्ड ४ तोला, मिला कर चूर्ण करे, ।

मात्रा— ३ माशा, दूध से ।

गुण—प्रमेह, स्वप्नदोष मे अत्यन्त उत्तम हे ।

दवाये पथरी

कलमी शोरा थोड़े जल में डाल कर अग्नि पर रखे, जब पिघलने लगे, तो हिजरलयहद का चूर्ण मिलावें, जब शुष्क हो जाये, तो सुहागा १ तोला, नवसादर ६ माशा बारीक पीस कर मिलाये, एकजीव होने पर दो रेठा का ऊपर का छिलका खरल करके मिलावे, और थोड़ी देर बाद उत्तार ले ।

मात्रा—१ माशा, अशमरी के तोड़ने में उपयोगी है

सकंजबीन (अम्लपानक)—(Vinegar Syrup)

सकजबीन एक प्रकार का सर्बत है, जो सिरका में मधु वा खाण्ड मिला कर बनाया जाता है, मधु से बनाई हुई सकजबीन को सकजबीन मधुवाली (असली संकजबीन) कहते है । निबू के रस से भी सकजबीन बनाई जाती है, यदि मधु से बनानी हो, तो मधु को आग पर रखे, झाग उतारते जाये, फिर सिरका मिला कर शर्बत जैसा पाक करें, और यदि खाण्ड से सकंजबीन बनानी

हो, तो खाण्ड और सिरका मिला कर पाक करे, १ सेर खाण्ड के लिये १ पाव वा १।। पाव सिरका पर्याप्त होता है ।

सकंजबीन सादा

सिरका खलास १ पाव मे खाण्ड १ सेर मिला कर आग पर रखे, जब तार बधने लगे, तो ५ तोला गुलाव अर्क डाल का थोड़ी देर वाद छान ले ।

मात्रा—दो तोला, अर्क गाऊजवान मे वा जल में मिला कर प्रयोग करें ।

गुण—तृषा को मिटाता है, पित्तज ज्वर में उत्तम है ।

सकंजवीन वजूरी मुतादिल

कासनी बीज, सौफ, करफ़रा बीज प्रत्येक दो तोला, तीनों को कूट कर १।। सेर पानी में एक रात्री दिन जल मे भिगोवे, प्रातः उवालें, १ सेर पानी रहने पर छान कर खाण्ड १ सेर और सिरका १ पाव मिला कर पाक करें ।

मात्रा—दो तोला सकंजवीन, अर्क गाऊजवान १२ तोला में मिला कर प्रयोग करें ।

गुण—मूत्र खुल कर लाता है, यकृत, प्लीहा के दोषो को नष्ट करता है। पैत्तिक ज्वर में उत्तम है।

सकंजबीन बजूरी बारद

कासनी मूल छाल २ तोले, सौफ, ककडी बीज, खीरा वीज प्रत्येक १।। तोला सव को कूट कर सगतरा स्वरस १।। सेर मे रात्री को भगोंवे, प्रातः जोश दे, १ सेर रहने पर छान कर १ सेर खॉड और १ पाव सिरका मिला कर पाक करे ।

मात्रा—दो तोला, योग्य अनुपान से दे ।

गुण—यकृत दोष को नष्ट करता है, जलोदर, तथा तीव्र ज्वरों मे उत्तम है ।

सकंजबीन अनसली

प्याज, लहसुन १—१ पाव को छोटे २ टुकडे करें, अब इनको २।। सेर सिरका और २।। सेर पानी मे मिला कर उबाले, फिर १०

सेर खाँड मिला कर पाक करे ।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—प्लीहा, यकृत की सख्ती को दूर करता है ।

सकंजबीन फोवाका

पोदीना स्वरस, वही स्वरस, वही अम्ल स्वरस, अनार मधुर स्वरस, अंगूर, स्वरस, जरिश्क स्वरस, फाल्सा स्वरस, इमली स्वरस प्रत्येक २। तोला, सिरका अगूरी १८ तोला, मधु १ सेर, खाँड १ सेर, मिला कर पाक करे, इसके बाद दारचीनी ३॥ तोला, कस्तूरी ३ माशा, वशलोचन ४॥ तोला खरल करके मिला लें ।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—दीपक पाचक है, वमन तथा मतली को नष्ट करता है। यकृत के दोषो को नष्ट करता है, आमाशय तथा हृदय को वल देता है ।

सकंजबीन लिमोनी

सिरका, गुलाव, निंबूरस प्रत्येक ९ तोले, खाँड ३ पाव, सब औषध मिलाकर पाक करें।

मात्रा— २ तोला ।

गुण—आमाशय तथा यकृत को वल देता है, दीपक पाचक है, पित्तज वमन, मतली तथा तृषा को नष्ट करता है ।

सकंजबीन लिमोनी सादा

निवू कागजी २ सेर के चार २ टुकड़े करे, और तीन सेर खाँड और १ सेर पानी मे जोश दे, ताकि शर्बत जैसा पाक हो जाये, अब इसको छान कर बोतलों मे भर ले ।

मात्रा—२ तोले से ४ तोले तक ।

गुण—उपरोक्त ।

सकंजबीन पोदीना

पोदीना शुष्क २ तोला को पानी मे क्वाथ कर छान ले, और इसमें आधा पाव निंबूरस और आधा सेर खाँड डाल कर संकजबीन तय्यार करे ।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—पित्त को कम करती है, दीपक, पाचक है ।

सकंजबीन तफ़ाई

पोदीना सबज ५ तोला, अम्ल अनार स्वरस, निंबू स्वरस, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क प्रत्येक ७० माशा, सिरका ११ तोला ८ माशा, मधुर सेब स्वरस ३७॥ तोला, खाँड १॥ सेर, सबको मिलाकर पकावें, जब उबाल आ जाये, तो पोदीना डाले, पाक सिद्ध होने पर उतार कर छान कर बोतलो मे भरें ।

मात्रा—दो तोला से ४ तोला तक ।

गुण—दीपक पाचक है, आमाशय और हृदय को बल देता है, वमन और मतली को नष्ट करता है ।

सकंजबीन तिमिर हिन्दी

इमली १ पाव भर लेकर १ सेर पानी और ५ तोला ४ माशा अर्क गुलाब मे भगोये, प्रातः को मलने विना १ सेर खाँड मिलाकर उबालें, और इसमे थोड़ी सी अण्डे की सफ़ेदी डाल कर हाथ से मले, और झाग उतार कर साफ करें, अब इसको दूसरी हाण्डी में डाल कर १ पाव सिरका अगूरी डाल कर फिर पाक करे, पाक सिद्ध होने पर बोतलों मे भर दे ।

मात्रा—तीन तोला ।

गुण—आमाशय, यकृत को बल देती है, पित्त तथा पैत्तिक ज्वरों मे लाभप्रद है, कोष्टबद्धता नाशक है ।

सकंजबीन यवानिका (नानखवाह)

अजवायन, जीरा कृष्ण, जूफा, भांगरा प्रत्येक दो तोला ८ माशा, मधु १ पाव, पुराना सिरका ३ पाव, पहिले सब औषध को रात्री भर सिरका मे भगोवें, प्रात· उबालें, तीसरा भाग रहने पर छान कर मधु मिलाकर पाक करें ।

मात्रा—४ तोला, शीतल जल मे मिलाकर प्रयोग करे ।

गुण—दीपक पाचक तथा अजीर्ण नाशक है ।

सनून (मंजन) (Tooth powders).

सनून उस चूर्ण को कहते हैं, जो दांतों तथा मसूड़ों पर मलने के लिये बनाया जाये, और खूब बारीक हो ।

कीकर मंजन

कीकर की जड़ का छिल्का, ४ तोला, कत्था, सुपारी, मंगजुआहत १-१ तोला, मरिच, सोंठ १-१ माशा, सब को बारीक पीसें, इस में मस्तगी १ तोला और नागरमोथा दो तोला कई हकीम मिलाते हैं।

प्रयोग विधि—रात्री को दांतो पर मल कर सो रहें, कुल्ली न करे, प्रात काल कुल्ली कर के दांत साफ करे, वा प्रात. को मल कर दो घण्टे पश्चात कुल्ली कर साफ करे ।

गुण—हिलते दांतो के लिये उत्तम हं, खून वन्द करता है ।

तमाकू मंजन

तमाकू सुरती, काली मिरच १-१ तोला, साभर लवण १॥ माशा, कूट पीस कर बारीक चूर्ण करे, दांतो पर दिन मे २-३ बार मले ।

गुण—मसूडो की शोथ को नष्ट करता है, गन्दा पानी निकालता है, दंतपीड़ा में उत्तम है ।

पीत मंजन

अनार का छिलका, गुलनार, हलदी, समाक, माजू, फटकड़ी भुनी हुई, समान भाग लेकर बारीक चूर्ण करे ।

गुण—दतपीड़ा के लिये उत्तम है, दांतो को चमकाता तथा दृढ़ करता है ।

सुपारी मंजन

सुपारी जली हुई, कागज खताई (मोटा कागज) ज़ला हुआ, हिरण शृंग जला हुआ, ने की जड़ जली हुई, जौ जले हुये, गुलनार-फारसी, समाक, तबाशीर, गुलाब पुष्प, कजमाजज, हरड़ की गुठली, सोड़ीयों पत्र, दमलखवैयन, कुन्दर, नागरमोथा, मसूर छिली हुई प्रत्येक दो तोला, फटकडी भुनी हुई ५ तोला, सब को कूट पीस कर बारीक चूर्ण करें ।

गुण—दांतों से रक्त आने को रोकता है, दातो को चमकाता तथा दृढ़ करता है ।

चोवचीनी मंजन

फटकड़ी सफ़ेद, कत्थ सफ़ेद, लौह चूर्ण, मौलसरी वृक्ष छाल, प्रत्येक ३ तोला, नीलाथोथा भुना हुआ २ तोला, कासीस, चोवचीनी १-१ तोला, हरड ५ माशे, अनार छाल ६ माशा, सब को कूट छान कर मंजन बनावें ।

गुण—उपरोक्त ।

पाईओरिया मंजन

सुपारी जली हुई, हिरण शृंग जला हुआ, कागज खताई जला हुआ ६-६ माशा, अकरकरा ७ माशा, इंजबार जड़ ५ माशा, फटकड़ी भुनी हुई, कजमाजज, तवाशीर, गुलनार ४-४ माशा, कूट छान कर बारीक चूर्ण करें ।

गुण—उपरोक्त ।

सनून कलान

मस्तगी, माजू सबज, तूतीया भुना हुआ, फटकड़ी भुनी हुई, हरड़ प्रत्येक ३ माशा, कहरूबा, बुसद ४-४ माशा, हीरा कासीस, छालीया जला हुआ, कत्थ पापड़ीया, संगजराहत प्रत्येक ६-६ माशा, चोबचीनी, मौलसरी जड़ जाल प्रत्येक ७ माशा, हिरण शृंग जला हुआ १ तोला, लोह चूर्ण बारीक १३ माशा, सब को मिला कर अत्यन्त बारीक चूर्ण करें ।

गुण—उपरोक्त ।

अनुभूत मंजन

कहरूबा, सगजराहत, बड़ी एला बीज, कहरूबा शमई, निबु सत्व, समुद्र झाग, फटकड़ी भुनी हुई, चाकसू छिला हुआ, मधुयष्टि, जुफत रूमी, रूमी मस्तगी, गुलाब पुष्प, अकाकीया, गुलनार फारसी, शादनज अदसी, गिल अरमनी, प्रत्येक ६ माशा, जुफ़त बलूत ४ नग, गोदनी वृक्ष छाल, कीकर वृक्ष छाल, सुहजना वृक्ष छाल ६-६ माशा, सब को बारीक कर के मंजन बनावें ।

गुण—यह मंजन सोते समय दांतो पर मलें, पाईओरिया के लिये उत्तम योग है।

विशेष मंजन

नीलाथोथा भुना हुआ, फटकडी भुनी हुई ३-३ माशा, छोटी एला बीज, लौंग, अकरकरा, अनार का छिल्का प्रत्येक ६ माशा, बारीक करके दातो पर मले, यदि नीलाथोथा लगता हो, तो २॥ तोल कहरूवा मिटी और इस मे मिला दे।

गुण—पाईओरिया मे उत्तम है।

दृढकर मंजन

मस्तगी, गुलावजीरा, गुलअनार, गुलाब पुष्प, प्रवाल मूल, इलायची बीज, सेवती पुष्प, जीरा कृष्ण, फटकडी भुनी हुई, प्रत्येक २ माशा, तवाशीर १ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करे, और प्रात साय दातो पर मले, और दो घण्टा तक पानी न लगावे।

गुण—हिलते दातो को दृढ करता है, रक्त तथा पीप को बन्द करता है।

(२) माजू ५ नग, मजीठ ६ माशा, कत्थ सफेद ३ माशा, स्वर्ण माक्षिक १ तोला, लौह चूर्ण धावी पुष्प प्रत्येक दो तोला, हीरा कासीस ३ माशा, छोटी इलायची बीज ६ माशा, चारों लवण ६-६ माशा, चम्बेली छाल जली हुई, झड़बेरी छाल जली हुई, कीकर छाल जली हुई प्रत्येक २ तोला, सुपारी जली हुई ५ तोला, छोटी और बड़ी माई प्रत्येक दो तोला, सब को बारीक करके मजन बनावे।

गुण—पहिले योग अनुसार।

मस्सी मंजन

लौह चूर्ण अत्यन्त बारीक कीया हुआ १। सेर, माजू सबज आधा सेर, नीलाथोथा भुना हुआ ४॥ तोला, मस्तगीरूमी १४ माशा, स्वर्णमाक्षिक ४ माशा, सब को कूट छान कर मंजन बनावे, दांतों पर मले, और कुछ समय तक कुल्ली न करें।

गुण—होंठों को रंगता है, दातों को दृढ करता तथा चमकाता है।

लवंगादि मंजन

सुची चीनी के टुकड़े, समुद्रझाग, सज्जीक्षार, लवपुरी लवण, प्रत्येक १०॥ माशा, फटकडी जलाई हुई, जौ जलाये हुये, अगर जलाया हुआ, वालछड़, माई, मोडीयों वीज, अकरकरा प्रत्येक ७ माशा, लौंग, कवावचीनी प्रत्येक १॥। माशा, सव को कूट छान कर मंजन वनावे ।

गुण—दांतो को दृढ़ करता है, चमकाता है ।

स्फटिका मंजन

फटकड़ी सफेद, कत्था सफ़ेद, लौहचूर्ण, मौलसरी वृक्ष छाल ३-३ तोला, नीलाथोथा, २ तोला, कासीस, चोवचीनी, १-१ तोला, हरड़ ९ माशा, अनारछिलका, ६ माशा, सवको कूट छान कर मजन वनावे, दांतों पर मलने के वाद गुलाव तैल लगावे ।

गुण—दांतों तथा मसूडों को दृढ करता है ।

सुपारी मंजन

छालीया जलाई हुई ४ नग माजू ३ नग, चमडा वूदार जला हुआ १ तोला, सगज्राहत, मस्तगी, वडी इलायची प्रत्येक ६ माशा, (माजू गन्दम के आटे मे रख कर भून लें) इसके पश्चात सब को वारीक पीस ले ।

गुण—उपरोक्त ।

(२) मस्तगी, गुलाव जीरा, गुलनार, गुलाव पुष्प, वुसद सफेद खरल किया हुआ, इलायची छोटी, सेवती पुष्प, जीरा काला भुना हुआ, फटकड़ी भुनी हुई प्रत्येक २ माशा, बंगलोचन १ माशा, सव को कूट छान कर वारीक चूर्ण करे ।

गुण—उपरोक्त ।

(३) मस्तगी, माजू सवज़, नीलाथोथा भुना हुआ, फ़टकडी भुनी हुई, हरड़ ३-३ माशा, कहरूबा, मूगे की जड़ ४-४ माशा, हीराकासीस, छालीया जलाई हुई, कत्थ पापड़ीया, संगज्राहत प्रत्येक ६ माशा, चोबचीनी, मौलसरी जड़ छाल, ७-७ माशा, वारासिघे का

शृंग जलाया हुआ, लौहचर्ण १–१ माशा, मिलाकर अत्यन्त वारीक चूर्ण करें।

गुण—दातों पर मले, दांतों तथा मसूडों का खून रोकने में अपूर्व है, वहुत ही गुणदायक मंजन है।

(४) लवपुरी लवण, धनियां शुष्क, कासीस प्रत्येक ७ माशा, नीलाथोथा, कुठ, कत्थ सफेद, जीरा सफेद, मस्तगी प्रत्येक ३॥ माशा, वज्रदंती, सोंठ, कपूर कचरी, कवाव चीनी, प्रत्येक १॥। माशा, नीले थोथे को गरम तवे पर रख कर सफेद कर लें, जीरा और धनियां को भी भून ले, सबको वारीक पीसकर मजन करे।

गुण—उपरोक्त।

(५) मस्तगी, कासीस, सुरमा, संग सफेदा, मैनफल, सोठ भुनी हुई, संगजराहत भुना हुआ, सुहागा भुना हुआ प्रत्येक १४ माशा, मिरच सफेद, कत्था सफेद, धनियां भुना हुआ, जीरा भुना प्रत्येक २ तोला ४ माशा, नागरमोथा ४ तोला ८ माशा, सव को वारीक कूट छान कर मंजन करे।

गुण—उपरोक्त, दंतपीड़ा को भी नष्ट करता है।

तुत्थ मञ्जन

नीला थोथा भुना हुआ. जीरा सफेद भुना हुआ, धनिया शुष्क, कत्थ, लवण, कुठ, मोंठ प्रत्येक १४ माशा, पिप्पली ७ माशा, सव को कूट छान कर मंजन वनावे।

गुण—दंत पीड़ा नाशक है, दांतो को दृढ करता है।

शरवत—पानक (Syrups)

शरवत उस मधुर घन जल को कहते है, जो अंगूर, अनार सेव जैसे फलो के रस, वा शुष्क औषध के क्वाथ वा शीत कषाय मे खाँड डाल कर अग्नि पर पाक कर वनाया जाता है, इसमें औपध के गुण अधिक देर तक रहते है, साथ ही औषध का कड़वा पन भी वहुत मात्रा तक छप जाता है।

शरवत में औषध आँठवा भाग होनी चाहिये, औषध से आठ गुना जल डाल कर क्वाथ करें, तिहाई भाग रहने पर छान लें

औषध को छानते समय मलना नही चाहिये, इससे औषध का गाढ़ा पन भी आ जाता है, जो शरवत को थोड़े दिनों पश्चात दुर्गन्धित कर देता है, ववथित जल से तिगुनी खाँड मिला कर पाक करे, यदि ताज़े फलो के रस से शरवत वनाना हो, तो इनको निचोड़ कर इनका स्वरस निकाले, ६ छटांक स्वरस मे १ सेर खाँड डालकर पाक करें, परन्तु सरदियों मे आधा सेर स्वरस होना चाहिये

यदि आलूवख़ारा, इमली, ज़ारिश्क जैसी शुष्क फल और अम्ल रस प्रधान फलों से शरबत वनाना हो, तो इनको पानी में भगो कर मलछान लें, और १॥ सेर जल मे १ सेर खाँड डाले और यदि मधुर रस प्रधान शुष्क फलो से बनाना हो, यथा उन्नाब, अंजीर, द्राक्षा आदि, तो इनका क्वाथ कर पाक करे, यदि शुष्क जड़, फूल, पत्र से शरबत वनाना हो, तो इनको १० गुणा जल मे रात्री को भगोवे, प्रातः क्वाथ करे, तिहाई भाग रहने पर छान कर खाँड मिला पाक करे, यदि शरवत मे खाँड के साथ तुरजवीन, शीरख़-शत भी योग में लिखे हो, तो तुरजवीन आदि को पहिले औषध के क्वाथ मे वा जल मे घोल कर छान ले, ताकि तिनके काटे आदि से रहित हो जाये, घोल कर कुछ समय तक ठेरे, ताकि मिट्टी नीचे तल मे वैठ जाये, फिर धीरे से निथार ले, इसके पश्चात पाक करे, यदि मधु से शरवत वनाना हो, तो उसको पहिले छान लें, ध्यान देने योग्य विशेष बात यह है, कि शरबत न ही पतला हो, और न ही घन हो, पतला रहने से शीघ्र ही शरबत खराव हो जाता है, और घन होने से नीचे कुच्छ दिनो तक चीनी जम जाती है, दो चार वार वनाने से ठीक पता चल जाता है, अच्छे पाक के यह चिन्ह है, कि यदि पाक को दो ऊगलियो मे मला जाय तो तार निकले, और यदि चमचा से उठाकर गिराये, तो आख़री कतरे से तार निकले और पृथ्वी पर गिरने से नही फैले, शरबत का पाक ठीक होने से वह अधिक समय तक खराब नही होता।

(२) जिन बोतलो में शरबत रखना हो, उनको धोकर अच्छी तरह ख़ुशक कर लें, यदि जल तथा उसकी जरा सी नम भी रह गई, तो शरबत ख़राब हो जायगा ।

(३) बोतल को शुद्ध रखे, शरवत को धात के वरतन में न रखें।

(४) यदि शरवत मे लुआवदार औषध, लसूड़े तथा वहिदाना आदि हों, तो :रवत को उसी तरह पूरे समय तक पकाये।

(५) यदि शरवत मे वंशलोचन, रेवन्दचीनी आदि डालनी हों, तो पाक सिद्धि पर इनका वारीक चूर्ण डालें।

शरवत वरद सनाई

सनाय १। सेर, गुलाव पुष्प दो सेर, जल आठ गुणा में डाल कर क्वाथ करें, तिहाई भाग रहने पर २० सेर खांड मिलाकर पाक करे।

मात्रा—२ तोला।

गुण—कोष्ट वद्धता नाशक है।

शरवत अरजानी

बनफ़शा पुष्प, उन्नाव, गुलाव पुष्प प्रत्येक आठ तोला, सपस्तान (लसूड़े), इसपगोल प्रत्येक १० तोला, वहिदाना ४ तोला, गाऊज़वान, ६ तोला, सब औषध को ८ गुणा जल मे रात्री भर भगोवे, प्रात क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर इसमे चौथा भाग तुरजबीन डाल कर छान ले, और जल से त्रिगुण खॉड मिला कर पाक करे, यदि इसपगोल शरबत मे न डाला जाये, तो शरवत प्रयोग करते समय पहिले ६ माशा इसपगोल फांक कर ऊपर से शरबत पी लिया जाये।

मात्रा—२ तोले से ४ तोले।

गुण—आन्त्र की शुष्कता को दूर करता है, विबन्ध नाशक है।

शरबत आबरेशम

अपक्व आवरेशम कुतरा हुआ ३८ तोला, गाऊज़बान पत्र, बादरंजबोया, उस्तोखद्दूस प्रत्येक १९ तोला, जल आठ गुना, इस जल मे लौह को ७ वार गरम करके भुझाये, फिर इन चारों औषध को इस जल मे पांच दिन तक भगोवे, फिर क्वाथ करें, तिहाई भाग रहने पर छान कर त्रिगुण खाँड मिला कर पाक करें।

पाक सिद्धि पर, फरंजमुशक बीज ३॥ तोला, सन्दल सफेद १ तोला दस माशा, ऊद हिन्दी १॥ तोला, बिजौरा निंबू का छिलका, तमाल पत्र, दरूनज अकरबी प्रत्येक १३॥ माशा, कूट छान कर चूर्ण कर मिलावे।

मात्रा—दो से चार तोला, अर्क गाऊजबान मे मिलाकर प्रयोग करे।

गुण—दिल, दिमाग को बल देता है, उन्माद, दिल डूबना में लाभप्रद है।

शरबत अहमदशाही

गाऊजबान २ तोला, बादरंजबोया पत्र, नीलोफर पुष्प, फरज-मुशक बीज, कृष्ण हरीतकी, अफतीमियूं विलायती, बसफाईज फसतक्की, फरंजमुशक पत्र, उस्तोखदूस, सनाय पत्र, प्रत्येक ९ माशा, बनफशा पुष्प ६ माशा, गुलाब पुष्प ४॥ माशा, सब औषध को रात्री समय आठ गुना जल मे भिगो कर प्रातः काल क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर त्रिगुण खाँड़ डालकर पाक करे, १ पाव अर्क गुलाब भी पाक मे डाल दे।

मात्रा—दो तोला, रक्तशोधक अर्क मे मिलाकर वा जल मे दे।

गुण—उन्माद, भ्रम, रक्त विकार मे उत्तम है।

शरबत उस्तोखदूस

मधुयष्टि छिली हुई, परसाशो (हसराज), उस्तोखदूस, ऊद-सलीब, गाऊजबान, सौफ, करफस बीज, खतमी बीज, प्रत्येक ५ तोला, बनफशा पुष्प, गुलाब पुष्प, ७—७ तोला, द्राक्षा बीज रहित २० तोला, सपस्तान ५० नग, सब को आठ गुणा जल मे भिगो कर प्रातः क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर छान कर त्रिगुण खाँड मिला कर पाक करे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—वात तथा कफ दोषो को नष्ट करता है, मस्तिष्क को शुद्ध करके बल देता है।

शरबत अहज़ाज

उन्नाब विलायती २० दाना, सपस्तान (लसूड़े) ६० दाना, गोंद कतीरा, गोंद कीकर, प्रत्येक १०॥ माशा, बहिदाना १॥ तोला मधुयष्टि छिली हुई, ख़बाजी बीज, नीलोफ़र पुष्प, वनफ़शा पुष्प, प्रत्येक दो तोला, अडूसा पत्र आधा सेर, गोंद के सिवाये सब को आठ गुणा जल मे भिगो कर प्रात. क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर त्रिगुणा खाँड डाल कर पाक करें, पाक सिद्धि पर गोद को खरल करके डालें।

मात्रा—दो तोला, अर्क गाऊजबान के साथ प्रयोग करे।

शरबत आलू बालू

आलू बालू आधा सेर लेकर २ सेर पानी में रात्री को भिगोवें, प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छान कर २॥ सेर खाँड डाल कर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोले।

गुण—मूत्र खोल कर लाता है, वृक्क तथा मूत्राशय की अशमरी मे लाभप्रद है।

शरबत अम्ल अनार

अम्ल अनार स्वरस २ सेर, पोदीना सबज १० तोला, ऊद खाम, मस्तगी, आमला, प्रत्येक सात माशा, पोस्त पिस्ता, १॥ तोला, अनार स्वरस के सिवाये बाकी औषध को कूट कर पानी मे जोश देकर छान ले, फिर अनार स्वरस मिला कर और त्रिगुणा खाँड मिला कर पाक करे, पाक सिद्धि पर मस्तगी चूर्ण मिला लें।

मात्रा—दो तोला।

गुण—वमन, मतली, पित्त को नष्ट करता है, हृदय को बल देता है।

शरबत अनार सादा

बाकी औषध न मिला कर, केवल अनार स्वरस मे ही खाँड मिला कर पाक करे।

गुण—उपरोक्त।

शरबत मधुर अनार

मधुर अनार स्वरस १ सेर में तीन सेर खाँड मिला कर पाक करे ।

मात्रा–दो तोला ।

गुण–हृदय, यकृत, को बल देता है, पित्त तथा तृषा को शान्त करता है ।

वक्षरोग हर शरबत

अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ पौने दो तोला, गाऊजबान १। तोला, गाऊजबान पुष्प २ तोला, परसाशों (हसराज) पौने दो तोला, अलसी बीज पौने दो तोला, मुलैठी ९ माशा, पोस्त खशखाश ६ नग, सब को रात्री को १ सेर पानी में भिगोवें, प्रातः क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर छान कर पानी से त्रिगुणा खाँड मिला कर पाक करें ।

मात्रा–दो तोला ।

गुण–श्वास यन्त्र तथा वक्ष के रोगो मे लाभकारी है, कास श्वास, जीर्ण प्रतिश्याय मे उत्तम है, कफ स्रावी है ।

शरबत अजबार मुरकब

अंजबार जड़ छाल २॥ तोला, खरनोब शामी १ तोला १० माशा, चन्दन सफेद, रक्त, मोड़ीयो बीज ९ माशा, सब को लोहे के बुझाये आठ गुना जल मे २४ घण्टे भिगोवे, प्रात. क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर त्रिगुण खाँड डाल कर पाक करे ।

मात्रा–दो तोला, योग्य अनुपान से दे ।

गुण–रक्त अतिसार, रक्तपित्त मे उत्तम है, हृदय तथा यकृत की पित्त को शान्त करता है ।

शरबत अजबार सादा

अजबार १० तोला, को आठ गुणा पानी में भिगो कर प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छान कर त्रिगुण खाँड (१ सेर) डाल कर पाक करे ।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—उपरोक्त ।

शरबत अंजीर

अंजीर जरद (पक्व) लेकर आठ गुणा जल मे भिगो कर क्वाथ कर यथा विधि खाँड मिला कर पाक करें ।

मात्रा—४ तोला शरबत, योग्य अनुपान से ।

गुण—कोष्ठ बद्धता नाशक है, कफस्रावी है, प्लीहा वृद्धि में लाभप्रद है ।

शरबत अंगूर अम्ल

अंगूर स्वरस १ सेर मे तीन सेर खाँड मिला कर पाक करें ।

मात्रा—दो तोला ।

गुण—आमाशय, हृदय को बल देता है, पाचक है ।

शरबत अंगूर मधुर

विधि, मात्रा, गुण उपरोक्त । पित्तज ज्वर मे उत्तम ह ।

शरबत अन्नास

अन्नास स्वरस १ सेर, गुलाब अर्क, बेदमुश्क अर्क प्रत्येक आधा पाव, खाँड त्रिगुण, मिला-कर पाक करे, पाक करते समय निंबू कागज़ी का स्वरस भी अल्प मात्रा मे डाल दे ।

मात्रा—४ तोला ।

गुण—हृदय को बल देता है, मूत्रल है ।

शरबत बजूरी शीतल

कासनी जड छाल २ तोला, ख़रबूजा बीज, ककड़ी बीज, खीरा बीज प्रत्येक १।। तोला, मग़ज तुख़्म तरबूज़ ८ माशा, आठ गुणा जल मे भिगोकर क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर त्रिगुणा खाँड मिला कर पाक करें ।

मात्रा—४ तोला ।

गुण—पैतिक तीव्र ज्वरों मे उत्तम है, यकृत रोग तथा पाण्डू में लाभप्रद है ।

शरबत बजूरी उष्ण

कासनी मूल छाल ९ तोले, कासनी बीज, सौफ जड़ छाल, प्रत्येक ६ तोला, सौफ, करफस वीज, करफस जड छाल, प्रत्येक तीन तोला, कसूस बीज (पोटली में, बांध कर क्वाथ मे डाले) १॥ तोला, सब औषध का यथाविधि क्वाथ कर छान कर त्रिगुण खाँड मिला पाक करे।

मात्रा—दो से ४ तोला

गुण—यकृत, आमाशय, वृक्क, मूत्राशय की सरदी को नष्ट करता है

शरबत बजूरी मुतहदिल

कासनी बीज, ककड़ी बीज, खीरा बीज, खरबूजा बीज, सौफ की जड, प्रत्येक ५ तोला, कासनी जड़ १०॥ तोला, यथा विधि क्वाथ कर छान कर खॉड मिला पाक करे।

मात्रा—दो से ४ तोला।

गुण—मिश्रित ज्वरो मे उत्तम है, यकृत, वृक्क तथा मूत्राशय को दोषो से शुद्ध करता है।

शरबत बनफशा

बनफ़शा पुष्प १० तोला को आठ गुणा जल मे भिगो कर यथा-विधि क्वाथ कर छान कर खाण्ड मिला कर पाक करे।

मात्रा—दो से ४ तोला।

गुण—कफ़ज ज्वर, कास, श्वास, प्रतिश्याय, शिरशूल मे उत्तम है

शरबत बही

बही अम्ल तथा मधुर के छिलके और दाने निकाल कर दोनो का मिलित १। सेर स्वरस लेकर ३ सेर १२ छटांक खाण्ड मिला कर पाक करे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—हृदय तथा आमाशय को वल देता है, वमन, अतिसार में उत्तम है।

शरबत तिमिर हिन्दी

इमली आधा सेर लेकर आवश्यकतानुसार जल मे रात्री को भिगोवे, प्रात: हल्का उबाल कर छान ले, और दो सेर खाण्ड मिला कर पाक करे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—आमाशय को बल देता है, कोष्टवद्धता नाशक है पित्त को नष्ट करता है, वमन, जी मतलाना मे लाभप्रद है।

शरबत शहतूत कृष्ण

शहतूत कृष्ण को जल मे अच्छी तरह मल कर छान ले, और इस छने हुये १ सेर पानी मे तीन सेर खाण्ड मिला कर पाक करे।

मात्रा—दो तोला अवलेह की तरह चाटे।

गुण—गले की पीडा, शोथ, जलन को हटाता है।

शरबत अबलास

कीकर फली, बिल्वगिरी ३-३ तोला, मोडीयों बीज, अमरूद, ताजा प्रत्येक १४ माशा, वही स्वरस, सेब स्वरस, अनार स्वरस प्रत्येक १-१ सेर, जल १ सेर, अब औषध को इन स्वरसों तथा जल मे डाल कर क्वाथ करे १ सेर शेष रहने पर छान कर तीन सेर खाण्ड मिला कर पाक करे।

मात्रा—दो तोला।

गुण—रक्तपित, प्रदर, रक्त अतिसार में लाभ प्रद है।

शरबत अमाज

अमाज स्वरस ३० तोला मे ५० तोला खाण्ड मिला कर पाक करे।

मात्रा—दो तोला।

गुण—दिल, दिमाग को बल देता है, खफकान, दिल धड़कना, हृदय की पित्त तथा घबराहट को दूर करता है, पित्त को खारिज करता है, वमन को रोकता है।

शरबत खशखाश

पोस्त डोडा बीजो समेत १ सेर लेकर यथा विधि क्वाथ करे, तिहाई भाग रहने पर छानकर त्रिगुण खाण्ड मिला कर पाक करे।

मात्रा—दो तोला।

गुण—पित्तज प्रतिष्याय, प्रतिष्याय जनित कास मे उत्तम है।

शरबत दीनार

कासनी जड़ छाल ११ तोला, कासनी बीज, गुलाब पुष्प, प्रत्येक ५।। तोला, नीलोफर पुष्प, गाऊजबान प्रत्येक तीन तोला कसूस बीज (पोटली मे बांध कर) ८ तोला १० माशा, सब औषध को अर्ध कुट्टित कर क्वाथ करें, तिहाई भाग रहने पर खाण्ड मिला पाक करें, पाक सिद्ध पर रेवन्द असारा ४ तोला बारीक चूर्ण कर मिलावे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—यकृत शूल, उदर शूल, गर्भाशय शूल, मूत्राशय शूल विषम ज्वर, विबन्ध, जलोदर को नष्ट करता है, रेचक तथा मूत्रल है

शरबत रङ्गतरा

रंगतरा का स्वरस १।। पाव मे ४।। पाव खाँड मिला कर पाक करे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—पित्त की उग्रता को नष्ट करता है, तृषा को मिटाता है।

शरबत जूफ़ा

१ पाव जूफ़ा लेकर लकड़ीयों से साफ़ करके आठ गुना पानी में उबाले; तिहाई भाग रहने पर शेष जल से दुगनी खाँड़ और समभाग शहद मिला कर पाक करे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—कास, श्वास मे अत्यन्त उत्तम है।

शरबत जूफ़ा मरकब

अजीर १० नग, खतमी बीज, मधुयष्टि, ईरसा प्रत्येक १०।। माशा, मेथी १४ माशा, सौफ, करफ़स बीज प्रत्येक १।। तोला,

परसाशों १ तोला ४ माशा, जूफा शुष्क दो तोला, द्राक्षा बीज रहित ४ तोले, सब औषध का यथा विधि क्वाथ करे, तिहाई भाग रहने पर दुगनी खाँड और एक भाग गुलकन्द मिला कर पाक करे, पाक सिद्धि पर छान कर बोतलो मे भरे ।

मात्रा—दो तोला ।

गुण—कफज कास में उत्तम है और श्वास में कफ का स्राव करता है ।

शरवत सेब मधुर

मधुर सेब को छिलके और बीज रहित करके इस का स्वरस निचोड ले, इस मे त्रिगुण खाण्ड मिला कर पाक करे ।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—वमन को रोकता है, आमाशय और हृदय को बल देता है, पित्तज अतिसार को नष्ट करता है ।

शरबत सद्र

गाऊजबान पुष्प पौने तीन तोला, गाऊजबान, अलसी बीज, अपक्व आवरेशम कुतरा हुआ, परसाशो मधुयष्टि, अजवायन देसी, सौफ प्रत्येक १। तोला, उन्नाब पौने ४ तोला, पोस्तडोडा, खतमी-बीज प्रत्येक २। तोला, लसूड़े ३। तोला, बहिदाना १ तोला, आठ गुणा जल मे क्वाथ करे तिहाई भाग रहने पर छान कर त्रिगुण खाण्ड मिला कर पाक करे ।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—कास, श्वास, रक्तपित, प्रतिश्याय मे उत्तम है ।

शरबत सन्दल

चन्दन चूरा सफेद १० तोला को १ सेर अर्क गुलाब जल मे भिगो कर क्वाथ करे तिहाई भाग रहने पर छान कर १ सेर खाण्ड मिला कर पाक करे ।

मात्रा—दो तोला,

गुण—खफ़कान, यकृत तथा आमाशय की पित्त को नष्ट करता है ।

शरवत उन्नाव

उन्नाव आधा सेर लेकर दो सेर पानी मे क्वाथ करे, तिहाई भाग रहने पर छान कर २ सेर खाण्ड मिला कर पाक करे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—खासी, वक्ष पीड़ा, रक्तदोष, शीतला मे बहुत लाभप्रद है

शरवत फ़ालसा

फालसा पक्व को खूब भली प्रकार मलकर छान ले, यदि स्वरस १॥ पाव हो, तो १। सेर खाण्ड मिलाकर पाक करे।

मात्रा—दो तोला।

गुण—आमाशय, हृदय को वल देता है, वमन, अतिसार और प्यास को नष्ट करता है, यकृत पित्त तथा मूत्र जलन को नष्ट करता है

शरबत फ़रयादरस

गाऊजवान, सन्दल सफेद, परसागो, ऊदसलीव, खशखाश बीज सफेद २-२ तोला, मधुयष्टि छिली हुई, सौफ, खतमी बीज, गुलाव पुष्प १-१ तोला, द्राक्षा बीज रहित २५ नग, पोस्तडोडा ५ नग, सब औषध को आठ गुणा जल मे भिगो कर क्वाथ करे। तिहाई भाग रहने पर मल छान कर त्रिगुणा खाण्ड मिला कर पाक करे।

मात्रा—दो तोला, खासी और नज़ला मे उपयोगी है।

शरबत फोवाका

मधुर अनार स्वरस, अम्ल अनार स्वरस, मधुर वही स्वरस, मधुर सेव स्वरस, अम्ल सेव स्वरस, अमरूद स्वरस, गोरा स्वरस, स्माक स्वरस, जरिशक स्वरस, प्रत्येक आधा पाव, सबको त्रिगुण खाँड मिला कर पाक करे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—सब अगों को वल देता है।

शरबत कसूस

सौफ़ जड, गुलाब पुष्प, सौफ़ रूमी प्रत्येक ९ माशा, कसूस बीज (पोटली मे बाधकर), कासनीबीज, कसूस पुष्प, खयारैन बीज, ख़रबूजा बीज, कासनी जड़ छाल १-१ तोला २ माशा सबको आठ गुणा जल मे भिगोकर क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर छान कर १ सेर खाँड मिलाकर पाक करे।

मात्रा—२ से ४ तोला, सौफ़ अर्क मे मिला कर प्रयोग करे।

गुण—यकृत तथा आमाशय को बल देता है, मिश्रित ज्वरों में उत्तम है, यकृत को शुद्ध करता है, रेचक है।

केवड़ा शरबत

अर्क केवड़ा तीव्र सुगन्धित १॥ पाव को १। सेर खाँड मिला कर पाक करे।

मात्रा—दो से ४ तोला।

गुण—हृदय को बल देता है, तृषा को शान्त करता है।

शरबत गाऊजबान

गाऊजबान १ पाव को आठ गुणा जल मे भिगो कर क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छानकर अर्क गुलाब ८ तोला और दो सेर खाँड मिलाकर पाक करे।

मात्रा—२ तोला।

गुण—खफकान को नष्ट करता है, दिल को ताकत देता है।

शरबत गुढ़हल

१०० गुढ़हल पुष्प सुरख़ की सबज पतियां दूर करके चीनी के बरतन मे डालें और सायं को निंबू रस २० तोला वा टाटरी १ माशा जल १ पाव मे मिलाकर डालें, जब रंग कट जाये तो मल कर छान ले, अब दो सेर खाँड का शरवत तयार करके इस शरबत मे गुड़हल का शीत कषाय डाल कर बोतलों मे भरे कि चौथाई बोतल खाली रहे। बोतलों का मुख बन्द करके शीतल जल में डाल दे, जब शरबत में जोश पैदा हो जाये, तो साफ़ करके प्रयोग में लावे।

मात्रा—दो तोला ।

गुण—ख़फ़कान, उन्माद, हृदय रोगो मे उपयोगी है ।

शरवत लोकाट

लोकाट का पानी आधा सेर, १॥ सेर खॉड में मला कर पाक करे ।

मात्रा—२ से ४ तोला ।

गुण—पित्त की उग्रता को शान्त करता है ।

शरबत शोथ नाशक

वहिदाना, इसपग़ोल, १–१ तोला, सपस्तान (लसूडे) ५ तोला, ख़तमी वीज २ तोला, सौंफ़ जड, कासनी जड, हर एक ४ तोला, गुलाव पुष्प १ तोला द्राक्षा वीज रहित, १० तोला, करफस जड २ तोला, अज़खरमकी १ तोला, अंजीर पक्व १० तोला, सुहागा-कच्चा, रेशाखतमी, प्रत्येक ६ माशा, कासनी स्वरस छना हुआ, मको स्वरस छना हुआ, वथुआ सवज स्वरस, मूली सवज़ स्वरस, प्रत्येक १० तोला, खाँड २ सेर, पहिले शुष्क औपध को रात्री के समय दो सेर पानी मे भिगो दें, प्रातः क्वाथ् करे, तीसरा भाग रहने पर छान लें, अब इस क्वथित जल मे, कासनी, मको आदि का स्वरस मिलाकर ४ सेर खाँड मिलाकर पाक करे ।

मात्रा—४-४ तोला, अर्क बरनजासफ १२ तोला मे मिला कर प्रयोग करे ।

गुण—यकृत, आमाशय, आन्त्र तथा भीतरी अंगो की शोथ को नष्ट करता है ।

रक्त शोधक शरबत

उन्नाव, पितपापड़ा, नीलोफ़र, आकाशवेल, कासनी, ख़ुबाज़ी, हरड़, कृष्ण हरीतकी, मुण्डी, चन्दन रक्त, चन्दन सफेद, बुरादा शीशम, बनफ़शा पुष्प १-१ तोला, आठ गुणा जल मे भिगोकर क्वाथ करें, और त्रिगुण खाँड मिलाकर शरवत, का पाक करे ।

मात्रा—दो तोला, दूध मे वा अर्क रक्त शोधक मे मिलाकर प्रयोग करे ।

गुण—रक्त शोधक है, फोड़े, फुन्सी को नष्ट करता है ।

शरबत मुसफ़ी

सन्दल सुरख़, नीलकण्ठी, पितपापड़ा, सरफोका प्रत्येक १। तोला, नकचूर, चोबचीनी, प्रत्येक ४ माशा, उशबा, मेहन्दी पत्र, कमीला, १।-१। तोला, चिरायता, मुण्डी, उन्नाब, हरड प्रत्येक ३। तोला, सनाय, नीमपत्र, वह्मडण्डी, कृष्ण हरीतकी, प्रत्येक २। तोला, शीशम बुरादा १ तोला, यथाविधि क्वाथ कर छानकर खाँड मिला शरबत तयार करे। पाकसिद्धि पर पौटेंष्यम आयोडाईड १० तोला (Potassium Iodide) मिलाकर बोतलो मे भरे।

मात्रा—१ चमचा (६० बूद से १२० बूद) दूध से।

गुण—परम रक्तशोधक है।

शरबत मुरकब मसफ़ी खून

(२) उन्नाब ५ तोला, सन्दल सुरख, सन्दल सफेद, सरफोंका, महन्दी पत्र, पितपापड़ा, नीलोफर पुष्प, मको शुष्क, कासनीबीज, शीशम बुरादा, मुण्डी प्रत्येक १॥ तोला, यथा विधि क्वाथ करे। तीसरा भाग शेष रहने पर त्रिगुण खाँड डालकर शरबत तय्यार करें।

मात्रा—४ तोला, शरवत अर्क मुसफी खून मे डाल कर प्रयोग करें।

गुण—उपरोक्त।

शरबत विरेचक

गुलाब पुष्प, सनाय प्रत्येक पौने ४ तोला, बनफशा पुष्प ७॥ तोला, त्रिवृत, अफ़सनतीन रूमी, ग़ारीकून प्रत्येक २१ माशा, कसूस बीज, ऊस्तोखदूस, मस्तगी प्रत्येक १४ माशा, बालछड़ ९ माशे, उन्नाब, लसूड़े प्रत्येक ३० नग, मस्तगी और गारीकून के सिवाये बाकी सब औषध को आठ गुणा उष्ण पानी मे भिगो दे, प्रातः को क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर इसमे तुरजबीन २८ तोला हल करके छान ले, फिर इसमें त्रिगुण खाँड डालकर पाक करे, पाक सिद्धि पर मस्तगी, गारीकून का बारीक चूर्ण कर शरबत मे मिला दे।

मात्रा—४ तोला।

गुण—विरेचक ह, तीनों दोषो को निकालता है!

शरबत आमाशय दोषहर

सौंफ़, द्राक्षा बीज रहित, सौफ जड, कासनी जड़, मधुयष्टि, सौठ, अजवायन, गाऊजवान पत्र, उन्नाब, बनफ़शा पुष्प, १–१ तोला, सबको आठ गुणा जल में रात्री को भिगो कर प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छानकर त्रिगुण खाँड मिलाकर पाक करे, पाक कुछ गाढा होना चाहिये।

मात्रा—दो से ४ तोला।

गुण—आमाशय के रोगों में अतीव गुणकारी है।

शरबत बाबूना

मको शुष्क २ तोला, बाबूना पुष्प, मुण्डी, पोदीना शुष्क, १–१ तोला, आठ गुणा जल मे क्वाथ कर तीसरा भाग शेष रखे, छानकर १॥ पाव खाँड मिलाकर पाक करे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—भीतरी अगों की शोथ को नष्ट करता है।

द्राक्षा शरबत

काले अंगूर को हाथ से मलकर स्वरस निकाले, और चीनी के बरतन मे तेज धूप मे रख दे, यदि तेज धूप न हो तो पृथ्वी में गाडकर ऊपर से घोड़े की ताजा लीद भर दे, १ सप्ताह पश्चात निकाले खाँड १॥ सेर, बालछड़ १॥ तोला, लौंग, दारचीनी, तेजपत्र छोटी इलायची, १–१ तोला (का बारीक चूर्ण) अगूर स्वरस मे मिला कर ५ दिन तक धूप मे रखे, फिर छान कर बोतलो मे भरे।

मात्रा–४ तोला, शरबत भोजनोपरान्त प्रयोग करें।

गुण–बल देता है, दिल दिमाग को ताकत देता है, रक्त वर्धक है।

शरबत नारंज

आधा सेर खाँड का अर्क गाऊजवान १० तोला मे पाक करें, फिर नारगी स्वरस १२ तोला डाल कर दुबारा पाक करे, पाक सिद्धि पर केशर १ माशा हल करके डाल दे।

मात्रा–दो तोला, अर्क गाऊजबान के साथ।

गुण–हृदय तथा पाचक शक्ति को बल देता है।

शरबत नीलोफ़र

नीलोफ़र पुष्प १० तोला आठ गुणा जल मे रात्री को भिगोवें, प्रातः क्वाथ करे, तीसरा भाग रहने पर छान कर त्रिगुण खाँड मिला कर पाक करे।

माश्रा–दो तोला।

गुण–पैतिक ज्वर में लाभप्रद है, हृदय को वल देता है ज्वर तथा तृषा को शान्त करता है।

शरबत वरद मकरर

गुलाव पुष्प ताजा १। सेर, दस सेर पानी में क्वाथ करें, जब दो सेर पानी जल जाये, तो छानकर १ सेर गुलाब पुष्प और डाल कर उबालें, जब और दो सेर जल जल जाये, तो तीसरी बार १ सेर गुलाव पुष्प फिर डाल कर उबालें, अब जब दो सेर पानी और जल जाये, तो छान कर समभाग खाँड डाल कर पाक करें।

मात्रा–दो तोला।

गुण–मिश्रित ज्वरों में लाभ प्रद है, आमाशय, वृक्क मूत्राशय को बल देता है, पैतिक अतिसार में उत्तम है, कफ़ को ख़ारज करता है, आमाशय की जलन, तथा रक्त दोष में उत्तम है।

शरबत हालों

हालो बीज ४ तोला, कबाब चीनी, खरबूजा बीज, १–१ तोला, आठ गुणा जल में रात्री को भिगो कर प्रातः क्वाथ करे, तीसरा भाग शेष रहने पर छान कर त्रिगुणा खाँड मिलाकर पाक करे।

मात्रा–दो तोला।

गुण–वृक्क तथा मूत्राशय की अशमरी वा रेत को मूत्र द्वारा बाहर निकालता है।

कासनी शरबत

सौंफ जड़, कासनी की जड़, करफ़स जड़, अज़ख़र जड़, अंजीर-ज़रद, प्रत्येक तीन पाव उन्नाब, गाऊज़बान, बहिदाना, मधुयष्टि, द्राक्षा बीज रहित, बनफ़शा पुष्प, गुलाब पुष्प, सनाय, इमली, प्रत्येक १। सेर, लसूड़े, सौंफ़, परसाशों, प्रत्येक २। सेर, रेशाख़तमी १ पाव,

अर्ध कुट्टित चूर्ण कर आठ गुणा जल मे रात्री को भिगो कर प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छान कर दो सेर गुड़ जला कर मिलावे, फिर ३८ सेर गुड मिला कर पाक करे।

मात्रा—२ तोला।

गुण—आमाशय के सब रोगों में उत्तम है।

ऋतु प्रवाही शरबत

वहिदाना, इसपगोल, अजख़र जड, प्रत्येक १–१ पाव, सौफ़ जड़, कासनी जड़ प्रत्येक १। सेर, लसूड़े, अंजीर, बनफशा पुष्प, मधुयष्टि, प्रत्येक १। छटाक, सुहागा, रेशाखतमी, कासनी स्वरस, मको स्वरस, मूलीपत्र स्वरस, बथुआ स्वरस प्रत्येक १० तोला, उन्नाव, गाऊज़वान १५ तोला, द्राक्षा बीज रहित २॥ सेर, सब औषध को आठ गुना जल मे भिगो,कर, क्वाथ करे, तीसरा शेष रहने पर छान कर २ सेर गुड़ देगची मे जलाकर, क्वथित जल और ३८ सेर गुड मिला कर पाक करे।

मात्रा—दो तोला।

गुण—गर्भाशय के सब विकारो मे उत्तम है।

शरबत बालंगू

वालंगू ताज़ा १ सेर, (यदि वालगू ताजा न मिले, तो शुष्क ११। तोला लें), गाऊजवान पौने ४ तोला को पानी मे उबाल कर छान ले, १ सेर मधु डाल कर शरबत का पाक करे। (खाँड डाल कर के भी बना सकते है)

मात्रा—५ तोला।

गुण—वात तथा कफज रोगों मे लाभप्रद है, आमाशय और हृदय को बल देता है।

शरबत गाऊजवान

गाऊज़बान, बादरंजबोया, उस्तोखद्दूस सम भाग लेकर उबाल कर,छान ले, आवश्यकतानुसार खाँड डाल कर शरबत तैयार करे।

मात्रा ४ तोला।

गुण—दिल, दिमाग़ को बल देता है।

वासा शरबत

अडूसा पत्र ११ तोला ८ माशा, द्राक्षा बीज रहित ८ तोला माशा, मधुयष्टि, जूफा, पोदीना, परसाशो प्रत्येक ३५ माशा, मग़ज बादाम, मग़ज चलगोजा, मेथी, सौंफ, सौंफ रूमी प्रत्येक १७॥ माशा, मस्तगी, दारचीनी, सोंठ, प्रत्येक ७ माशा उन्नाव, लसूड़े प्रत्येक १०० नग, अजीर सफ़ेद २० नग, सब को १२ सेर पानी में १ दिन रात्री भिगोवे, प्रातः मृदु अग्नि पर पकावे कि आधा रह जाये, फिर साफ़ करके २॥ सेर खाँड मिला कर पाक करे।

मात्रा—२॥ तोला से ५ तोला।

गुण—कफ़ के कारण यदि कास श्वास हो, तो गुणकारी है।

शरबत बादरंजबोया

बादरंजबोया घन सत्व, गाऊज़बान घन सत्व सम भाग, गुलाब दोनो के सम भाग लेकर शरबत सेब डाल कर पाक करे।

मात्रा—२ तोला।

गुण—दिल को बल देने मे बहुत गुणकारी है।

शरबत सेब

मधुर सेब लेकर छील लें, और बीज निकाल दें, इनको कूट कर आधा सेर रस निकाले, इसमे ५ सेर बारश जल वा सादा जल डाल कर उबाले, चौथाई भाग जल जाने पर शेष जल को अग्नि पर से उतार कर छान ले, छठा भाग नारगी स्वरस वा निबू स्वरस डाले और हर आधा सेर स्वरस के पीछे अनीसून १ तोला ५॥ माशा, मस्तगी रूमी १४ माशा, छोटी एला बीज, जावित्री, लौंग, प्रत्येक ७ माशा का बारीक चूर्ण पोटली मे बांध कर जल में डाल दे, और पाक होते समय पोटली को हाथ से मलते रहे, ताकि इन औषध का गुण भी आ जाये, पाक हो जाने पर पोटली को फेक दें।

मात्रा—२–४ तोला।

गुण—हृदय को बल देता है।

शरबत विशेष

अम्ल अनार स्वरस, अम्ल नारंज का स्वरस, अपक्व अंगूर स्वरस, निबूरस, आलूबखारा स्वरस, इमली स्वरस, सब सम भाग लेकर और सब के समान खाँड मिला कर पाक करे।

मात्रा–२ से ४ तोला।

गुण–हृदय की पित्त को शान्त करता है, तृषा बुझाता है।

शरबत इसपगोल

इसपगोल २ तोला ८ माशा को आधा सेर जल मे फेंट कर इसका स्वरस निकाले, और ३ पाव कूजे की मिश्री डाल कर नरम आंच पर पाक करे, यदि जल के स्थान पर अर्क गुलाब, अर्क वेदमुशक मे इसपगोल का रस निकाले तो अधिक लाभप्रद है।

मात्रा–४ तोला।

गुण–वात पित्त कास तथा छाती की खुशकी मे लाभप्रद है।

शरबत अफ़सनतीन

अफसन्तीन रूमी १७॥ माशा, त्रिवृत ३५ माशा, गुलाब पुष्प १७ माशा, सब को दो सेर पानी मे उबाले, छान कर १ सेर खाँड मिला कर पाक करे।

मात्रा–२ से ४ तोला।

गुण–आमाशय तथा यकृत को दूषित दोषो से निवृत करता है।

शरबत अनीसून

अनीसून, जीरा, पोदीना, कुन्दर, सम भाग लेकर यथा विधि क्वाथ कर शरबत तैयार करे, यदि हिचकी का कारण सरदी हो, तो सोठ, अनीसून, करफस बीज का शरबत तैयार करे।

मात्रा–दो तोले।

गुण–अजीर्ण वा दूषित भारी अन्न खाने से यदि हिचकी हो तो यह शरबत लाभप्रद है।

शरबत मण्डूर

करफ़स बीज, सौफ, जीरा क्रमानी, अजवायन, अनीसून, सातर, अजदान, काशम्, शाह जीरा, धनिया मरिच, पिप्पली, कुन्दर,

दारचीनी, तज, जायफल, बालछड, जरजीर बीज, प्याज बीज, नागरमोथा सोठ, प्रत्येक, ४।। माशा, मण्डूर भस्म ३५ माशा, सब औषध को ६ गुणा उत्तम सुरा मे उबाले, आधा भाग रहने पर छान कर १।। सेर खाँड मिला कर शरबत तैयार करे।

मात्रा—२ तोला से ४ तोला।

गुण—आमाशय, यकृत को बल देता है, खून पैदा करता है वात अर्श मे उपयोगी है।

शरबत अम्बर

मधु २ सेर को २ सेर जल मे उबालें, जो झाग आवे, उतारते जायें, पाक सिद्धि पर अम्बर, केशर प्रत्येक ४।। माशा मिला दे, तैयार है।

मात्रा—१ तोला।

गुण—आमाशय शूल को नष्ट करता है, उत्तेजक तथा बलप्रद है।

शरबत पोदीना

पोदीना स्वरस, राजिका रक्त प्रत्येक ९० माशा, फटकड़ी वारीक की हुई ४।। माशा, शराब ३५ तोला ५ माशा, इन सब को १४ छटांक जल मे उवाले, आधा भाग रहने पर छान कर ३२ तोला ७ माशा शक्कर मिला कर पाक करे।

मात्रा—४ से ६ तोला।

गुण—दीपक, पाचक है, अजीर्ण नाशक है।

शरबत बही

वही ताज़ा, छुहारा अर्धपक्व, १—१ भाग, खशखाश बीज तिहाई भाग, पोस्त डोडा आठवा भाग, पोदीना जड़ छाल तेरहवां भाग, ऊद खाम चौदहवा भाग, पोदीना स्वरस इतना डाले, कि सब औपध डूब जाये, इसके वाद अर्क गुलाब इतना डाले, कि औषध से १ अंगुल ऊपर रहे, शुद्ध जल औपध से त्रिगुण, सब को मिला कर क्वाथ करे, जब छुहारे अच्छी तरह गल जायें, तो सब को अच्छी तरह छान कर खांड मिला शरबत तैयार करें।

मात्रा—२ से ४ तोला ।

गुण—वमन रोकने मे अपूर्व है ।

शरबत असूल

द्राक्षा बीज रहित ११ तोला ८ माशा, सौफ जड़ छाल, करफस जड़ छाल, कासनी जड़ छाल प्रत्येक ८ तोला ९ माशा, सौफ़ बीज, करफ़स बीज, कासनी जड प्रत्येक ७० माशा, किबर जड़-छाल ५२॥ माशा, शगूफ़ा अजखर, सम्भल, तगर, तज, वर्च, रेवन्द-चीनी, अफ़सनीतीन, अनीसून प्रत्येक ३५ माशा, अंजीर जरद २० नग, सबको अर्ध कुट्टित कर क्वाथ कर छान ले, १ सेर खाँड मिला कर पाक करे ।

मात्रा—२ से ४ तोला ।

गुण—यकृत रोगों मे अपूर्व है, जलोदर के लिये उपयोगी है । मूत्रल है ।

शरबत दीनार कबीर

बसफाईज फस्तकी, त्रिवृत, प्रत्येक ७० माशा, गुलाब पुष्प, कासनी जड प्रत्येक ५२॥ माशा, कासनी बीज ३५ माशा, सौफ जड़ छाल २६। माशा, सौफ १७॥ माशा, नीलोफर पुष्प, वनफ़शा, गाऊजबान, आकाशबेल, उस्तोखद्दूस, प्रत्येक १४ माशा, सनाय, कालादाना प्रत्येक ३१॥ माशा, कसूस बीज २२॥ माशा, सब औषध को ४॥ सेर जल मे रात्री को भिगोवे, प्रातः इतना उबाले, कि १॥ सेर बाकी रह जाये, छान कर १ सेर खाण्ड मिला कर पाक करे, अब पाक सिद्धि होने पर ११ तोला ९ माशा रेवन्दचीनी खूब बारीक कर के मिलावे, कई इस योग मे पितपापड़ा ५२॥ माशा और ४० दाने उन्नाब के भी डालते है ।

मात्रा—३ तोले से ६ तोला ।

गुण—यकृत के सब रोगों मे लाभ प्रद है ।

शरबत रेवन्द

रेवन्द ३५ माशा, त्रिवृत, गारीकून, बसफाईज, कासनी बीज,

प्रत्येक १७ माशा, सोंठ २ रत्ती, खाँड सफेद २९ तोला १ माशा, सब का क्वाथ कर खाँड मिला कर पाक करे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—यकृत, प्लीहा में उत्तम है, विबन्ध नाशक है।

शरबत जरिशक

ज़रिशक साफ किया हुआ ९ तोला ४।। माशे रात्री को ७५ तोले जल मे भिगोये, प्रात: क्वाथ करें, आधा भाग रहने इसमे मीठे सेब का स्वरस, मधुर बही स्वरस, मधुर अनार स्वरस, अम्ल सेव का स्वरस, अम्ल अनार स्वरस, निबूका का स्वरस, सिरका अंगूरी प्रत्येक १९ तोला ९ माशा मिलाये और दो भाग कर के उबाले, पीछे नीचे उतार कर शीतल करे, ताकि नीचे इसकी तलछट बैठ जाये, अब ऊपर से नित्थार कर आधा सेर खाँड मिला कर पाक कर शरबत तैय्यार करे।

मात्रा—दो तोले आठ माशा।

गुण—यकृत, आमाशय, और हृदय की पित्त को शान्त करता है।

शरबत जरिशक बजूरी

जरिशक साफ किया हुआ ९० माशा, कासनी बीज १८ माशा, खयारैन बीज, कासनी जड छाल, सौफ जड़ छाल प्रत्येक १३।। माशा, कसूस बीज ४ माशा, कूटने वाली औषध को कूट कर एक दिन रात जल मे भिगोवे और उबाल कर छान लें, इसमे एक सेर खाँड मिला कर पाक करे और उतार कर अगर, मस्तगीरूमी प्रत्येक ९ माशा रेवन्दचीनी १३।। माशा का बारीक चूर्ण कर मिलावे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—यकृत, प्लीहा, आमाशय मे लाभ प्रद है।

शरबत काकनज

अनीसून, करफस बीज, प्रत्येक ७ माशा, परसाशों, बनफशा, गाऊज़बान, प्रत्येक १७।। माशा, गोक्षरू २४।। माशा, काकनज ३५ माशा, ककडी बीज ८ तोला ४ माशा, सब औषध का क्वाथ कर

मल छान कर आधा सेर खाँड मिला कर शरबत का पाक करें।

मात्रा—४ तोला।

गुण—मूत्राशय के व्रण और सुजाक मे लाभ प्रद है।

गोक्षरू शरबत

गोक्षरू (यदि ताजा मिल जाये) तो वारीक करके थोड़ा सा पानी मिला कर इसका शीरा निकाले, अव इसमे (आधा सेर शीरा मे) ५ तोला मधु और १ सेर खाड मिला कर पाक करे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—मूत्राशय की अश्मरी को तोड कर निकालता है, मूत्रल है।

पानपत्र शरबत

पान पके हुये सफ़ेद रंग के वारीक काटे, जल मे डाल कर क्वाथ करे, छान कर खाँड मिला कर शरबत का पाक करे, पाक सिद्धि पर, केशर, लौग, जावित्री, योग्य मात्रा ने चूर्ण कर डाले, यह शरवत जिस कदर पुराना होगा, उतना ही गुणकारी होगा।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—वाजीकरण है, उत्तेजक तथा हृदय को वल देता है।

शयाफ़ (वर्ति) Suppository (Collyrium)

यह यव आकर छोटी २ वर्तियां होती है, जिनका मध्य का भाग मोटा होता है, दोनों शिर पतले होते हैं, यह चक्षू रोग के लिये वनाई जाती है, जल वा अर्क गुलाब मे घिस कर सलाई से आंखों मे लगाई जाती है।

श्वेत वर्ति

निशास्ता ३ माशा, सफेदा कशगरी, गोद कीकर, गोद कतीरा प्रत्येक ९ माशा, सवको कूट छान कर इसपगोल के जल से वा अण्डे की सफेदी मे गूद कर वर्ति वना ले, ताजा जल वा अर्क गुलाब मे घिस कर सलाई से आखो मे लगावे।

गण—आख दुखने तथा अन्य आख के रोगो मे उपयोगी है।

(२) सफेदा काशगरी १ तोला, गोद कतीरा, निशास्ता ६ माशा,

बारीक पीस कर इसपगोल के पानी से वा केवल जल से वर्ति बनावे।

गुण—उपरोक्त।

शयाफ़ अह्मर आद

शादनज अदसी धुला हुआ पौने दो तोला, गोंद कीकर १॥ तो० जगार ७ माशा, ताम्र जला हुआ, फिटकरी जली हुई, प्रत्येक ६ माशा, अहिफेन, मुसब्बर, १॥-१॥ माशा, केशर, गुरमकी, ६–६ रत्ती, बारीक पीस जल से वर्ति बनावे।

गुण—जाला और फूला मे उपयोगी है।

शयाफ अह्मरलीन

शादनज अदसी धुला हुआ २॥ तोला, ताम्र जला हुआ, वुसद, मुक्ता, तेजपात प्रत्येक १ तोला, गोंदकीकर, गोंदकतीरा, मुरमकी प्रत्येक ६ माशा, दमलखवैयन, केशर प्रत्येक ३ माशा, बारीक पीस कर जल से वर्ति बनावे।

मात्रा—जल वा गुलाव अर्क से घिस कर आंख मे लगावे।

गुण—आख दुखते तथा वामनी में गुणदायक है।

(२) सफेदा काशगरी १ तोला, कतीरा, निशास्ता, दमलखव-यन प्रत्येक ६ माशा, बारीक पीस जल से शयाफ़ बनावे।

गुण—उपरोक्त।

शयाफ़ अखजर

जंगार शुद्ध ९ माशा, रूपामखी, उशक, गोदकीकर, सफेदा रांगा (बग) प्रत्येक ६ माशा, बारीक पीस कर जल से वर्ति बनावे।

गुण—आख की खारश, फोला मे लाभ प्रद है।

(२) सफेदा काशगरी १ तोला, निशास्ता ६ माशा, नीलाथोथा, कतीरा ६–६ माशा, जल से वर्ति बनावे।

गुण—उपरोक्त।

शयाफ़ असवद

सफेदा काशगरी १ तोला, कतीरा, निशास्ता, सुरमा खालस, ६–६ माशा, बारीक पीस जल से वर्ति बनावे।

गुण—चक्षु व्रण मे उत्तम है।

शयाफ़ दीनार जून

सफेदा काशगरी, रूपामखी २॥–२॥ तोला, कतीरा ४॥ माशा, अहिफेन, निशास्ता, ३–३ माशा, पीस छान कर जल से वर्ति बनावे।

गुण—चक्षु रोग मे उपयोगी है।

शयाफ़ जफरा

तेजपात ५ माशा, जगार ५। माशा, रूपामखी ७ माशा, उशक, सकबीनज, पिप्पली २–२ माशा, पहिले उशक और सकबीनज को शराब मे हल करे, फिर औषध को इतना बारीक करे, कि सुरमा की तरह हो जाये, सबको मिला कर यथा बिधि वर्ति बनावे।

गुण—नाखूना रोग मे उपयोगी है।

(२) चाकसू छिला हुआ, सगवसगी, फटकडी, खॉड सफेद, कलमी शोरा, जदवार, समभाग लेकर निबूरस मे इतना खरल करे कि औषध सुरमे की भांति बारीक हो जाये, अब वर्ति बना ले।

उपयोग विधि—जल से घिस कर आख मे लगावें।

गुण—उपरोक्त।

(३) नवसादर २ माशा, कलमी शोरा १ तोला, शिरस बीज २ नग, मिरच काली १२ नग, नीलाथोथा ४ रत्ती, सब को बारीक पीस कर, निबू रस से भावित कर वर्ति बना ले।

गुण—उपरोक्त।

नेत्र दुख हर बिन्दु

अहिफेन, फटकडी, रसौत, गुड़, १–१ छटाक, नीलाथोथा ४ माशा, अर्क गुलाब ३ पाव, सब औषध को भली प्रकार मिलाकर फिलटर पेपर से छान ले। प्रात साय आंख मे डाले।

गुण—आंख दुखने मे उपयोगी है, पीडाशामक है।

शयाफ़ दहना फरङ्ग

नागरमोथा, मिरचकाली, हाथी का नख प्रत्येक ५ माशा, केशर ३ माशा, हरड २ माशा, हरड़ काली ३ माशा, दहनाफरंग मस्सी २ माशा, सोना मखी, ४ माशा, शिरस बीज ५ माशा, खिरनी बीज, जंगली कबूतर की बीठ (मल) की सफेदी ४–४

माशा, संगबसरी ५ माशा, लौंग १ माशा, सबको कूट छान कर कड़ाही मे डालें, और निबू रस मिला कर वाराह श्रृंग के श्रृंग से तीन दिन तक खरल करे, फिर वर्ति बनावें, यदि दहना फ़रंग मस्सी न मिले तो नीलाथोथा डाले, जल से घिस कर आख मे लगावे।

गुण—मोतियाबिन्दु, जाला, फूला, नाखूना मे लाभप्रद है।

शयाफ़ रोशनाई

रूपामखी, सोनामखी, मुक्ता, ६–६ माशा कपूर, कस्तूरी, ३–३ रत्ती, बारीक कर मेघ जल से खरल कर वर्ति बनावे।

गुण—आंखों की खारश, नाखूना और मोतियाबिन्दु की प्रारम्भिक अवस्था में लाभप्रद है।

शयाफ़ श्वेत अफ़यूनी

सफेद काशगरी २८ माशा, गोद कीकर १७॥ माशा, गोंदकतीरा, अहिफेन प्रत्येक ३॥ माशा, बारीक पीस कर अण्डे की सफेदी में गूद कर बर्ति बनावे।

गुण—पीड़ा को शान्त करता है, आंख दुखने मे उपयोगी है।

मुसब्बर वर्ति

दमलख़वैयन, मुसब्बर, अकाकीया, शयाफ़मामीशा, केशर, अहिफेन, गोदकीकर, कूट छानकर कासनी स्वरस मे गूंद कर वर्ति बनावे।

मात्रा तथा गुण—आंख दुखने मे अपूर्व है।

मोतिया हर वर्ति

सोनामखी जलाई हुई, पिप्पली, सोने का मैल, ताम्रधूम्र, (जो ताम्र पिघलाने के स्थान मे जिम्मा होता है।) समभाग लेकर सौफ़ के जल मे पीस कर वर्ति बनावे।

गुण—मोतियाविन्दु में उत्तम है।

कुन्दर वर्ति

मुसब्बर, कुन्दर, गुलनार, अनजरूरत, दमलख़वैयन, सुरमा, फिटकरी प्रत्येक ३॥ माशा, जगार ९ रत्ती, कूट छान कर वर्ति बनावे।

गुण—नासूर को शुद्ध करके इसे लगावे आंख के नासूर मे उत्तम है

यशद वर्ति

शुक्ति जलाई हुई, यशद जलाया हुआ, उत्तम सुरमा, नीलाथोथा, सफेदा कलई, गोंद कीकर प्रत्येक २ तोला ४ माशा, मुरमकी, अहिफ़ेन प्रत्येक पौने दो माशा सब को वारीक पीस कर अण्डे की सफेदी में गूद कर वर्ति बनावे।

गुण—चक्षू व्रण, फुंसी के चिन्ह, तथा आंखसे पानी का स्राव मे उत्तम है।

जमाद (लेप) (Paste-Plaster)

एक, वा एक से अधिक औषध को पानी में पीस कर वा किसी तैल मे मिला कर किसी अंग पर गाढ़ा २ लगाया जाये, उसे जमाद (लेप) कहते हैं। उष्ण रोगों मे शीतल लेप लगायें, और शीत रोगो मे उष्ण लेप लगाया जाता है, परन्तु चोट के स्थान पर अर्ध उष्ण लेप लगाया जाता है।

उशक लेप

सुदाव पत्र २। तोला, छड़ीला, कजमाज़ज प्रत्येक १॥ तोला, उशक, गुग्गुल, बूरा अरमनी, सैंधव लवण प्रत्येक १। तोला, गन्धक ७ माशा, अजीर ज़रद १० नग, पहिले अंजीर को आवश्यकतानुसार सिरका मे उबाले, तत्पश्चात इसी सिरका मे गुग्गुलु और उशक को मिला कर अग्नि पर खूब नरम करलें, फिर बाकी औषध कूट कर मिश्रित करे, यह लेप प्लीहा शोथ और प्लीहा वृद्धि पर उत्तम है

ध्वज भंगहर लेप

वत्सनाभ, हड़ताल तबकी, सुहागा, ३॥-३॥ माशा कुठ कड़वी, १तोला, तिल तैल दो तोला, सब औषध को बारीक पीस कर चम्बेली के ताजा पत्र स्वरस २० तोला में इतना खरल करें, कि स्वरस शुष्क हो जाये।

गुण तथा उपयोग विधि—आवश्यकतानुसार, मुण्ड तथा नीचे सीवन का भाग छोड़ कर रात्री समय शिश्न पर लेप करे, और ऊपर से बगलापान वा एरण्ड का पत्र बांध दे, प्रातः उष्ण जल

स धोवे, १ सप्ताह प्रयोग करने के वाद छोड दे, शिश्न मे दृढ़ता उत्पन्न करता है।

कुष्ट हर लेप

अजीर जगली की जड, बावची, पनवाड़ वीज, नरकचूर, प्रत्येक ३ माशा, सब को निवू रस मे पीस कर लेप करे, परन्तु लेप करने से पहिले स्थान को खुरदरे कपड़े से रगड ले।

गुण—दाद, छीप, सफेद दाग़ मे उत्तम है।

अर्शहर लेप

गुग्गुल ६ माशा, वग का सफेदा, रसौत, मोम, रोगन अलसी प्रत्येक ३ माशा, खतमी पुष्प ६ माशा, प्रथम खतमी पुष्प को जल मे क्वाथ कर छान ले फिर बाकी औषध मिला कर पकावे और सोते समय मस्सो पर लगावे।

गुण—अंश के मस्सों को शुष्क करता है, पीडा शान्त करता है।

जालीनूस लेप

सो०, जाऊशीर, प्रत्येक ६ तोला, मुसव्वर, गन्दा वहरोज़ा प्रत्येक ९ तोला, मोम १७ तोला, सोसन तैल ५ तोला, पहिले सोसन तल को आग पर गरम करे, फिर मोम और दूसरी पिघलने वाली वस्तुये डाल कर पिघलाये, फिर शुष्क औषध कूट कर मिलावे।

गुण—आमाशय, तथा अन्य पट्ठो की सखती को दूर करता है।

(२) अमलतास गूदा १ तोला, मको शुष्क ९ माशा, जौ का आटा, बाबूना पुष्प, अकलीलमलक, बालछड़ प्रत्येक ६ माशा, सब को बारीक पीस कर मको स्वरस ३ तोला, सिरका १ तोला, गुलाब रोगन ६ माशा, मिला कर लेप तय्यार करे, जालीनूस लेप की तरह गुण है।

खुजली लेप

गन्धक आवलासार, नीलाथोथा, कमीला, मुरदारसग, १-१ तोला, कूट छान कर रखे, प्रतिदिन १ तोले से दो तोले तक ५ तोला मक्खन मे मिला कर धूप मे बैठ कर शरीर की मालिश करें, १

घण्टा पश्चात महन्दी और चने का आटा मल कर अंधोष्ण जल से स्नान करे ।

गुण—खुजली मे उपयोगी है ।

मीरचादि लेप

मरिच, अकरकरा, प्रत्येक १॥ तोला, लौग, फरफयून प्रत्येक १४ माशा, कलोंजी ९ माशा, सोंठ २२ माशा, सब को कूट कर गुलाब तैल मे मिला कर लेप करे, शरीर के किसी अंग के सुन्न हो जाने पर लेप किया जाता है ।

राजिका लेप

राई १ माशा सिरका मे पीस कर कौड़ी के स्थान पर लेप करे, १५ मिण्टपश्चात लेप को पृथक करके कोई तैल लगा देवे ।

गण—वमन को रोकता है ।

कण्ठमाला हर लेप

मुरमकी, मुसब्बर, अजवायन, ईरसा, अलसी प्रत्येक २ माशा, जरावन्द गोल, मरिच, पिप्पलामूल, चिरायता, उशक, गुग्गुलु, रातीनज, हींग, कुठ कड़वी, फरफयून, बहरोजा, प्रत्येक १-१ माशा, मेथी आधा माशा, सब को कूट छान कर पानी में वा मको सबज के पानी में पीस कर अर्धउष्ण लेप करे ।

गुण—कण्ठमाला मे उत्तम है ।

निद्राकर लेप

नीलोफ़र पुष्प, काहु बीज, खुरफ़ा बीज, सन्दल सफेद प्रत्येक ३ माशा, कर्पूर १ माशा, अहिफेन, केशर प्रत्येक आधा माशा, सब को पीस कर गुलाब तैल १ तोला, धनियां सबज स्वरस और थोड़ा सिरका मिला कर तालु, शिर और माथे पर लेप करे ।

गुण—निद्रा लाता है ।

दादहर लेप

नारीयल का ऊपर का छिलका जला हुआ, सोहागा भुना हुआ, कर्पूर, गन्धक, प्रत्येक समभाग लेकर निबू स्वरस में खरल कर चूर्ण

करें, और नीम पत्र लेकर जल मे उवाल कर छान ले, इस नीम जल से घी को १०० वार धोकर औषध चूर्ण घी मे मिला कर लेप करे।

गुण—दाद को नष्ट करता है।

बालछड़ लेप

बालछड़, तगर, मस्तगी, प्रत्येक ७ माशा, कड़वे वादाम, करफस बीज, अजवायन प्रत्येक ९ माशा, वावूना, नाखूना, वरजासफ़, प्रत्येक तीन तोला, सवको सौफ सवज़ के जल से वा सौफ के क्वाथ मे पीस कर और गुलाव तैल, सिरका मिला कर आमाशय तथा दूसरे रूग्ण स्थान पर लगावें।

गुण—शोथ नाशक है।

केशरीय लेप

मोम खालस ६ माशा, गुलाव तैल २ तोला मे पिघलाये, केशर, मुसब्बर, लोबान, प्रत्येक १—१ माशा वारीक पीस कर इसमे मिलाये, और रूग्ण स्थान पर अर्धोष्ण लेप कर एरण्ड पत्र बांधे।

गुण—वातकफ़ सन्निपात, (नमोनीया) तथा वक्ष पीड़ा पर उत्तम है।

शीरशुत्र लेप

ऊंटनी का दूध, भैस का दूध, एरण्ड तैल प्रत्येक, १—१ सेर, तीनों को मिला कर इतना पकावे कि गाढ़ा हो जाये, अव सोंठ, अजवायन, १—१ तोला कूट छान कर मिला दे, उष्ण करके नाभि के नीचे लेप करे।

गुण—यह, लेप गर्भाशय शोथ के लिये उत्तम है।

प्लीहा हर लेप

सुदाव पत्र १० माशा, उष्क ७ माशा, पोदीना शुष्क, वूराअरमनी ३—३ माशा, सव को सिरका मे पीस कर अर्धोष्ण लेप करें।

गुण—शोथ नाशक है, प्लीहा की सख्ती को नष्ट करता है।

यकृतशोथ हर लेप

मुरमकी, आशा, अफ़सनतीन, नागरमोथा, बरंजासफ़, अकलीलमलक, बाबूना पुष्प, बालछड़, मको शुष्क ६–६ माशा, रसौंत, जदवार ३–३ माशा, सब को कूट छान कर मको सवज के पानी में पीस कर लेप करें।

गुण—यकृत शोथनाशक है।

शोथ हर लेप

मको शुष्क १ तोला, मगज़ अम्लतास ९ माशा, जौ का आटा, बाबूना पुष्प, नाखूना, बालछड़, चन्दन लाल प्रत्येक ६ माशा, बारीक पीस, मको सवज़ के स्वरस में भावित कर गुलाब तैल और सिरका, २–२ तोला मिला कर लेप करें।

गुण—शोथनाशक है।

अण्डकोषशोथ हर लेप

बाबूना, अकलीलमलक, कैसूम, प्रत्येक दो तोला, बनफ़शा पुष्प, खतमी पुष्प प्रत्येक १। तोला, गुलाब पुष्प ९ माशा, सबको कूट छान कर चूर्ण करें, अलसी के जलीय स्वरस में मिला कर लेप करें।

गुण—अण्डकोषों की शोथ के लिये गुणकारी है। शोथनाशक है।

गन्धक लेप

गन्धक २॥ तोला, गुगुलु, उशक, सकबीनज, तुरमस, मेथी, हरमल, अलसी, सुदाबपत्र, अकलीलमलक ३–३ तोला, अंजीर ज़रद १० नग, प्रथम गोंददार औषध को और अंज़ीर को सिरका अंगूरी में एक दिन रात भिगोये, फिर अच्छी तरह से खरल कर बाकी सब औषधका चूर्ण कर मिला दें, अर्ध उष्ण करके प्लीहा पर लेप करे।

गुण—प्लीहा वृद्धि में उत्तम लेप है।

स्तनशोथ हर लेप

जौ का आटा, मसूर का आटा, बाकला का आटा, गुलाब पुष्प, समभाग लेकर गुलाब पुष्प के तैल मे मिला कर और सिरका

में गूद कर अर्धोष्ण अवस्था मे कपड़े पर फैला कर स्तन शोथ पर लेप करे।

गुण—स्तन शोथ मे उत्तम है।

लाक्षा लेप

लाक्षा धुली हुई, तगर, रेवन्दचीनी, चिरायता अज़ख़र जड़, अफ़सनतीन ७—७ माशा, मस्तगी, ख़तमी पुष्प, असारा मामीशा, प्रत्येक ३॥ माशा, बालछड़, मुरमकी, मुसब्बर, गुलाब पुष्प, ३—३ माशा, कसूस बीज ९ माशा, बनफ़शा पुष्प, बाबूना पुष्प, ख़तमी जड़, नाख़ूना प्रत्येक पौने सात माशा, सब को कूट छान कर सबज़ मको के जल मे और थोड़े से अर्क गुलाब मे उबाल कर कपड़े पर लगाकर शोथ पर लगावें।

गुण—यकृत शोथ मे बहुत उत्तम योग है।

जलोदरी शोथ हर लेप

बकरी की शुष्क मैंगनी, गौ गोबर शुष्क १—१ तोला, जीरा काला, गिल अरमनी, नागरमोथा, बाबूना, मको प्रत्येक ४ माशा, मुसब्बर, रेवन्दचीनी, नाख़ूना प्रत्येक ३ माशा, बूरा अरमनी २ माशा, सब औषध को कूट छान कर जल से लेप बना अर्धोष्ण कर जलोदरी के हाथ, पैर पर लगावे।

गुण—जलोदरी के हाथ पैर की शोथ को नष्ट करता है।

फैसाग़ोरस लेप

जूफा, मोम प्रत्येक ९ तोला, केशर, बतख़ की चरबी, मुरगाबी की चरबी प्रत्येक ४॥ तोला, मुसब्बर, मेहीसाला, गुग्गुलु, उशक, मस्तगी प्रत्येक ४॥ माशा, सब औषध को कूट छान कर यथाविधि लेप बनावे।

गुण—जलोदर, यकृत क्षीणता तथा गर्भाशय क्षीणता मे उत्तम है।

कांच शोथहर लेप

मसूर छिली हुई, अनार का छिलका, जुफतबलूत, सरू फल, १—१भाग, सब औषध को कूट पीस कर मोड़ीयों पत्र स्वरस मे

उवाले, फिर गुलाव तैल मिला दे, गुदा स्थान में जब कांच निकल कर शोथ उत्पन्न हो जाती है, उस पर लेप करे।

गुण—शोथ के साथ २ कांच मे भी लाभप्रद है।

आन्त्र वृद्धि हर लेप

सेरू का फल, फटकड़ी, माजू, अम्ल अनार की कलीयां, जुफत-वलूत, कुन्दर का आटा, विल्वगिरी, कीकर फली, मोड़ीयों बीज, सरेशम माही, १—१ भाग, कूटने वाली औषध को कूट लिया जाये, और गोंददार औषध को उशक के जल में हल करके, सव को मिला एक जीव करे, आवश्यकतानुसार रुगण स्थान पर लगावें।

गुण—आन्त्र वृद्धि मे उत्तम है।

(२) सरू का फल, कजमाजज, फटकड़ी, गुलाव पुष्प, सरेशम-माही, सरेश, मोड़ीयो पत्र, माजू, गलनार, कुन्दर का आटा, जुफ़त वलूत, गोंद कीकर, अनार की कलियां, मण्डूर, मुसब्वर, वाकला का आटा, समभाग लेकर, कूटने वाली औषध को कूट कर वारीक करलें, गोंद और सरेशम माही को पिघला कर वाकी औषध मिला कर एक जीव करे।

गुण—फतक, उभरी हुई नाभी, और अण्डकोषो पर लगा कर पट्टी से वांध दे, गुणकारी तथा उत्तम योग है।

कण्ठमाला हर लेप

सकवीनज, १०॥ माशा, गुग्गुलु १४ माशा, हीग, उशक, प्रत्येक १७॥ माशा, जाग्रोशीर, फरफियून प्रत्येक २४॥ माशा, वहरोजा शुष्क ३५ माशा, सवको वारीक पीस कर सिरका मे हल करके लेप करे।

गुण—कण्ठमाला तथा रसौली में लाभप्रद है।

तिल्ला (ध्वजभंग हर तैल) (Paint-Liniment)

तिल्ला उस तरल औषध को कहते हैं, जो किसी अंग पर लगाई जाती है, परन्तु आज कल यह शब्द उस तैल वा मरहम के लिये बोला जाता है, जो शिश्न पर ध्वज भंग को नष्ट करने के लिये प्रयोग किया जाता है, तिल्ला बनाने की विधि बहुत सी हैं, ऐसी औषध जिनमे स्वयमेव तैल होता है, उनको बारीक पीस कर जल से वटी बनाई जाती हैं, फिर आतशी शीशी में भर कर पातालयन्त्र विधि से तैल निकाला जाता है, और जिनमें तैल नही होता है, उनमे दूध, अण्डे की जरदी मिलाकर वा कोई तैल ही मिला कर पातालयन्त्र विधि से तैल निकाला जाता है, जिसे तिल्ला कहते हैं।

कई बार औषध को बारीक पीस कर तैल वा मोम में मिला कर रख लिया जाता है और आवश्यकतानुसार अर्वोष्ण प्रयोग किया जाता है।

तिल्ला की निर्माण विधि में निम्न बातों का ध्यान आवश्यक है।

(१) तिल्ला के योग में मल्ल तथा हरिताल औषध हों तो इस बात का ध्यान रखें, कि इनका कोई अंश तैल में न जाये।

(२) बनाते समय अग्नि मन्द होनी चाहिये, तीव्र आंच से तिल्ला जल जाता है।

नवीन तिल्ला

मल्ल सफेद २।। तोला को आक के ५ तोला दूध में खरल करे। इसके पश्चात् दीरवहुटी, जावित्री, लौंग, अकरकरा, जायफल, प्रत्येक ६ तोला इसमें खरल करें, फिर केशर, कस्तूरी प्रत्येक १ तोला ८ माशा मिलाकर खरल करे, अन्त मे १ सेर गौ घृत मे खरल करके रखें।

मात्रा तथा उपयोग विधि—चार चावल वा १ रत्ती मुण्ड और सींवन छोड़कर केवल ऊपर के भाग में लगा कर जज़्ब करे, ऊपर से बंगला पान गरम करके लपेट दे, और पान पर

कच्चा सूत लपेट दें, प्रातः को उष्ण जल से धो डाले, यदि उपयोग समय फुंसिया निकल आयें, तो तिल्ला न लगाकर केवल चम्वेली तैल कुछ दिन लगावें, फुंसिया अच्छी होने पर फिर तिल्ला लगावे ।

गुण—यह तिल्ला ध्वजभंग मे लाभप्रद है, शिश्न मे उत्तेजना तथा दृढ़ता उत्पन्न करता है ।

नवीन तिल्ला जाहफ़री

चित्रक, सुरमा, माजु, फिटकरी लाल, हिंगुल, मच्छली की हड्डी जली हुई १-१ तोला, बीरवहुटी, अफीम प्रत्येक २-२ तोला, गिरगट, मरिच प्रत्येक ५ तोला, साण्डा की चरबी, शेर की चरबी, धस्तूर बीज, मालकगनी, लौग प्रत्येक सात तोला, प्रथम की ९ औषध को बारीक पीस लें, बाकी की औषध को कूट कर गोलियां बना ले, और आतशी शीशी मे डालकर पाताल-यन्त्र विधि से तैल निकाले, अब इस तैल मे बाकी औषध का बारीक चूर्ण मिलाकर इतना खरल करे, कि एक जीव हो जाये, तैयार है ।

गुण तथा उपयोगविधि—उपरोक्त ।

जयपाल तैल

कनेर जड़ छाल श्वेत, घुघची सफेद (रत्तिका) प्रत्येक १० तोला, कुठ कड़वी, शुद्ध जयपाल प्रत्येक २ तोला, सबको कूट छान कर १५ सेर भैंस के दूध में उबाले और दही जमाकर मक्खन निकाले, मक्खन से घी बना ले, छाछ को पृथ्वी मे गाड दें, यह घी एक रत्ती पान मे लगा कर खा भी सकते है और शिश्न पर मालिश करे, ऊपर एरण्ड तथा पानपत्र बांधे ।

गुण—तथा उपयोग विधि—उपरोक्त ।

अस्पन्द तिल्ला

हरमल, एरण्ड बीज, राई प्रत्येक १० माशा सबको कूट छान कर चम्बेली तैल ६० माशा मे खरल करके रखे ।

गृण तथा उपयोग विधि—उपरोक्त ।

वृक्क अशमरी हर तैल

कनेर वृक्ष छाल (सफेद और लाल) प्रत्येक ५ तोला, को कूट कर भैंस के दूध मे मिलाकर दूध को उबाल कर जमावें और मक्खन निकाले ।

मात्रा—२ रत्ती खाने के लिये, और १ माशा, पीडा स्थान पर मर्दनार्थ ।

गुण—गुरदे की अशमरी को निकालता है। पीडा शान्त करताहै।

विशेष तिल्ला

चरवी शेर, चरबी सूकर प्रत्येक १॥ तोला, लौंग, जावित्री, केशर, मालकंगनी, अजवायन खुरासानी, लहसुन, हीरा हींग, कर्पूर, सौभाग्य, मनुष्य की कर्ण मैल, हिगुल, कनेर जड़ छाल प्रत्येक पौने दो तोला, वीरवहुटी, जायफल, खरातीन, वत्सनाभ, घुघची सफ़ेद, अकरकरा, दारचीनी, जुन्दवदस्तर प्रत्येक १४ माशा, ७ जोक शुष्क, छह घरेलु चिड़े के शिर का मगज, मेण्डक का मगज, भल्लातक प्रत्येक ४ नग, प्याज नरगस, मगज तथा चरवी साण्डा, मगज तथा चरबी नेवला प्रत्येक २ नग सबको १२ प्रहर तक खरल कर एक जीव करे।

गुण तथा उपयोग—यह तिल्ला शिश्न के टेढापन वा कमजोरी को दूर करता है, उसे लम्बा, मोटा तथा दृढ़ करता है ।

तिल्ला दारचीनी कस्तूरी वाला

हिगुल, हडताल, पारद, कमीला, अकरकरा, प्याज नरगस, दारचीनी समभाग लेकर कूट छान ले और थोड़ी मात्रा मे कस्तूरी मिलाकर रखे ।

गुण तथा उपयोग विधि—उपरोक्त ।

आनन्ददायक तिल्ला

अकरकरा, सुहागा, कर्पूर, समभाग लेकर सुरमे की तरह बारीक खरल करे, मधु मे मिलाकर शिश्न पर लेप कर एक घण्टे पश्चात् कपड़े से साफ करके सम्भोग करें ।

गुण—भोग क्रिया मे बहुत आनन्द देता है ।

कस्तूरी तिल्ला

कस्तूरी उत्तम ६ रत्ती, फरफीयून पौने दो माशा, अकरकरा ३॥ माशा, सब औषध को कूट पीस कर चम्वेली तैल में पका कर खरल करे।

गुण—यह तिल्ला शिश्न की कमजोरी को दूर करके उसे दृढ़ करता है।

(२) कस्तूरी १ माशा, कालीमिरच, जुन्दबदस्तर, हीग प्रत्येक ५। माशा, बनोले का मगज़ ७ माशा, सबको कूट छान कर चम्वेली तैल में हल करके प्रयोग करें।

गुण—उपरोक्त।

स्तम्भक तिल्ला

आकजड़ दो तोला, कुचला चूर्ण १ तोला, सफेद कनेर जड़ छाल ४ तोला, सबको कूट छान कर केवड़ा की लकड़ी के अर्क में खरल कर तथा शेर की चरबी में खरल कर गोलियां बनावें, आवश्यकता पर गोली को खशखाश डोडा के पानी मे खरल कर लेप करें, और १ घण्टा बाद सम्भोग करें।

गुण—स्तम्भक तथा वाजीकरण है।

तिल्ला मजलूक

खरातीन शुद्ध (केचवे), शुद्ध वत्सनाभ, आम्बाहल्दी प्रत्येक १–१ तोला, मल्ल पीत २ माशा, हिंगुल ३ माशा, मक्खन २ तोला, सब औषध को मक्खन मे खरल करे, इसके पश्चात् आधा गज कपड़ा त्रिधारा थुहर के दूध, प्याज रस और आक के दूध मे बारी बारी भिगोकर शुष्क करे, फिर इस कपड़े मे उपरोक्त औषध अच्छी तरह लेप कर बत्ती बनावे, और एक लोहे की तार मे लटका कर दूसरे सिरे पर आग लगावे, और इसके नीचे कोई चीनी का प्याला रखे, जो तैल टपक कर प्याला मे संग्रह हो, उस तैल की मुण्ड तया सीवन छोड़ कर मालिश करे, इसके ऊपर निम्नलिखित

मांस पका हुआ (कबाब) बाधे, प्रतिदिन मालिश कर ताजा कबाब बांधे, एक सप्ताह प्रयोग करे, शीतल जल न लगने दें।

कबाब—युवा मुरग़ के सीना का मांस लेकर खूब कूट कर बारीक करे, इसमे पोहकरमूल, अकरकरा, हाथी दात बुरादा प्रत्येक ३ माशा, बारीक पीस कर और बंगला पान ५ नग मिलाकर, बेरी की लकड़ी की अग्नि पर कबाब तैयार करे, कबाब तैयार करते समय शेर की चरबी ऊपर डालते रहे, जब पक कर सुरख़ हो जाये, तो उतार कर शिश्न पर पहिले तैल की मालिश कर इसे ऊपर से बांध दे।

गुण—इस तरह प्रयोग करने से शिश्न की शिथिलता दूर होकर पूर्ववत् दृढ तथा उत्तेजक हो जाता है, अपूर्व तिल्ला है।

(२) मारू बैंगन १ लेकर उसमें ५० नग पिप्पली चुभो कर साये मे शुष्क करे। आठ दस दिन बाद यह बैंगन और लहसुन ६ तोला, तिलों का तैल आधा सेर लेकर कड़ाही में डालकर पकावे, कि वह जल जाये, इसके पश्चात् कैंचवे ५ तोला शामिल कर इस कदर खरल करे, कि मरहम की तरह हो जाये, यथाविधि प्रयोग करे।

गुण—उपरोक्त, उत्तम तिल्ला है।

(३) सफेद कनेर जड़ छाल २ तोला, अहिफन, जायफल प्रत्येक ३ माशा सबको बारीक करके गोह की चरबी मे खरल करे, फिर धस्तूर पत्र जल स्वरस मे इतना खरल करे कि गोली बन सके, अब गोलियां बनाले, १ वटी जल मे घिस कर शिश्न पर लेप करे, ऊपर से पानपत्र बांधे, प्रातः उष्ण जल से धो देवे।

गुण—उपरोक्त।

मत्सय तिल्ला

मत्सय काली, सफेद तथा सुरख़, १–१ नग, कुचला, बीरबहुटी, प्रत्येक २ तोला, इन सबको शराब उत्तम मे तीन रोज़ तक भिगो रखे, अब अकरकरा, लौंग, असगन्ध नागोरी, शिलाजीत, अहिफेन

जायफल प्रत्येक ६ माशा, खूब बारीक करके शेर की चरबी में पका, कर और सबको मिला खरल कर एकजीव करें।

प्रयोगविधि तथा गुण—उपरोक्त।

रक्त तिल्ला

हिंगुल, जायफल प्रत्येक २—२ तोला, मोम श्वेत ४ तोला, गौ मक्खन १२ तोला, मल्ल सफेद ३ माशा, प्रथम औषध को बारीक खरल कर मोम को मक्खन में पिघला कर, औषध चूर्ण मिला दे। उपरोक्त विधि से प्रयोग करे।

गुण—उपरोक्त।

मजलूक तिल्ला

मल्ल सफेद को सात दिन तक आकदुग्ध में भिगो रखें, फिर तीन दिन तक गौ के मक्खन मे खरल करे, खूब खरल होने के बाद एक मोटे कपडे मे बांध कर एक लकड़ी पर लटकावे, लकडी को तेज़ धूप पर लटकावे, नीचे प्याला रखे, इस तरह करने पर प्याले में घी पोटली से टपक कर गिरेगा, जब सब घी निकल आवे, तो प्रति तोला घी के पीछे, कस्तूरी २ रत्ती, केशर २ रत्ती, लौग, जायफल, जावित्री, अकरकरा, बीरबहुटी १—१ माशा बारीक पीस कर घृत मे मिला कर खरल कर एक जीव करे, शिश्न पर मालिश कर ऊपर पानपत्र तथा भोजपत्र बाधे, जब फुसिया उत्पन्न हो जायें, तो चम्बेली का तैल लगावे। यदि इसी तिल्ला मे, मोतीया अत्तर, मेहदी अत्तर, दारचीनी अत्तर, मेण्डक की चरबी, जोंक, कैंचवे, हीग, फासफोरस प्रत्येक ३ माशा मिला दिया जाये, तो बहुत ही उपयोगी होगा।

गुण—उपरोक्त।

(२) केचवे, जौक, प्रत्येक ३ माशा सब को दो तोला मक्खन मे खरल कर रात्री को शिश्न पर मालिश करे, प्रात उष्ण जल से धो देवे।

गुण—उपरोक्त।

सुप्ति तिल्ला (मुख़दर)

मेथीलेटिड सिपरिट (Methylated Spirit) ५ तोला, अहिफेन, एकसट्रकट बेलाडोना प्रत्येक ३ माशा, सबको खरल कर २–३ दिन धूप मे रखे, आवश्यकता पर रूई से शिश्न पर लगावें।

गुण—यह तिल्ला शिश्न की त्वचा मे बेहिसी उत्पन्न करके प्रमेह को लाभ करता है, उत्तेजना को कम करता है।

तिल्ला मुहासा (यौवन पिडिका)

सोसन जड़, सिरसछाल, नीमपत्र समभाग लेकर मुख पर लेप करे, प्रात. को धो देवे।

गुण—यौवन पिडिका मे लाभप्रद है।

तिल्ला हीरे वाला

मल्ल जरद मोमिया ३ तोला, स्वर्ण भस्म १ माशा, अलमास चूर्ण ३ रत्ती, शुद्ध पारद १ तोला, सबको तीन दिन तक निंबूरस मे खरल करे, १–१ रत्ती की वटी करे, १ वटी थूक से, वा बासी पानी से घिस कर शिश्न पर लेप करे, ऊपर पान पत्र बाधे, फुंसी उत्पन्न होने पर छोड़ कर चम्बेली तैल लगावे।

गुण—अत्यन्त उत्तम तिल्ला है। हकीम अजमल खान का विशेष योग है।

नोट—(मल्ल मोमीया विधि) अपामार्ग की राख १॥ सेर को एक कपडे मे पोटली बाध कर सुराखदार घट मे डाले, और इस पर ९ सेर जल, बूद २ टपकावे, घट के नीचे एक बरतन रखें, ताकि जल अपामार्ग की राख से गुजरता हुआ नीचे टपकता रहे, जब सब जल टपक जाये, फिर वही जल इसी विधि से टपकावे, इस तरह ३–४ बार करे, ताकि जल का रंग सुरख हो जाये, और वह तीन पाव के करीब रह जाये, इसके पश्चात मल्ल पीत तीन तोला की डली लेकर कडछे मे डाल कर आग पर रखे, और उस पर यह उपरोक्त जल बूंद २ टपकाये, मल्ल मोमीया हो जायेगा।

(स्वर्ण-भस्म विधि) स्वर्णपत्र को कचनारपुष्प सफेद १ पाव के नुगद्रे में रखकर ५ सेर उपलों की पुट दे, भस्म हो जायगी, न हो तो दुबारा इसी प्रकार करे।

(पारद शोधन विधि) पारद ५ तोला को लेकर निवुरस में खरल करे और मृदु आंच पर जौहर उड़ाये, जौहर लेकर फिर निवुरस मे खरल कर जौहर उड़ायें, इस तरह तव तक जौहर उड़ाये, जव कि पारद केवल १ तोला रह जाये।

नवसादर तिल्ला

अनजरूत, नवसादर, जंगार सम भाग लेकर साबुन के पानी मे खरल कर मस्सों पर लगावे।

गुण—मस्सों को नष्ट करता है।

कत्थ तिल्ला

कत्थ, कमीला, गेरू, नीलाथोथा, कल्मीशोरा १-१ भाग, मुर्दासिग, मिरचकाली २ भाग, महन्दी पत्र ४ भाग, सब को कूट छान कर, कड़वे तैल को जला कर उसमे हल कर लगावे।

गुण—गंज, व्रण, शिर की फुसियाँ, तथा बालको की फुंसियो में उपयोगी है।

गंजहर तिल्ला

फटकडी तन्दूर की जली हुई १ भाग, सैधालवण दोनों को सिरका मे हल करके शिर पर लगावे।

गुण—गंज मे उपयोगी है।

सुन्दर उबटन

तरमस ३॥ माशा, खरपजा बीज, ज्वार की भूसी, कतीरा प्रत्येक ७ माशा, जौ १४ माशा, मसूर छिली हुई, मूली के बीज, १-१ तोला, वारीक पीस कर जल से भिगोवे, रात्री को लेप करे, प्रात: धो डाले, तीन दिन तक ऐसा करे।

गुण—मुख की झाईं तथा दाग, धब्बो को दूर करता है।

दादहर लेप

गन्धक, पारद, हड़ताल, नीलाथोथा, बावची १-१ तोला कड़वा तैल ६ तोला, सब को कूट छान कर तैल में हल करके मालिश करे, और धूप में बैठे, तीन घण्टा पश्चात कड़वे तैल की खल्ली मर्दन कर उष्ण जल से स्नान करे, तीन दिन ऐसा करें।

गुण—ख़ारिश और दाद मे उत्तम है।

पारद तिल्ला

पारद २८ माशा, मनशिल, जुन्दबदस्तर प्रत्येक ३॥ माशा, सोहागा, बछनाग, कुठ कडवी, कुठ मधुर, प्रत्येक ७ माशा, काले तिलों का तैल १ पाव, शराब दो आतशा १ पाव, चम्बेली पत्र अर्क आधा सेर, प्रथम अर्क चम्बेली और तैल मिला कर उबालें, जब अर्क तथा शराब जल कर केवल तैल ही रह जाये, तो बाकी औषध का बारीक चूर्ण कर तैल मे मिला कर जला ले, छान लें, २ रत्ती शिश्न पर लेप करे, और पान बांध दे, १ सप्ताह तक प्रयोग करे।

गुण—शिश्न मे दृढ़ता उत्पन्न करता है, और इसके दोषों को हटाता हे।

घुंघची तिल्ला

घुघची सफेद छिलका समेत, कुचला, अकरकरा, बछनाग, सफेद कनेर जड़, जयपाल बीज, प्रत्येक २८ माशा, जयपाल और वत्सनाभ के सिवाय बाकी औषध को बारीक करें और इन दोनो को पोटली मे बांध कर १ सेर बकरी के दूध मे डाल कर २-३ जोश दें, फिर सब औषध को मिला कर ३॥ सेर बकरी दूध में भली प्रकार खरल करे, दूध शुष्क होने पर इसकी गोलीयां बना कर पातालयन्त्र द्वारा तैल निकाले, इस तैल को यथाविधि प्रयोग करे।

गुण—उपरोक्त।

अतिसार हर लेप

गुलाबपुष्प १७॥ माशा, अकाकीया, गुलनार, माजू, फटकड़ी सरू का फल, सन्दल सुरख, सन्दल सफेद, मसूर, मोड़ीयों पत्र, प्रत्येक १०॥ माशा, तबाशीर ७ माशा, सब को कूट छान कर बही स्वरस मे मिला कर, उदर, आमाशय तथा कमर पर लेप करे।

गुण—वमन तथा अतिसार को रोकता है।

स्तन दृढ़ कर तिल्ला

अनार पत्र, पुष्प, फल तथा छाल ले कर, खूब बारीक पीस कर १ दिन रात इतने जल मे भिगोवे कि पानी औपध से ऊपर रहे, दूसरे दिन क्वाथ कर के छान ले, जितना जल शेष हो, उस का चौथाई भाग तैल सरसों डाल कर पाक करे, कि तैल मात्र शेष रहे।

मात्रा—थोड़ा सा तैल स्तनो पर प्रति दिन मल लिया करें।

गुण—स्तनों को दृढ़ करता है।

हरीतकी तिल्ला

हरीतकी कृष्ण, हलदी, अफीम, १—१ माशा, फटकड़ी, लोध्र, २–२ माशा, कूट छान कर जल मे पीस कर आँख पर लेप करें।

गुण—आँख दुखने मे उपयोगी है।

हिन्दी तिल्ला

पारद, वत्सनाभ १–१ भाग, मरिचकाली ४ भाग, धस्तूरबीज-राख ८ भाग, पारद और विष को मिला कर खरल करे, इस के पश्चात मरिच तथा धस्तूरबीज राख मिला कर खरल करें, फिर आकपत्र स्वरस मे खूब खरल करें।

गुण—जो स्थान सन्न हो जाये, उस पर लेप करें, उपयोगी है।

अर्क-(औषध वाष्पीय जल)

Distilled Medicated Aquas

अर्क उस शुद्ध और परिस्रुत जल को कहते है, जो देग, भपका वा परिस्रावी यन्त्र द्वारा निकाला जाता है, परिस्रावी यन्त्र का चित्र देखने से पता लग जाता है कि किस तरह से अर्क निकाला जाता है।
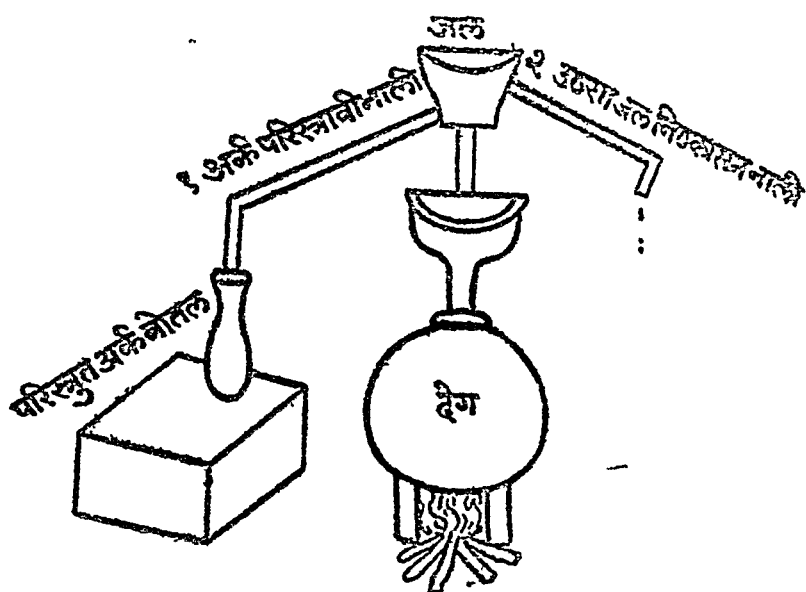
अब देग मे औषध का शीत कषाय डाला जाता है, देग के ऊपर एक बरतन रखा जाता है, जिस मे दो नाली लगी होती है, और वह बरतन देग पर ठीक आ जाता है, एक नाली उस के उभार मे लगी होती है और दूसरी उभार के ऊपर, ऊपर के भाग मे जल डाला जाता है, न० १ नाली के नीचे अर्क सग्रह करने के लिये बोतल वा कोई और बरतन रखा जाता है, अब देग के नीचे अग्नि जलाई जाती है, देग मे एक प्रकार का क्वाथ होता रहता है, उस क्वाथ के वाष्प ऊपर उठ कर ऊपर के बरतन के तल भाग मे लगते है, ऊपर मे पड़े शीतल जल की स्पृगता से वह वाष्प जलीय रूप धारण कर ऊपर के बरतन के तल भाग मे लगी नाली द्वारा बोतल मे टपकता रहता है, और शनै शनै बोतल भर जाती है, उसके भर जाने पर दूसरी बोतल लगा दी जाती है, ऊपर के बरतन मे पड़ा जल वाष्पो की उष्णता से उष्ण हो जाया

करता है, उसे ऊपर के भाग मे लगी नाली द्वारा वार २ निकाल दिया जाता है, और उस के स्थान पर शीतल जल भर दिया जाता है, जिसकी शीतलता के कारण ही बाष्प जलीय रूप धारण करते ह। दूसरी विधि निम्नलिखित है, भपका विधि इस का नाम है।
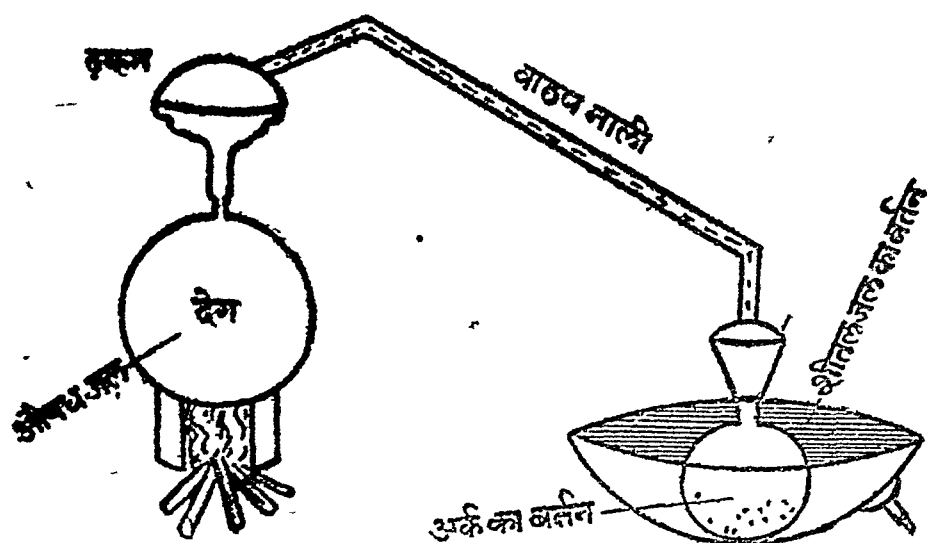
देग पर वन्द ढकन दिया जाता है और उस मे एक सुराख़ होता है, इस मे एक बीच मे सुराख़ वाला चौड़े बास का नल लगा दिया जाता है, और इस का दूसरा शिर बोतल वा घट मे फसा दिया जाता है, अब देग मे औषध जल समेत डाल दी जाती है, और नीचे अग्नि जलाई जाती है, अब वाष्प उठते है, ऊपर जा कर नल द्वारा सुराही मे गिरते है, सुराही को जल से भरी नांद मे रखा जाता है, इस जल के स्पर्श से वह वाष्प जलीय रूप धारण करते है, नांद का जल उष्ण हो जाने पर निकाल दिया जाता है और शीतल जल भर दिया जाता है। प्रारम्भ मे अग्नि तेज नही होनी चाहिये, ताकि उबाल न आ जाये।

(३) तीसरी विधि यह है कि जिस औषध का अर्क़ निकालना हो, उसे इतने जल मे भिगोवे, कि वह उस मे ही मिल जाये, प्रात एक प्याला पर कपडा वाध कर किनारो पर आटा वा गीली मिट्टी लगा

कर सुखा कर कपडे के ऊपर गिली औषध फैला दे, और औषध पर तवा रख कर उस पर सुलगते कोयले रखे, इस उष्णता से जो वाष्प उठेंगे, वह नीचे प्याले मे जाकर शीतल हो जायेंगे, इस विधि से यद्यपि अर्क थोडा निकलेगा परन्तु वडा तेज होगा। इसी तरह गर्भयन्त्र द्वारा भी अर्क निकाला जा सकता है। विविध प्रकार के अंकों मे जल तथा औषध मात्रा विविध होती है, परन्तु साधारणतया यदि औषध १ पाव हो, तो जल ४ सेर होना चाहिये, और २ सेर अर्क निकालना चाहिये, यदि अर्क के योग मे कस्तूरी, अम्बर, केशर जैसी सुगन्धित औषध हो, तो उन को पोटली मे बाध कर अर्क परिस्रावी नाली के नीचे इस तरह से बाधे कि अर्क की वूंद २ पोटली मे से होती हुई वोतल मे गिरे, यदि अर्क में दूध भी शामिल हो, तो इसे अर्क निकालते समय मिलावे, मगजयात हो, तो इन का शीरा निकाल कर शामिल करे।

अर्क उस्तोखदूस

उस्तोखदूस, धनिया शुष्क, प्रत्येक १२ तोला, हरड़, हरड़ बड़ी, बहेडा, आमला, कृष्ण हरीतकी प्रत्येक ९ तेले, गुलाब पुष्प ५ तोला, सब को १६ गुना पानी मे तीन दिन तक भिगो कर जल से आधा भाग अर्क निकाले।

मात्रा—१० तोला अर्क शरबत उन्नाब २ तोला मे डाल कर पीवे।

गुण—नींद मे डरने के रोग में लाभप्रद है।

अर्क अफसनतीन

अफसनतीन रूमी १ पाव को ४ सेर पानी मे रात्री को भिगोव, प्रात. को २ सेर अर्क निकाले।

मात्रा—६ तोला।

गुण—यकृतशोथ, तथा यकृतदोषो को नष्ट करता है।

अर्क अजवायन

अजवायन देसी १ सेर रात्री को १६ सेर पानी मे भिगोवे, प्रातः को आठ वा दस बोतल अर्क निकालें।

मात्रा—६ तोला ।

गुण—दीपक पाचक है, उदरशूल, आध्मान, आदि में लाभप्रद है

अर्क इलायची

इलायची छोटी १ पाव आठ सेर पानी मे एक दिन भिगो कर प्रातः ४ सेर अर्क निकालें ।

मात्रा—५ तोला ।

गुण—यह अर्क हृदय को वल देता है, वमन, अतिसार तथा विसूचिका मे लाभप्रद है, वायु को खारज करता है ।

अर्क अन्नास सादा

अन्नास पक्व पीले रंग का २ सेर छील कर और कुचल कर १० सेर जल मे एक दिवस रात्री भिगो कर प्रात. को ४सेर अर्क परिस्रुत करे ।

मात्रा—१० तोला ।

गुण—वृक्क, मूत्राशय तथा हृदयको वल देता है तथा पित्तनाशक है ।

अर्क अन्नास विशेष

अन्नास १२ लेकर छिलके दूर कर के छोटे २ टुकड़े कर ले, सौफ १ सेर, प्याज सफेद २ सेर, मजीठ १ सेर, गोक्षरू २ सेर, सब को १६ सेर जल डाल कर दो दिन भिगो रखे, तीसरे दिन आधा अर्क निकाले ।

मात्रा—४ से ७ तोला ।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय की अशमरी को वाहर निकालता है ।

अर्क सौफ

सौफ १ पाव को ४ सेर जल मे रात्री को भिगोवे, प्रातः दो सेर अर्क निकाले ।

मात्रा—१२ तोला ।

गुण—यकृत, आमाशय, वृक्क, मूत्राशय के रोगो मे लाभप्रद है । दोषों को वाहर निकालता है, विशेषतया वातदोष मे उत्तम है ।

अर्क बरनजासफ मुरकब

बरनजासफ, शकाही, वादावरद, बादरजबोया, सौफ, द्राक्षा बीजरहित, प्रत्येक १० तोला लेकर रात्री को १२ सेर जल मे भिगोवे, प्रातः को मको सबज ३ पाव डाल कर अर्क खींच लें ।

मात्रा—१२ तोला ।

गुण—शोथ, कफज ज्वर और यकृतरोगों मे लाभप्रद है ।

अर्क बरनजासफ़ सादा

बरनजासफ १ पाव को ४ सेर जल मे रात्री समय भिगोवे, प्रात: दो सेर अर्क निकाले ।

मात्रा—४ से ८ तोला ।

गुण—उपरोक्त ।

अर्क बेदमुशक

बेदमुशक पत्र १ पाव ४ सेर जल मे भिगो कर प्रात को २ सेर अर्क निकाले ।

मात्रा—१० तोला ।

गुण—दिल, दिमाग को बल देता है, तृषा तथा खफकान को मिटाता है ।

अर्क बहार

नारंज के पुष्प ५ सेर, गुलाब पुष्प १ सेर, सौफ, द्राक्षा बीजरहित, सबज द्राक्षा प्रत्येक १५ तोला, ऊद, बहमन लाल, शकाकल मिश्री १—१ तोला, अम्बर पौने दो माशा, अम्बर के सिवाये बाकी औषध को २५ सेर जल मे एक दिवस रात्री भिगोवे, फिर १२ सेर अर्क निकाले, अर्क निकालते समय अम्बर की पोटली नाली के अन्त मे बाधे ।

मात्रा—६ तोला ।

गुण—हृदय डूबना तथा तृषा मे अत्यन्त उपयोगी है ।

अर्क बेद सादा

बेद वृक्ष के पत्र १ पाव लेकर ४ सेर जल मे रात्री भर भिगोवे, प्रात. दो सेर अर्क निकाले ।

मात्रा—१० तोला ।

गुण—यह खफकान तथा पित्तरोगों मे उपयोगी है ।

अर्क पान

गुलावपुष्प, गाऊजवान, पोदीना, ताम्बूलपत्र प्रत्येक १—१ पाव, अजवायन, सातर, दारचीनी, लौंग, पान की जड़, सोंठ, छोटी इलायची प्रत्येक आव पाव, अर्क गुलाव ४ वोतल, अर्क वेदमुश्क, मेघजल प्रत्येक दो वोतल, अव इस में २५ सेर जल और डाल कर १ दिन रात्री औषव को भिगोवे, प्रात. २० सेर अर्क निकालें।

मात्रा—५ से १० तोला।

गुण—आमाशय शूल तथा आन्त्रशूल मे लाभप्रद है।

अर्क ताम्बूल

पान पक्व १०० पत्र, गुलावपुष्प, लौंग, गाऊजवान, प्रत्येक २० तोला, गाऊजवान पुष्प, आवरेशम अपक्व प्रत्येक ३ तोला, चन्दन सफ़ेद ४ तोला, कस्तूरी ३ माशा, अर्क गुलाव २ वोतल, जल १४ गुणा सव को मिला कर जल से आधा अर्क निकाले।

मात्रा—१० तोला।

गुण—हृदय के शीत रोगो मे लाभप्रद है।

अर्क पोदीना

पोदीना शुष्क १ पाव को ४ सर जल मे रात्री को भिगो कर प्रातः दो सेर अर्क निकाले।

मात्रा—१० तोला।

गुण—उदरशूल, वमन, जी मचलाना तथा वातशूल मे उत्तम है।

अर्क जूफ़ा

बनफ्शा पुष्प, मधुयष्टि, जूफा, खतमीवीज, खवाजी वीज प्रत्येक १० तोला, गाऊजवान, परसाशो, उन्नाव, अजवायन खुरासानी प्रत्येक ५ तोला, गन्धम का छिल्का, अड़ूसा पत्र प्रत्येक २० तोला, सब औषध को १६ गुना जल मे दो दिन भिगो कर जल से आधा अर्क निकाले।

मात्रा—१० तोला, लऊक सपस्तान २ तोला में मिला कर प्रयोग करे।

गुण—नजला, जुकाम मे लाभप्रद है।

अर्क सुजाक

सब्ज धनिया का स्वरस १० तोला, ब्राण्डी शराब. २ तोला, सन्दल तैल ६ माशा, तीनों को मिला लें, यदि धनियां सवज न मिले तो शष्क धनियां का क्वाथ कर के मिलावे।

मात्रा—१—१ तोला प्रात· सायं।

गुण—सुजाक मे लाभप्रद है, पीप तथा खून को वन्द करता है।

अर्क सदबरग

सदबरग पुष्प (गेंदे के पुष्प) १ पाव ले कर केला के स्वरस ४ सेर मे रख दे, प्रात अर्क निकाले।

मात्रा—२ तोला।

गुण—पिती (शीतपित) निकलने में लाभप्रद है।

अर्क अजीब

कर्पूर, पोदीना सत्व, १—१ तोला, अजवायन सत्व ६ माशा, पोटेश्यम ब्रोमाईड, क्लोरल हाईड्रेट, ३—३ माशा सब को खरल मे हल कर के धूप मे रख दे, तैलवत हो जायगा, शीशी में सुरक्षित रखे।

मात्रा—२ से ४ बिन्दू तक मिश्री मे रख कर वा जल मे डाल कर पिलावे, पीडा स्थान पर रूई से लगावे।

गुण—विसचिका, अतिसार, वमन, अजीर्ण, उदरशूल मे पिलावे, शिरपीड़ा, दतपीडा तथा बिच्छु आदि काटने पर रूई से पीड़ा स्थान पर लगावे। अत्यन्त प्रभावशाली सिद्ध औषध है।

अर्क उशबा

उशबा मगरबी १५ तोला, चोबचीनी १० तोला, रात्री को ६ सेर जल मे भिगोवे, प्रात अर्क निकाले।

मात्रा—१० तोला अर्क, शरबत उन्नाब मे मिला कर पीवे।

गुण—रक्तशोधक है, आमवात, उपदश तथा सुज़ाक मे उपयोगी है।

अर्क उन्नाब

उन्नाब १ पाव लेकर ४ सेर जल में एक दिन रात्री भिगोवे, प्रात दो सेर अर्क निकाले।

मात्रा—१० तोला, शरबत उन्नाव २ तोला मे मिला कर प्रयोग करें।

गुण—रक्तदुष्टि के लीये उत्तम है, कफ को निकालता है।

अर्क फोवाका

अम्ल अनार स्वरस, मधुर अनार स्वरस, वही स्वरस आध २ सेर, ज़रशक जल २० तोला, अंगूर स्वरस, अमरूद स्वरस आध सेर, सन्दल सफेद आध सेर सब को मिला कर यथाविधि अर्क निकाले।

मात्रा—१० तोला।

गुण—यह अर्क आमाशय तथा हृदय को बल देता है, खफकान, उन्माद तथा वात रोगो में उत्तम है।

अर्क फ़िलफ़िल

लाल मरिच ४ छटांक को चार सेर जल मे भिगोवे, प्रातः २ सेर अर्क निकालें।

मात्रा— २ तोला, रात्री सोते समय पिलावे।

गुण—अपस्मार में उत्तम है।

अर्क करनफ़ल (लवंगादि अर्क)

सौंफ़ रूमी, अजवायन, लौंग, सौफ प्रत्येक ७ माशा, कस्तूरी केशर, बाबूनापुष्प, करफ़सबीज प्रत्येक ३॥ माशा, दारचीनी १४ माशा, कस्तूरी, केशर के सिवाये बाकी औषध को १६ गुना जल मे रात्री के समय भिगोवे, प्रात. अर्क निकाले, केशर तथा कस्तूरी को अर्क निकालते समय पोटली मे रख कर परिस्रावी नलकी के मुख पर बांध दे।

मात्रा—७ तोला, भोजनोपरान्त प्रयोग करे।

गुण—हृदय को बल देता है, वायु नाशक है।

अर्क कासनी

कासनीबीज १ पाव को ४ सेर जल मे एक दिन भिगोवे, फिर दो सेर अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला।

गुण—रक्त की गरमी, पित्त की उग्रता को कम करता है, शिर-शूल, तृपा तथा यकृतशोथ मे उत्तम है।

अर्क केवड़ा

केवड़ापुष्प १ पाव लेकर रात्री को ५ सेर जल में भिगोवे, प्रातः को २ सेर अर्क निकाले।

मात्रा—१० तोला, शरवत अनार २ तोला डाल कर प्रयोग करे।

गुण—दिल को वल देता है, तृपा को कम करता है।

अर्क मको

मको शुष्क १ पाव को ४ सेर जल मे भिगो कर प्रात को दो सेर अर्क निकाले, अर्क निकालते समय प्रारम्भ में अग्नि कम होनी चाहिये।

मात्रा—१० तोला।

गुण—पित्त तथा यकृत रोगो मे उपयोगी है।

अर्क गाऊजवान

१ पाव गाऊजवान पत्र को कपडे की ढीली पोटली में बांध कर ४ सेर जल मे रात्री को भिगो दे, प्रात दो सेर अर्क निकाले, इसमे तेज़ आँच नही देनी चाहिये, नही तो तत्काल उवाल आ जायगा, जव ४—५ वोतल अर्क निकाल चुके, तब आँच कुछ तेज करे।

मात्रा—१० तोला।

गुण—दिल, दिमाग को वल देता है, सतत ज्वरो मे लाभप्रद है, प्यास को बुझाता है, ज्वर को कम करता है।

अर्क गाऊजबान अम्बरी

गाऊजवानपुष्प, उस्तोखद्दूस, बसफाईज, गुलाबपुष्प, चन्दन सफेद प्रत्येक तीन तोला, अर्क गुलाव, अर्क बेदमुशक १—१ सेर मे मिला कर अर्क निकाले, कस्तूरी, अम्बर प्रत्येक २—२ माशा पोटली में वांध कर नाली के मुख पर वाधे।

मात्रा—२ तोला, प्रात. साय।

गुण—उन्माद तथा खफकान को नष्ट करता है।

अर्क गुलाब

गुलाबपुष्प ताज़ा सुगन्धित १ पाव लेकर ४ सेर पानी में भिगो कर प्रात. २ सेर अर्क निकाले, यदि इसे दो आतशा, त्रि आतशा करना हो, तो इसी अर्क में और गुलाब पुष्प डाल कर अर्क निकाले।

मात्रा—५ तोला।

गुण—दिल दिमाग को बल देता है, उदरशूल तथा वात नाशक है।

अर्क गज़र सादा

ताज़ा गाजर की ऊपर की त्वचा तथा बीच का सख्त गूदा दूर कर के १ सेर लें, गाऊजबान २ तोला, गाऊजबान पुष्प १॥ तोला, चन्दन सफ़ेद पौने दो तोला, बहमन सफ़ेद, तोदरी सुर्ख़ प्रत्येक १। तोला, सब को ६सेर जल मे भिगोवे, १दिनके बाद ४सेर अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला।

गुण—दिल दिमाग को बल देता है, तथा शारीरिक क्षीणता को दूर करता है।

अर्क फवाका

मधुर अनार स्वरस, सेब स्वरस, बही स्वरस, नाशपाती स्वरस प्रत्येक आध सेर, निंबू बिजौरा स्वरस १। सेर, काहू स्वरस १॥ सेर, धनियां स्वरस १ सेर, गाजर स्वरस, कद्दू स्वरस प्रत्येक १। सेर, गन्ना स्वरस, तरबूज़ स्वरस, १—१ सेर, गाऊजबान, नीलोफरपुष्प, बादरंजबोया, जौ छिले हुये, चन्दन सफेद १—१ पाव, बंशलोचन सफेद ६ तोला, धनियां छिला हुआ १० तोला, बकरी दूध १० सेर, जल २० सेर, दूध के सिवाय सब स्वरसो, जल तथा औषध को एक स्थान पर भिगो दें, प्रातः समय दूध मिला कर ३० सेर अर्क निकाले।

मात्रा—१० तोला

गुण—आमाशय, हृदय, मस्तिष्क को बल देता है, खफकान, उन्माद तथा वातिक रोगों मे उपयोगी है।

अर्क मुण्डी

मुण्डी १ पाव लेकर ४ सेर जल में रात्री को भिगो कर प्रातः २ सेर अर्क निकालें।

मात्रा---१० तोला।

गुण---रक्तशोधक है, नेत्रों को बल देता है।

आजवायन अर्क

अजवायन आध सेर, पान जड, तालीसपत्र, नरकचूर, १-१ पाव लेकर अर्क गुलाब ३ बोतल, जल १६ गुना, सब को मिला कर रात्री को भिगो कर प्रात. यथाविधि अर्क निकाले।

मात्रा---१० तोला।

गुण---आमाशय तथा आन्त्र की वातिक पीडा मे उत्तम है।

अर्क नीलोफ़र

नीलोफ़रपुष्प १। सेर लेकर २० सेर जल में भिगो कर प्रातः अर्क निकालें।

मात्रा---५ से १० तोला।

गुण---दिल दिमाग को ताकत देता है, प्रतिश्याय, शिरशूल मे उत्तम है, तृषा शान्त करता है।

अर्क नजला

बनफशापुष्प, उन्नाब, सपस्तान (लसूड़े), खतमीबीज, ख़ुबाज़ी बीज, नीलोफरपुष्प, सम भाग, वहीदाना आधा भाग, गन्धम का छिलका सब के समान, सब को ४ दिन तक १६ गुना जल मे भिगोवे, आधा भाग अर्क निकाले।

मात्रा---१० तोला, शरबत सदर २ तोला मे डाल कर प्रयोग करे।

गुण---कास, श्वास तथा प्रतिश्याय मे बहुत उत्तम है।

अर्क नानख़्वाह

अजवायन १। सेर, सौठ १ पाव, वर्च आध पाव, अकरकरा पौने दो तोला, नकछिकनी १० माशा, सब को यवकुट कर १६ गुना जल मे रात्री को भिगोवे, प्रात आधा भाग अर्क निकाले।

मात्रा---८ तोला, भोजनोपरान्त प्रयोग करें।

गुण---प्लीहा, आध्मान, तथा वात शूल को नष्ट करता है।

अर्क हाज़मूम (पाचक अर्क)

लहसुन १ पोथीया, अजवायन देसी, भांगरा १—१ सेर, असगन्ध, नारज त्वचा, बादरंजबोया प्रत्येक आध सेर, लौहचूर्ण आध पाव, इन सब को १॥ सेर जल मे भिगो कर बरतन में डाल दे, और पृथ्वी मे गाड़ कर गधे की लीद से ढांक दें, सात दिन के बाद निकाल कर अद्रक रस १ पाव, घृत कुमारी गूदा १५ तोला, जल औषध से १६ गुना डाल कर जल से आधा अर्क निकाल ले ।

मात्रा—५ तोला अर्क, भोजनोपरान्त दे ।

गुण—प्लीहा तथा आमाशय को बल देता है, दीपक पाचक है ।

हरीतकी अर्क

उस्तोखद्दूस १२ तोला, धनियां शुष्क ३ पाव, हरड़ १ सेर, गुलाब-पुष्प, गाऊज़बान प्रत्येक १० तोला, द्राक्षा बीजरहित, हरीतकी कृष्ण, हरड, आमला प्रत्येक २० तोला, ऊदगरकी ४ तोला, सब को ४ दिन तक १६ गुना पानी मे भिगो कर जल से आधा अर्क निकाले ।

मात्रा—१० तोला ।

गुण—स्वप्न मे डरने के रोग मे लाभप्रद है ।

अर्क खुलंजान

अजवायन, सोठ, पानजड़, प्रत्येक १० तोला, लौग, दारचीनी, जायफल, जावित्री, सातर, त्रिवृत, रेवन्द चीनी, उस्तोखद्दूस, हरड़, बादायन खताई, बालछड़ प्रत्येक ५ तोला, लहसुन छिला हुआ १ पाव, आक पुष्प १५ तोला, सब औषध को १६ गुना जल मे रात्री को भिगोवे, प्रात: आधा अर्क निकाले ।

मात्रा—७ तोला ।

गुण—अर्दित, अर्धांग, वातकम्प तथा आम वात मे उत्तम है ।

अर्क हराभरा

चन्दन सफेद, चन्दन सुरख, खस, पद्माख, नागरमोथा, गिलोय सबज, पितपापडा, नीमछाल, नीलोफरपुष्प, कासनीबीज, सौंफ़, कद्दूबीज, धनियां, नेत्रबाला १०—१० तोला, तुलसीबीज २ तोला,

गन्ने की जड, यवासा जड, धमासा, मुण्डी ५--५ तोला, छोटी इलायची, पोस्त डोडा २--२ तोला, सब को १६ गुणा जल में भिगो कर प्रातः आधा अर्क निकाले ।

मात्रा---६ तोला,

गुण---यक्ष्मा, जीर्ण ज्वर, सुजाक, मूत्रजलन तथा हृदय रोगो म उत्तम है ।

अर्क चोबचीनी

दारचीनी, गुलाबपुष्प, रेहाबीज प्रत्येक ६ तोला, बालछड़, तमालपत्र, लौंग, छोटी एलाबीज, कचूर, बादरंजबोया, गाऊजबान पुष्प, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ प्रत्येक ३ तोला, बहमन लाल, बहमन सफेद, ऊद हिन्दी, छडीला, प्रत्येक १॥ तोला, केशर १० माशा, रूमी मस्तगी ७ माशा, अम्बर ३॥ माशा, कस्तूरी पौने दो माशा, चोबचीनी ५७ तोला, मधुर सेव पक्व ५० नग, अर्क गुलाव १ सेर, सेव के टुकडे २ करे और कूटने योग्य औषध को कूट कर देग में रख कर औषध से १६ गुना जल डाले, और अर्क निकालते समय केशर, कस्तूरी, अम्बर, मस्तगी को पोटली मे बाध कर नलकी के मुख पर पोटली को बाध दे, जिस कदर जल डाला गया हो उस का तीसरा भाग अर्क निकाले ।

मात्रा---१० तोला ।

गुण---रक्तशोधक है, फोडे, फुन्सी तथा पित्त को नष्ट करता है, शरीर को बल देता है ।

अर्क शीर

नीलोफरपुष्प, बेदपुष्प, कसेरू ताजा छिला हुआ, प्रत्येक आध पाव, काहुपत्र, लम्बा कद्दू, प्रत्येक ४॥ तोला, खुरफा ३ तोला, गाऊ-जबानपुष्प, गुलाबपुष्प, कमलपुष्प ताजा, धनियां शुष्क, मग़ज़ मधुर कद्दू, मगज तुख़्म ख़यारैन, काहुबीज प्रत्येक दो तोला । कासनीबीज, वशलोचन सफेद १---१ तोला, चन्दन सफेद बुरादा, बुरादा चन्दन सुरख़ प्रत्येक ६ माशा, मधुर अनार, मधुर सेब २---२ नग, खीरा ताजा छिला हुआ, बही, नाशपाती १---१ नग, अर्क मको, अर्क

नीलोफ़र ४—४ सेर, अर्क वेदमुशक १ सेर, सब औषध को देग मे भर कर अर्क डाल दें, ऊपर से बकरी का दूध १० सेर डाल कर २४ घण्टे के बाद १२ सेर अर्क निकाले।

मात्रा—५ से १० तोला।

गुण—रक्त शोधक है, हृदय को बल देता है, जीर्ण ज्वर तथा यक्ष्मा मे लाभप्रद है।

अर्क मरकब मस्फ़ीखून

नीमपत्र, नीमछाल, महानीम छाल, महानीम पत्र, कचनार, मौलसरी छाल, दूधी लघु, भागरा कृष्ण, यवासा पत्र तथा शाख, गूलर-छाल, मेहन्दी पत्र, मुण्डी, पितपापडा, सरफोका, धमासा, विजयसार, नीलोफरपुष्प, बुरादा चन्दन रक्त तथा सफेद, गुलाबपुष्प, धनिया, कासनीवीज, कासनीजड़, मजीठ, बेदपत्र, शीशम वृक्ष का बुरादा आध २ पाव, सब औषध का अर्ध कुट्टित चूर्ण कर १६ गुना जल मे २४ घण्टे भिगो कर आधा भाग अर्क निकाले।

मात्रा—१० तोला।

गुण—महान रक्त शोधक है, उपदश मे भी उत्तम है।

अर्क अम्बर

कस्तूरी ४॥ माशा, अम्बर, केशर, मस्तगी प्रत्येक ९ माशा, रेहापत्र ताजा, नागरमोथा, कुरफा, धनियां शुष्क, गाऊजवानपुष्प, अनीसून, दरूनज, पोस्त बेरून पिस्ता १—१ तोला १० माशा, नरकचूर, ऊदगरकी, कवाबा खन्दान, छड़ीला, दारचीनी, लौंग, बोजीदान, गुलाबपुष्प, वालछड़, वहमन सुरख, वहमन सफेद, शकाकल मिश्री, तमालपत्र, वशलोचन, इलायची छोटी, इलायची वडी, नारज का छिलका, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ, चन्दन सफेद प्रत्येक २ तोला, सेव स्वरस आध सेर, अनार स्वरस १ सेर, अर्क वेदमुशक, अर्क गाऊ-जवान, अर्क बादरजबोया, प्रत्येक २॥ सेर, अर्क गुलाब ५ सेर, कूटने वाली औषध को कूट कर देग मे भर कर अर्क भी शामिल कर दें, और १ दिन बाद अनार, सेव स्वरस डाल कर अर्क निकाले, कस्तूरी आदि

को पोटली मे बांध कर नलकी के मुख पर बाधे, ताकि अर्क की बूंदे पोटली मे से हो कर बोतल मे गिरे, दो तिहाई भाग अर्क निकाले।

मात्रा—५ से ७ तोला।

गुण—दिल, दिमाग, यकृत को बल देता है, क्षीणता तथा ग़शी मे लाभप्रद है।

अर्क गाजर (वृहत् योग)

गाजर सुरख छील कर तथा मध्य का सख्त भाग निकाल कर ५ सेर, किशमिश, द्राक्षा प्रत्येक २॥ सेर, बही, सेव, प्रत्येक आध सेर, अनार स्वरस, गुलाबपुष्प, छोटी इलायची, इलायची बड़ी, आबरेशम कुतरा हुआ, सन्दल सुरख, सन्दल सफेद, रेहां पत्र, धनियां शुष्क, गाऊजवान, फरजमुशक बीज, बालंगू बीज, प्रत्येक ४ तोला, बंशलोचन, गाऊजवानपुष्प, कारानीबीज, खयारैनबीज प्रत्येक दो तोला, गुलाब अर्क, केवड़ा अर्क, गाऊजवान अर्क प्रत्येक दो सेर, सब औषध को १ रात दिन २ मन जल मे भिगोवे और अर्क शामिल कर ५० बोतल अर्क निकाले, अर्क निकालते समय, कस्तूरी, अम्बर ९—९ माशा, केशर २ तोला की पोटली नलकी के मुख मे बाधे।

मात्रा—६ तोला।

गुण—दिल दिमाग को बल देता है, क्षीणता को नष्ट करता है।

अर्क हाज़मूम (विशेष योग)

कीकर छाल ५ सेर, किशमिश, गुड़ प्रत्येक २॥ सेर, लहसुन, लौग प्रत्येक ६ तोला, ऊदगरकी १ तोला, सन्दल सफेद ११ माशा, बनफशा जड़ ९ माशा, नागरमोथा ९ माशा, नारंज छिलका, बहमन सुरख, बहमन सफेद, शकाकल मिश्री, तमालपत्र, दारचीनी, गाऊजवान, १—१ तोला, ख़स २ तोला, बड़ी इलायची बीज २॥ तोला, जायफल, जावित्री १—१ तोला, केशर ६ माशा, अम्बर ३ माशा, अम्बर और केशर के सिवाये, सब औषध को आठ गुना जल मे भिगो कर १ मटका मे बन्द कर के पृथ्वी मे १ सप्ताह के लीये गाड़ दे, एक सप्ताह पश्चात ८ गुना और जल डाल कर जल से आधा अर्क निकाले, केशर और अम्बर की पोटली नलकी के मुख पर बांधे।

मात्रा—५ तोला, भोजनोपरान्त ।

गुण—दीपक, पाचक, तथा शरीर को बल देता है ।

अर्क मोम

मोम अपक्व १ सेर, लवण आध सेर, रेत आध सेर, लवण को बारीक पीस ले, अब तीनों को कपरौटी कीये हुये घड़े मे रख कर इस के मुख पर दूसरा घडा रख कर माश के आटे से दोनों का मुख अच्छी तरह मजबूती से जोड दे, ऊपर वाले घड़े के पार्श्व मे एक सुराख कर के नलकी लगा दे, औषध वाले घड़े को टेढा कर चूल्हे पर जमा कर अग्नि दे, और नलकी को बोतल के मुख मे डाल कर बोतल को शीतल जल मे रखे, उत्तम मोम का अर्क निकलेगा, इसी को रोगन मोम भी कहते हैं । पीडा स्थान पर मालिश कर गरम रूई बाधे ।

गुण—वक्षपीड़ा, छातीपीड़ा, निमोनीया, चोटे, आमवात आदि मे उत्तम है ।

अर्क मबूतख हफ़्त रोजा

नीमवृक्ष छाल, काचनार छाल, हिजिल जड, कीकर की फली, कण्डयारी, लघु पंचांग, पुराना गुड़, प्रत्येक आध पाव, सब को तीन सेर जल मे उबाले, १ सेर शेष रहने पर छान ले, इस की सात मात्रा करे, इस मे से १ मात्रा प्रति दिन प्रात. को प्रयोग करे, और साय को खिचड़ी खावे, यदि प्रवाहिका हो जाये तो अर्क पीना बन्द कर लुआब बहीदाना ३ माशा, लुआब रेशाखतमी ५ माशा, जल मे निकाल कर खाण्ड सफेद २ तोला मिला कर प्रयोग करे, यदि एक दिन छोड़ कर और प्रति दिन नया अर्क निकाल कर प्रयोग करे, तो प्रवाहिका नही होगी ।

गुण—रक्त विकार, फोडे, फुसी, आमवात तथा उपदश मे अतीव उपयोगी है ।

अर्क मुरकब मुसफ़ी खून (विशेषयोग)

नीमपत्र, बकायनपत्र, पोस्त नीम सबज, नीम की निबोली, प्रत्येक १॥ सेर, शिरस पत्र, हरड, हरड बडी, हरड कृष्ण, पितपापडा, धनिया, सेब पत्र सबज़, बुरादा शीशम, आमला, चोबचीनी, नीलकण्ठी,

ब्रह्मडण्डी, गुलाव पुष्प प्रत्येक १० तोला, मुण्डी, मेहन्दी सवज़, कासनी-वीज, सरफोका, बुरादा सन्दल सफेद, बुरादा सन्दल सुरख़, तूत पत्र कृष्ण, प्रत्येक २० तोला, नीलोफर पुष्प, कासनी पत्र, सौफ, गोक्षरू, प्रत्येक आध सेर, मको सवज़, काचनार, १५—१५ तोला, वादरज-वोया, आकाशवेल, चिरायता ५—५ तोला, जदवार ख़ताई, उन्नाव, उशवा ४—४ तोला, नीम पुष्प १ सेर, सब को १६ गुणा जल में २ दिन तक भिगो रखे, फिर जल से आधा भाग अर्क निकाल।

मात्रा—१० तोला, शरबत उन्नाव मे मिला कर।

गण—परम रक्तशोधक अर्क है।

अर्क मालहम कासनी वाला

वरजासफ, शकाही, वादावरद, वादरजवोया, सौंफ अर्ध कुट्टित, द्राक्षा बीज रहित, किवर जड़, अज़ख़र जड़, मधु यष्टि, गिलोय सबज़, मको शुष्क प्रत्येक ५ तोला, गाऊजवान, गाऊजवान पुष्प ५—५ तोला, रात्री को १६ गुणा उष्ण जल मे भिगोवे, प्रातः को कासनी पत्र स्वरस २ सेर, गिलोय पत्र स्वरस २ सेर, वकरे का माँस ४ सेर मिला कर जल से आधा अर्क निकाले।

मात्रा—१० तोला अर्क, शरबत कसूस मे मिला कर प्रयोग करे।

गुण—परम शोथ नाशक है, आमाशय तथा यकृत क्षीणता को नष्ट करता है।

अर्क मालजोवन

मछेछी बूटी ४० तोला, हरड़, हरड़ काबुली, हरीतकी कृष्ण, वहेड़ा, नीमपत्र, वकायन पत्र, नीमवृक्ष छाल, मगज़ तुख़म नीम, विजयसार पुष्प, गाऊज़वान, कासनी वीज, कासनी जड़, हिरणखुरी, इमलीवीज मग़ज, आमला, धनिया शुष्क, मौलसरी छाल, गिलोय सवज़ प्रत्येक १—१ तोला, पितपापड़ा, चिरायता, सरफोका, मेहन्दी पत्र, शीशम बुरादा, सन्दल सुरख़, सन्दल सफेद, मको शुष्क, झड़-वेरी जड़ छाल, पेड़ा चटाई की जड़ की छाल (यह एक प्रकार की घास है, नदी के किनारे होती है, मनुष्य जैसा कद होता है), गन्ने की जड़,

चम्बेली पत्र, आबनूस का बुरादा, उन्नाव प्रत्येक ५ तोला, अम्लतास गूदा आध सेर, मालजोबन ५ सेर, जल २७ सेर, मिलाकर २४ घण्टे पश्चात २० सेर अर्क निकाले

मात्रा—६ तोला।

गुण—रक्त शोधक है, रक्त दुष्टि मे उत्तम है।

अर्क मालहम

चोवचीनी २६ तोला, गाऊजबान पुष्प, वादरजवोया, वालछड़, प्रत्येक १९ तोला, लौंग, दारचीनी, इलायची बड़ी, जायफल, जावित्री, वादायन खताई, वहमन सफेद, उशवा मगरवी, सन्दल सफेद, सन्दल सुरख़, मस्तगी, केशर, कवावचीनी, छड़ीला, गुलाव कली, नरकचूर, शकाकल, वनतुलसी वीज, ऊद हिन्दी, हालो बीज प्रत्येक पौने ४ तोला, वोजीदान, अम्वर प्रत्येक १ तोला १० माशा, कस्तूरी ९ माशा, वकरी का मॉस, मुरग का माँस, कवूतर माँस १—१ सेर, चिड़े ५० नग, अर्क वादरंजवोया, अर्क बेदमूशक, अर्क गुलाव, अर्क गाऊजबान, अर्क वहार नारज, जल इस कदर डाले कि अर्क समेत औषध मात्र से १६ गुणा हो, पहिले मॉस की यखनी वना ले (अर्थात् मांस को पका कर मास रस निकाल ले) केसर, कस्तूरी, मस्तगी, अम्बर के सिवाये सव औषध जल मे २४ घण्टे तक भिगो कर आधा अर्क निकाले, केशर आदि को पोटली मे डाल कर नाली के मुख पर बांधे।

मात्रा—८ तोला, शरवत अनार के साथ।

गुण—दिल, दिमाग तथा सारे शरीर को बल देता है।

अर्क मालहम चोबचीनीवाला

चोवचीनी २२ तोला, गाऊजवान पुष्प, वादरंजवोया, वालछड़ प्रत्येक दो तोला, लौंग, दारचीनी, वडी इलायची, जायफल, जावित्री, वादायन खताई, वहमन सुरख़, बहमन सफेद, उशवा मगरवी, चन्दन लाल, चन्दन सफेद, कवाबचीनी, छडीला, कचूर, गुलाव पुष्प, तज, शकाकल, फरंजमुशक, हालो वीज, ऊदगरकी, वोजीदान, प्रत्येक ९ माशा, अम्वर, कस्तूरी, केशर, मस्तगी प्रत्येक ९ माशा, भेड माँस, मुरग मांस, जंगली कबूतर मांस प्रत्येक पौने दो सेर, चिड़े ५० नग, अर्क

वादरंजवोया, बेदमुशक, गुलाव पुष्प, गाऊजवान, वहार प्रत्येक का ४ सेर अर्क, जल ५ सेर, प्रथम चारो मांसो को अर्क ओर पानीमें मिला कर १६ सेर अर्क खीचे, फिर इस अर्क मे उपरिलिखित औषध चूर्ण भिगो कर दुबारा अर्क निकालें, कस्तूरी आदि को पोटली मे बांध कर नलकी के मुख मे बाधे।

मात्रा—५ तोला, शरवत उन्नाव १ तोला मे मिलाकर प्रयोग करे।

गुण—वाजीकर, शरीर पोषक, वृक्क तथा मूत्राशय को बल देता है, आमवात, उपदंश, तथा रक्त दुष्टि मे उपयोगी है।

अर्क मालहम (विशेष)

बकरे का मास २४ सेर, बटेर मास २४ नग, झींगा मच्छली ३ सेर, मुरग के छोटे वच्चे १४ नग, साण्डा १० नग, वालछड़, तमाल पत्र, वहमन सफेद, छोटी इलायची, इलायची वडी, लौंग, दारचीनी, ऊद खाम, बिजौरा निंबू त्वक, गाऊजवान, वोजीदान, छलीड़ा, चन्दन सफेद, वादरंजवोया, फरजमुशक वीज, गाऊजवान पुष्प, धनिया शुष्क, कचूर, सौफ, दरूनज, मस्तगी, नागरमोथा प्रत्येक ४॥ तोला, साहलव मिश्री, शकाकल मिश्री, गुलाव पुष्प, आवरेशम मकरज (कुतरा हुआ), प्रत्येक ९ तोले, अगूर ३ सेर, सेव ३ सेर, अर्क गुलाव ९ सेर, अर्क बेदमुशक ६ सेर, प्रथम सव मासो को १॥ मन जल मे डाल कर इतना पकावे, कि जल एक मन रह जाये, अब इस मास स्वरस को छान कर, गुलाव बेदमुशक अर्क मिला दे, और औषध चूर्ण को मिला कर इस मे भगो दे, दूसरे दिन ५० बोतल अर्क निकाले।

मात्रा—५ तोला, शरवत अनार के साथ।

गुण—उपरोक्त।

अर्क मालहम (विशेष बृहत योग)

वकरी मांस १२ सेर, चिड़े १०० नग, लवा, वटेर, ममोला प्रत्येक ५० नग, मुरग के छोटे वच्चे, तीतर २० नग, मांस को अस्थी तथा रेशा से साफ कर के २ मान जल मे पकावे, १॥ मन रहने पर छान ले, अव इस मे शिलाजीत, जुन्दबदस्तर, नागरमोथा, जदवार, केशर,

कस्तूरी १—१ तोला, गाऊजवान पुष्प, कवावचीनी, वालछड़, तवाशीर, वसफ़ाईज, दरूनज अकरवी, राई, ऊदसलीव, सातर, कनतरीयून दकीक, चित्रक, जावित्री, जायफल, हब्ब किल किल, मायाशुत्रअहरावी, रेगमाही प्रत्येक २। तोला, अजवायन, जूफा, वजतुरकी प्रत्येक ३ तोला ४ माशा, दारचीनी, अपक्व आवरेशम कुतरा हुआ, प्रत्येक ७ तोला, हालो वीज, अंजरा वीज, मूली वीज, असपस्त वीज, वालंगू वीज, शरवती वीज, रेहाँ वीज, फरंजमुशक-वीज, फरंजमुशक पत्र, सोसन जड़, वावूना पुष्प, मेदा लकड़ी, वोजीदान, तज, दारचीनी, मस्तगी, नागकेसर, छलीड़ा, तमालपत्र, चन्दन सुरख़, उस्तोखदूस, जरावन्द गोल, तालीसपत्र, तगर, पोस्तडोडा, प्रत्येक ५ तोला, वहमन सफेद, वहमन सुरख़, तोदरी रक्त, तोदरी सफ़ेद, शकाकल मिश्री, सुरजान मधुर, गाऊजवान, इन्द्रजौ, सौफ, वादायन ख़ताई, चाय ख़ताई, लघु एला, बृहतएला, ऊद ग़रकी, गुलाव पुष्प, वादरंजवोया, परसाशों, पोदीना, हिवजत्याना, पानजड़, गाजर वीज, ख़रापजा वीज, ख़तमी वीज, ख़वाज़ी वीज, वुन वीज, मगज चरोजी, इन्द्रजौ का मगज, मगज वनौला, लसूड, झीगा मच्छली, प्रत्येक १० तोला, चोवचीनी, अंजीर पक्व, द्राक्षा वीज रहित, सवज किशमिश प्रत्येक आध सेर, गोक्षरू स्वरस, सेव स्वरस, वही स्वरस, अनार स्वरस, १—१ सेर, खाँड तीन सेर, रेहां पत्र ताजा आध सेर, उन्नाव विलायती १०० नग, केशर, कस्तूरी, अम्वर, सर्व औषध को कूट कर ऊपर के माँस स्वरस मे १ दिन भिगोवे, दूसरे दिन, अर्क गुलाव, वेदमुशक प्रत्येक २-२ वोतल, अर्क गाऊजवान, अर्क अम्लतास ताजा प्रत्येक ३ सेर, गाजर स्वरस, गन्ना स्वरस, प्रत्येक २० सेर, जल ३० सेर मिला कर १०० वोतल अर्क निकाले, अर्क निकालते समय केशर आदि की पोट्टली अर्क की नाली के मुख पर बांधे, अन्त में सव वोतलों के अर्क को एक मट मे डाल कर फिर वोतलों मे भरे, ऐसा करने से सव अर्क एक जैसा गुणकारी होगा।

मात्रा—५ तोला, शरवत अनार मे मिला कर प्रयोग करे।

गुण—क्षीणता, दुर्वलता को नष्ट कर शरीर को वलवान तथा मोटा वनाता ह।

अर्क कीकर

कीकर छाल १० सेर, गुड ३५ सेर ३६ तोला, इन दोनों को २॥ मन पानी मे एक मटके मे डालकर पृथ्वी मे गाड़े, जव लाहन उठ जाये, तो ३० सेर अर्क निकालें, फिर इस अर्क मे लौंग ६ माशा, जावित्री, जायफल, दारचीनी, इलायची छोटी, खस १—१ तोला, चन्दन सफेद, २ तोला, गुलाव पुष्प ५ तोला, १ दिन रात्री भिगोने के पश्चात दूसरे दिन २० सेर अर्क निकाले, अव इस २० सेर अर्क मे उपरोक्त औषव चूर्ण का आधा भाग डालकर १ दिन रात्री रखकर फिर १२ सेर अर्क निकाले। यदि इत्तर गुलाव ३ माशा भभका मे डाल दे, तो और उत्तम है।

मात्रा—५ तोला।

गुण—ख़फकान, हृदय धड़कन, क्षीणता को दूर करता है।

अर्क आसव बारद

गुड ६६॥ सेर, कीकर छाल ८ सेर ३५ तोला, दोनो चीजो को एक मटके मे डाल कर ऊपर से इतना पानी डाले, कि मटके का तीसरा भाग खाली रहे, इस मटके का मुख वन्द करके घोड़े की लीद मे दवा दे, उवाल खा कर बैठ जाने पर अर्क खीच ले, इस अर्क मे चन्दन सफेद ७॥ तोला, नीलोफर १५ तोला, धनियां ७॥ तोला, वेहड़ा, आमला, द्राक्षा वीजरहित ३७॥ तोला, गाऊजवानपुष्प, काहूवीज ३५ तोला, मगज़ तुख़म कद्दु ७५ तोला, कासनीवीज अर्ध कुट्टित, खुरफावीज छिले हुये, मगज तुख़म ख़यारैन प्रत्येक ९० तोला, वड़ी हरड, वेद सादा, और वहार प्रत्येक १२॥ तोला, गुलाव पुष्प प्रत्येक ११। सेर, सव औषध डाल कर १ दिन रात्री भिगोवे, इस के वाद नाली के मुख में अम्वर शहव ९ माशा की पोट्टली वांधे और अर्क निकाले।

मात्रा—८ से १२ तोला।

गुण—उन्माद तथा हृदयरोगो में लाभप्रद है।

कुरस (टिकिया) (Tablet-trochinacus)

यह भी एक प्रकार की वटी है, परन्तु वटी गोल आकार की होती है, और यह गोल और चिपटे आकार की होती है, आजकल मशीन से यह सुन्दर रूप मे वनाई जाती है।

कुरस अकाकीया

अकाकीया (कीकर की छाल तथा पत्र के घनसार को अकाकीया कहते है), कागज जला हुआ प्रत्येक ९ माशा, हड़ताल पीत, हड़ताल सुरख प्रत्येक १३॥ माशा, सब को वारतंग स्वरस १। सेर मे खरल कर के टिकिया वनावे, यदि थोड़ी मात्रा मे पूय (पीप) आ रही हो, तो दो तीन रत्ती खा कर चावलो की पिच्छ पी ले, यदि अधिक मात्रा मे पीप आ रही हो तो जल मे घोल कर वस्ति करे।

गुण—पुरानी प्रवाहिका तथा पीप आने मे लाभप्रद है।

कुरस अंजवार

अजवार की जड १ तोला, गुलावपुष्प, गोद कीकर, खुरफावीज, कहरूवा प्रत्येक ९ माशा, गुलनार, निशास्ता, गिल अरमनी, वसुद, तवाशीर, रवुलसूस प्रत्येक ६ माशा, अकाकीया ४॥ माशा, सव को कूट छान कर स्वरस में गूँद कर टिकिया वनावे।

मात्रा—३ से ५ माशा।

गुण—रक्तातिसार, रक्तपित्त, रक्त प्रदर में उत्तम है।

कुरस असकील

जगली प्याज पर गन्दम का आटा लपेट कर गरम भुभल में रखे, पक जाने पर आटा उतार कर भीतरी नरम भाग निकाल लें, और इस के सम भाग मटर का आटा मिला कर पीस ले, और थोडी मात्रा में शराव मिला कर गुलाव तैल के संयोग से कुरस वनावें, दो मास के पश्चात प्रयोग करे, परन्तु ४ मास के पश्चात प्रयोग न करें।

गुण—जलोदर, श्वास, तथा विषो को नष्ट करता है।

कुरस जयाबतीस

खुरफ़ावीज, काहुवीज, प्रत्येक ७ तोला, तवाशीर ५ तोला, तुखम हमाज, गुलावपुष्प, धनिया शुष्क, गिल अरमनी प्रत्येक ३

तोला, चन्दन सफ़ेद, गुलनार, समाक प्रत्येक २ तोला, कर्पूर आधा तोला, सब को कूट छान कर खुरफा सेबज के पत्र स्वरस से भावित कर टिकिया बनावे ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—मूत्र की अधिकता तथा मधुमेह मे उपयोगी है ।

कुरस ज़रिशक

जरिशक ७॥ तोला, गुलाब-पुष्प २॥ तोला, कासनीबीज, खुरफा-बीज, मगज तुख़म खयारैन प्रत्येक १॥ तोला, रेवन्दचीनी, बालछड़, प्रत्येक ६ माशा, सब को कूट छान कर इसपग़ोल के लुआब मे गूंद कर टिकिया बनावे ।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—ससत पैत्तिक ज्वर मे उत्तम है, यकृत की उष्णता को नष्ट करता है ।

कुरस सरतान कर्पूरी

कर्पूर केसूरी १ माशा, सन्दल सफेद, सन्दल जरद, सन्दल सुरख़, प्रत्येक २ माशा, काहुबीज ३ माशा, गोंद कीकर, गोद कतीरा, तबाशीर, गुलाबपुष्प प्रत्येक ४ माशा, मधुयष्टि, रबुलसूस प्रत्येक ५ माशा, निशास्ता, खुरफा काला प्रत्येक सात माशा, मगज तुख़म कद्दू मधुर, मगज तुख़म खरपजा, खशखाशबीज, प्रत्येक ९ माशा, सरतान (केकडा जला हुआ) १ तोला, सब को कूट छान कर इसपगोल के लुआब से टिकिया बनावें ।

मात्रा—७ माशा, प्रात को अर्क गाऊजबान से दे ।

गुण—यक्ष्मा, रक्तपित्त, खांसी तथा जीर्ण ज्वर मे उत्तम है ।

कुरस तबाशीर

खुरफाबीज, गुलाबपुष्प, गिलारमनी, गुलनार, वंशलोचन, काहुबीज प्रत्येक १—१ तोला, सब को कूट छान कर जल से टिकिया बनावे ।

मात्रा—५ तोला, अर्क गाऊज़बान १२ तोले के साथ दें ।

गुण—मधुमेह में उत्तम है।

कुरस तवाशीर कावज़

वंशलोचन, गुलावपुष्प, काहूवीज, कासनीवीज, खुरफावीज, समाक ६—६ माशा, गुलनार, सन्दल सफ़ेद, तुख़म अमाज ३—३ माशा, अफीम १॥ माशा, सव को कूट छान कर गुलाव अर्क से टिकिया वनावे।

मात्रा—३ माशा।

गुण—पित्त अतिसार, तथा पैत्तिक जीर्ण ज्वरो मे उत्तम है।

कुरस तबाशीर काफ़ूरी लोलवी

मुक्ता, तवाशीर, केकड़ा जला हुआ, ख़शख़ाशबीज, काहुबीज, खुरफा बीज छिला हुआ, कतीरा १—१ तोला, कहरूवा शमई, रबुलसूस, गुलावपुष्प की कलियां प्रत्येक ४ माशा, कर्पूर केसूरी ३ माशा, केशर, आवरेशम ६—६ रत्ती सव को कूट छान कर बारतंग सबज के जल से टिकिया वनावे।

मात्रा—३ माशा।

गुण—यक्ष्मा, रक्तपित्त, संग्रहणी, यकृत अतिसार, रक्त अतिसार, अतिसार युक्त जीर्ण ज्वर मे उत्तम है।

कुरस तबाशीर मुलैयन

तवाशीर सफेद २ तोला, तुरजवीन १॥ तोला, मगज़ खयारैन, मगज कद्दू मधुर, निशास्ता, गोद कीकर, गोंद कतीरा, खशखाशबीज सफेद प्रत्येक ६ माशा, सव को कूट छान कर इसपगोल के जल से कुरस, वनावे।

मात्रा—७ माशा कुरस, १२ तोला अर्क गाऊजवान के साथ।

गुण—जीर्ण ज्वर, यक्ष्मा, रक्तपित्त, ख़ासी, तृष्णा, विवन्ध को नष्ट करता है, श्वास नलिका को स्निगध रखता है।

कुरस ग़ाफ़स

असारा गाफस ९ तोले, तबाशीर ११॥ तोला, गुलाव पुष्प १७॥ तोला, सव को कूट छान कर चूर्ण कर गोंद जल से कुरस बनावे।

मात्रा—७ माशा, अर्क गाऊजबान से ।

गुण—कफज जीर्ण ज्वर, चार्तुथिक ज्वर तथा यकृत विकारो मे उत्तम है ।

कुरस काफ़ूर

काहू बीज १० तोला, खुरफा बीज ७॥ तोला, तबाशीर, खुब-सूस ५—५ तोला, गुलाब पुष्प, धनियां २॥—२॥ तोला, अकाकीया, सन्दल सफ़ेद, गिल अरमनी, गुलनार १—१ तोला, कर्पूर १॥ माशा, सब को कूट छान कर गुलाब जल से टिकिया बनावे ।

मात्रा—७ माशा, अर्क गाऊजबान से ।

गुण—मधु मेह, वृक्क तथा मूत्राशय रोगों मे उपयोगी है ।

(२) जरिशक, तबाशीर, गुलाब पुष्प ७–७ माशा, काहू बीज, कासनी बीज, गोंद कतीरा ३—३ माशा, मगज तुख़म खरपजा, मगज़ तुख़म कद्दू मधुर ५—५ माशा, सन्दल सफेद, खुबलसूस २—२ माशा, कर्पूर १ माशा, कूट छान कर इसपगोल जल से टिकिया बनावें ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—यक्ष्मा, जीर्ण ज्वर, पाण्डु ज्वर सहित और पैत्तिक ज्वर मे विशेप कर उपयोगी है ।

कुरस काफ़ूर लोलवी

मोती, तबाशीर, ८—८ माशा, चन्दन सफेद, नीलोफ़र पुष्प, धनियां शुष्क, चन्दन सुरख़, खुर्फा बीज छिला हुआ, गुलाब पुष्प, मगज तुख़म कद्दू मधुर, मगज तुख़म तरबूज १—१ तोला, कतीरा, निशास्ता ८–८ माशा, कर्पूर केसूरी २ माशा, सब को कूट छान कर इसपगोल रस से टिकिया बनावें ।

मात्रा—४ माशा ।

गुण—पित्त ज्वर, रक्त पित्त, यक्ष्मा, में लाभप्रद है, साथ अतिसार भी हो, तो भी उपयोगी है ।

कुरस काकनज

मगज़ तुखम खयारैन, हव्व काकनज, मगज वादाम छिले हुये, रवुलसूस, निशास्ता, गोद कीकर, दमलखवैयन, कतीरा, कुन्दर, करफस वीज ५—५ तोला, अहिफेन ६ माशा, कूट छान कर जल से टिकिया वनावें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय के व्रण को भरता है, अश्मरी तथा रेत को वाहर निकालता है।

कुरस कहरूवा

धनिया शुष्क भुना हुआ, खशखाश वीज कृष्ण, खशखाश वीज सफेद ६—६ तोला, कहरूवा, वुसद, मोती, खुरफा बीज प्रत्येक ५ तोला, हिरण श्रृंग जला हुआ, कुक्टाण्ड का ऊपर का सफेद छिलका जला हुआ, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, ३—३ तोला, कोड़ी जली हुई २ तोला, अजवायन खुरासानी २ तोला, सव को कूट छान कर इसपगोल के जल से टिकिया वनावे।

मात्रा—५ माशा।

गुण—रक्तपित्त में अत्यन्त उत्तम तथा उपयोगी है।

कुरस गुल

गुलाव पुष्प, मधुयष्टि छिली हुई प्रत्येक ४ तोला, तवाशीर सफेद, वालछड़, अफसनतीन २—२ तोला, तुरंजबीन खुरासानी ३ तोला, कूट छान कर अर्क गुलाव के साथ टिकिया वनावे।

मात्रा—५ माशा, शरवत कासनी से प्रयोग करें।

गुण—कफज जीर्ण ज्वरों में उत्तम है।

(२) गुलाव पुष्प २ तोला ४ रत्ती, असारा गाफस, तबाशीर, रवुलसूस प्रत्येक ३॥ तोला, सव को कूट छान कर अर्क गुलाब वा जल से टिकिया वनावें।

मात्रा तथा गुण—उपरोक्त।

कुरस गुलनार

गुलनार, गिलारमनी, गोद कीकर १—१ तोला, गुलाव पुष्प, अकाकीया प्रत्येक ९ माशा, गोद कतीरा ६ माशा, कूट छानकर गुलनार के पानी से टिकिया वनावे ।

मात्रा—४ माशा ।

गुण—रक्तपित्त तथा श्वेत प्रदर में उत्तम है ।

कुरस मास्कलबोल

माई, अकाकीया, हरड़ बड़ी, धनियां भुना हुआ, गुलनार, गिलारमनी, जुफुत बलूत, मोड़ीयों बीज १—१ तोला, कूट छान कर जल से टिकिया बनावे ।

मात्रा—५—५ माशा, प्रात. सायं जल से वा अर्क गाऊज़बान से प्रयोग करे ।

गुण—विन्दु २ मूत्र आने तथा विस्तर पर मूत्र निकल जाने के रोग मे लाभप्रद है ।

कुरस मुसलस

मुरमुकी, लावन, कर्पूर, अहिफेन, केशर, अजवायन खुरासानी, पोस्त बेख़ लफाह (वेलाडोना की जड़ का छिलका) २॥—२॥ तोला, कुन्दर, अनज़रूत, आमला, गिलअरमनी ५—५ तोला, कूट छान कर गुलाब तथा काहु जल से टिकिया बनावें, १ टिकिया जल मे घिस कर माथे पर लेप करे ।

गुण—अर्धभेदक तथा अन्य शिरशूल मे उत्तम है, निद्राप्रद है ।

कुरस मुलैयन

हरड़ वडी, वहेडा, आमला, त्रिवृत, हरड़ काली १॥—१॥ तोला, सौंफ, मस्तगी, उस्तोख़दूस, रेवन्दचीनी प्रत्येक ३॥। तोले, सकमुनीया ७॥ तोला सब को वारीक कर के १—१ माशा की टिकिया बना ले ।

मात्रा—२ से ४ टिकिया जल से ।

गुण—कोष्ठवद्धता नाशक है, उदर को शुद्ध करती है ।

कुर्स मुखदर

कर्पूर, लफ़ाह की जड़ प्रत्येक १।।। माशा, फरफयून, अहिफेन, केशर, अजवायन खुरासानी प्रत्येक ३।। माशा, मुरमुकी, उशक, कुन्दर, दारचीनी प्रत्येक ७ माशा, सव को कूट छान कर सवज धनिये और सव्ज़ काहु के जल से गूँद कर कुरस वनाये, आवश्यकता पर पैत्तिक शिरशूल मे सिरका, सवज़ धनिया अथवा सवज काहु के जल मे घिस कर मस्तक पर लेप करे, सरदी के कारण शिरशूल मे करफस वा हिंज़ल के जल से घिस कर लेप करे, और यदि शिर शूल मिश्रित दोप से हो, तो गुलाव तैल मे पीस कर लेप करे ।

गुण—प्रत्येक शिरशूल तथा अन्य पीडा मे लाभप्रद है ।

कुरस वनफशा

वनफशा ३५ माशा, सकमूनीया भुना हुआ ४।। माशा, रवुलसूस, गोद कतीरा, निशास्ता प्रत्येक ३।। माशा, सवको वारीक करके इसपगोल के लुआव से कुरस वनावें ।

मात्रा—४।। माशा ।

गुण—निमोनीया, कास, छाती की रूक्षता तथा रक्तपित्त मे उत्तम है, पित्त को दस्तों द्वारा निकालता है ।

कुरस सरतान

कतीरा ७ माशा, रवुलसूस १०।। माशा, गिल अरमनी, गिल रूमी, गुलाब पुष्प, निशास्ता प्रत्येक १४ माशा, शादनज अदसी धुली हुई, वंशलोचन, प्रत्येक १७।। माशा, कहरूबा, मोडीयो वीज प्रत्येक २१ माशा, सरतान (केकड़े) जले हुये ३१।। माशा, सब को कूट छान कर जल से टिकिया वनावे ।

मात्रा—४।। माशा ।

गुण—यक्ष्मा, रक्तपित मे अत्यन्त उत्तम है ।

(२) केशर १।। माशा, रेवन्दचीनी १।।। माशा, अनार का छिलका वा अनार का गूदा, माजू सवज प्रत्येक ३।। माशा, रसौत, गुलाव पुष्प ७—७ माशा, असारा लीयालतीस, गिल अरमनी, गिल

मख़तूम, कहरूवा शमई प्रत्येक १०॥ माशा, निशास्ता भुना हुआ १२। माशा, कुन्दर १४ माशा, सब औषध को बारीक चूर्ण करे, और इसपगोल को जल में उबाल कर लुआव निकाल कर पिसी हुई औषध मिला कर ४॥ माशा की टिकिया बनावे।

मात्रा—१ से दो कुरस।

गुण—रक्तपित्त, रक्त अतिसार, सर्व प्रकार के रक्त निकलने के रोग में लाभप्रद है।

कुरस अम्बर

अम्बर शहब ३॥ तोला, मिश्री ७०तोला, अर्क गुलाब १ बोतल, अब मिश्री और अर्क गुलाब मिला कर साफ़ कर पाक करे, इस के पश्चात पाक मे अम्बर डालकर घोटे से खूब घोटें, और थोड़ा २ गुलाब डालते रहे, जब सफेद हो जाये, और उस का पाक टिकिया बनाने के योग्य हो जाये तो टिकिया बना ले, यदि अम्बर का दसवाँ भाग स्वर्ण जल वा स्वर्ण वर्क और मिला दे, तो और गुणप्रद होगा।

मात्रा—३ से ५ माशा।

गुण—हृदय, मस्तिष्क, और सब शरीर को बल देता है, रोगोपरान्त क्षीणता मे बहुत लाभप्रद है।

कुरस अफ़सनतीन

मंजीठ १४ माशा, बालछड, अजखर, रेवन्दचीनी, तज, चिरायता, प्रत्येक १०॥ माशा, मुरमुकी, अनीसून, मस्तगी, ज़रावन्द गोल, तगर, अफसनतीन, सोया बीज, करफस बीज प्रत्येक ७ माशा, सब को कूट छान कर सकंजबीन के साथ टिकिया बनावे।

मात्रा—४॥ माशा।

गुण—उदर शूल मे अत्यन्त उत्तम है।

कुरस मस्तगी

ऊद ख़ाम (अपक्व), मस्तगी प्रत्येक ७ माशा, पोस्त बीरून पिस्ता (पिस्ता के बाहर का छिलका) १४ माशा, गुलाब पुष्प, आमला घन सत्व प्रत्येक १७॥ माशा, सब को कूट छान कर कुरस बनावें।

मात्रा—७ माशा, शीतल जल से ।

गुण—वमन तथा हिक्का में लाभप्रद है ।

कुरस माज़रियून

कासनी बीज ३५ माशा, गुलाब पुष्प, मग्ज तुख़म कद्दु, मगज़ तुख़म ककड़ी प्रत्येक ३५ माशा, माजरियून, गारीकून, गाफस-घन सत्व (असारा) प्रत्येक ६।। माशा, सब औषध को कूट छान कर दस कुरस बनावे, और प्रतिदिन १ कुरस प्रयोग करे ।

गुण—जलोदर मे उत्तम है ।

कुरस ख़रदल

हालो, लहसुन मूल दोनों को सिरके में वा जल मे एक दिन रात भिगो रखे, दूसरे दिन १ सेर सुदाब शुष्क डाल कर एक दिन और पड़ा रहने दे, तीसरे दिन सब औषध को कूट कर कुरस बनाये, और नीमगरम तन्दूर पर रख कर शुष्क करें, शुष्क होने के साथ २ वह भुन कर जल जायें, तो फिर कूट कर कुरस बनाये ।

मात्रा—७ माशा, सकजवीन के साथ प्रातः प्रयोग करे ।

गुण—प्लीहा के वातिक शूल मे उपयोगी है ।

कुरस कजमाज़ज

कज़माज़ज १८ माशा, मिरच सफेद, सम्भल, तगर, उशक प्रत्येक ९ माशा, प्रथम उशक को जगली प्याज के सिरके मे हल करे, बाकी औषध को कूट कर इसी सिरके में मिला कर कुरस बनावे ।

मात्रा—४।। माशा, सकंजवीन से ।

गुण—प्लीहा की सख़ती को नष्ट करता है ।

कुरस बनफ़शा मुसहल

बनफ़शा पुष्प ३५ माशा, त्रिवृत, मस्तगी रूमी, गुलाब पुष्प प्रत्येक १७।। माशा, रबुलसूस १२। माशा, सकमूनीया भुना हुआ १०।। माशा, कतीरा सफेद १।।। माशा, कूट छान कर जल से टिकिया बनावे ।

मात्रा—पौने ९ माशा, शरबत बनफ़शा से ।

गुण—आन्त्रशूल को नष्ट करता है, कास, श्वास, कफ ज्वर मे अत्यन्त उत्तम है, विरेचक है ।

कुरस ज़ह्फ़रान

केशर, चन्दन सफेद प्रत्येक ७ मागा, गोदकीकर, खॉड सफेद, गुलाब पुष्प प्रत्येक १७।। माशा, त्रिवृत छिला हुआ ७० माशा, सब को कूट छान कर जल से टिकिया बनावे, और छाया मे शुष्क करे ।

मात्रा—४।। माशा, जल से प्रयोग करे ।

गुण—विबन्ध नाशक है, जले हुये पित्त को निकालता है दिल की घबराहट और तृष्णा को नष्ट करता है ।

कुरस बजूरी

मोड़ीयों बीज, सौफ, अफीम, अजवायन, करफस जड़, अजवायन खुरासानी सफेद, दोको प्रत्येक दो तोला ८ माशा, अफीम २१ माशा, सब औषध को कूट पीस कर शरबत रेहां से टिकिया बनावे । छमास बाद प्रयोग करे ।

मात्रा—पौने दो माशा ।

गुण—प्रवाहिका, रक्त अतिसार, आन्त्र ब्रण, अर्श, रक्त प्रदर, मरोड़ मे लाभप्रद है, दीपक पाचक है ।

शिलाजीत कुरस

वग भस्म, शिलाजीत सत्व, कतीरा, गिलारमनी, खशखाश सफेद, गोद कीकर, मगज बहीदाना, मगज तुखम खयारैन, तुखम खुरफा छिला हुआ, मगज तुखम तरबूज, मगज तुखम कद्दू मधुर, सब को सम भाग लेकर बारीक करे, और इसपगोल के लुआब से कुरस बनावे ।

मात्रा—१ माशा से २ माशा, गौ दुग्ध लस्सी से ले ।

गुण—सुजाक मे लाभप्रद है ।

बनफशा कुरस

बनफ़शा, गोंद कतीरा, मगज़ बादाम मधुर, मगज तुखम कद्दू मधुर, मगज तुखम ककड़ी, प्रत्येक १७।। माशा, रबुलसूस, निशास्ता,

गिलअरमनी प्रत्येक १०।। माशा, सम्भल ३।। माशा, मस्तगी ४।। माशा, सव को कूट छान कर कुरस बनावे ।

मात्रा---४।। माशा ।

गुण---ज्वर के साथ जव खांसी होती है, उस मे उत्तम है ।

कुरस मुबारक

गुलाव पुष्प, तुरजबीन प्रत्येक १७।। माशा, कासनी बीज १४ माशा, काहु बीज १२। माशा, खरपजा बीज १०।। माशा, मगजं तुख़म खयारैन, तबाशीर प्रत्येक पौने ९ माशा, मगज तुखम कदू मधुर ७ माशा, रबुलसूस ४ माशा, कर्पूर ९ रत्ती, सब औषध को कूट छान कर जल से कुरस वनावे ।

मात्रा---२ से ३ माशा ।

गुण---यक्ष्मा, जीर्ण ज्वर, सन्निपात ज्वर तथा अन्य पैत्तिक ज्वरों और पाण्डु मे लाभप्रद है ।

कैरूती (लेप) (Liniments-Embrocation)

कैरूती वास्तव मे मोम और तैल के मिश्रण को कहते है, जो मरहम के रूप की होती है, और पीडा के स्थान पर पीडानिवारर्णाथ मर्दन की जाती है, मंदन के पश्चात सेक कर उष्ण रूई बाध दी जाती है। निर्माण विधि यह है, कि तैल को अग्नि पर उष्ण कर के मोम मिला दे, मोम पिघल जाने पर दोनो को घोट कर एक जीव कर ले, यह कैरूती सादा कहलाती है, परन्तु मिश्रित योग मे और कई औषध भी पीड़ा तथा शोथा निवारण के लीये डाले जाते है ।

कैरूती आरद करसना

आरद करसना (मटर का आटा), (निष्पाव का आटा) मेथी का आटा १।।-१।। तोला, कलौंजी, मधु यष्टि ७---७ माशा, अकरकरा ५ माशा, सब को बारीक पीस ले, फिर मोम को सोसन तैल, चम्बेली तैल अथवा मीठा तिल तैल में डाल कर पिघलायें, पिघल जाने पर उतार कर औषध चूर्ण को थोडा २ डालकर खूब घोटे, ताकि सब एक जीव हो जाये ।

प्रयोग विधि—आवश्यकता पर नीमगरम (अंधोष्ण) मालिश करे, यदि एलवा (मुसब्बर) और केशर भी मिला दिये जाये, तो अधिक उपयोगी होगा।

गुण—निमोनीया, वक्षशोथ मे लाभप्रद है, शोथ तथा पीड़ा नाशक है।

कैरूती आरद बाकला

बनफशा, गन्धम का छान, जौ का आटा, बाकला का आटा, बाबूना, अकलीलमलक, ख़तमी पुष्प सम भाग ले कर कूट छान ले, और मोम तैल मे (जो कि बनफशा के तैल और मोम को पिघला कर बनाया गया हो) मिला कर एक जीव करे।

नोट—यदि दोष गाढे हों, तो इसी योग मे अलसी तथा मेथी का चूर्ण भी बारीक करके मिलावे, और करनब का जल भी मिला ले।

गुण—अर्धोष्ण मालिश करे, निमोनीया तथा वात रोगों मे लाभप्रद है।

कैरूती करनब

चकन्दर स्वरस, शलगम स्वरस, करनब पत्र स्वरस, खतमी पुष्प स्वरस, लुआब बनफशा मोम सफेद, प्रत्येक २॥ तोला, गुलाब तैल १२ तोला, प्रथम मोम को गुलाब तैल मे पिघलाये, पिघल जाने पर ऊपर के स्वरसों को थोडा २ डाल कर एक जीव करें।

गुण—हाथ, पैर तथा होंट फटने पर उपयोगी है, उक्त अंग पर मालिश करे।

कैरूती आरद जो वाली

बनफशा, चन्दन सफेद, जौ का आटा, खतमी बीज, बाबूना पुष्प, नाखूना, गन्धम की भूसी, सब को बारीक करे, और मोम को बनफशा तैल मे पिघला कर औषध चूर्ण डाल कर घोट कर एक जीव करे, यदि शोथ को शीघ्र पकाना, हो तो बाकला और मेथी का आटा भी डाले, छाती तथा पीड़ा स्थान पर मर्दन कर सेक करे।

गुण—निमोनीया मे उपयोगी है, शोथ तथा पीड़ाको नष्ट करता है, कफ को ख़ारज करता है।

कैरूती बाबूना वाली

वनफ़शा पुष्प, बाबूना, नाखूना आवश्यकतानुसार लेकर जल मे क्वाथ करे, और छान कर वादाम तैल १० तोला मे ४ तोला मोम पिघला कर एक तोला इसपगोल का लुआब और दो तोला खतमी पुष्प का लुआव और औषध का क्वाथ मिलाकर इतना पाक करे, कि केवल मोम तैल वाकी रह जाये, आवश्यकता पर अर्धोष्ण मालिश करे।

गुण—उपरोक्त।

कैरूती कतीरे वाली

कतीरा ४॥ माशा लेकर बारीक करे, अब ५ माशा मोम को १॥ तोला गुलाब तैल में पिघला कर कतीरा का चूर्ण इस मे मिलावे, और खूब घोंट दें, यदि अधिक उष्णता पहुचानी है, तो गुलाब के स्थान पर नरगस तैल, शिरसतैल, वा चम्बेली तैल का प्रयोग करे।

गुण—निमोनीया में लाभप्रद है।

कैरूती मको वाली

मको शुष्क, अलसी, खतमी बीज प्रत्येक ६ माशा सब को १ पाव जल मे उबाले, आधा भाग रहने पर छान कर मोम सफेद और गुलाब तैल डाल कर पकाये, क्वाथ के जल जाने पर उतार ले।

गुण—उपरोक्त है।

कैरूती सिल

गरीलमस्क (मच्छली का सरेश), मगज वनौला १—१ तोला, रासन बीज, मस्तगी प्रत्येक ६ माशा, नीम पत्र स्वरस, मेहन्दी पत्र स्वरस, प्रत्येक १० तोला, घी और वादाम तैल १॥—१॥ तोला, अलसी तैल १ तोला, गुलाब तैल ६ माशा, अफीम, ऊट की हड्डी जली हुई ३॥ माशा, मोम पीत २ तोला, प्रथम मोम और तैल को एक साथ पिघलाये, स्वरसों को डाल कर जला ले, पीछे वाकी सब औषध का वारीक चूर्ण डालकर घोट ले, आवश्यकता पर थोड़ी कैरूती, खशखाश तैल मे हल कर सीना पर मालिश करे, और चने परमाण खिलाये।

गुण—सिल (रक्तपित सहित यक्ष्मा) में लाभप्रद है।

कुहल (सुरमें अंजन) (Alcohol)

सुरमा औषध के उस बारीक चूर्ण को कहते है, जो सलाई आदि से आख मे डाला जाता है, युनानी धारणानुसार इसका अविष्कार करने वाला हकीम फैशागोरस हुआ है, जिस ने सर्प को देखकर इस का अविष्कार किया, इस ने देखा कि साप का वच्चा अन्धा होता है और वह सौफ के वृक्ष से अपनी आखे रगड़ कर रोशन करता है। सुरमा बनाते समय निम्न बातों का ध्यान आवश्यक है।

(१) आख एक मृदु तथा सुकुमार अग है, जरा सा भी कष्ट इस के लिये बडे दुख का कारण होता है, इस लिये जो भी सुरमा बनाया जाया, वह अत्यन्त बारीक होना चाहिये, खरल करने के पश्चात बारीक रेशमी वस्त्र से छान कर काच की शुद्ध शीशी मे सुरक्षित रखे।

(२) खरल करते समय धूल धप्पा से सुरक्षित स्थान पर बैठना चाहिये और खरल को ढाक कर रखे।

(३) यदि सुरमा को किसी अर्क से भावना देनी हो, तो थोडा २ अर्क डाल कर खरल करे, यहाँ तक कि सब अर्क समाप्त हो जाये।

(४) यदि कुहल मे सुरमा भी हो, तो उसे शुद्ध कर के इतना खरल करे कि उस की चमक न रहे, फिर बाकी औषध का चूर्ण डाले।

(५) कुहल के सब औषध को शुद्ध कर के पृथक २ पीस कर फिर तौल कर मिला कर खरल करे, तो अधिक अच्छा है।

(६) यदि सुरमा मे तूतीया, शादनज, अनजरूत, सगबसरी जैसी औषध हो, तो शुद्ध करके डाले।

(७) सुरमा सदैव न घिसने वाले खरल मे खरल करे, सग समाक का खरल मिले तो अति उत्तम है।

(८) शीतल सुरमा पित्त रोग मे ग्रीष्म ऋतु मे तथा उष्ण काल मे प्रयोग करने चाहिये, इस के विपरीत उष्ण गुण वाले सुरमे शीत रोग तथा शीत समय प्रयोग करने चाहिये।

(९) सुरमा लगाने के लीये, सोना, चाँदी, यशद, जरिशक जड़, तथा नीम की लकड़ी की सलाई प्रयोग करनी चाहिये।

कुहल ज्वाहर

कर्पूर १ माशा, कस्तूरी खालिस २ माशा, लवण सैंधव १४ माशा, लौंग, छलीडा, प्रत्येक १४ माशा, इन्द्राणी लवण, तेजपात, कलई का सफेदा, काली मिरच, वालछड़, सुरमा असहफानी,सुरमा सुरख, केशर, वुसद अहमर प्रत्येक २। तोला, ताम्र जला हुआ, मामीरान चीनी, मुरमकी शुद्ध, नवसादर, हलदी प्रत्येक ३।। तोला, हरड़, मोती, प्रत्येक ४।। तोला, मुसव्वर, असारा मामीशा, याकूत, फैरोजा, प्रत्येक५ तोला, १० माशा, समुद्रझाग, स्वर्ण मैल, चाँदी मैल, प्रत्येक १२ तोला, सव औषध को वारीक पीस कर दो वोतल अर्क गुलाव से भावना दे ।

गण—यह सुरमा ज्योतीको तेज करता है, ऐनक की आवश्यकता नही पड़ती, रात्री को सोते समय लगावे ।

कुहल वियाज

ताम्र जला हुआ, शादनज मखसोल (धुला हुआ) प्रत्येक ५ माशा, चाँदी का मैल २ माशा, जगार, मुसव्वर, वूरा अरमनी १—१ माशा, काली मिरच, पिप्पली, केशर, प्रत्येक ४ रत्ती, सव को खरल कर सुरक्षित रखे ।

गुण—धुन्ध, जाला, फोले और नाखूना मे उपयोगी है ।

कुहल जरब

प्रथम खालस ताम्र के पैसों को शोरा वाली मिट्टी से धो कर साफ करे और अंजनहारी के घर की मिट्टी को जल मे गूद कर पैसो पर मोटा २ लेप कर के छाया मे शुष्क करे, अब खड़िया मिट्टी का वोता वना कर पैसो को ऊपर तले रख दे, और ऊपर से पिघला हुआ जस्त डाल कर वन्द कर दे, और गढ़े मे रख कर वीस सेर ऊपलों की अग्नि दे, शीतल होने पर निकाल लें, काले रग के पैसे निकलेगे, इन को निंवू रस में खरल कर सुरमा की तरह प्रयोग करे ।

गुण—कुक्करों मे अत्यन्त उपयोगी है ।

कुहल चिकनी दवा

सावन ६ तोला, नीला थोथा ३।। माशा, राल ३।। माशा, सावुन को चाकु से वारीक कर ले, और लोहे के वरतन में डाल कर आग पर

रख, जब सावुन गलने लगे तो नीलाथोथा को बारीक कर के सावुन मे मिश्रित कर लोहे के दस्ते से खूब हल करे, जब सावुन जलवत पतला हो जाये, तो राल का बारीक चूर्ण डाल कर दस्ते से खूब हल करे, आँच तेज्र कर दे, जब साबुन शुष्क हो कर काला हो जाये, तो बरतन को आग से पृथक कर के शीतल होने पर औषध निकाल ले ।

गुण—मोतीयाबिन्दु की प्रारम्भिक अवस्था मे उपयोगी है, पानी जाने को रोकता है, जाला, फोला को काटता है, धुन्ध में लाभप्रद है, ख़शख़ाश बीज समान औषध सीपी में लेकर जरा सा जल डाल कर मिला कर सलाई से सोते समय लगावें।

कुहल रोशनाई

पिप्पली, एलवा, बालछड़, लौंग, शादनज, तोबालमिस प्रत्येक १५ माशा, सोनामक्खी, तमालपत्र, बूरा अरमनी, प्रत्येक १४ माशा, मिरच काली, मिरच सफेद, समुद्र झाग प्रत्येक १०।। माशा, सोंठ, कालादाना प्रत्येक ७ माशा, केशर, नवसादर, प्रत्येक ३।। माशा, सब को बारीक खरल सुरमा बनावें ।

गुण—यह ज्योती की कमी, आंख की ख़ारश, और नाख़ूना मे लाभप्रद है ।

कुहल बराये दर्द चशम

शुद्ध अनजरूत, शुद्ध चाकसू छिला हुआ, सफ़ेद काशगरी, समुद्र-झाग ३—३ माशा, रसौंत २ माशा, खाँड सफेद २ तोला, सब को बारीक करे ।

गुण—चक्षु की पीडा मे उत्तम है, सलाई से आंख में लगावें ।

कुहल रमद

यशद, सुरमा कृष्ण २०—२० माशा, जंगार, अहिफेन ३—३ माशा, सफेदा काशगरी, समुद्र झाग प्रत्येक ४ माशा, सब औषध को बारीक पीस ले, आवश्यकता पर सलाई से आंख में लगावे ।

गुण—आँख दुखने मे विशेष कर जब इस का कारण प्रतिश्याय हो, इस के लीये विशेष उपयोगी है ।

कुहल मुक्ता

सुरमा असहफानी २ तोला, मोती ६ माशा, मरजान, शादनज-अदसी प्रत्येक ४ माशा, सब औषध को पृथक २ अर्क गुलाब मे खरल करे, फिर सब को मिला कर सुरमा तय्यार करें, यदि इस मे ६ माशा संगबसरी और मिलावे, तो अधिक गुणकारी होगा, आवश्यकता पर सलाई से लगावें ।

गुण—जाला तथा आंख दुखने में लाभ प्रद है ।

कुहल रोशनाई

सुरमा असहफानी ३० तोला, संगबसरी १ तोला, मोती २ तोला, मामीरान चीनी ६ माशा, मरजान (प्रवाल) १। तोला, सोने के वर्क ४ माशा, वर्कों के सिवाये सब औषध के वारीक चूर्ण को हरीतकी क्वाथ मे ४ दिन तक खरल करे, फिर ४ दिन तक अर्क गुलावमे खरल करें, नवे दिन सोने के वर्क मिला कर खरल कर सुरक्षित रखे ।

गुण—ज्योती को तेज करता है, आख के सब रोगों मे उत्तम है ।

कुहल सुबल

ताम्र जला हुआ, शादनज धुला हुआ, ताम्र का मैल, प्रत्येक ५ माशा, जगार, मुसव्वर, बूराअरमनी १—१ माशा, काली मिरच, पिप्पली ४—४ माशा, केशर २ रत्ती, सब को कूट छान कर वारीक करे।

गुण—जाले को दूर करता है ।

कुहल सुबल शबकोरी

नवसादर, फटकड़ी, दोनोको पृथक २ भून लें, सम भाग ले वारीक कर चूर्ण करें, सुरमा की तरह लगावें ।

गुण—रतोंधी और जाले के लीये उपयोगी है ।

कुहल सदफ़

सीप जले हुये २। तोला, नीला थोथा भुना हुआ तथा धुला हुआ दो तोला, खाँड सफेद १ तोला, सब को सुरमे की भांति खरल कर सुरक्षित रखे ।

गुण—ज्योती को तेज करता है, आख की लाली को काटता है और आंख को शीतल करता है ।

कुहल कर्पूर

मिरच काली १४ माशा, पिप्पली १४ माशा, केशर १४ माशा, बालछड़ १४ माशा, रसौत सात माशा, कर्पूर ३ माशा, सब को सुरमा की भांति खरल करे ।

गुण—आंख की गरमी, सुरख़ी को दूर करता है, प्रात. सायं सलाई से आंख मे लगावें ।

कुहल गुल कुंजद

तिल पुष्प कली, चम्बेली पुष्प कली, काली मिरच प्रत्येक ४०० नग, फटकड़ी भुनी हुई ३॥ तोला, ख़ूब खरल कर सुरमा बना ले ।

गुण—आंख के जाले, फोले, नाख़ूना को नष्ट करता है ।

कुहल माजू

शादनज अदसी, तेजपत्र, प्रत्येक ९ माशा, रूई जली हुई, माजू ३—३ माशा, पिप्पली, दमलख़वयैन १॥—१॥ माशा, काकला (इलायची), कस्तूरी प्रत्येक ३ रत्ती, कर्पूर १ रत्ती, सब को ख़ूब खरल कर सुरक्षित रखे, प्रातः सायं सलाई से लगावें ।

गुण—नेत्रों को बल देता है, ढलका, ख़ारश के लीये उपयोगी है ।

कुहल ज़हफ़रानी

केशर, बालछड प्रत्येक सात माशा, नवसादर पौने दो माशा, पिप्पली, मिरच सफ़ेद ४—४ रत्ती सब को बारीक पीस कर सुरमा बनावे, और सोते समय आंख में लगावें ।

गुण—आंख की ख़ारश और पानी आने में लाभप्रद है ।

कुहल शाहजानी

कर्पूर २ रत्ती, केशर, तेजपात, कस्तूरी प्रत्येक ४॥ माशा, तोतीया किरमानी भुना हुआ तथा धुला हुआ तीन तोला, सुरमा असहाफानी

४।। तोला, सब को बारीक पीस कर मेघ के जल से खूब खरल कर शुष्क करें।

गुण—यह सुरमा नेत्रों की रक्षा के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

कुहल मकवी बसर

सुरमा असहफानी ३ तोला, मोती १।। तोला, मरजान (प्रवाल) ५ तोला, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ ५ माशा, मामीरान चीनी, संगबसरी, मगज तुख़म नीम, कर्पूर प्रत्येक ५ माशा, स्वर्ण वर्क, चाँदी वर्क ५–५ पत्र, सब औषध को बारीक पीस कर, सौंफ अथवा गुलाब अर्क मे तीन दिन तक खरल कर सुरक्षित रखे। सोते समय प्रयोग करे।

गुण—नेत्र ज्योती को बढ़ाता है।

कुहल महमूल

यशद ५ तोला ४ माशा, सुरमा असहफानी १४ माशा, चम्बेली की अपक्व कली ७ माशा, संगबसरी ५ माशे, मामीरान चीनी, मिरच सफेद, दाना मोठ सफेद १–१ माशा, प्रथम यशद को लोहे के कडछे मे पिघला कर चम्बेली के पुष्प का बारीक चूर्ण उस पर चुटकी २ डालते जाये, और लोहे की सीख से चलाते जाये, यशद की भस्म हो जायेगी, अब इस भस्म को छान कर बाकी औषध चूर्ण डाल कर अर्क गुलाब से खरल करे, जितना अर्क गुलाब से खरल करेंगे, उत्तम रहेगा (भस्म छानने के पश्चात यदि कुछ कण रह गये हो, तो उन को दुबारा उसी विधि से भस्म करे)।

गुण—नेत्र ज्योती को बढ़ाता है, मोतीयाबिन्दु मे उत्तम है। ढलका और नेत्र के अधेरे पन को दूर करता है।

कुहल

कस्तूरी ४ रत्ती, अण्डे के छिलके धुले हुये जलाये हुये, रत्नजोत, सोनामखी १––१ माशा, सगबसरी २ माशा, केशर ४ माशा, सब को बारीक पीस सुरमा तैयार करे।

गुण—जाले तथा धुन्ध मे उत्तम है।

कुहल अजीजी

हिन्दी लवण, समुद्र झाग, नवसादर प्रत्येक ५। माशा, स्वर्ण मैल, ताम्र मैल, नीला थोथा, लौग, मुसव्बर, फरंजमुशक के पत्र प्रत्येक ३॥ माशा, कस्तूरी ६ रत्ती, सब को यथा विधि बारीक पीस कर सुरमा तैयार करे।

गुण—नेत्र के सब रोगो मे उत्तम है।

कुहल

तोतीया किरमानी धुला हुआ ५ तोला १० माशा को मरजनजोश के नियरे हुए स्वरस मे भिगो कर शुष्क कर ले, फिर सोठ, मिरच, पिप्पली, मामीरान चीनी प्रत्येक ७ माशा, नवसादर २॥ माशा पीस कर सौफ के जल मे खरल कर शुष्क कर रेशमी कपड़े मे छान कर सुरक्षित रखे।

गुण—मोतीया विन्दु को लाभ देता है, ज्योती को बढाता है।

(२) सोनामखी की राख, ताम्र की भट्ठी का धुआँ, सोने की मैल १–१ भाग, मिरच आधा भाग, सब को खरल कर पुरानी शराब मे भिगो कर शुष्क करे, फिर सौफ जल से भावित कर शुष्क करे।

गुण—उपरोक्त।

कुहल साजज

सुरमा असहफानी, रोपामखी १४—१४ माशा, स्वर्ण मैल, मोगे की जड़, हर एक सात माशे, तेजपात्र ३॥ माशा, मोती, केशर, प्रत्येक १।॥ माशा, कस्तूरी १ माशा, सब को कूट छान कर सुरमा तैयार करे।

गुण—कहते है कि ऐतवार और बुध वार यदि स्वर्ण की सलाई से इसे आंख मे डाले, तो नेत्र कभी कमजोर नही होगे, इस के सिवाये सफेदी परदा, ढलका तथा आख की खुजली मे उत्तम है।

सन्यासी कुहल

मामीरान ७ माशा, यशद, लौग, सगबस री, साग चोलाई प्रत्येक २ तोला ४ माशा, मिरच काली ४ तोला ८ माशा, नीम के सबज़ पते,

घीक्वार के पते १०—१० पत्र, लौंग, और मरिच को पृथक पीस कर रखें, यशद को लोहे के कड़छे में तीव्र अग्नि पर पिघला कर लवंग के क्वाथ मे ७ वार बुझावे, फिर पिघला कर घृतकुमारी के रस में ७ वार बुझावें, इस के पश्चात लौह के दस्ते से रगड़े, ताकि यशद राख हो जाये, अब इस मे मामीरान, संग बसरी पीस कर मिलावे, और मिरचचूर्ण मिला कर वारीक पीस कर सुरमा तैयार करें।

गुण—नेत्र ज्योती बढाने मे अतीव उत्तम है।

नेत्रपीड़ा हर लेंप (घरहा)

निंबू कागज़ी आध सेर, फटकडी आध पाव, अहिफेन ३॥ तोला, पहिले फटकड़ी को लौहपात्र मे भून ले, इस के बाद अफीम मिलावे, फिर थोड़ा २ निंबू रस डाल कर दस्ते से घोटे, ताकि सब एकजीव हो जाये, और निंबू रस भी सारा जजब हो जाये, तो गोलीयाँ बनाने के योग्य होने पर गोलीयां बना ले, आवश्यकता पर गोली जल मे घिस कर थोड़ा उष्ण कर नेत्र के चारों ओर लगावे, और नेत्र मे भी डाले।

गुण—आंख दुखने, चक्षू पीडा, ढलका, तथा आख की सुरखी में अत्यन्त उत्तम है।

सियाल औषध द्रव (Liquids)

कबरीयत सियाल

गन्धक आमलासार ५ तोला, सीप भस्म १० तोला, दोनों को वारीक करें, और दो सेर जल मे हल कर के आतशी शीशी मे भर कर मृदु अग्नि दे, एक पाव जल शेप रहने पर निथार कर फिलटर करे, आवश्यकता पर २ बिन्दु जल मे डाल प्रयोग करे।

गुण—भूख बढ़ाती है, रक्त दोष को निवृत करती है।

नकरा सयाल

चांदी बुरादा १ तोला, शोरा तेजाव ५ तोला, जल ३ तोला सब को मिला कर मृदु आंच पर रखे, पिघलने पर उतार कर छान ले, और १० भाग और जल मिला कर बोतल मे भर दे।

मात्रा—४ बूँद, जल में मिला कर प्रयोग करे।

गुण—शरीर को बल देता है ॥

फौलाद सयाल

बुरादा फौलाद शुद्धको तेजाब शोरा ३ भाग, जल १ भाग मे मिला कर अग्नि पर रखे, हल होने पर उतार कर छान कर १० भाग और जल मिला कर बोतल में डाल दें।

मात्रा—५ बिन्दु, जल मे मिला कर प्रयोग करे।

गुण—आमाशय, यकृत को बल देता है, रक्तहीनता को नष्ट करता है।

कर्पूर सयाल

कर्पूर खालिस १ तोला, रेकटीफाईड सिपिरट ४ तोला, दोनों को एक शीशी मे बन्द कर के रखे, कर्पूर हल हो जायगा।

मात्रा—३ बूंद से ५ बूंद, २ तोले जल में मिला कर प्रयोग करे।

गुण—विसूचिका, और आध्मान मे उपयोगी है।

मरवारीद सयाल

मरवारीद १ माशा मे निंबू रस थोडा २ मिला कर खरल करे, जब मोती हल हो जाये, तो अच्छी तरह से छान ले।

मात्रा—५ बूंद, अर्क गुलाब १ तोला मे मिला कर प्रयोग करें।

गुण—हृदय तथा मस्तिष्क को बल देता है, शारीरिक क्षीणता को नष्ट करता है, मोतीझरा ज्वर मे उपयोगी है।

मालजहब स्वर्ण जल

तेजाब शोरा ३ भाग, तेजाब लवण ४ भाग, दोनों को एक बड़ी शीशी मे डाल दे, और शीशीका मुख किसी कदर खुला रखे, अब इस तेजाब मे से १ तोला ले कर १ माशा स्वर्ण डाल दे, कुच्छ समय पश्चात स्वर्ण हल हो जायगा, फिर इस मे ३ तोला और जल मिला दे।

मात्रा—३ से ५ बूंद, मालहम अम्बरी ५ तोला मे मिला कर प्रयोग करें।

गुण—शारीरिक क्षीणता, तथा स्तम्भक दुर्वलता को दूर करता है यक्ष्मा मे भी लाभप्रद है।

नवसादर स्याल (नृसार द्रव)

विना भुझा चूना ४ सेर लेकर इस मे आधा भाग चूना एक मिट्टी की हाण्डी मे विच्छावें और उस पर नवसादर देसी १ पाव भर रख कर ऊपर से वाकी २ सेर चूना डाले, और हाण्डी के मुख पर एक ढकना रख कर कपरौटी करे, इस के वाद हाण्डी के नीचे अग्नि ४ प्रहर तक जलाये, शीतल होने पर नवसादर को निकाल ले, और चूने को १० सेर जल मे घोल कर वार २ हिलाये, और रख दे, २४ घण्ट वाद ऊपर का नियरा पानी लेकर इस मे वाकी नवसादर भी हल करे, अग्नि पर रख कर शुष्क करें, केवल लवण रह जाने पर चीनी की तशतरी में डाल कर रात्री को शवनम पर रखे, सव नवसादर द्रवित हो जायगा।

गुण—प्लीहा तथा यकृत में उत्तम है, दीपक पाचक है, कफ स्रावी है।

(२) नवसादर वारीक कर के हाण्डी मे रखे, दूसरी हाण्डी इस के ऊपर रख कर संधि वन्द कर के अग्नि पर रख कर जौहर उडाये, शीतल होने पर जौहर को निकाल कर जल मे घोल ले और फिल्टर पेपर से छान लें।

मात्रा—५ बिन्दू, भोजन के वाद।

गुण—उपरोक्त।

कुश्ता जात (भस्म)

(Reduced and Calcinied Metals)

कुश्ता उस अल्प मात्रा तथा तीव्र गुणकारी औषध को कहते है, जो किसी धातु (सुवर्ण, चादी, वग आदि) वा उपधातु (हिगुल, हडताल, पारद आदि) वा हिजरियात (मूल्यवान पापाण) को विशेप विधि से अग्नि द्वारा वनाते हैं। भस्म को यूनानी चिकित्सा मे मक्कलस और भस्म बनने को तक्कलीस कहते हैं। भस्म वनाने की विधियों से वैद्य लोग भलीभांति परिचित हैं। परन्तु फिर भी यूनानी हकीम जिन

विशेष विधियों से भस्मे वनाते है, हम उन का भी उल्लेख कर देते हैं। ता कि वैद्य लोग इस से भी लाभ उठा सकें।

भस्म वनाते समय अधोलिखित वातों का ध्यान रखे :—

(१) जिस वस्तु की भस्म वनानी हो वह उत्तम हो। और भली प्रकार यथाविधि शुद्ध की गई हो।

(२) भस्म वनाने मे यदि किसी वूटी का स्वरस डालना हो, तो उस वूटी का स्वरस निकाल कर और नियार कर प्रयुक्त किया जाये। किसी औषध को यदि किसी वूटीके रस मे खरल करके टिकिया वनाई गई हो, तो उसे अग्नि देने से पहले भली प्रकार शुष्क कर लेना चाहिये।

अपक्व और पूर्ण भस्म को पहिचानने की विधि—

(१) एक ग्लास में पानी भर थोड़ी सी भस्म जल में डालो, यदि भस्म नीचे वैठ जाये तो अपक्व है, और यदि तैरती रहे, तो सिद्ध है।

(२) भस्म को चुटकियो मे लेकर रगड़े, यदि रगड़ते समय करकराहट प्रतीत होती हो तो अपक्व है, और यदि न हो और भस्म अंगुलियों की रेखाओं मे घुस जाये, तो सिद्ध है।

कुछ धातुओं की सिद्ध भस्मों की पहचान—

(१) यदि स्वर्ण भस्म को निम्बु रस मे हल कर लिया जाये, तो उस की रंगत लालिमा पर आ जायेगी, और यदि ऐसा न हो, तो वह स्वर्ण भस्म ही नही, और यदि वह स्वर्ण भस्म ही है, तो अपक्व है।

(२) चांदी की भस्म को लौंग के साथ खरल किया जाये, तो वह कृष्ण वर्ण की हो जानी चाहिये, और यदि कृष्ण न हो, तो वह अपक्व है, या कोई अन्य वस्तु है।

(३) ताम्र भस्म दधि मे मिलाने से यदि हरी हो जाये, तो भस्म कच्ची है।

(४) नाग की भस्म यदि आग पर रखने से लाल हो जाये, तो सिद्ध है, अन्यथा अपक्व समझो।

(५) अभ्रक भस्म मोड़ियों पत्तों के रस में खरल करने से यदि चमक दृष्टि गोचर हो, तो भस्म अशुद्ध है।

यहां पर हमने धातुओं के भस्मों की पहिचानने की विधि का उल्लेख इस लिये किया है, कि अपक्व और अशुद्ध भस्मों के प्रयोग से शरीर मे नाना प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते है।

(१) अपक्व तथा अशुद्ध पारद भस्म के प्रयोग से शरीर मे कुष्ट तथा फोड़े फुंसियां हो जाते हैं।

(२) अशुद्ध गंधक की भस्म के प्रयोग से नाना विधि के ज्वर उत्पन्न होते हैं।

(३) अशुद्ध स्वर्ण भस्म रक्त के विकारों को जन्म देती है।

(४) अशुद्ध चादी की भस्म खुजली, आन्त्र शूल और शिर शूल उत्पन्न करती है।

(५) बंग की अशुद्ध भस्म के प्रयोग से वातगुल्म, पाण्डु और मधुमेह उत्पन्न होते हैं।

(६) लोह की अशुद्ध भस्म के प्रयोग से हृदय दुर्वलता, नपुसकता, जी मचलाना, वृक्क तथा मूत्राशय अश्मरी उत्पन्न करती है। इस लिये वैद्य महानुभावों से अनुरोध पूर्वक निवेदन है, कि वे भस्म वनाते समय धातुओं को अच्छी तरह शुद्धि करके पूर्ण रूप से अग्नि देकर लिखित विधि से भस्म वनावे, और किसी प्रकार की त्रुटि न रहने दे।

अपक्व भस्मों से उत्पन्न रोगो के निवारण की विधि—

जिस पुरुष ने अपक्व भस्म खाई हो ओर उस के शरीर पर फोडे फुंसियां उत्पन्न हो गये हों, उस को राम तुलसी पत्र स्वरस, सवेज मको पत्र स्वरस निथार कर पिलावे, कुछ दिन के प्रयोग से सब दोष निवृत्त हो जायेगे। और अपक्व भस्म मूत्र द्वारा बाहर निकल जायेगी।

प्रत्येक भस्म निर्माण करने की विधि उसके अपने विवरण मे लिखी जायेगी।

हम यहां पर उन्ही धातुओं की भस्मों की निर्माण विधि का उल्लेख करेगे, जिन का उल्लेख आयुर्वेद मे नही है। और जो युनानी चिकित्सा मे विशेष रूप से प्रयुक्त की जाती है

कुशता बैज़ा मुर्ग़ (कुक्कुट अण्ड भस्म)

कुक्कुट अण्डे को चूना और लवण के जल से धो कर भीतरी झिल्ली को पृथक कर ले। फिर एक चीनी के पात्र मे भर कर निम्बू रस इतना डाले कि तीन अगुल उपर रहे, जब निम्बु रस शुष्क हो जाये, तो निकाल कर दो मिट्टी के प्यालों के मध्य मे रख कर कपरोटी करके गजपुट की अग्नि देवे। शीतल होने पर निकाल कर गज पुट की दो और अग्नि देवे, शीतल होने पर निकाल कर बारीक पीस कर शीशी मे भर कर सुरक्षित रखे।

मात्रा—एक रत्ती, भस्म मक्खन या मलाई मे मिला कर प्रयोग मे लावे।

गुण—प्रमेह श्वेत प्रदर और मधुमेह मे लाभ कारी है।

(२) अण्डो की भीतर की झिल्ली को उपरिलिखित विधि से दूर करके आठ प्रहर तक आक के दूध मे खरल करके टिकिया बना-कर सुखाकर मिट्टी के प्यालो मे रखकर पन्द्रह सेर उपलों की आंच दें, इस प्रकार नौ आंचे देवे, तय्यार है।

मात्रा—दो चावल से चार चावल तक।

गुण—उपरोक्त।

हिजरलयहुद भस्म

हिजरलयहूद ५ तोले, कलमी शोरा १० तोले, मूली स्वरस ३ सेर, मिट्टी के प्याले मे नीचे एक छटांक कलमी शोरा डाले, और कलमी शोरे के उपर हिजरल यहूद के टुकड़े रखे, उपर बाकी का कलमी शोरा डाल दे, और आध सेर मूली का पानी डाल कर कपरोटी कर १० सेर उपलो की आच दे, शीतल होने पर निकाल कर फिर आधा सेर मूली का रस डालकर ५ सेर उपलों की आंच दे, इसी तरह से चार और पुट दे, कुल ६ पुटो मे सुन्दर भस्म बन जायेगी।

मात्रा—६ चावल भस्म मे दो रत्ती यव क्षार मिला कर जल के साथ प्रयोग मे लायें।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय की अश्मरी के टुकडे २ करके निकाल देता है।

फटकड़ी भस्म

फटकड़ी १ पाव लेकर वारीक करे, मिट्टी के प्याले मे आधी फैला कर उस पर १ तोला अफीम रख कर बाकी फटकडी चूर्ण ऊपर रख दे, अब कपरोटी कर ५ सेर उपलो की आच दे, शीतल होने पर निकाल ले।

मात्रा—४ चावल।

गुण—गर्भिणी की प्रवाहिका मे उत्तम है, सग्राही तथा स्तम्भक है।

हिजरलयहूद भस्म

बडे बिच्छु ५ नग लेकर उन को कूट कर मध्य मे १ तोला हिजरल-यहूद रख कर २ मिट्टी के प्यालों मे बन्द कर के कपरोटी कर के ५ सेर जगली उपलों की आंच दे, शीतल होने पर निकाल ले, और बिच्छु की राख समेत पीस ले।

मात्रा—१ रत्ती, शीरा तुख़म ख़रपजा, शीरा तुख़म खयारैन, शीरा गोक्षरू प्रत्येक ३ माशा, शरबत बजूरी दो तोला के साथ प्रयोग करे।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय की पथरी मे अत्यन्त उपयोगी है। वृक्क शूल तथा मूत्रावरोध मे भी लाभकारी है।

हिजरलयहूद भस्म (विशेष)

हिजरलयहूद अभ्रक भस्म, (जो दुगना कलमीशोरा डाल कर बनाई गई हो) बिच्छु प्रत्येक ३ तोला, इन को मूली पत्र स्वरस निथारे हुये मे ३—४ प्रहर खरल करे, तत्पश्चात ५ सेर उपलो की आच दे, इसी प्रकार मूली पत्र रस से भावित कर के ३० आच दे, परन्तु अन्त की पुट कम उपलों की हो।

मात्रा—४ चावल, योग्य अनुपान से ।

गुण—उपरोक्त ।

(३) ५ तोला हिजरलयहूद को मूली के पानी मे खरल करें, जब एक सेर मूली का रस समाप्त हो जाये, तो टिकिया बना कर कुलथी के नुगदा के मध्य मे रख कर ७ सेर उपलो की आच दे, शीतल होने पर निकाल ले ।

मात्रा—१ से २ रत्ती ।

गुण—उपरोक्त ।

दारचिकना भस्म

दारचिकना १ तोला, जयपाल बीज, लहुसन छिला हुआ, भल्लातक प्रत्येक ४ तोला को आक दूध मे खरल कर नुगदा तैयार करे, और इस मे दारचिकना की डली रख कर कपरोटी कर २ सेर उपलो की पुट दे, यदि एक पुट मे न हो, तो दो पुट दे ।

मात्रा—२ से ४ चावल ।

गुण—आतशक, सुजाक, आमवात मे उत्तम है ।

रसकर्पूर भस्म

रसकर्पूर की १ तोला की डली लेकर २—३ तह कपड़े मे लपेट कर १ पाव गुड़ के मध्य मे रख कर गरम भूभल मे दबा दें, गुड जल जाने पर भस्म निकाल ले इस भस्म को अग्नि पर डाल कर देखे, यदि धुआं दे, तो दुबारा ऐसा ही करे ।

मात्रा—२ चावल ।

गुण—दारचिकना भस्म की तरह ।

जमुरद भस्म

जमुरद १ तोला ले कर अर्क गुलाब मे खरल कर टिकिया बनायें, और एक प्याले मे घृतकुमारी का गूदा रख कर १० सेर उपलों की आंच दे, शीतल होने पर निकाल कर बारीक पीस लें ।

मात्रा—२ चावल भस्म, ज्वारश मस्तगी मे मिला कर प्रयोग करे।

गुण—हृदय को वल देता है, यकृत, वृक्क की दुर्वलता को नष्ट करता है, मूत्र की अधिकता तथा वार २ आने को रोकता है।

हिंगुल भस्म

हिंगुल रूमी की एक तोला की डली को कड़ाही में रख ऊपर मालकगनी चूर्ण डाल दे, कडाही मे नीचे आग जलाये, जव मालकंगनी जल जाये, तो निकाल कर आक जड़ रस मे दो प्रहर तक खरल करे, और टिकिया वना कर ७ नग भल्लातक के चूरे मे दबा कर कपरोटी कर दो सेर उपलों की आच दे। शीतल होने पर निकाल ले।

मात्रा—२ चावल।

गुण—वाजीकरण है, उत्तेजक तथा स्तम्भक है।

स्वर्ण भस्म

स्वर्ण बुरादा ३ माशा को गुलाव जड रस, काचनार जड छाल रस, नीम छाल रस, तुलसी रस के १०—१० तोला रस मे क्रमानुसार खरल करें, और गलोला वना कर प्यालो मे रख कपरोटी कर १०—१२ सेर उपलों की पुट दे, शीतल होने पर निकाल लें, लालिमा लिये मटियाले रंग की भस्म बनेगी।

मात्रा—दो चावल, मक्खन वा मलाई मे रख कर प्रयोग करे।

गुण—शरीर को वल देता है, वाजीकर, स्तम्भक तथा वीर्यप्रद है

अकीक भस्म

५ तोला अकीक को अर्क गुलाव मे ७ वार गरम करके बुझाओ, फिर एक पाव अर्क गुलाव मे खरल करे, कि अर्क समाप्त हो जाये, अब इस की टिकिया वना कर कमलगट्टा के नुगदा मे रख कर कपरौटी कर १० सेर उपलों की आंच दे, शीतल होने पर दुवारा खरल कर के आंच दे, इस प्रकार ३ आंच दे, पीस कर सुरक्षित रखे।

मात्रा—४ चावल, हृदय दुर्बलता के लिये ५ माशा दवालमस्क मे मिला कर, मस्तिष्क के लिये १ तोला खमीरा गाऊज़बान में और रक्तपित्त मे शरबत अंजबार से प्रयोग करे।

गुण—हृदय, मस्तिष्क को बल देता है, यक्ष्मा, रक्तपित्त में उत्तम है।

कतीरा भस्म

गोंद कतीरा उत्तम १ पाव लेकर कडछे मे गरम करें, जब खूब गरम हो जाये, तो मीठा तैल मे ४—५ बार बुझावे, एसा करने से कतीरा खूब फूल जायेगा, अब एक उपले पर अजवायन आध पाव फैला कर भाग पत्र चूर्ण की एक तह बिच्छावे, और उस पर कतीरा फैला कर ऊपर फिर भांग बिच्छा दे, इस के ऊपर अजवायन की तह दे कर उपला रख दे, और आग दे, शीतल होने पर निकाल लें।

मात्रा—दो रत्ती, मक्खन वा मलाई मे प्रयोग करे।

गुण—जीर्ण कास तथा यक्ष्मा कास में उत्तम है।

कुशता मरजान ज्वाहरवाला

मरजान १ तोला, याकूत ३ माशा, अम्बर, स्वर्णवर्क १—१ माशा, चांदी वर्क ३ माशा, जमुरद ५ माशा, सब को अर्क केवडा मे खरल कर के टिकिया बना ले, और प्यालों मे रख कपरौटी कर के १० सेर उपलों की आंच दे, शीतल होने पर निकाल पीस ले।

मात्रा—२ चावल, ख़मीरा गाऊजबान १ तोला के साथ।

गुण—दिमाग़ को बल देता है, जीर्ण प्रतिश्याय को नष्ट करता है, यकृत, हृदय दुर्बलता को दूर करता है, प्रमेह मे उत्तम है।

कुशता याकूत ज्वाहरवाला

याकूत सुरख ६ माशा, बुसद मरजान (प्रवाल) प्रत्येक ३ माशा, मोती १ माशा, स्वर्ग वर्क १॥ माशा, सब को १ सप्ताह तक अर्क गुलाब मे खरल कर शीशी मे रख ले, यदि अग्नि द्वारा भस्म करना चाहे, तो अर्क गुलाब और शराब मे खरल कर कुरस बना ले, और घृतकुमारी

का गूदा डाल कर कपरौटी कर २०सेर उपलों की आंच दे, इस तरह से १० बार खरल कर १० आंच दे, भस्म तयार हो जायगी।

मात्रा—४ चावल, खमीरा गाऊजबान १ तोला मे।

गुण—शरीर के सब अंगों प्रत्यगो को बल देता है, खफ़कान अपस्मार, उन्माद मे उत्तम हैं।

तकलीस सीमाब

शुद्ध पारद १ तोला को ५ सेर सोये के जल मे मिला कर मिट्टी के प्याले मे डाल कर आच पर रखे और थोडी २ देर बाद गन्धक की चुटकी डालते जाये, जब ९ माशा गन्धक समाप्त हो जाये, तो सीमाब (पारद) मकलस (भस्म) हो जायगा, यह पारद यदि आग पर डाला जाये और धुआं दे तो ठीक नहीं, इस को दुबारा उपरोक्त विधि से तयार करे, यह पारद आतशक मे लाभप्रद है।

(२) एक चीनी की प्याली मे १ तोला पारद और ५ तोला गन्धक का तेजाब मिला कर आंच पर रखे, तेजाब शुष्क होने पर उतार ले, यह पारद नेत्र रोगों मे उत्तम है।

तकलीस जस्त

जस्त को कडछे मे डाल कर आग पर रखे और थोडा २ बथुआ का पानी डालते रहे, जब यह फूल जाये, तो निकाल कर बथुए के पानी मे खरल करें, जिस कदर यह पानी जजब होगा, उत्तम है।

गुण—नेत्र रोग मे उत्तम है, मोतीया बिन्दु को रोकता है।

तकलीस कलई

वंग को मिट्टी के बरतन मे डाल कर आच पर रखे, और बकायन वा सुहजना के डण्डे से चलाते रहे, ५ घण्टा मे यह चूर्ण हो जायगा, इस को दुसरी योग्य औषध के साथ मिला कर प्रयोग करे।

मात्रा—सुजाकों मे १ रत्ती योग्य अनुपान से दे।

गुलकन्द

गुलकन्द उस मिश्रिण को कहते है, जो किसी वृक्ष के पुष्पों को शकर वा मधु में मिला कर बनाया जाता है, गुलकन्द साधारणतया ताजा पुष्पों से बनाया जाता है, परन्तु ताजा पुष्प न मिलने पर आवश्यकता पर शुष्क पुष्पो से भी बनाया जा सकता है।

विधि—ताजा पुष्प लेकर उन की सबजी तथा पत्र आदि दूर कर के त्रिगुणा खाँड मिला कर हाथ से खूब मसले, जब फूलो की पंखड़ीया और खाँड अच्छी तरह मिल जावे, तो मरतवान मे डाल कर मुख बन्द कर के दो सप्ताह तक धूप मे रख दे, परन्तु इस समय २—३ बार हाथो से मल कर उलट पलट करते रहे, बस गुलकन्द तैयार हो गया, इसे गुलकन्द आफताबी (सूर्यतापी) कहते है, यदि गुलकन्द को दिन मे छाया मे और रात्री को चांदनी मे रखे, तो यह महताबी (चन्द्र पुटी) कहलाता है, कभी २ गुलकन्द के बरतन को सप्ताह २ सप्ताह तक जल से भरे हुये बरतन मे रख देते है, उस को गुलकन्द आबी (जलीय) कहते है यदि गुलकन्द खाँड के बजाये मधु में बनाया जाये, तो इसे गुलकन्द असली (मधु वाला) कहते है।

शुष्क फूलो से गुलकन्द बनाने की विधि यह है, कि इन को अर्क गुलाब, अर्क बेदमुशक मे कुच्छ देर तक तर रखे, जब इन मे नमी अच्छी तरह मिल जाये, अर्थात् गीले हो जायें, तो उपरोक्त विधि से खाँड मिला कर गुलकन्द बनावे।

गुलकन्द बनफ़शा

बनफशा के ताज़े पुष्प १ पाव ले कर ३ पाव खाँड मे हाथ से मसले, १ सप्ताह धूप मे रखने के बाद प्रतिदिन दो तोला योग्य अनुपान से प्रयोग करे।

गुण—मस्तिष्क का शोधन करता है, आन्त्र को शुद्ध करता है।

गुलकन्द खयारशन्बेरी

अम्लतास के ताजे फूलों को वनफशा के पुष्पों की तरह खाँड मिला कर गुलकन्द तैयार करें।

गुलकन्द

गुलाव पुष्प ताज़ा १ पाव लेकर ३ पाव खाँड मिलाये, और थोड़ा अर्क गुलाव छिड़क कर हाथो मे मल कर धूप मे रखे, २ सप्ताह के वाद प्रयोग करें।

मात्रा—४ तोला गुलकन्द, १२ तोले अर्क सौंफ अर्धोष्ण से ले।

गुण—आमाशय, दिमाग को वल देता है, विबन्ध दूर करता है

गुलकन्द सेवती

गुल सेवती १००, खाँड २९ तोला, सेवती पुष्प पर अर्क बेदमुश्क छिड़क कर हाथ से मले और खाँड मिला कर ४ दिन तक छाया में रखे

मात्रा—२ तोला गुलकन्द, १२ तोला अर्क गाऊजवान से ले।

गुलकन्द महताबी

चांदनी पुष्प २००, खाँड २९ तोला मे थोड़ा अर्क गुलाव छिड़क कर खूब हल करे, और रात्री को चन्द्रमा की चांदनी मे रखे, ४ दिन के पश्चात प्रयोग करे।

गुण—हृदय डूबना, डरना, घबराहट तथा उन्माद में उपयोगी है।

लबूब (Confection)

लबूव का अर्थ मगजयात है, परन्तु चिकित्सा क्षेत्र मे उस बल प्रद औषध को कहते है, जिस मे मगजयात अधिक मात्रा मे डाले जाये, इन के बनाने की विधि माजून सदृश है, परन्तु इस का पाक कुच्छ पतला होता है, मगजयात मिलाने की विधि यह है कि इनको प्रथम बारीक पीस लीया जाये, फिर इनको घी में भून कर औषध मे मिला दिया जाये।

लबूबल सरार

कस्तूरी ६ रत्ती, दारचीनी, वालछड़, तगर, जावित्री, कवाबचीनी, नागरमोथा, तज, पिप्पली, अगर, जायफल, केशर, अम्बर प्रत्येक ४।। माशा, सोंठ, वोजीदान, कुठ मीठी, दरूनज अकरवी, मिरच सफेद, खशखाश सफेद, दूको, गोक्षरू दूध से भावित, हव्व वलसान, हव्वलवान, मगज हव्वलजम, मगज खरबूजा, तुखम खयारैन, मगज़ तुखम गाजर, तुखम प्याज, शलगम वीज, तुखम अस्पस्त, तुखम तरहतीजक, सोये बीज, गन्दना वीज, हालों वीज, प्रत्येक ७ माशा, शकाकल, पानजड, खसयालसहलव, दोनो वहमन, दोनों तोदरी, वज तुरकी, इन्द्रजौ, सकनफूर प्रत्येक १३।। माशा, नारजील (खोपा), मगज हबतलखिज़रा, मगज वादाम मधुर, मगज़ पिस्ता, मगज चलगोज़ा, मगज वनौला, तिल छिलके रहित प्रत्येक २ तोला, सव को कूट छान कर औषध के मान से त्रिगुणा मधु का पाक कर के औषध मिला कर सुरक्षित रखे।

मात्रा—६ माशा, दूध के साथ प्रयोग करे।

गुण—यह लबूब वाजीकरण है, वीर्य प्रद है, दिल दिमाग और सब शारीरक अग प्रत्यंग को वल देता है, काम शक्ति को बढ़ाता है, वीर्य को उत्पन्न करता है।

लबूब बारद

मगज़ वादाम मधुर छिलका रहित, खशखाश वीज श्वेत प्रत्येक १।।। तोला, मगज तुखम मधुर कद्दू, सोंठ, पान जड़, शकाकल प्रत्येक १।। तोला, मगज तुखम खरपजा, ककड़ी बीज, मगज तुखम खीरा, खुरफा बीज प्रत्येक १०।। माशा, कतीरा ७ माशा, मगज चलग़ोजा, दोनो तोदरी, गाजर वीज, हालों बीज प्रत्येक ३।। माशा, सव औषध को कूट छान कर तुरंजवीन १ सेर जल मे घोल कर नियार कर सम भाग खाँड मिला कर पाक करे, और इसी मे बाकी औषध चूर्ण मिला कर लबूब वनावे।

मात्रा—७ माशा

गुण—पित्त के कारण उत्पन्न शीघ्रपतन, प्रमेह, स्वप्नदोष, इत्यादि में लाभ प्रद है ।

लबूब सग़ीर (लघु)

मगज बादाम मधुर, मगज अखरोट, हिब्बलख़िजरा, मगज चलगोज़ा, मगज़ हब्बुलजलम, फिन्दक, पिस्ता, नारियल ताजा, मगज हब्बकिलकिल, ख़शख़ाश सफेद, दोनों तोदरी, तिल छिलके रहित, दोनों वहमन, तज, सोंठ, पिप्पली अकरकरा, कबाबचीनी, शकाकल, पानजड, जरजीर बीज, प्याज बीज, शलगमबीज, अस्पस्त बीज, हालों बीज, सब सम भाग ले कर बारीक चूर्ण करे, त्रिगुणा मधु का पाक कर के औषध डाल लबूब बनावे ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय को बल देता है, वाजीकर है, तथा वीर्य को बढ़ाता है ।

लबूब कबीर (बृहत)

ख़सतीयालसहलब, नारियल ताजा, मगज शिर चिड़ा (चटक) घरेलु भुना हुआ, ख़शख़ाश श्वेत प्रत्येक तीन तोला, मगज पिस्ता, मगज़ बादाम, मगज़ फिन्दक, हिब्बतलखिजरा मगज, मगज अखरोट, मगज़ चलगोज़ा, मगज हब्बलजलम, माही रोबीयान, पानजड़, शकाकलमिश्री, दोनों वहमन, दोनो तोदरी, सोंठ, तिल छिले हुये, दारचीनी प्रत्येक १॥ तोला, सुरंजान, बोजीदान, पोदीना शुष्क प्रत्येक १ तोला २ माशा, बालछड, नागरमोथा, लौंग, कबाबचीनी, इन्द्रजौ, दरूनजअकरबी, कचूर, हब्बकिलकिल, गाजर बीज, प्याज बीज, मूली बीज, शलगम बीज, अस्पस्त, हालो बीज, प्रत्येक १०॥ माशा, जायफल, जावित्री, छडीला, पिप्पली प्रत्येक ७ माशा, केशर, मस्तगी, मायाशुत्रअहराबी प्रत्येक १३॥ माशा, ऊद ख़ाम ९ माशा, अम्बरशहब ४॥ माशा, कस्तूरी २। माशा, स्वर्ण वर्क ३० नग, वर्क चांदी ५० नग, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुण मधु का पाक कर औषध मिला लबूब तैयार करे ।

मात्रा—६ माशा, दूध से ।

गुण—यह अत्यन्त उत्तम बल प्रद लबूब है, अत्यन्त वाजीकरण तथा वीर्य प्रद औषध है, उत्तेजक, स्तम्भक तथा शरीर पोषक औषध है

लहूकात (चटनी-अवलेह) (Linctus)

लहूक (चटनी) भी एक प्रकार का अवलेह है, जो माजून से पतला और शरबत से गाढा होता है और आसानी से चाटा जासकता है, यह साधारणतया कास, श्वास जैसे रोगों मे प्रयुक्त किया जाता है—

निर्माण विधि—औषध को कूट छान कर खाँड वा मधु औषध से ५ गुणा लेकर पाक कर के उस पाक मे औषध चूर्ण मिला लेवे, परन्तु यदि लहूक मे क्वाथ की औषध हो, तो इन का क्वाथ कर के इस क्वाथ जल मे खाँड वा मधु मिला कर पाक करे, पाक समाप्ति पर औषध चूर्ण अच्छी तरह मिला लेवे, यदि लहूक मे मगज अम्लतास भी हो, तो इसे न उबाले, परन्तु इसको बाकी औषध क्वाथ मे मल कर छान लेवे, और मिश्री मिला कर पाक करे ।

लहूक नज़्ली आब तरबूज़ वाला

खशखाश बीज, गोद कीकर, कतीरा, निशास्ता प्रत्येक १४ माशा, मगज कद्दू, मगज खयारैन, खुरफा बीज, काहू बीज प्रत्येक १॥ तोला, मगज बादाम मधुर ३ तोला, रोगन बादाम ६ तोला, तुरजबीन १४ तोला, तरबूज जल १० तोला, मगज कद्दू से मगज बादाम तक जिस कदर औषध है, इन मे जल डाल कर घोट कर इनका शीरा निकाले, और तुरजबीन हल कर के छान ले, फिर तरबूज जल इस में मिला कर पाक करे, और खशखाश बीज से निशास्ता तक की औषध का बारीक चूर्ण और बादाम तैल मिला कर लहूक तैयार करे ।

मात्रा—५—५ माशा, दिन मे कई बार चाटे ।

गुण—यक्ष्मा, रक्तपित्त, तथा वातज कास मे उत्तम है ।

लहूक आब नेशकर वाला

लुआब इसपगोल, लुआब बहीदाना, लुआब खतमी बीज, अनार रस मधुर, अम्ल अनार रस, खयार जल, कद्दू जल, खुरफा पत्र जल,

गन्ने का ताजा स्वरस प्रत्येक ६—६ तोला, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, मगज़ बादाम मधुर, आक शकर, ख़शख़ाश बीज, प्रत्येक ७।। तोला, खॉड आध सेर, शुष्क औषध को कूट छान कर लुआबो तथा जलो मे खाँड मिला कर पाक कर के औषध चूर्ण को मिला दे, और लहूक तैयार करें।

मात्रा—७ माशा, अर्क गाऊजवान मे मिला कर।

गुण—यक्ष्मा, रक्तपित्त तथा शुष्क कास मे उपयोगी है।

लहूक बहीदाना

वहीदाना, इस्पगोल, ख़तमी बीज प्रत्येक १।। तोला का लुआब निकाले, और इस के भीतर मधुर अनार, ककड़ी, और घीया का जल, खुरफा पत्र का फाड़ा हुआ जल प्रत्येक १० तोला, खॉड आध सेर मिला कर पाक करे, पाक सिद्धि पर गोद कीकर, गोद कतीरा, मगज बादाम मधुर छिले हुये, ख़शख़ाश बीज प्रत्येक १—१ तोला, रबुलसूस, शकरतैग़ाल प्रत्येक ६ माशा का चूर्ण कर मिला देवे।

मात्रा—५—५ माशा, दिन मे कई वार चाटे।

गुण—शुष्क कास, ज्वरयुक्त रक्तपित्त मे लाभ कारी है।

लहूक ख़शख़ाश

मुलैठी १। तोला, ख़तमी बीज, वहीदाना प्रत्येक १।।। तोला, रात्री को एक सेर जल मे भिगोवे, प्रात इतना उबाले कि आधा भाग रह जाये, इस को छानकर खॉड आध सेर मिलाकर पाक करे, तत्पश्चात मगज़ वहीदाना, गोद कीकर, कतीरा सफेद, ख़शख़ाश बीज श्वेत और कृष्ण प्रत्येक १—१ तोला, बारीक पीस कर मिलावे, दिन मे कई वार थोड़ा २ चाटे।

गुण—खांसी, रक्तपित्त, ज्वर जीर्ण ज्वर मे उत्तम है।

लहूक सपस्तान

सपस्तान (लसूडे) ५० नग, उन्नाब २० नग, पोस्त ख़शखाश २ तोला, मधुयष्टि १ तोला, ख़तमीबीज सफेद १ तोला, ख़यारैन बीज प्रत्येक ४ माशा, वहिदाना ३ माशा, सब को दो सेर जल मे उबाल

कर छान ले, खाँड औषध से त्रिगुणा लेकर पाक करें, पाक सिद्धि पर जौ छिले हुये, मगज बादाम छिले हुये, खश्खाश (बीज श्वेत) भुना हुआ १—१ तोला, गोद कीकर, गोद कतीरा, खुब्बाजी ३—३ माशा चूर्ण कर के पाक मे मिलावे ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—यह लहूक कफ स्रावी है, और कास, प्रतिश्याय मे उत्तम है।

लहूक सपस्तान खयारशन्वरी

उन्नाव, लसड़े १५—१५ नग बनफशा ९ माशा, खतमी ५ माशा, सनाय १।। तोला, शीरखिशत २।। तोला, मगज अम्लतास ४।। तोला, खमीरा बनफशा ३ तोला, तुरंजबीन ६ तोला, मधुर बादाम तैल ५ माशा, मिश्री १।। तोला, प्रथम सनाय तक की औषध को ३ पाव जल मे उबाले, आधा भाग रहने पर छान ले, इन मे शीरखिशत, मगज अम्लतास-तुरजबीन-खमीरा मिश्री मिलाकर छान कर मध्य आच पर पाक करे-गाढ़ा होने पर बादाम तैल मिला कर सुरक्षित रखें।

मात्रा—१—१ तोला प्रात साय अर्क गाऊजबान से ।

गुण—निमोनीया, खासी मे उपयोगी है, विबन्ध नाशक है ।

लहूक कतान

लुआब अलसी आध सेर मे खाँड, मधु उत्तम प्रत्येक आध सेर मिला कर पाक करे ।

मात्रा—१ तोला, अर्क गाऊजबान के साथ प्रयोग करे ।

गुण—कफज कास तथा श्वास मे उत्तम है ।

(२) अलसी बीज भुने हुये, मधुर बादाम छिले हुये १—१ तोला, बारीक पीस कर ४ तोला मधु मे मिला कर रखे, दिन मे थोडा थोडा कई बार चाटे ।

गुण—उपरोक्त ।

लहूक मुतहदिल

मगज बादाम मधुर, मगज तुख्म कद्दु मधुर, गोंद कीकर प्रत्येक १०।। माशा, कतीरा, निशास्ता, रबुलसूस, प्रत्येक १।। तोला, सब को

कूट छान कर खाँड ६ तोला का पाक कर औपध चूर्ण डाल कर लहूक तैयार करें ।

मात्रा—१ तोला, अर्क गाऊजवान के साथ ।

गुण—प्रतिश्याय, कास, पित्तज कास मे उत्तम है ।

लहूक मसीह

ख़तमी वीज, गाऊजवान पत्र, खशख़ाश वीज १—१ तोला, लसूड़े २ तोला, वहीदाना, मधुयष्टि प्रत्येक ६ माशा, इन को त्रिगुणा जल मे उवाले, जव आधा भाग रह जाये तो छान कर १।। सेर खाँड मिला कर पाक करे, पाक सिद्धि पर रवुलसूस, गोद कीकर, गोंद कतीरा, प्रत्येक ६ माशा का चूर्ण कर के मिलावे ।

मात्रा—२ तोला, आवश्यकतानुसार चटावे ।

गुण—प्रतिश्याय तथा प्रतिश्याय जनित कास मे उत्तम है ।

लहूक नजली

मधुयष्टि १।। तोला, ख़तमी वीज ३ तोला, वहीदाना २ तोला, सव को रात्री को जल मे भिगोवे, प्रात उवाल कर छान ले, फिर त्रिगुणा खाँड मिला कर पाक करें, और मगज वहीदाना, गोद कीकर प्रत्येक १०।। माशा, कतीरा १४ माशा, ख़शखाश वीज श्वेत तथा कृष्ण प्रत्येक १।। तोला, वारीक चूर्ण कर भली प्रकार पाक मे मिलावे ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—प्रतिश्याय तथा कास मे लाभकारी है ।

लहूक बादाम

मगज वादाम छिलका रहित, मगज कदू मधुर १—१ तोला ५।। माशा, गोंद कीकर, गोद कतीरा, निशास्ता, रवुलसूस प्रत्येक दो तोला ११ माशा, खाँड सफेद ५ तोला १० माशा, सब को कूट छान कर वादाम तैल मधुर से मिश्रित करे और अर्क गुलाब मे गूँद कर लहूक वनावे, कुच्छ योगो मे मगज वहीदाना १ तोला ५।। माशा भी डाला हुआ है ।

गुण—स्वरयन्त्र के खरखरेपन और कास में उत्तम हैं ।

लहूक जूफा

जूफा शुष्क, सोसन जड़ आसमानी रंग की प्रत्येक ७० माशे लेकर १।। सेर जल मे क्वाथ करे, आधा भाग रहने पर आध सेर खाँड मिला कर पाक करे, यदि सोसन जड न हो, तो उस के स्थान पर कलौंजी डाले।

मात्रा—दो तोला ।

गुण—जीर्ण कास तथा सास फूलने मे उत्तम है ।

लहूक सनोवर

मेथी को जल मे भिगो कर छील डाले और कूट कर शीरा निकाले, अव अगूर का शीरा वा मधु द्विगुण मिला कर उबाले, गाढा होने पर मेथी के सम भाग मगज चलगोजा (छिला हुआ) का चूर्ण मिला कर अच्छी तरह् पाक करे ।

मात्रा—३ तोला ।

गुण—पुरानी कास, श्वास, स्वर भेद में उपयोगी है ।

लहूक तबाशीर

गोंद कीकर, निशास्ता, खशखाश बीज श्वेत प्रत्येक ७० माशा, मगज तुखम कद्दू मधुर, मगज खयारैन प्रत्येक ३५ माशा, वशलोचन १४ माशा, ख़बाजी बीज, ख़तमी बीज प्रत्येक १०।। माशा, सब को बारीक कर के आवश्यकता अनुसार मधु और बादाम तैल मिश्रित कर लहूक बनावे ।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—फुप्फुस तथा सीने के व्रण, ज्वर तथा शुष्कता के लीये उत्तम है ।

(२) वशलोचन १४ माशा, मगज तुखम ककड़ी, मगज चलगोज़ा, गोंद कीकर, बडी इलायची, प्रत्येक २४।। माशा, निशास्ता, कतीरा, प्रत्येक ७ माशा, खाँड १७।। माशा, सब को कूट छान कर बादाम तैल मे मिश्रित कर मधु का पाक कर के लहूक तयार करे ।

मात्रा—१ से २ तोला ।

गुण—पित्त की उग्रता को कम करता है, सिल, फुप्फुस के व्रण तथा पित्तज कास मे लाभ कारी है ।

लहूक खसक

ताजा गोक्षरू ले कर क्वाथ करे, फूल जाने पर निचोड कर छान ले, फिर इस पानी मे और ताजा गोक्षरू डाल कर क्वाथ करे, फूल जाने पर निचोड कर छान ले, फिर इसी प्रकार तीसरी बार भी करे, अब इस पानी मे सोंठ २ तोला ८ माशा वा पिप्पली ३॥ माशा मिला कर मधु तथा खाँड के साथ पाक करे, लहूक तैयार करे।

मात्रा—२ तोला।

गुण—मूत्रल है, अशमरी मे उपयोगी है, तथा वाजीकर है।

मालजोबन (Whey)

मालजोबन दूध के पानी को कहते है, निर्माण विधि इतनी है, कि ऐसी बकरी का दूध ले, जिसने २ से अधिक बच्चे न प्रसव किये हो, ४० दिन प्रसवोपरान्त उस का दूध ग्रहण करे, बकरी को मको, कासनी तथा पितपापडा खाने को दे, इस दूध को कलईदार देगची मे उबाले, और निबूँ रस, सत निम्बु, वा सिरका थोडा सा डाल दे, दूध फट जायगा, फट जाने पर उत्तार कर मोटे कपडे मे से छान ले, यह छना हुआ जल ही मालजोबन कहलाता है, पहिले दिन ७ तोला शरबत उन्नाब २ तोला मिला कर पिलाये, और इस के पश्चात १—१ तोला मालजोबन और थोडाथोडा शरबत बढाते रहे, ताकि मालजोवन की मात्रा २१ तोला और शरबत की ४ तोला हो जाये, इसी तरह क्रमानुसार कम करके प्रारम्भिक मात्रा पर ले आये, और तीन दिन पीने के पश्चात छोड दे। यह मालजोबन उन्माद, उपदंश, कुष्ठ तथा अन्य रक्त दोषों मे प्रयोग कराया जाता है।

मुरब्बा (Preserve)

प्रत्येक मुरब्बे की विधि उस के साथ ही लिख दी गई है, परन्तु साधारणतया जिस फल का मुरब्बा डालना हो, वह पक्व हो, उस को छील कर वा बिना छीले जल मे उबाले, कि वह थोडा मृदु हो जाये, निकाल कर फैला दे, फिर खाँड के पाक मे डाल दे, दूसरे दिन यदि पाक पतला हो जाये, तो दुबारा अग्नि पर चढ़ा कर पाक कर लें।

मुरब्बा आमला

आमला सबज ताजा को जल मे उबाले, आमला के नरम होने पर थोडा शुष्क कर के खाँड के पाक मे डाले, दूसरे दिन पाक को आमलो समेत पकावे, कि पाक ठीक हो जाये, तीसरे दिन फिर देखें कि यदि पाक पतला हो जाये, तो फिर अग्नि पर चढ़ा कर पाक ठीक कर ले।

मात्रा—१ नग मुरब्बा, जल से धो कर चाँदी वर्क लपेट कर खाये।

गुण—मस्तिष्क, आमाशय, हृदय तथा यकृत को बल देता है, वमन, अतिसार मे उपयोगी है, शिरोभ्रम मे उत्तम है ।

मुरब्बा अन्नास

अन्नास को छिलको तथा काटो से रहित कर के गोल २ काशे छील ले, जल मे उबाल कर नरम कर ले, और खाँड के पाक मे काशे डाल कर यथाविधि मुरब्बा तैयार करे।

मात्रा—१ से २ तोला।

गुण—खफकान, शिरोभ्रम मे उत्तम है, हृद्य है।

मुरब्बा बही

बही को छिलके से रहित कर के मुरब्बा आमला की विधि अनुसार मुरब्बा तैयार करे।

मात्रा—दो तोला, प्रात को प्रयोग करे।

गुण—हृदय, मस्तिष्क को बल देता है, सग्राही तथा पाचक है।

मुरब्बा बेलगिरी

विलव पक्व तथा बड़े लेकर छिलके रहित करे, और गोल काशें काट ले, और एक देग में आधा भाग तक जल भर कर देग के मुख पर साफ कपडा बाधे, और उस कपडे पर काशे रख कर किसी ढकन से बन्द कर के नीचे आग जलावे, ताकि जलीय वाष्प से काशे नरम हो जाये, इन काशो को खाँड के पाक मे डाल दे, यदि दूसरे दिन पाक पतला हो, तो काशो को पृथक कर के फिर पाक कर ले, और काशें डाल दें।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—प्रवाहिका तथा अतिसार मे उत्तम है ।

मुरब्बा पेठा

इस को भी छिलके तथा वीज रहित कर काशे काट कर बेलगिरी के मुरव्वे विधि अनुसार मुरव्वा वनावे ।

मात्रा—दो तोला ।

गुण—दिल दिमाग को वल देता है ।

मुरब्बा जंजबील (शुण्ठी मुरब्बा)

अद्रक ताजा तथा मोटी रेशा विना लेकर ऊपर से छिलका उतार ले, और लवण के पानी मे उवाले, मृदु होने पर निकाल कर खॉड के पाक मे डाले, दूसरे दिन यदि पाक पतला पड़ जाये, तो दुबारा पाक कर ले ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—कफ दोष को निवारण करता है, वात दोष, वातशूल मे उत्तम है, वृक्कों को वल देता है ।

मुरब्बा सेब

सेव का मुरव्वा भी पेठे के मुरव्वे की तरह बनावे ।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—दिल दिमाग को विशेष कर वल देता है ।

मुरब्बा गाजर तथा मुरब्बा नाशपाती

इन दोनो फलो के मुरव्वे वही की विधि अनुसार बनावें ।

गुण—दोनो मुरव्वे दिल दिमाग को वल देते है ।

मुरब्बा हरीतकी

मुरव्वा आमला की तरह वनावे, यदि हरीतकी शुष्क हो, तो पहिले इसे कुछ दिन जल मे भिगो रखे, फिर दूसरे पानी मे डाल कर उवाले, नरम होने पर गूंद कर घी मे अर्धभुनी करे, फिर स्निगधता दूर कर के खांड के पाक मे डाल दे ।

मात्रा—१ वा दो नग जल से धो कर रात्री को प्रयोग करें।

गुण—आमाशय, दिमाग तथा नेत्रो के लिये उत्तम है। विवन्ध नाशक है।

मुरब्बा बादाम

ताजा बादाम छील कर मधु मे २—४ उबाल दे, ३—४ दिन पश्चात ताजा मधु आवश्यकतानुसार डाल कर जोश दे कर मरतबान मे रख दे।

मात्रा—१ तोला।

गुण—खांसी और सीना की खरखराहट मे लाभप्रद है।

मुरब्बा तरंज

बिजौरा निंब के छिलके जल मे उबाल ले, मृदु होने पर निकाल कर पानी निचोड़ दे, और खॉड के पाक मे डाल दे।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—दिल तथा आमाशय को बल देता है, दीपक पाचक है।

मरहम (Ointments)

यह एक अर्धघन मिश्रण है, जिस मे मोम, घृत, सरसो तैल, तिल तैल मे औषध चूर्ण मिलाया जाता है।

निर्माण विधि—प्रथम मोम और तैल को पिघलाया जाता है, और बाकी औषध का बारीक चूर्ण इस मे मिला कर शीतल होने तक हल करते रहते हैं, यदि मरहम मे गुग्गुल, साबुन, गन्दा बहरोजा आदि हो, तो उनको भी मोम तैलके साथही पिघला लेना चाहिये, यदि अण्डे की जरदी वा सफेदी भी मिलानी हो, तो आगसे उतारकर शीतल अवस्था मे इसे मिलावे, लुआबदार वस्तुओं के लुआब को उष्ण अवस्था मे थोड़ा २ कर के डाले, और इतना पकावे कि वह मरहम जैसा ही नरम रहे।(ऐसा न हो कि अधिक आच के कारण जलजा)।

मरहम आतशक

चोबचीनी १॥ माशा, हिंगुल ३ तोला, नीलाथोथा शुद्ध ६ तोला, इन का बारीक चूर्ण करे, अण्डो को गरम राख मे थोड़ी देर दबा कर

गरम कर ले, और जरदी निकाल कर इसी जरदी मे ऊपर का बारीक चूर्ण मिला कर खूब घोट दे ।

मात्रा—नीम के जल से धो कर लगावे ।

गुण—आतशक के व्रण को शीघ्रता से भरता है ।

मरहम उशक

राई, समुद्र झाग, जरावन्द लम्बे, गुग्गुल, उशक, गन्धक आवलासार, अंजरा बीज २—२ तोला, पुराना तैल जेतून १२ तोला, प्रथम उशक, गुग्गुल को ज़ैतून तैल मे हल करे, फिर मोम डाल कर अग्नि पर पिघलावे, और इस मे औपध चूर्ण मिला कर खूब घोट दे ।

रोगन जैतून और गुलाव तैल मे मिला कर लगावे ।

गुण—प्लीहा की शोथ पर लगावे, कण्ठमाला मे भी उपयोगी है ।

मरहम ववासीर

करनब पत्र आवश्यकतानुसार ले कर जल मे डाल कर क्वाथ करें, गल जाने पर पत्रो को निकाल कर थोडी अफीम डाल कर खूव कूट ले, और तैल से स्निगध कर के अर्धोष्ण मस्सों पर बाधे ।

गुण—यह मरहम अर्शमस्सों को नष्ट करती है ।

(२) रसोंत १॥ तोला, छोटी इलायची बीज ४ तोला, दोनों को खरल कर ककरोदा रस मे हल कर के मस्सो पर बाधे।

गुण—उपरोक्त ।

मरहम जदवार

जदवार ४॥ माशा, गन्दाबहरोजा १॥ तोला, हलदी, देवदारू, मधुर्यष्टि, मेहन्दीपत्र, भड़भूंजे की छत का धुआ प्रत्येक ३ तोला, कीकर वृक्ष छाल, नीम छाल, रत्नजोत ५—५ तोला, वहरोजा के सिवाये बाकी औषध को खूब वारीक कर के ढाई सेर जल मे इस कदर जोश दे, कि दो तिहाई जल शेष रह जाये, अब छान कर तिल तैल ५६ तोले डाल कर दुवारा उवाले, जल शुष्क होने पर और केवल तैल मात्र शेष रह जाने पर मोन ६ तोला डाल कर पकावे, अर्धोष्ण कर के लगावे ।

गुण—व्रण को भरता है, चोट, बद्ध, तथा गिलटियो के लिये उपयोगी है । प्लैग की गिलटी के लिये भी उत्तम है ।

मरहम ख़ास

कमीला ५ तोला, मुरदा संग १ तोला, कर्पूर ६ माशा, मेंहन्दी तैल आध सेर, सफेदा काशगरी १ तोला, प्रथम तैल को कडाही मे डाल कर कमीला मिलाये, और ५ मिण्ट तक मृदु आच पर रख कर मुरदा सग मिलाये, फिर आंच से उतार कर कर्पूर और सफेदा डाल कर नीम के डण्डे से इतना घोटे, कि सब एक जीव हो जाये, आवश्यकता पर गर्भाशय को शुद्ध कर के प्रयोग करे।

गुण—गर्भाशय शोथ, व्रण तथा गर्भाशय के अन्य विकारों मे उत्तम है।

मरहम दाख़लीयून

पुराना रोगन जेतून १२ तोला, मुरदा संग ६ तोला, ख़तमीबीज, कनोचाबीज, अलसी, इसपगोल, मेथी प्रत्येक २ तोला, बीजों को रात्री को जल मे भिगोवे, प्रात को इन का लुआब निकाले, अब मुर्दासंग को बारीक कर के रोगन जैतून मे शामिल करे, और आग पर चढ़ा कर मुरदासंग को लकडी से अच्छी तरह तैल में मिलावे, फिर शीतल कर लुआव शामिल करके पकावे, तैल मात्र शेष रहने पर छान ले।

प्रयोग विधि—मरहम को सबज़ कासनी स्वरस, मको रस, सफेदी अण्डा मे मला कर दाई से योनी के भीतर रखवाये।

गुण—गर्भाशय शोथ तथा उसकी सख़ती मे बहुत ही उपयोगी है।

मरहम राल

मोम सफेद, कर्पूर, राल, कत्थ प्रत्येक १॥ तोला, सब का पृथक २ चूर्ण करे, मोम को गौघृत ६ तोला मे पिघला कर पहिले राल चूर्ण डाले, इस के पश्चात कत्थ, कर्पूर डालकर भली प्रकार हल करे, नीम के जल से धोकर प्रयोग करे।

गुण—दुष्ट मांस को दूर कर के आतशक तथा नासूर के व्रण को भरता है।

मरहम रसल

जाऊशीर, जंगार, गन्दा वहरोजा, मुर ७—७ माशा, कुन्दर, ज़रावन्द लम्वे प्रत्येक १०।। माशा, गूग्गुल १४ माशा, मुरदासग १६ माशा, उशक २ तोला, मोम सफेद, रातीनज १४—१४ माशा, शुष्क औषध का चूर्ण करे और गोंददार औषध को मोम मे पका लें, वाद मे रोगन जैतून आवश्यकतानुसार डाल कर मरहम तैयार करे।

गुण—यह मरहम सव प्रकार के व्रणो को भरता है, कण्ठमाला प्लैग, अर्श, भगन्दर सव मे लाभप्रद है।

मरहम काफ़ूरी

सफेदा काशगरी, तैलसरसों, मोम सफेद, अण्डे की सफेदी, कर्पूर प्रत्येक ४ तोला, मोम को तैल मे पकावे, फिर कर्पूर और सफेदा को पीस कर तैल में हल करे, शीतल होने पर अण्डे की सफेदी शामिल करे, नीम जल से धो कर लगावे।

गुण—प्रत्येक व्रण के लिये अत्यन्त उत्तम है, जलन को दूर करता है।

मरहम नासूर

गुलाव तैल ३ तोला, हलदी, मुरदासग ३—३ तोला, मोम सफेद ६ तोला, हलदी, मुरदासग को गुलाव तेल और मोम मे मिला कर अग्नि पर रखे, और थोडा सा जल डाल कर उवाल दे, जल शुष्क होने पर और औषध चूर्ण के भली प्रकार हल होने पर घोट कर सुरक्षित रखे—

नीम के जल से धोकर मरहम को वती मे लपेट कर नासूर मे रखे।

गुण—नासूर मे उपयोगी है।

मरहम कृष्ण

नीमपत्र २ तोला ले कर सरसों तैल मे जला कर निकाल ले और ३।। तोला सफेदा काशगरी डाल कर नीम के दस्तै से रगड़े, गाढ़ा होने पर व्रण पर लगावे।

गुण—सब प्रकार के । व्रणो के लीये अत्यन्त उत्तम है।

मरहम रत्नजोत

गुलाब तैल २० तोला मे २१ माशा रत्नजोत मिला कर आग पर रखे, सुरख होने पर मोम २१ माशा और नीलाथोथा १ माशा, रोगन जैतून १०॥ माशा मिला कर उतार ले तैयार है।

गुण—उपरोक्त ।

मरहम ख़नाजीर

राल, रत्नजोत २—२ तोला, नीलाथोथा, मुरदासग प्रत्येक १० माशा, मोम ४ तोला, तिल तैल ८ तोला, प्रथम मोम को तैल मे पिघलावे, फिर बाकी औषध का चूर्ण डाल कर खूब घोट कर एक जीव कर ले।

कण्ठमाला की ग्रन्थियो पर लगा कर मालिश करे ।

गुण—कण्ठमाला मे उत्तम है ।

मरहम महलल

बाबूना पुष्प, नाखूना, मको शुष्क, बरजासफ, प्रत्येक ५ तोला, कर्पूर १॥ तोला, अफीम ३ माशा, मोम सफेद, तिल तैल, १—१ पाव, पहिले मोम तैल को पिघला कर औषध चूर्ण मिला कर घोट ले और अन्त मे कर्पूर, अफीम मिला कर एक जीव कर ले।

गुण—परम शोथनाशक है ।

इस्तमाली कदीम

मरहम मुहलल, सबज मको स्वरस, कासनी स्वरस फाड़ा हुआ तिल तैल १—१ तोला मिला ले, आवश्यकता पर रूई लिप्त कर के, गर्भाशय मे रखें ।

गुण—गर्भाशय शोथनाशक है।

इस्तमाली जदीद

गलस्रीन २ सेर, असरोल चूर्ण १ पाव दोनो को मिला कर उप-रोक्त विधि से प्रयोग करे ।

गुण—उपरोक्त ।

इस्तमाली कर्पूर

मरहम काफूरी, मरहम मुहलल, तिल्ल तैल सम भाग लेकर मिला कर उपरोक्त विधि से प्रयोग करे।

गुण—गर्भाशय शोथनाशक है।

मरहम नायाब

वेजलीन, एकसट्रेकट वेलाडोना (Extract Belladona), कर्पूर, नीम तैल, प्रथम नीम तैल को और वजलीन को पिघलावे, फिर वाकी औषध मिला कर एक जीव कर ले :—

मस्सों पर लगा कर सेक दे।

गुण—अर्श के मस्सो पर लाभ दायक है, शोथ तथा पीडा नाशक है।

मरहम आतशक

पारद, गन्धक, नीलाथोथा, मुरदासग, छालीया सफेद जली हुई, कत्थ प्रत्येक ३।। माशा, गौ घृत ३५ माशा, सब को वारीक कर के घृत में मिला कर एक जीव करे।

गुण—आतशक के नये अथवा पुराने व्रणो में उत्तम है।

मरहम हो जोह

अनजरूत, सफेदा प्रत्येक ३।। माशा, रत्नजोत ७ माशा, मोम सफेद १०।। माशा, तिलो का तैल २ तोला ११ माशा, यथाविधि मरहम वनावे, आवश्यकता पर कपड़े की वती इस मे लिप्त कर के कर्ण के भीतर रखे।

गुण—कर्ण व्रण, कर्ण पूय के लिये उत्तम है, पीडा शामक है।

मरहम सफेदा

गुलाव १ तोला १०।। माशा मे मोम सफेद ४।। माशा को पिघला कर सफेदा काशगरी और मुरदासंग प्रत्येक ४।। माशा वारीक पीस कर मिलावे, और मरहम तैयार करे, यदि अधिक शीतल वनानी हो,

तो अण्डे की सफेदी आवश्यकतानुसार और कर्पूर ८ माशा मिलाये।

गुण—नासा व्रण में उत्तम है।

आबी मरहम

गुग्गुल, पारद प्रत्येक ३॥ माशा, रसोत हिन्दी, पहिले गुग्गुल और रसोत को पानी मे हल करें, फिर पारद मिला कर इस कदर खरल करे,कि एक जीव हो जाये, अब उस को कपड़े पर लगा कर व्रण पर लगा दे।

गुण—हर प्रकार के व्रण तथा नासूर में लाभ प्रद है।

मरहम अह्जाज़

फटकडी, नीलाथोथा, प्रत्येक १। तोला, कत्थ गुग्गुल पापडीया, राल, तिल का तैल, कूप जल प्रत्येक ५ तोला, प्रथम जल और तिल के तैल को एक कोरे कासी के बरतन मे डाल कर हाथ से मले, जब छाछ के समान हो जाये, तो बाकी औषध चूर्ण मिलावे, १ वा दो प्रहर पश्चात दोबारा हाथ से मले, जब एक जीव हो कर मरहम बन जाये, तो सुरक्षित रखे।

गुण—अत्यन्त उत्तम मरहम हे, हरप्रकार के व्रण के लीये अमृत समान गुणकारी है।

मरहम ज़रद

अजमोद, कत्थ सफेद, कमीला, नीलाथोथा सबज भुना हुआ, संग बसरी, मुरदासग प्रत्येक ५ माशा, मोम जरद २८ माशा, तिल तैल ४ तोला ८ माशा, सब को मोम रोगन मे हल कर के मरहम बनाये, और ५ बार खालस जल से धो कर प्रयोग करे।

गुण—गहरे व्रणों से दुष्ट मास दूर कर के व्रण को शुद्ध कर के भरता है। उत्तम मरहम है।

मरहम जंजफ़र

मुरदासग, बहरोजा, प्रत्येक १७॥ माशा, अलकलबतम, हिगुल प्रत्येक २१ माशा, कुन्दर, उशक प्रत्येक ३५ माशा, गोद कीकर १५

तोला, जैतून तैल आवश्यकतानुसार मिला कर मरहम तैयार करें।

गुण—अण्ड कोषों के व्रण, कण्ठमाला, तथा सरतान में लाभ प्रद है।

दवाये बालखोरा

केनथराडीन आयन्टमिन्ट (Canthardine Ointment) लेकर एरण्ड तैल मे मिलावे, और शिर पर मलें।

गुण—शिर के बालों के गिरने मे उपयोगी है।

मफ़रहात (Cordials)

यह भी एक प्रकार की माजून है, जो कि विशेष कर के हृदय को बल देती है।

मफरह आज़म

बहमन सुर्ख, बहमन सफेद, बालछड़, तज, इलायची बडी, इलायची छोटी, गिल अरमनी, गिल मखतूम, केशर, जदवार खताई, स्वर्ण वर्क, वर्क चांदी प्रत्येक ४ माशा, कस्तूरी ९ माशा, याकूत रहमानी, याकूत जरद, यशप काफूरी, कहरवा शमई, कबाब चीनी, नागकेशर, दरूनज अकरबी, तरबूज, सन्दल सफेद, सन्दल रक्त, धनिया शुष्क छिला हुआ, अम्बरशहब, फादजहर हेवानी प्रत्येक १३।। तोला, सोंठ, जरिशक, तमालपत्र, नागरमोथा, शकाकल मिश्री, नीलोफर पुष्प प्रत्येक १।। तोला, गाऊजबान २। तोला, पोस्त निबू कागजी २। तोला तबाशीर सफेद २। तोला, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ २। तोला, बादरंजबोया २।। तोला, मधुर बही रस, मधुर अनार रस, अर्क गुलाब, अर्क गाऊजबान, अर्क सन्दल, खॉड प्रत्येक १८।।। तोला मधु द्विगुणा, प्रथम ज्वाहारात तथा फाद जहर को गुलाब मे खरल करे, कस्तूरी और अम्बर, केशर, तथा वर्को को तबाशीर के साथ खरल करे, और बाकी सब औषध का बारीक चूर्ण कर मधु और खॉड के पाक मे मिला कर मफ़रह तैयार करे।

मात्रा—७ माशा, अर्क गाजर वा अर्क अम्बर के साथ वा शरबत अनार २ तोले के साथ प्रयोग करे।

गुण—हृदय के सब रोगो को दूर कर के हृदय को बल देता है, प्लैग तथा विसूचिका में भी उपयोगी है।

मफ़रह बारद

अम्बरशहब, स्वर्ण वर्क हल किये हुये, चादी वर्क हल किये हुये, १—१ माशा, तबाशीर, चन्दन चूर्ण, गाऊजबान पुष्प, गुलाब पुष्प की कली, मगज तुखम कद्दू मधुर, तुख्म खुरफा प्रत्येक ९ माशा, मोती, कहरवाशमई प्रत्येक ४॥ माशा, रुब सेब मधुर, अंगूर बही रूब प्रत्येक ७॥ तोला, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क प्रत्येक ९॥ तोला, खाँड आध सेर, खाँड का अर्क मे पाक करें, और वाकी औषध का वारीक चूर्ण करके पाक मे मिलावें।

मात्रा—६ माशा।

गुण—उपरोक्त।

मफ़रह सुसवजी

कचूर, दरूनज अकरवी, वहमन सुरख, वहमन सफेद, वादरंज-वोया प्रत्येक ३॥। तोला, फरज मुशक २। तोला, वज १॥। तोला, ऊद कुमारी १॥। तोला, पुदीना शुष्क, सोया सवज, दारचीनी, तिल छिले हुये, जायफल, चादी पत्र, कहरबा, केशर, प्रत्येक ९ माशा, जावित्री, याकूत, प्रत्येक ३॥ माशा सेव जल, मरजनजोश जल, गाऊ-जवान जल प्रत्येक ६ तोला, ज्वाहरात वर्क और केशर को गुलाब मे खूब खरल करे, वाकी औषध चूर्ण को सेव आदि के जल मे एक दिन रात्री भिगोने के वाद छान कर शहद और गौ दूध मिला कर इस कदर उवाले, कि दूध जल जाये, और शहद मात्र शेष रह जाये, अव वनफशा तैल, बादाम तैल ९॥ तोला मिला कर फिर उवाले, पाक सिद्धि पर ज्वाहरात आदि मिला कर मुफरह तैयार करे।

मात्रा—७ माशा अर्क गाऊजबान, अर्क बेदमुशक के साथ।

गुण—हृदय वल्य, खफकान, उन्माद, जलोदर, पाण्डु तथा अजीर्ण को नष्ट करता है, रोग के वाद की क्षीणता मे उत्तम है, वाजी-करण है।

मफ़रह शेखलरहीस

गुलाव पुष्प ६ तोला, गाऊजबान १६। तोला काहु बीज छिले हुये, मगज़ तुख़म ख़रपजा, मगज तुख़म कद्दू, मगज तुखम ख़यारैन, खुरफा बीज प्रत्येक १४ माशा, सन्दल सफेद, छोटी इलायची, तबाशीर प्रत्येक ९ माशा, ऊद हिन्दी, दरूनज अकरबी, कचूर, बहमन सफेद प्रत्येक ५॥ माशा, मरवारीद (मुक्ता), वुसंद जली हुई, कहरवा, सरतान नहरी जले हुये, आत्ररेगम कुतरा हुआ, सन्दल सुरख, कर्पूर प्रत्येक ४॥ माशा, केशर ३। माशा, अम्बरशहव १ माशा, कस्तूरी ४ रत्ती, रूब सेब, रूब वही प्रत्येक रूब औषध के समभाग लेकर यथा-विधि पाक करे, और बाकी औषध का वारीक चूर्ण कर के मिलावे।

मात्रा—३ माशा, अर्क़ गाऊजबान के साथ।

गुण—उष्ण प्रकृति वालों के लिये लाभ प्रद है, हृदय दुर्बलता खफकान, ज्वर, क्षीणता आदि मे उपयोगी है।

मफ़रह दिलकुशा

अम्बरशहव, दरूनज अकरबी, चांदी पत्र प्रत्येक २। माशा, लाल बदख़शान, ऊदकुमारी, याकूत रमानी, याकूत जरद, प्रत्येक ४॥ माशा, कचूर, कर्पूर प्रत्येक १॥। माशा, कहरबा शमई, यशप सवज, लौंग, कबाबचीनी, बहमन सुरख प्रत्येक ३॥ माशा, बहमन सफेद ७ माशा, दारचीनी, तमालपत्र, प्रत्येक ३॥ माशा, वुसद, धनियां, गिल अरमनी धुली हुई, वंशलोचन ७—७ माशा, मोती, बादरजबोया, निबू कागजी का ऊपर का छिलका, पोस्त बीरून पिस्ता, चन्दन सफेद, चन्दन रक्त, वनतुलसी बीज प्रत्येक १०॥ माशा, गाऊजवान पुष्प, आमला प्रत्येक १॥ तोला, असारा ज़रिशक ३ तोले, केशर ३ रत्ती, कस्तूरी ६ रत्ती, निंबू रस ४० तोला, सेब रस १२ तोला, वही रस ६ तोला, खॉड औषध से त्रिगुण ले कर स्वरसों मे डालकर पाक करे, और औषध को कूट छान कर पाक मे भली प्रकार मिलावे।

मात्रा—५ माशा।

गुण—उन्माद तथा हृदय रोगों मे अपूर्व है।

मफ़रह कबीर

याकूत के टुकडे ४॥ माशे, संगयशप, अकीक प्रत्येक ३॥ माशा, गारीकयून, अफतीगियून, काली मिरच, सोंठ, लौंग, मरजनजोहा प्रत्येक ७ माशा, हिजर अरमनी, हिजर लाजवरद, नरकचूर, हमामा, हाथी दन्त चूरा, दरूनज अकरबी, बहमन सुरख, गाऊजबान प्रत्येक ४॥ माशा, तमाल पत्र, दारचीनी, सातर, आशा, जूफा, जीरा, दज, सम्भल रूमी प्रत्येक ३॥ माशा, पोदीना २। माशा, फिनरासालीयून, (पहाडी करफस), हालो, हिजरलयहूद, कारफस बीज, मुरमुकी, कुन्दर, केशर, मरिच सफेद, प्रत्येक २। माशा, स्वर्ण पत्र १ माशा, चादी पत्र २ रत्ती, प्रथम ज्वाहरात को खूब खरल कर के वर्क भी इस मे खरल कर ले, और बाकी औषध को कूट छान कर औषध के मान से दुगना हरड़ के मुरब्बा का शीरा लेकर पाक करे, और पाक सिद्धि पर औषध चूर्ण, तथा ज्वाहरात मिला कर मुफरह तैयार करे।

मात्रा—५ माशा।

गुण—हृदय रोग, दुर्बलता, उन्माद, मस्तिष्क दुर्बलता, अजीर्ण, प्लीहा, यकृत क्षीणता, आमवात तथा जीर्ण ज्वरो मे उत्तम है।

मफरह मोसवी

जरिशक ४४ माशा, खुरफा बीज छिला हुआ २८ माशे, तबाशीर, बहमन सफेद, गुलाब पुष्प, गाऊजबान पुष्प प्रत्येक १४ माशा, याकूत सुरख, मोती, कहरबा शमई, बुसद, सन्दल सफेद, धनियां शुष्क प्रत्येक ७ माशा, गिल अरमनी धुली हुई ४॥। माशा, बहमन सुरख, सोने के वर्क, चांदी पत्र, पोस्त बीरून पिस्ता, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ, अम्बरशहब प्रत्येक ३॥ माशा, शरबत निबू, सब औषध के शमभाग खॉड द्विगुणा, सब औषध का बारीक चूर्ण कर, खॉड तथा शरबत का पाक करके औषध चूर्ण मिला कर मुफरह तैयार करे, और आखीर मे ज्वाहरात बारीक खरल करके मिलावे।

मात्रा—५ माशा, अर्क गाऊजबान से।

गुण—उपरोक्त।

मुफरह मतहदिल

कस्तूरी, अम्बर १—१ माशा, गुलाब पुष्प, नागरमोथा, दरूनज-अकरबी, बालछड, दारचीनी, केशर, मस्तगी, लौंग, जायफल, इलायची, कबाबचीनी, पिप्पली, इलायची बड़ी, निंबू कागजी, पान जड़, ऊद हिन्दी, मोती, बुसद, कहरवा प्रत्येक ३॥ माशा, कचूर ३॥। माशा, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ ८॥। माशा, तुलसी बीज ८॥। माशा, खाँड सफेद सब औषध के सम भाग, मधु औषध मान से द्विगुण, हिजरयात, कस्तूरी केशर, तथा मस्तगी को पृथक २ खरल करें और बाकी औषध के चूर्ण मे मिला दे, अब मधु तथा खाँड का पाक कर के अन्त मे औषध चूर्ण मिला दे।

मात्रा—९ माशा।

गुण—हृदय को बल देता है, अतिसार तथा गर्भाशय रोगो मे भी बहुत लाभ प्रद है, पाचक तथा उत्तेजक है।

मुफरह याकूती मुतहदिल

कस्तूरी, याकूत रुमानी लाल, बादरजबोया, प्रत्येक ४॥ माशा, अम्बरशहब बड़ी इलायची, स्वर्ग वर्क, कर्पूर, गिल मखतूम, धनिया, लाजवरद, गिल अरमनी, बालछड़, नागकेशर, प्रत्येक ३॥ माशा, मोती, बुसद, कहरवा शमई, केशर, गाऊजबान, मस्तगी रूमी, दारचीनी, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ, निंबू कागजी का छिलका, बहमन सफेद, कचूर, छडीला, मगज तुख्म कद्दू, नख, जरिशक, खुरफा बीज, वन-तुलसी बीज, तबाशीर, मगज तुख्म हयात, गाऊजबान बीज, प्रत्येक ७ माशा, सन्दल सफेद, ऊद हिन्दी, दरूनजअकरबी, गुलाब पुष्प १०॥ माशा, शरबत निंबू २५ तोला, मधु औषध से दुगना, जवाहरात को पृथक खरल करे. और अम्बर, कस्तूरी, मस्तगी रूमी को भी पृथक २ खरल करे, फिर सब औषध चूर्ण को आपस मे मिला कर एक जीव कर ले, मधु तथा खाँड का पाक कर के औषध चूर्ण मिला कर मुफरह तैयार करे।

मात्रा—९ माशा, अर्क गाऊजबान से।

गुण—उपरोक्त।

मुफ़रह बंगयान

हरी भांग ७।। तोला, जावित्री, बालछड, तमालपत्र, सोंठ, प्रत्येक ४।। तोला, मिरच काली, मस्तगी, केशर ३—३ तोला, प्रथम भाग को बादाम तैल मे दो सप्ताह तक तर रखे, फिर हलका सा भून कर बारीक चूर्ण कर ले, फिर बाकी औषध का बारीक चूर्ण मिला त्रिगुणा मधु मे मिला सुरक्षित रखे, यदि इस मे ऊद हिन्दी ३ तोला, कस्तूरी १।। तोला, चादी वर्क ९ माशा, अम्बरशहब और स्वर्ण वर्क ४।। माशा और मिलावे, तो अति उत्तम मुफरह तैयार होगा।

मात्रा—७ माशा।

गुण—स्तम्भक, उत्तेजक, हृद्य तथा वाजीकर है।

मुफ़रह याकूती

लाल याकूत, चन्दन सफेद प्रत्येक ९ माशा, मोती, कहरबा, केशर, प्रत्येक १३।। माशा, ऊद कुमारी, दरूनज कुमारी, गुलाब पुष्प प्रत्येक १८ माशा, स्वर्ण वर्क, चादी के वर्क, अम्बरशहब, बडी इलायची, छोटी इलायची, कर्पूर, गिल मखतूम, केसर पुष्प, लाजवरद धुला हुआ, गिलारमनी, बालछड, नागकेसर, बादरजबोयाबीज, प्रत्येक ४।। तोला, गाऊजबान, मस्तगी, दारचीनी, आबरेशम कुतरा हुआ, पोस्त-निम्बू, बहमन सफेद, छलीडा, नरकचूर, मगज तुखम कदू, नाखूना, जरिशक, खुरफा बीज छिला हुआ, बन तुलसी, तबाशीर, काहु बीज, खयार बीज, प्रत्येक १०।। तोला, शरबत हमाज १ सेर २५ तोला, कुरस अम्बर प्रत्येक ५२।। तोला, मधु २ सेर ५० तोला, शरबत तथा मधु का पाक करके यथाविधि मुफरह तैय्यार करे।

मात्रा—६ माशा।

गुण—शरीर तथा हृदय के लीये परम बल प्रद है।

मुफरह याकूती बारद

मरजान मूल, गिलारमनी, कजमाजज, मोड़ीयो बीज, बनफशा-पुष्प, गुलनार फारसी, स्वर्ण वर्क, अम्बरशहब, कस्तूरी प्रत्येक ४।। माशा, याकूत रमानी, लाल बदखशानी, यशप काफ़ूरी, जरिशक साफ़,

किया हुआ, चादी पत्र, कर्पूर केसूरी, प्रत्येक १३॥ माशा, मोती, बादरंजबोया, गाऊजवान, वन तुलसी बीज, केशर, आमला, खुरफा बीज छिले हुये, दोनों वहमन, दोनो चन्दन प्रत्येक २२॥ माशा, वंशलोचन ३१॥ माशा, कासनी ४५ माशा, अर्क कासनी ७॥ तोला, शरवत मधुर अनार, शरवत मधुर सेव, शरवत हमाज प्रत्येक १५ तोला, मधु २९॥ तोला, खाँड ४७ तोला, मधुर औषध का पाक कर बाकी औषध का बारीक चूर्ण मिला कर यथाविधि मुफरह तैयार करे।

मात्रा—७ माशा से १ तोला।

गुण—पित्त प्रकृति वालो के लिये अत्यन्त उत्तम है।

मुफ़रह हार सादा

बादरजबोया १०॥ माशा, नरकचूर, दरूनज अकरबी, गाऊजवान २१—२१ माशा, सब को बारीक पीस कर आवश्यकतानुसार शरवत सेव और मधु का पाक कर मुफरह तैयार करें।

मात्रा—१ तोला।

गुण—सरदी से उत्पन्न खफकान तथा हृदय दुर्बलता मे उत्तम है।

मुफरह बारद

मोती, आवरेशम कुतरा हुआ, गाऊजबान प्रत्येक ९ माशा, गाऊजवान पुष्प, गुलाव पुष्प, धनियां शुष्क, तवाशीर, मगज कद्दू, मग़ज-तुख़म खीरा, तुख़म खुरफा छिला हुआ, कहरवा शमई प्रत्येक १३॥ माशा, शरवत फोवाका ९० माशा, खाँड सफेद, अर्क गुलाव, अर्क वेदमुशक प्रत्येक ३७ तोला ६ माशा, प्रथम खाँड, तथा शरवत का अर्कों मे पाक करे, बाकी औषध का चूर्ण मिलाकर मुफरह तैयार करे।

मात्रा—९ माशा।

गुण—हृदय दुर्बलता तथा खफकान मे उपयोगी है।

मुफरह आबरेशम

आवरेशम अपक्व १८ तोला ९ माशा लेकर अर्क गाऊजवान, गुलाब, बेदमुशक, प्रत्येक १५ तोला मे भिगोवे, और जोश दे कर निचोड़

ले, अब मधुर वही जल, मधुर सेब जल प्रत्येक ७ तोला ७ माशा, खाँड ८ तोला ९ माशा में मिला कर पाक करे, पाकसिद्धि पर कस्तूरी ३॥ माशा, अम्बर ७ माशा डाल कर नीचे उतार ले, शीतल होने पर कहरवा, मरजान जड़, गुलाब पुष्प, चन्दन श्वेत प्रत्येक ४॥ माशा, वंशलोचन, मोती प्रत्येक ५। माशा का बारीक चूर्ण डाल कर मुफरह बनावे।

मात्रा—४॥ माशा।

गुण—सरदी के कारण हृदय दुर्बलता को नष्ट करता है।

मुफरह आबरेशम लोलवी

आबरेशम अपक्व १८ तोला ९ माशा ले कर स्वर्ण तथा चांदी के बुझे हुये जल में एक दिन रात्री भिगोवे, और जोश देकर छान ले, अब गाऊजबान, वन तुलसी, गुलाब पत्र, दालछड़, छड़ीला प्रत्येक ७ माशा लेकर अर्क गुलाब में भिगोवे, और जोश देकर मल छान ले, फिर इस में आबरेशम का जल मिला कर दुगुनी खाँड मिला कर पाक करे, इस पाक में चन्दन सफेद घिसा हुआ ३॥ माशा, मोती, कहरवा, हिजरयशप ७–७ माशा, वंशलोचन सफेद ९ माशा, अम्बर ३॥ माशा, कस्तूरी पौने दो माशा मिला कर मुफरह तैयार करे।

मात्रा—९ माशा, अर्क गुलाब, गाऊजबान के साथ।

गुण—दिल, यकृत तथा आमाशय को बल देता है, अतिसार बन्द करता है, उन्माद, हृदय डूबना में लाभ प्रद है।

मुफ़रह लोलवी

मुश्क (कस्तूरी) ३ माशा, मोती, छोटी इलायची, अम्बरशहब, कपूर प्रत्येक ९ माशा, वंशलोचन, आबरेशम (अपक्व) कुतरा हुआ, बहमन सफेद १—१ तोला, धनिया, गाऊज़बान पुष्प, गुलाब पुष्प प्रत्येक दो तोला, मगज तुख्म काहू २॥ तोला, चांदी पत्र ३ तोला, मगज तुख्म खयारैन ५ तोला, चन्दन सफेद गुलाब में घिसा हुआ १० तोला, मधु उत्तम सब औषध के समान, खाँड औषध से दुगुनी, पहिले

मधुर औषध का पाक करके फिर बाकी औषध का बारीक चूर्ण मिलावे।

मात्रा—७ माशा से १ तोला।

गुण—उपरोक्त।

मुफ़रह मसीह

कस्तूरी १॥। माशा, तमालपत्र, सोंठ, पिप्पली, लाल बदखशानी, कहरबा, मरजान मूल प्रत्येक ३॥ माशा, नागर मोथा ५। माशा, अम्बरशहब, मोती ७—७ माशा, पानजड़, कबाबचीनी, लौंग, जायफ़ल, दोनों इलायची, वनतुलसी, केशर, पोस्ततरज, इन्द्रजौ, जावित्री प्रत्येक १०॥ माशा, दोनों वहमन, वालछड़, छलीड़ा प्रत्येक १४ माशा, तज, गाऊजबान, गुलाब पुष्प प्रत्येक १७॥ माशा, बादाम तैल १७ माशा, सोने के वर्क, चांदी वर्क प्रत्येक २। माशा, भांग बारीक चूर्ण ८ तोला ९ माशा, खाँड सब औषध से त्रिगुणा ले कर पाक करे, और शेष औषध का बारीक चूर्ण डाल कर मुफरह तैयार करे।

मात्रा—४ से ८ माशा।

गुण—दिल, दिमाग को बल देता है, कमर तथा वृक्को को बल प्रद है, दीपक पाचक है, वाजीकरण तथा स्तम्भक है।

मुफ़रह हार सादा

बादरजबोया, पोस्त निम्बू, लौंग, तज, केशर, मस्तगी, जायफल, बड़ी इलायची, नाग केशर, आमला का घन सत्व, दोनो वहमन, नरकचूर, तुलसी, दरूनजअकरबी, बनतुलसी प्रत्येक १७ माशा, कस्तूरी १॥। माशा, शीरा मुरब्बा आमला, शीरा मुरब्बा हरीतकी, आवश्यकतानुसार लेकर पाक करके शेष औषध का चूर्ण बारीक मिलावे।

मात्रा—४॥ माशा से ७ माशा।

गुण—सब शरीर के अंग प्रत्यंगो को बल देता है, बालों को काला रखती है, वातरोग, उन्माद आदि से उत्तम है।

नोशदारू

इस को अनोशदारू भी कहते है, जिस का अर्थ दीपक पाचक औषध है, यह भी माजून की तरह ही है, विशेष कर इस मे मुख्य भाग आमला होता है ।

विधि—ताजा आमला को जल में पका कर गल जाने पर छान ले । फिर इस की गुठलिया पृथक करके मल कर कपड़े मे इस का गूदा छान ले, अब इस मे द्विगुणा खाँड मिला कर पाक करे, पाक की उष्ण अवस्था मे ही दूसरी औषध का बारीक चूर्णकरके डालदें, यदि आमला ताजा न मिले, तो शुष्क आमला गुठली रहित कर एक दिन रात दूध में भीगा रहने दे, इस के वाद तिगुना जल डाल कर उबालें, जब दूध की चिकनाई तथा आवलों का कसेलापन नष्ट हो जाये, तो निकाल कर दूसरे जल मे जोश दे कर उपरोक्त विधि से नोशदारू तैयार करे ।

नोशदारू सादा

गुलाब पुष्प १।।। तोला, नागरमोथा १।। तोला, लौंग, मस्तगी, तगर, बालछड़ प्रत्येक १०।। माशा, दोनों इलायची, ब्राह्मी, जावित्री, जायफल, तज, केशर प्रत्येक ७ माशा, आमला छिला हुआ आध सेर, खाँड ३० तोला, प्रथम आमला को रात्री को दूध मे भिगोवे, प्रात जल से धो कर जल मे उबाले, और आमला के गल जाने पर छलनी से छान कर गुठलिया निकाल दे, अब जल मे खाँड और मधु डाल कर पाक करे, बाकी औषध का चूर्ण इस में मिला कर अनोशदारू तैयार करे ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—दीपक पाचक है, अतिसार नाशक है ।

नोशदारू लोलवी

अम्बर, केशर, मोती, वुसद, यशप, नागरमोथा, अजखर प्रत्येक ११। माशा, आबरेशम (अपक्व) कुतरा हुआ, तबाशीर, तमालपत्र,

बाल छड़, गिलारमनी प्रत्येक १३।। माशा, औषध को कूट छान कर चूर्ण करे, और खाँड औपधसे १।। गुणा तथा खाँडके समान भाग मधु लेकर यथाविधि पाक करे, पाक मे औषध चूर्ण मिला ले।

मात्रा—५ माशा।

गुण—दीपक, पाचक, शरीर को बल देता है, हृदय दुर्वलता को भी उपयोगी है।

याकूती

याकूती मे ज्वाहरात की अधिकता होती है, निर्माणविधि अवलेह की तरह है।

याकूती बारद

मगज तुखम कदू, मगज तरबूज, मगज तुखम खयारैन, तुखम काहू प्रत्येक १०।। माशा, खुरफा बीज छिले हुये १६ माशा, मोती ८। माशा, चन्दन सफ़ेद, वालछड, बंशलोचन, छालीया, चन्दन लाल, वुसद, कहरवा प्रत्येक ८ माशा, केकडे (सरतान) जला हुआ ८। माशा, जुमुरद सबज़ २। माशा, आवरेशम कुतरा हुआ, बहमन सुरख, तथा सफेद, गुल गाऊजवान, गुल गुलाव की कली,शकाकल मिश्री, इलायची, दारचीनी प्रत्येक १।। माशा, आमला १।।। तोला, केशर, अम्बरशहब, स्वर्ण वर्क, कस्तूरी प्रत्येक १।।। माशा, वर्क चादी ८ माशा, मिश्री १७ तोला, मधुर सेव जल, अमरूद जल, वही जल, शरवत फोवाका मधुर, अर्क गुलाब, उत्तम मधु, अर्क सन्दल प्रत्येक ७ तोला, प्रथम ज्वाहरात को अर्को मे खरल करे, फिर खॉड तथा मधु का पाक कर के बाकी औपध का चूर्ण मिलावे।

मात्रा—३ माशा।

गुण—उष्ण प्रकृति वालो क लिये उत्तम है, शरीर को दृढ़ बनाती है।

याकूती हार

याकूत रमानी ३ माशा, मोती ५ तोले, कहरवा शमई १।। तोले, कस्तूरी, लाजवरद धुला ३–३ माशा, कुन्दर, पोदीना, प्रत्येक

७॥ माशा, ऊद, केशर प्रत्येक ५ माशा, [illegible] [illegible] ६ माशा, अम्बर शहद ८ माशा, [illegible] ६ माशा, [illegible] १ तोला, मधु त्रिगुण, यथाविधि पाक [illegible] [illegible] [illegible] करे।

मात्रा—३ से ५ माशा।

गुण—शीत प्रकृति वालों के लिए उपयोगी है।

याकूती मुफर्रहदिल

मोती ६ माशा, कहरवा शमई ३ माशा, [illegible] हुआ, बादरजबोया, धनिया १-१ तोला, [illegible] ८ माशा, [illegible]-कदु मधुर मगज तरबूज प्रत्येक दो तोला, [illegible] [illegible], [illegible], छोटी इलायची, बहमन सुर्ख तथा सफेद, प्रत्येक १-१ तोला, [illegible] कुतरा हुआ, चांदीपत्र ६-६ माशा, [illegible] २ तोला, [illegible] हुआ ८ माशा, [illegible] ४ माशा, केशर ६ माशा, कस्तूरी २ माशा, स्वर्णवर्क २ माशा, शरबत [illegible] १० तोला, शरबत सेव २० तोला, मिश्री १० तोला, गुलाब, बेदमुश्क, अर्क बिल्-पापड़ा प्रत्येक २० तोला, प्रथम शरबतों, मिश्री और अर्कों को मिलाकर पाक करे, और दूसरी शेष औषध का चूर्ण बनाकर हिलर-यात का चूर्ण भी इसी में मिलाकर पाक में मिलावें।

मात्रा—३ माशा।

गुण—उपरोक्त।

याकूती सादा

याकूत, फादजहरमहदनी, अकीक, कहरवा, बुसद, यशप, प्रत्येक ४॥ माशा, आबरेशम चन्दन तथा गुलाब में घिसा हुआ, ऊदगर्की, गाऊजवान, गाऊजवानपुष्प, तमालपत्र, दरूनज अकरबी, केशर, बन-तुलसी, पोस्त अतरज प्रत्येक ३॥ माशा, धनिया शुष्क, नसरीनपुष्प, दोनों बहमन, लाजवरद धुला हुआ, आकाशबेल, प्रत्येक ७ माशा, कस्तूरी, अम्बर प्रत्येक १॥।माशे, मुरब्बा हरड, मुरब्बा आमला, ३-३ नग, शरबत अनार ६ तोला, चांदीपत्र १०॥ माशा, प्रथम ज्वाहा-रात को अर्कों में खरल करे, और मुरब्बाजात को बारीक पीस ले,

अब औषध से त्रिगुण मधु वा खाण्ड का पाक करके औषध चूर्ण इस मे मिला देवे। अन्त मे चांदीपत्र शामिल करे।

मात्रा—५ माशा।

गुण—उपरोक्त।

याकूती लोलवी

याकूत सुरख, कहरवा प्रत्येक ५ माशा, मोती, संगयशप, प्रत्येक ६ माशा, प्रवाल ९ माशा, मगज तुखम खरपजा, मगज तुखम खयारन प्रत्येक १॥ तोला, शकाकल, सहलब, दोनो तोदरी, दोनों वहमन १-१ तोला, हालोंबीज, कबाबचीनी, दारचीनी प्रत्येक ६ माशा, इन्द्रजौ, बादरजबोया, गुलाब पुष्प, प्रत्येक ७ माशा, तमाल-पत्र ९ माशा, चन्दन सफेद ४ माशा, बशलोचन, चांदीपत्र प्रत्येक ५ माशा, स्वर्ण वर्क, केशर, ३-३ माशा, आबरेशम १॥। तोला, मुरब्बा सेब, शरबत मधुर अनार प्रत्येक १५ तोला, मिश्री, मधु प्रत्येक ३० तोला, प्रथम ज्वाहरात को अर्क गुलाब मे खरल करे, और मुरब्बों को धोकर सिल पर पीस ले, अब शरबत मे खाण्ड तथा मधु मिलाकर पाक करे, औषध का बारीक चूर्ण डालकर याकूती तैयार करे।

मात्रा—५ से ७ माशा।

गुण—वाजीकरण है, सब शरीर को दृढ बनाती है।

याकूती

स्वर्ण भस्म, २L माशा, याकूत सुरख रमानी, गाऊजबानपुष्प, कासनी बीज, कस्तूरी, काफूर, बहमन सफ़ेद, ऊद, हिजर अरमनी, लाजवरद, तज, दारचीनी, केशर दोनो इलायची, जदवारखताई प्रत्येक ४॥ माशा, आबरेशम कुतरा हुआ, सरतान जला हुआ प्रत्येक ६ माशा, मोती उत्तम, कहरबा शमई, मूगे की जड प्रत्येक पौने सात माशा, अफतमीयून ११। माशा, बन तुलसीबीज, फरंज-मुशकबीज, उस्तोखदूस, प्रत्येक १३॥ माशा, मगज तुखम ककडी

गुलाब पुष्प, प्रत्येक १॥ तोला, दरूनज अकरबी, तुरंजबीन, बालछड़, अम्बरशहब प्रत्येक ७ माशा, अर्क गुलाब ३७॥ तोला, शरबत हमाज, शरबत मधुर सेब, शरबत मधुर अनार, प्रत्येक ११। तोला, मधु आवश्यकतानुसार, यथाविधि याकूती बनावे, ४० दिन पश्चात् प्रयोग करे ।

मात्रा--३ से ४ माशा ।

गुण--दिमाग, दिल, यकृत को बल देती है, उन्माद तथा अन्य वात रोगों मे उत्तम है ।

याकूती बारद

स्वर्ण वर्क ३ माशा, लाल बदख्शानी, जमुरद, अम्बरशहब, प्रत्येक ४ माशा, याकूत रमानी, मोती, कहरूबा शमई, चांदीपत्र, प्रत्येक ९ माशा, तबाशीर सफेद, सन्दल सफेद, धनियां १-१ तोला, आमला गुठली रहित, मधु श्वेत ५ तोला, मधुर अनार जल १ पाव, खाण्ड आधा सेर, यथाविधि पाक कर औषध चूर्ण डाल कर याकूती बनावे ।

मात्रा--४॥ माशा ।

गुण--दिल दिमाग को ताकत देती है ।

याकूती हार

कस्तूरी, अम्बरशहब प्रत्येक २ रत्ती, बहमन सुर्ख १॥। माशा, केशर, हरड़, प्रत्येक ३॥ माशा, याकूत रमानी, मुक्ता, लौंग, सोंठ, छालीया, बालछड, पिप्पली, इलायची दोनो, जायफल, शाहतरा, दारचीनी, तेजपात, इन्द्रजौ, दरूनज, गाऊजबान, मस्तगी, पानजड़, फरजमुशक, चन्दन सफेद, जरावन्द गोल, तज, गुलाब पुष्प, ७-७ माशा, निम्बू का ऊपर का छिलका १०॥ माशा, जावित्री १॥। माशा, मधु सबऔषध से द्विगुण, सब औषध का चूर्ण करे, मधुर औषध का पाक करके चूर्ण मिलाकर यथाविधि याकूती तैयार करें ।

मात्रा--४॥ माशा ।

गुण--उपरोक्त ।

याकूती

स्वर्ण वर्क २। माशा, याकूतरमानी ४।। माशा, मुक्ता, कहरवा, शमई, मरजान (प्रवाल) मूल, गिल अरमनी, गाऊजवान पुष्प वंशलोचन प्रत्येक ९ माशा, खुरफ़ावीज छिला हुआ, १ तोला १० माशा, खाण्ड सब औषध के समान, शरवत फोवाका सब औषध से पांच गुणा, खाण्ड तथा शरवत का पाक करके बाकी औषध का बारीक चूर्ण करके पाक मे मिलाकर यथाविधि याकूती तैयार करें।

मात्रा—६ माशा।

गुण—खफ़कान, ग़शी के लिये उपयोगी है, हृदय को बल देती है, उत्तम योग है।

माजून—अवलेह (Confection)

माजून यह एक विख्यात मिश्रित योग है, जो मधु तथा खाण्ड के पाक मे औषध के बारीक चूर्ण को मिलाकर बनाया जाता है, इस का पाक ज्वारश की भांति मृदु रखा जाता है, जो अंगुलियों से वा चमचे से हलवे की भांति खाया जा सके, इस विधि से औषधियों का गुण बहुत दिनो तक सुरक्षित रहता है, विधि निम्न है।

निर्माण विधि—औषध चूर्ण से त्रिगुण मधु वा खाण्ड हुआ करती है,कभी २ द्विगुण भी होती है। पाक खमीरे से पतला और शरवत से गाढ़ा होना चाहिये, औषध चूर्ण मिला देने से भी हलवे की भाति मृदु रहे, यदि मुरब्बा भी योग में हो, तो पृथक् पीस कर मिलावे, मगजयात को बारीक पीस कर घी में भूनकर मिलावे, पाक के शीतल होने पर औषध चूर्ण थोडा २ मिला कर चमचे से चलाते रहें, और शनै २ सारा चूर्ण मिला दे, किसी स्वच्छ बरतन (चीनी तथा शीशे के मरतबान) मे रखे, हिज्रयात, केशर तथा कस्तूरी को पृथक् पीस कर मिलावें, स्वच्छता से रखने से माजून कभी दूषित नही होता।

माजून आरद खुरमा

गोदकीकर, छुहारे का आटा (अर्थात् बारीक पिसा चूर्ण), सिंघाडा का आटा प्रत्येक आधा सेर, मगज मधुर बादाम, मगज

चलगोजा, मगज फिन्दक, प्रत्येक ५ तोला, वनोला गिरी का मग़ज १ तोला, लौंग ६ माशा, जावित्री, जायफल प्रत्येक ३ माशा, (कभी दारचीनी, सोंठ, छोटी इलायची ६-६ माशा भी डाली जाती है) का बारीक चूर्ण करें, तुरंजवीन तथा मधु प्रत्येक २॥ सेर का पाक करके ऊपर की औषध चूर्ण मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—यह माजून प्रमेह वीर्य के पतलापन मे उपयोगी है ।

माजून अजराकी

कुचला शुद्ध २। तोला, गाऊजवान पत्र १॥ तोला, उस्तोख़-द्दूस, गोंदकतीरा, नारियल, मगज़ चलगोजा, प्रत्येक १३॥ माशा, छोटी इलायची बीज, कचूर, शकाकल मिश्री, चन्दन सफेद, आमला, हरीतकी कृष्ण, प्रत्येक ९ माशा, ऊद हिन्दी, लौग, प्रत्येक ४॥ माशा, कूट छानकर त्रिगुण मधु के पाक मे माजून तैयार करे ।

मात्रा—१ माशा ।

गुण—वातकफ रोग, अर्दित, अर्धांग, वातकम्प, अपस्मार, अजीर्ण दोष, कामशक्ति दुर्बलता, तथा वृद्ध जनों की दुर्बलता मे अत्यन्त उत्तम है ।

माजून अस्पन्द सोखतनी

कृष्ण हरमल, जावित्री, जायफल, लौग, दारचीनी प्रत्येक १॥ तोला, तिल काले धुले हुये २ तोला, सब को कूट छान कर त्रिगुण मधु मिला माजून बनावे ।

मात्रा—३ से ६ माशा ।

गुण—वाजीकर तथा स्तम्भक है ।

माजून अलकली

मधुर बादाम मगज़ भुने हुए, मग़ज़ पिस्ता भुना हुआ, मग़ज़ चलगोज़ा भुना हुआ, मगज़ चरोंजी भुना हुआ, खशख़ाश बीज भुने

हुए, तिल काले धुले हुए भुने हुए, मग़ज फिन्दक भुना हुआ, मग़ज़ हव्ब किलकिल, मग़ज हवतलखिजरा, दारचीनी, पानजड़, मोचरस प्रत्येक ३ माशा, मग़ज़ नारजील, दोनो बहमन, तोदरी दोनों, इलायची दोनो, प्रत्येक ४ माशा, दरूनज अकरबी, पोदीना शुष्क, मस्तगी, बंशलोचन, तालमखाना, कबाबचीनी प्रत्येक ४ माशा, जावित्री, सोंठ, पिप्पली, तरंज छिलका, गोक्षरू, लौंग, गाजर बीज, शलगम बीज, हालो बीज, कौंच बीज, जरनवाद (कचूर), मेदा लकड़ी, प्रत्येक २ माशा, वालछड़, अम्बर शहब, प्रत्येक १ माशा, चोबचीनी २। तोला, मंजीठ २ माशा, खाण्ड १६ तोला, तुरंजबीन १७ तोला, मधु उत्तम १६ तोला, केशर १ माशा, प्रथम तुरंजबीन को जल मे घोल कर छान ले, और थोड़ी देर के बाद निथार कर खाण्ड तथा मधु मिला कर पाक करे, तत्पश्चात् औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय को बल देता है, और वीर्यप्रद है ।

माजून बन्द कुशाद

तालमखाना, मेदा लकड़ी, उटगन बीज, मगज़ कौंचा मूसली काली तथा सफेद, बीजबन्द काले, बीजबन्द गुजराती, साहलब मिश्री, प्रत्येक ३ तोला, शकाकल २ तोला, तज, जावित्री, सोंठ, मोचरस, जायफल, दारचीनी १-१ तोला, पिप्पली ६ माशा, सब औषध को कूटछान कर चूर्ण बनावे, गौदुग्ध का खोया १ सेर लेकर भून ले, अब मधु ॥ सेर, खाण्ड १॥ सेर का पाक कर के खोया और शेष सब औषध इस मे मिला दे ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—वाजीकरण तथा स्तम्भक है ।

माजून बवासीर

कहरवा १॥ तोला, गिलारमनी, अतीस, निशास्ता, मोड़ीयों बीज, तेवाज खताई, धनिया, अजवार जड़, माजु सब्ज, बिल्वगिरी,

मगज तुखम नीम, नागरमोथा, जीरा सफेद, तवाशीर प्रत्येक ३ माशा, शरबत मोड़ीयो बीज, खाण्ड १०-१० तोला, शरवत तथा खाण्ड का पाक करे, सब औषध को कूट छान कर पाक में मिलावें ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—अर्श तथा अर्शजनित। अतिसार में उपयोगी है ।

माजून बोलस

शुद्ध भल्लातक, अफतीमियून विलायती प्रत्येक ३ तोला, तज, वज तुरकी, जरावन्द मदहरज (गोल), केशर, दारचीनी, मस्तगी प्रत्येक २। तोला, कुठ मधुर, सुदाव। बीज, मरिच सफेद, प्रत्येक २॥ तोला, गारीकून ९ तोला, मुसब्वर २२ तोला, सब को कूट छान कर त्रिगुण मधु मे मिला कर माजून तैयार करे ।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—यह माजून मस्तिष्क को बल देती है, बुद्धि को बढाती है ।

माजून पेठा पाक

पेठा १, चादी पत्र ६ माशा, सोठ, जीरा कृष्ण, जीरा सफेद, प्रत्येक १४ माशा, जायफल, लौग, जावित्री, सहलव मिश्री, प्रत्येक २। तोला, नारयील ताजा ५ तोला, मगज बादाम, १० तोला, मगज पिस्ता, किशमिश, गौघृत प्रत्येक १० तोला, मधु ॥ सेर, खाण्ड १ सेर पहिले पेठे का मुरब्बा यथाविधि बनावे, मगजयात को घी में भून ले, बाकी औषध को कूट छान ले, अब मधु, और खाण्ड के पाक मे पेठा का मुरब्बा और किशमिश पीस कर मिलावे, फिर बाकी औषध का चूर्ण मिलावे ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—वाजीकरण है, कास, श्वास, अपस्मार, शिरोभ्रम, अजीर्ण, प्रमेह, अर्श तथा दुर्बलता को नष्ट करती है ।

माजून प्याज

श्वेत प्याज रस, मधु प्रत्येक १ सेर, दोनों को इतना पकावे, कि पाक हो जाये, अब इस मे तोदरी दोनो, साहलब मिश्री, दोनों

वहमन, सोंठ, प्याज वीज, मूली वीज, गन्दना वीज, शलगम वीज, तालमखाना, मूसली श्वेत तथा कृष्ण, प्रत्येक १।।। तोला, कूट छान कर मिलावें।

मात्रा—१ तोला

गुण—वाजीकर तथा वीर्यप्रद है।

माजून तलख

गारीकून छलनी में छानी हुई १२ तोला, मुसब्बर ८।। तोला, तगर, तज, सकमूनीया प्रत्येक २।। तोला, मस्तगी, ऊद वलसान प्रत्येक १।।। तोला, फरफ़यून, काली मिरच, सफेद मरिच, पिप्पली, हिव-जत्याना, कालादाना, अजखर प्रत्येक १ तोला २ माशा, रेवन्दचीनी १ तोला, मस्तगी के सिवाये सव का चूर्ण करे, और मस्तगी को पृथक खरल कर के चूर्ण करें, अव २ सेर मधु का पाक वना कर औषध चूर्ण मिलावें।

मात्रा—२ माशा।

गुण—अर्दित, अर्वांग, अपस्मार, वातकम्प, आमाशय शूल, यकृत शूल, कटिशूल और विवन्ध को दूर करती है।

माजून साहलव

कस्तूरी १।।। माशा, जुन्दवदस्तर, दरूनज अकरवी, चांदीपत्र, अम्बर प्रत्येक ३।। माशा, वालछड, वड़ी इलायची, ऊद खाम, कज-माजज, गोंद कीकर, प्रत्येक ५। माशा, पनीरमाया शुत्र अहरावी, गाऊजवान पत्र, वादरंजवोया, फरंजमुशक, रेगमाही, चिड़े का शिर का मगज़ भुना हुआ, मगज चलगोजा, मगज नारियल, मगज वादाम, मगज पिस्ता, मगज फिन्दक प्रत्येक ७ माशा, वोजीदान, सुरंजान मधुर, दोनो तोदरी, दोनो वहमन, सौंठ, पोदीना शुष्क, गोक्षरू (दूध में भगो कर शुष्क कीया हुआ), खशखाश वीज सफेद, तिल छिले हुये, गाजर बीज, पिप्पली, कचूर, मस्तगी (पृथक खरल करे), जायफल, जावित्री, केशर, कुठ मधुर, मगज तुखम खरवूजा प्रत्येक १०।। माशा,

इन्द्रजौ, दारचीनी, लौंग, छोटी इलायची प्रत्येक १४ माशा, पानजड़, शकाकल मिश्री, खसतीयल सहलब, अजवायन खुरासानी, प्रत्येक १॥ तोला, कूट छान कर त्रिगुण मधु का पाक कर मिलावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—वाजीकरण है, प्रमेह मे उपयोगी है।

माजून जालीनूस लोलवी

मुक्ता ४॥ माशा, बुसद ४॥ माशा, फकाह अजखर, नागरमोथा, कजमाजज, तज, दारचीनी, तगर, मस्तगी प्रत्येक २। माशा, अनीसून, बहमन सफेद प्रत्येक १०॥ माशा, काकनज, लबलाब जड़, प्रत्येक ३॥ माशा, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, प्रत्येक १॥। तोला, सब औषध को कूट छान कर मधु का पाक कर के उस मे मिला दे।

मात्रा—५ माशा।

गुण—शिश्न को बलवान तथा दृढ़ बनाती है, वाजीकरण है।

माजून जलाली

कस्तूरी १ माशा, अम्बर ४॥ माशा, केशर, कबाबचीनी, अजवायन खुरासानी, बालछड़, ऊद खाम,तज, दारचीनी, मस्तगी, छलीड़ा, प्रत्येक ९ माशा, इन्द्रजौ, जायफल प्रत्येक १३॥ माशा, पनीरमायाशुत्र अहराबी, खसतीयलसहलब प्रत्येक १॥ तोला, पोस्त खशखाशमगज गिर चिडा प्रत्येक पौने दो तोला, खॉड सफेद ४ तोला, काला दाना४०० नग, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुण मधु का पाक कर मिला दे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—उपरोक्त।

माजून जोगराज गुग्गुल

पिप्पली, मिरच, भांगरा प्रत्येक ९ माशा, सोंठ, कुठ, देवदारू, हाऊबेर, अकरकरा, पिप्पलामूल, नरकचूर प्रत्येक ६ माशा, तेजबल, जुन्दबदस्तर २—२ माशा, चित्रक, कबाबचीनी, कासनी प्रत्येक ३

माशा, पोदीना ५ माशा, गुगुल सब औषध के समान भाग, प्रथम गुगुल को कूटकर बादामरोगन से स्निग्ध करके कूटें, नरम होने पर थोड़ा थोड़ा औषध चूर्ण मिलाकर कूटते जाये, सब एकजीव होने पर सुरक्षित रखें।

मात्रा—३ से ५ माशा।

गुण—अर्दित, अर्धांग, वातकम्प तथा अन्य वात कफ रोगों मे उत्तम है, वाजीकरण है, आमवात में उत्तम है।

माजून चोवचीनी

लौंग, जायफल, जाविश्री, गुलाब पुष्प, केशर, नरकचूर, पानजड़, नागरमोथा प्रत्येक ४॥ माशा, सोंठ, पिप्पली, अकरकरा, जदवार खताई प्रत्येक ९ माशा, बड़ी इलायची, काली मरिच, मस्तगी, सुरंजान, बोजीदान, सनायमकी, इन्द्रजौ, प्रत्येक १॥। तोला, चोवचीनी ११। तोला।

मात्रा—७ माशा।

गुण—आतशक, वातरक्त, तथा आतशक जनित पीड़ा मे उपयोगी है।

माजून चोवचीनी (विशेष योग)

दोनों इलायची, पानजड़, लौंग, कवाबचीनी, कस्तूरी, बोजीदान सोंठ, बालछड, कचूर, तगर, साजजहिन्दी (तमालपत्र), पिप्पली, अम्बर, जदवार खताई प्रत्येक ९ माशा, दारचीनी, सुरजान, शकाकलमिश्री, खसतीयालसलब, मस्तगी रूमी, ऊद हिन्दी, इन्द्रजौ, केशर प्रत्येक १४ माशा, मगज चरोंजी, मगज़ हब्ब किल्किल, मगज तुखम कुटज, मगज हबतलखिजरा, प्रत्येक पौने दो तोला, मगज चलगोजा, मग़ज नारियल प्रत्येक ९ माशा, चोवचीनी ५६। तोला, पहिले चोवचीनी को ४ सेर जल मे एक दिन भिगो रखे, फिर बारीक २ टुकड़े कर इस कदर उबाले कि एक सेर पानी रह जाये, अब मधु, तुरजबीन प्रत्येक ५६ तोला मिला कर पाक करे, और औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—वाजीकरण, रक्तशोधक है ।

माजून हिरलयहूद

मगज तुख़म कद्दू, मगज तुख़म ख़यारैन, मगज् तुख़म तरबूज, हब्ब काकनज १।।–१।। तोला, हिजरलयहूद १५ तोला, सब औषध को कूट छान ले और हिजरलयहूद को बारीक पीस कर मिला ले, अब त्रिगुण मधु का पाक कर के माजून तैयार करे ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय की अशमरी को खारज करती है ।

माजून हमल अम्बरी अलवीखान

अम्बर १। तोला, मुक्ता ९ माशा, कहरबा, बुसद जला हुआ, चन्दन रक्त, चन्दन सफेद, वंशलोचन, माजू, दरूनज अकरबी, ऊद-सलीब, आवरेंगम अपक्व, अजवारजड़, गिलारमनी ९—९ माशा, मगज तुख़म तरबूज १।। तोला, ख़ुरफा बीज १।। तोला, स्वर्ण वर्क २० नग, वर्क चादी २० पत्र, मधु उत्तम १५ तोला, शरबत अंगूर २८ तोला, खॉड ५६ तोला, सब औषध (पहिली ४ औषध छोड़ कर) कूट छान कर चूर्ण करे, फिर बाकी औषध खरल कर इस मे शामिल करे, मधु खॉड और शरबत का पाक कर औषध चूर्ण मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—३ मास का जब गर्भ हो तो प्रति दिन ५ माशा, अर्क गाऊज़बान १२ तोला के साथ प्रयोग करे ।

गुण—गर्भपात को रोकती है, यदि गर्भावस्था मे प्रयोग की जावे, तो बालक पूरे दिनों मे स्वस्थ और आसानी से उत्पन्न होता है, बालग्रह नही होने पाता, बड़ा उत्तम योग है ।

माजून खबसलहदीद

मण्डूर भस्म ४।। तोला, ऊद हिन्दी, नागरमोथा, सोंठ, मिरच, अजवायन, अजख़र प्रत्येक ३।। तोला, हरीतकी, कृष्ण हरीतकी,

आमला प्रत्येक १।। तोला, सब को कूट छान कर त्रिगुण मधु का पाक कर माजून तैयार करे।

मात्रा—५ माशा।

गुण—रक्त अर्श मे उपयोगी है, रक्त को बन्द करती है।

माजून खदर

ऊगरकी १ माशा, लौग, कचूर, केशर प्रत्येक १।। तोला, मस्तगी, वोजीदान, प्रत्येक २ माशा, शकाकलमिश्री, पानजड, वहमन दोनो, गाऊजवान, वादरजवोया, बाल्छड़, छलीडा, जावित्री, कुठ, छोटी-इलायची वीज, फरजमुशक पत्र, नागरमोथा प्रत्येक २ माशा, ऊद-सलीव, दारचीनी, सहलवमिश्री ३—३ माशा, सुरजान मधुर, हरड़ काबुली, खशखाश वीज ४—४ माशा, पिप्पली, काली मिर्च, दरूनज, इन्द्रजौ, पोदीना, तगर, उस्तोखदूम, तेजपात, तज प्रत्येक ७ माशा, कस्तूरी २। माशा, कस्तूरी, केशर, मस्तगी, को पृथक २ खरल करें, और बाकी औषध का बारीक चूर्ण करे, मधु का पाक कर सब मिला कर एक जीव करे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—मस्तिष्क को वल देती है, शरीर के सुन होने मे उपयोगी है

माजून खदर जदीद

आलू बखारा, इमली प्रत्येक १—१ पाव, उन्नाव, लसूडे, द्राक्षा वीज रहित प्रत्येक ११ तोला, हरड़, कसूस वीज, अफसनतीन, वनफशा पुष्प प्रत्येक ५।। माशा, गुलाब पुष्प, खतमी वीज, खुबाजी वीज, सौफ, सन्दल सफेद प्रत्येक १।। तोला, सब औषध को रात्री समय गरम पानी मे भगोवे, प्रात उबाल कर छान ले, अब सम भाग तुरंजबीन ले कर इस क्वाथ मे घोल कर छान ले, और समभाग खाँड मिलाकर पाक करें, पाक सिद्ध पर वंशलोचन, सकमूनीया, गोंदकीकर, निशास्ता प्रत्येक ४।। माशा का चूर्ण कर शामिल करें।

मात्रा—५ माशा

गुण—उपरोक्त।

माजून खोज़ी

जोजबोया (जायफल) ७ नग, वहेडा १० नग, कुठ मधुर, तज, सम्बलतीब (वाल छड़), हब्ब बलसान प्रत्येक ७ माशा, जावित्री, दरूनज अकरबी, वड़ी इलायची प्रत्येक १०॥ माशा, करफल (लौंग), अनीसून, अकलीलमलक, चित्रक, नागकेशर प्रत्येक १४ माशा, रेवन्दचीनी, जरावन्द गोल, छलीड़ा प्रत्येक १३॥ माशा, कृष्ण हरीतकी, वड़ी हरीतकी छिलका प्रत्येक ६ तोला, मोड़ीयो बीज २५ तोला, खाँड १० सेर का पाक करके बड़ी हरीतकी का औषध चूण इस मे मिलावे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—अतिसार, तथा पाचक शक्ति की क्षीणता में उत्तम है।

माजून दीबदलवरद

बालछड, मस्तगी, केशर, दारचीनी, तबाशीर, अज़खरमकी तगर, कुठ मधुर, ग़ाफस, कसूस बीज, मजीठ, लाख धुली हुई, कासनी वीज, करफस बीज, जरावन्द गोल, हब्ब बलसान, ऊदग़रकी, लौंग, छोटी इलायची बीज, प्रत्येक ३॥ माशा, गुलाब पुष्प सब के समान, शहद त्रिगुणा लेकर यथाविधि पाक कर माजून तैयार करे।

मात्रा—७ माशा, अर्क सौफ, अर्क वरजासफ और शरबत दीनार के साथ प्रयोग करे।

गुण—जलोदर, यकृतविकार, यकृत दुर्बलता, तथा मन्दाग्नि मे उपयोगी है।

माजून जीब

हरड़ वड़ी, हरड़, वहेड़ा, आमला, उस्तोखदूस प्रत्येक ३ तोला, ऊदसलीब १॥ तोला, अकरकरा १॥ तोला सब को कूट छान ले, और द्राक्षा बीज की गुठली निकाल कर आध सेर को भली प्रकार खूब कूट कर अग्नि पर ज़रा गरम कर के औषध चूर्ण इसमे मिला दे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—अपस्मार मे लाभप्रद है—

माजून राजलमोमनीन

कस्तूरी २। माशा, जायफल, कतीरा, सोसन जड़, प्रत्येक १।। तोला, गाऊजवान पत्र, खसतीयलसहलब प्रत्येक पौने दो तोला, गाजरबीज, नारजील दरयाई, दारचीनी, मगज चलगोजा प्रत्येक ३।।। तोला, शकाकल मिश्री ७।। तोला, सब को कूट छान लें, पोस्त-खशखाश पौने उनीस तोला को त्रिगुणा जल मे उबाले, दो तिहाई भाग रहने पर इस मे खशखाश बीज सफ़ेद ९।। तोला पीस कर छान ले, अब इस में मधु और मधुर सेब जल प्रत्येक ४० तोला, गाजर रस ६० तोला मिला कर पाक करे, फिर औषध चूर्ण और कस्तूरी मिला ले।

मात्रा—७ माशा।

गुण—कफज श्वास, खफकान तथा पुसक दुर्बलता को नष्ट करता है।

माजून रेगमाही

माही सकनकूर ४। तोला, शलगम बीज, अस्पस्त बीज, गाजर बीज, श्वेत प्याज़ बीज, अंजरा बीज, जरजीर बीज प्रत्येक ३।। माशा, मिरच काली, मिरच सफेद, दारे फिलफिल (पिप्पली) प्रत्येक २१ माशा, प्याज हिसल (जगली प्याज़) भुना हुआ १४ माशा, मगज चलगोजा ७ तोला, अकरकरा, मगज शिर चिड़ा, इन्द्र जौ प्रत्येक २१ माशा, सबको कूट छान कर सम भाग घी मे भून कर त्रिगुण मधु का पाक कर यथाविधि माजून बनावे।

मात्रा—२ से ३ माशा।

गुण—वाजीकरण है।

केशर माजून

अजवायन, गाजर बीज, ज़ंजबील (सोठ) प्रत्येक ३ तोला, करफस जड़ २ माशा, मस्तगी ९ माशा, ऊद ख़ाम, अकरकरा प्रत्येक ५ माशा, केशर बसफाईज प्रत्येक ३।। माशा, प्रथम मस्तगी, केशर को

पृथक २ खरल करे, फिर बाँकी औषध का चूर्ण करे, मधु ३३ तोला का पाक कर औषध चूर्ण तथा केशर, मस्तगी मिला माजून तैयार करे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय को बल देती है, वायूनाशक तथा मूत्रल है, प्लीहा यकृत को भी बल देती है।

माजून स्पस्तान

मूसली क़ाली, मूसली सफेद, कौच बीज, बिनोला बीज, अटगन बीज, शकाकल मिश्री, सहलब मिश्री, मगज पिस्ता, मगज चरोंजी १—१ तोला, मग़ज नारीयल, मगज चलगोजा, मगज बादाम, तज प्रत्येक २ तोला, तालमखाना १॥ तोला, पिप्पली, सोंठ, बहमन दोनों, मोचरस, तिल छिले हुये प्रत्येक ६ माशा, मस्तगी, अकरकरा ९—९ माशा, लसूडे, गोंद कीकर २०—२० तोला, मधु उत्तम २॥ सेर, शकर सफेद १ सेर, गौघृत १० तोला, केशर ३ माशा, लसूडे और गोंद को कूट कर छान कर घी मे भूने, और दूसरी बारीक की हुई औषध के चूर्ण मे मिला ले, फिर खाण्ड तथा मधु के पाक मे मिला कर माजून बनावें।

मात्रा—१ तोला।

गुण—वाजीकरण तथा वीर्यप्रद है।

माजून सरख़स

सरख़स ३॥ माशा, वायविड़ंग ३॥ माशा, त्रिवृत, गुग्गुल ७–७ माशा, सब को कूट छान ले, और द्विगुणा मधु के पाक मे मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—१ तोला।

गुण—प्रयोग करने से पहिले १—२ घण्टा पहिले दूध पीवें, और ३ दिन पहिले भी दूध के सिवाये कुच्छ न खावें।

गुण—गोल तथा लम्बे कृमियो के लीये उत्तम है।

माजून सनाय

गुलाव पुष्प, वादरजवोया, गाऊजवान पत्र, वनफशा पुष्प, मधुयष्टि १—१ तोला, अजीर पक्व १० दाना, द्राक्षा वीज रहित २० दाना, उन्नाव २० दाना, लसूडे, १०० नग, सव औषधको ३ पाव जल मे भिगोवे,प्रातः उवाले,२ भाग रहने पर छान कर १ पाव खाण्ड डाल कर पाक कर, पाक अन्त मे किशमिश १ पाव पीस कर शामिल करें, फिर सनाय पत्र ७ तोले, कृष्णा हरीतकी ५ तोले, हरड़ जरद ३ तोला का चूर्ण कर वादाम तैल में स्निग्ध कर के पाक मे मिलावे।

मात्रा—७ माशा से १ तोला ।

गुण—सव प्रकार के शिरशूल मे उत्तम है, विवन्ध नाशक तथा मस्तिष्क शोधक है ।

माजून संगदाना मुरग

पोस्त संगदाना मुरग, वंशलोचन ९–९ माशा, पोदीना शुष्क, पोस्त वीरून पिस्ता, पोस्त तरंज, हरड़ ४–४माशे, गुलाव पुष्प १०॥ माशा, दोनों वहमन, दोनो चन्दन, सातर, धनियां, मोड़ीयो वीज ७–७ माशा, सव को कूट छान कर त्रिगुणा मधु का पाक कर मिलावे।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—दीपक, पाचक है, मन्दाग्नि से उत्पन्न अतिसार को वन्द करती है, वायुनाशक है ।

माजून संगसरमाही

सगसरमाही, हिजरलयहूद २–२ तोला, गोक्षरू, मगज आलो, वालो, कुलथ्थी १—१ तोला, सौफ २ तोला, कसूस बीज ३ तोला मगज तुख़म खरपज़ा ५ तोला, मधु आव सेर, प्रथम सगसरमाही आदि को वारीक पीस ले, और वाकी औषध का चूर्ण इस मे मिला कर मधु के पाक मे मिला दे ।

मात्रा—७ माशा, अर्क सौफ आदि से दें ।

गुण—यह माजून गुरदा तथा मसाना से रेत को निकालती है ।

माजून सुरंजान

करफस बीज, सौंफ, समुद्रझाग, मुसब्बर, मिरच सफेद, सातर सैंधव लवण, मेहन्दी पत्र ५-५ माशा, बोजीदान, माहजहरज, चित्रक, किबर जड ७—७ माशा, गुलाब पुष्प, धनिया, सोंठ, सकमूनीया भुना हुआ प्रत्येक १०।। माशा, सुरजान मधुर २१ माशा, हरड़ २ तोला, त्रिवृत ४।। तोला, बादाम रोगन ३। तोला, मधु ४४ तोला, सब औषध को कूट छान कर बादामरोगन मे मिला कर मधु के पाक मे मिलावे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—वातरक्त, आमवात, गृध्रसी तथा वातकफज विकारों मे उत्तम है।

माजून सैर अलवीखान

गाऊजबान पुष्प, बादरजबोया प्रत्येक ७। तोला, बसफाईज-फ़सतकी, कृष्ण हरीतकी, हरड बडी, मको प्रत्येक ३।। तोला, इन सब को ६ सेर जल मे उबाले, ४ सेर शेष रहने पर छान कर आध सेर लहुसन छिला हुआ मिला कर फिर उबाले, लहसुन के मृदु हो जाने पर १ सेर गौदुग्ध डाल कर उबाले, दूध मात्र शेष रहने गौघृत पर आधा सेर मिलाकर पाक करे, दूध के जजब हो जाने पर मधु १ सेर डाल कर पाक करे, सोठ, मिरच काली, मिरच सफेद, पिप्पली, लौग, तज, कबाबचीनी, पान जड़, दोनों बहमन, शकाकल मिश्री, बाबूना पुष्प, मरजनजोश, प्रत्येक पौने २ तोले, अम्बर, केशर ४।।—४।। माशा, इन सब का चूर्ण करके पाक मे मिला करके यथाविधि माजून तैयार करे।

मात्रा—५ माशा।

गुण—सब वातकफज रोगों मे उपयोगी है, सब विषों के लीये अमृत है।

माजून सन्दल

सन्दल सफेद ९ तोला ज़ल मे घिस कर रख ले, इमली का निथारा जल, अनार अम्ल का जल १—१ पाव ले कर १।। सेर खाँड मिला

कर पाक करे, और चन्दन को छान कर पाक में मिला दे, फिर तवाशीर १४ माशा, ऊद, केशर प्रत्येक ३।। माशा का बारीक चूर्ण पाक मे, मिलावें ।

मात्रा—५ माशा, अर्क गाऊजवान से ।

गुण—खफकान, उन्माद, हृदय दुर्बलता को दूर करती है ।

माजून सरह

जुन्दवदस्तर, हींग प्रत्येक ३ माशा, जीरा कृष्ण, अनीसून, सौंफ, सातर फारसी प्रत्येक ६ माशा, अकरकरा १ तोला, ऊदसलीव २ तोला, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुणा मधु के पाक मे मिलाकर यथाविधि माजून तैयार करे ।

मात्रा—बालकों को ३ माशा, बड़ों को ७ माशा तक ।

गुण—अपस्मार मे उपयोगी है, दीपक पाचक तथा मस्तिष्क संशोधक है ।

माजून उशवा

उशवा मगरबी, बसफाईज फसतकी, अफतीमियून विलायती, गाऊज़वान, कंबावचीनी, दारचीनी २–२ तोला, गुलाब पुष्प, चोब-चीनी, चन्दन दोनों ३—३ तोला, सनाय ४ तोला, हरड, बालछड़, १—१ तोला, हरड ६ माशा, बहेडा ७ माशा, सब को कूट छान ले, खाँड श्वेत ३ पाव, मधु आध सेर, यथाविधि पाक कर चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—जोड़ों की पीडा, आतशक, अर्श, खारश तथा रक्तदोष में उत्तम है ।

माजून अकरब

काकनज जड़ १।। तोला, हिवजत्याना रूमी १। तोला, जुन्द-बदस्तर १४ माशा, बिच्छू जला हुआ १०।। माशा, काली मिरच,

श्वेत मिरच प्रत्येक ८ माशा, सोंठ ३।। माशा, कूट छान कर बारीक चूर्ण करके त्रिगुणा मधु के पाक मे मिलावे ।

मात्रा—६ रत्ती ।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय की अशमरी को टुकडे २ कर मूत्र, द्वारा बाहर निकालती है ।

माजून फिलासफ़ा

बाबूना बीज १।। तोला, सोंठ, मिरच, पिप्पली, आमला, हरड, कृष्णहरीतकी, चित्रक, जरावन्दगोल, बाबूना जड़, खसतीयसहलब मगज चलगोजा, नारियल ताजा ३—३ तोला, द्राक्षा बीज रहित ९ तोला, सब का बारीक चूर्ण करके त्रिगुण मधु के पाक में मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—वीर्य प्रद है, वातपीड़ा, कटिपीड़ा मे उत्तम है, बार २ मूत्र आने को रोकती है, दिल, दिमाग को बल देती है ।

माजून फलक सैर

मगज बादाम, मग़ज फिन्दक, मगज चलगोज़ा, मगज अखरोट, मगज कद्दू, मग़ज काहू, अहिफेन, भाग ६—६ माशा, जायफल, जावित्री ४—४ माशा, कस्तूरी, अम्बर ९–९ रत्ती, यथाविधि त्रिगुण मधु का पाक कर के माजून बनावे ।

मात्रा—३, माशा, सम्भोग से २ घण्टे पूर्व दूध से प्रयोग करे, प्रमेह मे १ माशा प्रात दूध से ले, अम्ल पदार्थ का त्याग करे ।

गुण—स्तम्भक तथा प्रमेह को नष्ट करती है ।

माजून फलक सैर (विशेष योग)

मोती, याकूत प्रत्येक ४।। माशा, स्वर्ण वर्क ३।। माशा, चांदीवर्क ३ माशा, जहरमोहरा, जुमुरद सबज प्रत्येक ४ माशा, कस्तूरी, अम्बर-शहब ५—५ माशा, मगज पिस्ता, मगज फिन्दक, मगज मधुर बादाम, मगज चलगोजा, मगज अखरोट, तुखम खशखाश, तुखम काहु, मगज

तुखम कद्दू मधुर प्रत्येक २ तोला, भांग पत्र, साहलव मिश्री, शकाकल-मिश्री, केशर,वहमन सफेद, इन्द्र जौ प्रत्येक २ तोला, अजवायन खुरासानी, अफ़ीम १—१ तोला, नरस ९ माशा, जायफल, जावित्री, छलीड़ा, वालछड़, लौंग, सोंठ, दारचीनी, नागरमोथा १—१ तोला, गाऊजवान पुष्प २ तोला, आवरेशम कुतरा हुआ १ तोला, मधुर सेब रस, मधुर अनार रस १—१ पाव, अर्क गुलाव, केवड़ा, वेदमुशक प्रत्येक १—१ पाव, मधु औषध से द्विगुण, खाँड औषध के सम भाग, यथा विधि माजून बनावें, ज्वाहरात को अन्त मे खरल कर के मिलावे।

मात्रा—३ माशा।

गुण—सम्भोग से दो घण्टे पूर्व दूध मे प्रयोग करें, अत्यन्त प्रभावशाली स्तम्भक औषध है।

माजून फनजनोश

बड़ी हरड़ छिलका, हरड, कृष्णहरीतकी, वहेड़ा, आमला ३—३ तोला, जावित्री, छोटी इलायची, ऊद कुमारी, कस्तूरी प्रत्येक ७ माशा, काली मिरच, पिप्पली, जीरा कृष्ण, सोंठ, सोये वीज, करफस बीज, गन्दना वीज, जरजीर वीज, शल्गम वीज, खरवूजा वीज, तज, दारचीनी, लौंग, जायफल प्रत्येक ३॥ माशा, अस्पन्द ९ तोला, मण्डूर भस्म सव औषध के सम भाग लेकर, सव का चूर्ण करके त्रिगुणा मधु के पाक में मिलाकर यथाविधि माजून वनावे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—दीपक पाचक है, पुसक शक्ति वर्धक है, अर्श मे भी उपयोगी है।

माजून फोतनजी

करफस वीज, वावूना, आशा प्रत्येक ४ तोला ८ माशा, पोदीना नहरी, पोदीना पहाडी, फितरालसालीयून, अन्जदान वीज प्रत्येक ३॥ तोला, काशम ४ तोला ४ माशा, काली मिरच ७ तोला, सव को कूट छान कर त्रिगुणा मधु के पाक मे मिला कर माजून तैयार करे

मात्रा—७ माशा।

गुण—आमाशय तथा यकृत शूल को नष्ट करती है, कफज, जीर्ण ज्वर तथा चोथिया ज्वर मे लाभप्रद है।

माजून फ़ौलाद

केशर १ तोला, मरिच, पिप्पली, जावित्री, लौग, जायफल, दारचीनी प्रत्येक ७ माशा, मस्तगी, बालछड, सोंफ, चन्दन सफ़ेद, अकरकरा, हरड़, बहेडा, आमला प्रत्येक १० माशा, गुलाब पुष्प, चित्रक, साहलब मिश्री, जीरा सफेद, खयारैन बीज भुने हुये प्रत्येक ९ माशा, सोठ, बाबूना, वडी इलायची बीज, अम्बरशहब, अजवायन प्रत्येक ४ माशा, मोती, कस्तूरी प्रत्येक ३ माशा, स्वर्ण वर्क २० नग, लौह भस्म ४ तोला ८ माशा, मधु ३५ तोला, खाँड २४ तोला, अर्क गुलाब आध सेर, सब औषध का बारीक चूर्ण कर खाँड तथा मधु का पाक कर के चूर्ण मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—३ माशा, तीन दिन प्रयोग कर के १—१ माशा प्रतिदिन बढ़ा कर १ तोला तक पहुचाये, दूध के साथ प्रयोग करे।

गुण—वातकफज रोग, वृक्कशूल, प्रमेह मे उत्तम है, पुंसक शक्ति को बढाती है, वीर्य को गाढ़ा करती है।

माजून करतम

मगज तुख़म करतम, मगज मधुर बादाम, गुलाब पुष्प, सनाय-पत्र प्रत्येक ६ तोला, सौफ, सोंठ प्रत्येक २ तोला, दारचीनी, दोनों इलायची, १–१ तोला, अंजीर विलायती, द्राक्षा बीज रहित, प्रत्येक ४० नग–मगज तुख़म करतम और बादाम को पृथक पीसे, अजीर और द्राक्षा को धोकर पृथक पीसे, बाकी औषध को कूट छान कर चर्ण करें, त्रिगुण मधु के पाक में पहिले मगजयात और अंजीर, मुनक्का का शीरा मिला कर पाक करे, फिर बाकी औषध का चूर्ण पाक में मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—१ तोला।

गुण—दीपक पाचक तथा अजीर्ण नाशक है—मूत्रल है।

माजून काशम

सुदाब पत्र, पोदीना, काली मिरच, अजवायन करूवीया (शाहजीरा), काशम, सोंठ, दारचीनी, पिप्पली प्रत्येक दो तोला, मधु ५४ तोला, सब औषध को कूट छान कर मधु के पाक में मिलावें ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—वातशूल में उत्तम है, वातनाशक है ।

माजून करफ़स

गुड़, वर्च, शाहदाना, रेवन्दचीनी, सौंफ करफसरूमी, करफस बीज, सौंफ, अजवायन खुरासानी, बारीक पीसकर त्रिगुण मधु के पाक में मिलाकर यथाविधि माजून तैयार करें ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—विवन्धनाशक है, आमाशय तथा गर्भाशय के सब विकारो को नष्ट करती है ।

माजून कलान

गुलाब पुष्प, दोनों चन्दन, लोंग, दरूनज अकरवी, दोनों बहमन, कचूर, आमला, गिलअरमनी, फादजहरमदनी, कस्तूरी प्रत्येक ९ माशा, याकूत लाल और पीला, याकूत कबूद, लाल, अकीक यमनी, बुसद, कहरवा, यशप सबज, तमालपत्र, गाऊजवान पुष्प, तबाशीर सफेद, जदवार खताई, पोस्त बीरून पिस्ता, पोस्त तरंज, कासनी बीज, खुरफा बीज, स्वर्ण वर्क, चांदी वर्क प्रत्येक १३ माशा, जुन्दबदस्तर, अम्बरशहब प्रत्येक १॥ तोला, मुक्ता, दारचीनी प्रत्येक १॥। तोला, मस्तगी १। तोला, केशर ५॥ तोला, अफीम १३ माशा, गुलाब अर्क, १ सेर, सब औषध से त्रिगुणा खाँड तथा मधु लेकर अर्क गुलाब में पाक कर औषध चूर्ण मिला कर यथाविधि माजून बनावे ।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—पुंसक शक्ति को बढ़ाती है, स्त्री तथा पुरुषों के प्रमेह में उत्तम है ।

माजून कलकलानज

कालो मिरच, पिप्पली, पिप्पलाम्ल, सोठ, सातर, लवण हिन्दी श्वेत तथा कृष्ण, इन्द्राणी लवण, तरजरद लवण, साम्भर लवण, इन्द्रजौ, चित्रक, नागरमोथा, छोटी इलायची, तज, लौग, वायविड़ग काबुली, कलौजी, कालादाना, जीरा कृष्ण, तमालपत्र, करफस बीज, धनिया प्रत्येक १॥ तोला, हरड, बहेडा, आमला प्रत्येक २ तोला, अमलतारा का गूदा ३ तोला, त्रिवृत ४३॥। तोला, द्राक्षा बीज रहित आध सेर, शीरा आमला १ सेर, द्राक्षा और आमला को ६ सेर जल मे उबाले, २ सेर रहने पर छान कर अम्लतास का गूदा अच्छी तरह हल करे मिश्री ३ सेर, और तिल तैल आध सेर मिला कर पाक करे, सब औषध को कूट छान कर पाक में मिलावे।

मात्रा—७ माशा।

गुण—जलोदर, यकृत और आमाशय की सरदी, जीर्ण ज्वर, कफज कास, श्वास, शूल, अपस्मार, इत्यादि मे उपयोगी है।

माजून कुन्दर

मुर, कुन्दर, अकाकीया, श्याफ मामीशा ७—७ माशा, फटकड़ी भुनी हुई १०॥ माशा, खतमी बीज, अलसी बीज, प्रत्येक दो तोला, सोंठ, हरड बडी ३—३ तोला सब को कूट छान कर त्रिगुण मधु के पाक मे मिला कर माजून तैयार करे।

मात्रा—५ माशा।

गुण—मूत्र की अधिकता मे लाभप्रद है।

माजून लना

शुद्ध कुचिला १ तोला, मिरच काली तथा सफ़ेद, दारचीनी, पिप्पली, जायफल, जावित्री, मस्तगी, नागरमोथा, सोंठ, लौग, आमला, बालछड़, छोटी इलायची, अजवायन, सौफ, केशर, चन्दन सफेद, ऊदबलसान, अगर प्रत्येक ६—६ माशा, सब को कूट छान कर त्रिगुणा मधु के पाक मे मिला कर माजून बनावे, और ४० दिन बाद प्रयोग करें।

मात्रा—३ से ५ माशा ।

गुण—अर्दित, अर्धांग, वातकम्प, अपस्मार, वातकफ रोगों में लाभप्रद है, पुंसक शक्ति को बढाती है ।

माजून मुबहील नताकी

याकूत जरद ३।। माशा, कस्तूरी, चांदी हल की हुई, स्वर्ण हल किया हुआ प्रत्येक ५। माशा, सोठ, कहरवा, वुसद ७–७ माशा, दोनों वहमन, शकाकल मिश्री, तज, वोजीदान, जावित्री, कवावचीनी, पानजड़, इन्द्रजौ, दोनो इलायची, वाल छड, फरजमुशक, लौग, मस्तगी-रूमी, तमालपत्र, अम्वरशहव, मुक्ता प्रत्येक १०।। माशा, ऊद अपक्व, केशर, हालो वीज प्रत्येक १४ माशा, सकन्कूर प्रत्येक १।। तोला, वादाम रोगन मधुर ३।।। तोला, भांग ८।।। तोला, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुण मधु के पाक मे मिला कर माजून तैयार करे ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—पुंसक शक्ति को बढ़ाती है, शरीर को मोटा करती है, तथा प्रमेह नाशक है ।

रक्त शोधक माजून

नीमजड़ छाल, जंगली अंजीर की जड की छाल, शाहतरा, चिरायता, धनियां शुष्क, हरड, वहडा, आमला, कृष्ण हरीतकी, सौफ, चित्रक, गुलाव पुष्प, सनाय प्रत्येक २ तोला, सब को कूट छान कर त्रिगुण मधु के पाक मे मिला कर माजून तैयार करे ।

मात्रा—७ माशा, प्रात. सायं ।

गुण—परम रक्त शोधक है ।

माजून मरूलारवाह

याकूत रमानी, याकूत कवूद, लाल बदखशानी, फैरोजा, जबर-जद, जमुरद, बुसद, कहरबा, यशप, अकीक यमनी प्रत्येक ४।।माशा, सोठ, दारचीनी, सुरंजान, आमला, अकरकरा, इन्द्रजौ, वोजीदान, कुठ मधूर तथा कड़वी, पिप्पली, जरावन्द गोल, नारवीन, कचूर, दरूनज-

अकरबी, नागरमोथा, बाल्छड़, लौंग, छोटी इलायची, बाबूना जड़, हरड, हरडकृष्ण प्रत्येक ९ माशा, जायफल, जावित्री, छड़ीला, गाऊजवान पत्र, बालगू बीज, कबाबचीनी, धनिया, तगर, अकाकल्ल मिश्री, दोनो बहमन, अनजदान, चांदी वर्क, स्वर्ण वर्क प्रत्येक १।। तोला, गोदकीकर, छुहारे, गोदकतीरा प्रत्येक २। तोला, मस्तगी रूमी, मधु की मखीयों के छते का मैल, जदवार खताई, फादजहरहेवानी, गिल मखतूम, रोगन वलसान प्रत्येक २।। तोला, मरडूर शुद्ध (भस्म), केशर, आबरेशम कुतरा हुआ, जुन्दबदस्तर, कुन्दर, मोती प्रत्येक ३ तोला २ माशा, रेगमाही, सकनकूर, चिडे के शिर का मगज, कुक्कुट अण्डकोष, सरतान, कच्छुआ के अण्डे, राल, हाथीदांत बुरादा, कस्तूरी, अम्बरशहब, महीसाला, रोगन ऊद, प्रत्येक ३।।। तोला, कुरस असकील ४ तोला १।। माशा, शिलाजीत, धस्तूरबीज प्रत्येक ३।। तोला, मायाशुत्रअहराबी, खसतीयलसहलब, चोबचीनी प्रत्येक ४ तोला ७ माशा, दोनों तोदरी, काली मिरच, करोबीया, सौंफ, अनीसून, मेथी बीज, कालादाना, करफस बीज, अस्पस्त बीज, जरजीर बीज, हालो बीज, अंजरा बीज, गन्दना बीज, शलगम बीज, प्याज बीज, चकन्दर बीज, सोये बीज, गाजर बीज, मूली बीज, हरमल बीज सफेद, खशखाश बीज सफेद प्रत्येक ११ तोला ३ माशा, कुरस अफही १५ तोला, भांग १८।।। तोला, भांगरा, अतीस, काली मिरच, सैंधव, शुद्ध गन्धक, अफीम प्रत्येक १०।। माशा, नेवला का मास सूखा हुआ, मगज तुखम खयारैन, मगज तुखम कद्दू, मगज तुखम पेठा, मगज तुखम खरपजा, मगज नारियल, मगज चलगोजा, मगज तुखम कुटज, मगज बादाम मधुर तथा कटु, मगज फिन्दक, मगज पिस्ता, मगज अखरोट, मगज हब्ब किलकिल, अनारदाना, मगज बनोला, मगज हब्बलबान, मगज चरोंजी, हब्बलजलम, अजवायन खुरासानी, मक्कलमक्की, ईरसा, उस्तोखद्दूस, रेवन्दचीनी, सनायमक्की, गारीकून, लाजवरद धुला हुआ प्रत्येक १।। तोला, मधु तथा खांड प्रत्येक, मिलित औषध के समान, शीरा मुरब्बा गाजर, औषध मानसे द्विगुण, अमरूद जल, अर्क गुलाब, बेदमुशर्क, अर्क बहार प्रत्येक १ सेर ६ छटांक, मधुर अनार रस, सेब रस प्रत्येक दो सेर १३ छटांक, शराब अंगूरी १४ सेर, मधु, खांड,